फोन की बैल बजते ही देवराज चौहान ने रिसीवर उठाया ।

"हैलो।"

"देवराज चौहान!" दूसरी तरफ महादेव था–"पहचाना मुझे?"

"महादेव?"

"हां। सुनो, मुझे तुमसे जरूरी काम है। बोलो कहां मिलते हो?" महादेव की आवाज कानों में पड़ी।

"तुम्हारी तबीयत कैसी है। तुम ईलाज करवा–।"

"वो बीमारी ठीक नहीं होने वाली। डॉक्टर खामखाह तसल्ली देते रहते हैं। मैं जानता हूं, कभी भी लुढ़क सकता हूं। वैसे भी बहुत जी लिया। छोड़ो इन बातों को, कहां मिल रहे हो?"

"तुम बोलो?"

"माहिम, रेलवे स्टेशन के बाहर मिलो। जल्दी आना।" महादेव की आवाज में बेचैनी आ गई थी।

देवराज चौहान के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।

"खास बात है?"

"हां। यूं समझो कि जान का खतरा सिर पर है।"

"मैं पहुंच रहा हूं।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने रिसीवर रखा और जगमोहन को पुकारा–"जगमोहन!"

बंगले के एक कमरे से जगमोहन निकलकर पास आ पहुंचा। महादेव के फोन के बारे में बताकर देवराज चौहान बोला।

"मैं माहिम जा रहा हूं। थापर से तुम अकेले ही मिल आओ। वक्त मिला तो मैं वहीं पहुंच जाऊंगा।"

"कहो तो, मैं भी साथ चलूं। थापर से बाद में–।"

"थापर कई दिनों से याद आ रहा है। खुद तो वो 'थापर समूह' को जमाने में लगा हुआ है। इसलिये उसे आने का वक्त नहीं मिल रहा। तुम आज उसके पास हो ही आओ।" देवराज चौहान ने कहा। पाठक जानते हैं कि थापर जो मादक पदार्थों का किंग था कभी। अब देवराज चौहान के कहने पर मादक पदार्थों का धंधा छोड़कर, उद्योगपति बनता जा रहा था। शहर के इज्जतदार लोगों में उसकी गिनती होने लगी थी।

"ठीक है।" जगमोहन ने कहा–"मैं थापर से मिलकर आता हूं।"

अगले ही मिनट देवराज चौहान कार पर, माहिम रेलवे स्टेशन की तरफ बढ़ा जा रहा था।

माहिम रेलवे स्टेशन के सामने, सड़क पार मौजूद पार्किंग में, देवराज चौहान ने कार पार्क की और सड़क पार करता हुआ रेलवे स्टेशन के बाहरी गेट के पास आ पहुंचा और सिग्रेट सुलगाते हुए महादेव की तलाश में इधर-उधर निगाहें दौड़ाने लगा।

मिनट भर ही बीता होगा कि देवराज चौहान की निगाहें महादेव पर ठहर गईं। जो इसी तरफ बढ़ा आ रहा था। परन्तु अभी दूर था। देखने पर एकबारगी तो वह पहचानने में नहीं आ रहा था।

सिर के बाल और दाढ़ी के बाल पूरी तरफ सफेद हो चुके थे। कमजोर इस हद तक हो गया था कि बदन पर पड़े कपड़े झूलकर नीचे लटकते महसूस हो रहे थे। गाल पिचक-से गये थें। देखने पर स्पष्ट तौर पर लग रहा था कि पैसे की तरफ से उसका हाथ तंग है जबकि देवराज चौहान ने ईलाज कराने के नाम पर उसे लाखों रुपया दिया था। वह समझ गया कि महादेव की बीमारी बढ़ती जा रही है। उसी की वजह से उसका शरीर ढल रहा है।

महादेव पास पहुंचा।

देवराज चौहान ने स्पष्ट महसूस किया कि उसके चेहरे पर घबराहट और आंखों में बेचैनी है।

"तुमने अपनी क्या हालत बना रखी है। डॉक्टर क्या कहते–।"

"ये बात बाद में। पहले वो बात करूंगा, जिसके लिए तुम्हें यहां बुलाया है।" महादेव ने जल्दी से कहा।

"बात करने के लिये तुम बंगले पर भी आ सकते थे।" देवराज चौहान ने उसे गहरी निगाहों से देखा।

"नहीं। हालात ऐसे हैं कि मेरा खुले में रहना ठीक नहीं। जान का खतरा है कल रात से भागा फिर रहा हूं। अचानक तुम्हारा ध्यान आते ही, लगा जैसे सिर से बोझ उतर गया हो। मैंने एकदम तुम्हें फोन मारा।" कहने के साथ ही महादेव की निगाहें इधर-उधर दौड़ीं।

"बात क्या है?"

"बात—।"

उसी पल देवराज चौहान के देखते ही देखते महादेव के चेहरे के भाव बदले। मुंह खुला का खुला रह गया। आंखें फटकर चौड़ी हो गईं।

वो गिरने को हुआ कि देवराज चौहान ने उसे फौरन संभाला।

"महादेव—महादेव—!"

महादेव का पूरा बोझ देवराज चौहान पर पड़ चुका था। दूसरे ही क्षण देवराज चौहान को दायें हाथ में चिपचिपाहट-सी महसूस हुई। उसने देखा। हथेली खून से सन चुकी है। महादेव की कमर में साईलेंसर लगी रिवॉल्वर से गोली मारी गई थी, जो कि पीठ से बाहर निकल गई थी।

देवराज चौहान ने फौरन महादेव को चैक किया।

अभी जान बाकी थी उसमें।

देवराज चौहान के दांत भिंच गये। चेहरा गुस्से से धधक उठा। उसने फौरन सिर घुमाकर रेलवे स्टेशन की तरफ देखा। गोली उसी तरफ से चलाई गई थी। वहां लोग मौजूद थे। कईयों की निगाह, उन पर पड़ चुकी थी और वो हैरानी से ठिठक कर नजारा देख रहे थे।

"किसने मारी गोली?" देवराज चौहान गुस्सेभरे स्वर में चिल्लाया।

जवाब कौन देता।

"तुम फिक्र मत करो महादेव! मैं तुम्हें—।"

"देव-राज—मे-री छो-ड़ो। मैं तो वैसे भी गिनती के दिन जी रहा था। दो दिन पहले क्या और बाद में क्या""।"

"नहीं महादेव, मैं—।"

"वक्त बरबाद मत करो। मेरी सुनो।" महादेव की आवाज मध्यम पड़ती जा रही थी—"मैं—।"

"मुझे इतना बता दो, गोली मारने वाले कौन लोग हैं?" देवराज चौहान ने भिंचे स्वर में कहा।

महादेव की आंखें बंद हो चुकी थीं।

"महादेव—महादेव—।" देवराज चौहान ने उसे जोरों से हिलाया।

"मुझे—मुझे नीचे लिटा—दो।" महादेव के होंठों से फुसफुसाती आवाज निकली।

होंठ भींचे देवराज चौहान ने उसे नीचे लिटाया।

महादेव की बंद पलकों में कम्पन हुआ। उसने आंखें खोलीं। देवराज चौहान को देखा।

"कुछ तो बोलो—महादेव—।" देवराज चौहान से सहा नहीं जा रहा था, इस तरह महादेव को मरते देखना।

महादेव के होंठ हिले।

देवराज चौहान ने अपने होंठ और भी सख्ती के साथ भींच लिये।

"ती—तीन सौ दो।" महादेव के होंठ जरा से खुले। मध्यम-सी आवाज निकली और इसके साथ ही उसकी सांसें रुक गईं।

"महादेव, क्या तीन सौ दो? मैं समझा नहीं तुम····।" देवराज चौहान के भिंचे होंठों से निकला।

लेकिन अगले ही पल समझ गया कि महादेव अब नहीं रहा। वो मर चुका है। देवराज चौहान के चेहरे पर पत्थर की कठोरता जैसे भाव आ गये। उसने आसपास निगाहें दौड़ाईं। भीड़ बढ़ती जा रही थी। महादेव के शरीर को इसी तरह छोड़कर जाना उसके लिये मजबूरी बन गई थी। पुलिस अब किसी भी वक्त आ सकती थी और उसके देवराज चौहान होने की पहचान होते ही, सिर पर मुसीबतों का पहाड़ टूट सकता था।

महादेव की खुली आंखों को देवराज चौहान ने बंद किया और उठ खड़ा हुआ। भीड़ की तरफ निगाह मारी। वह जानता था कि महादेव की जान लेने वाला, इसी भीड़ में मौजूद है, परन्तु उसे पहचाना नहीं जा सकता। चेहरे पर कठोरता समेटे देवराज चौहान तेज कदमों से सड़क की तरफ बढ़ गया। जिसके पार पार्किंग में उसकी कार खड़ी थी। किसी ने भी उसे रोकने की चेष्टा नहीं की।

देवराज चौहान के मस्तिष्क में इस वक्त सिर्फ दो ही बातें थीं। उसकी बांहों में महादेव की मौत और तीन सौ दो?

क्या कहना चाहता था महादेव?

□□

□□

जगमोहन ने जब बंगले में प्रवेश किया तो देवराज चौहान को सोफे पर बैठा पाया। दोनों टांगें सामने मौजूद सैंटर टेबल पर रखी हुई थीं। उंगलियों में फंसी सिग्रेट से वह कश ले रहा था।

जगमोहन ने एक ही नजर में पहचाना कि देवराज चौहान गुस्से से जल रहा है। जगमोहन मन ही मन सतर्क हुआ और करीब पहुंचा।

"सागर से मिले?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हां।" जगमोहन ने गहरी निगाहों से उसे देखा–"क्या बात है? गुस्से में हो।"

जगमोहन को देखते, देवराज चौहान ने कश लिया।

"महादेव को गोली मारकर उसकी जान ले ली गई।"

"क्या कर रहे हो?" जगमोहन चिंहुक उठा।

"महादेव मेरे से बात कर रहा था, जब उसे गोली मारी गई। मेरी बांहों में उसने दम तोड़ा। वहां भीड़ थी, गोली मारने वालों को, मैं नहीं देख पाया।" देवराज चौहान के दांत भिंच गये–"वो मर गया। मैं उसके लिये कुछ नहीं कर पाया, क्योंकि वहां पुलिस कभी भी आ सकती थी। उसके शरीर को छोड़कर आना पड़ा।"

जगमोहन की हालत अजीब-सी हो रही थी। महादेव का मरना उसे हजम नहीं हो रहा था।

"यह सब हुआ कैसे?"

"महादेव जब मुझसे मिला तो, वो पहले ही कुछ डरा हुआ था। बोला कल रात से मैं उन लोगों से बचता फिर रहा हूं। मेरा ध्यान ही उसे सुबह आया कि–।"

"किन लोगों से बचता फिर रहा था?" जगमोहन के चेहरे पर कठोरता उभरी।

"वो बता नहीं पाया। उसे कुछ भी कहने का मौका नहीं मिला और मारा गया।"

"ओह–!"

"मरने से ठीक पहले उसने सिर्फ 'तीन सौ दो' कहा। शायद तब वो असल मामला बताने जा रहा था परन्तु सांसों ने साथ नहीं दिया। वो कुछ भी बता नहीं पाया।"

देवराज चौहान और जगमोहन एक-दूसरे को देखने लगे।

"तीन सौ दो का क्या मतलब?" जगमोहन के माथे पर बल पड़े हुए थे।

"कह नहीं सकता। लेकिन यह किसी चीज का नम्बर है। जिसके बारे में महादेव कुछ जान गया था और उसे मारने वाले लोग नहीं चाहते थे कि कोई 'तीन सौ दो' के बारे में जाने। यही वजह रही कि वो महादेव के पीछे पड़ गये और अंत में वो उसकी

जान लेकर ही रहे। तब मेरे बस में कुछ नहीं था। मैं उसे नहीं बचा सका।" कहते-कहते देवराज चौहान के चेहरे पर खतरनाक भाव उभर आने लगे थे।

"यानि कि महादेव जिस मामले के बारे में बताना चाहता था, वे उसकी मौत के साथ ही खत्म हो गया।" जगमोहन बोला।

"महादेव की जान अवश्य चली गई।" देवराज चौहान की आवाज में सुलगन थी—"लेकिन मामला खत्म नहीं हुआ। वो तो अब शुरू हुआ है।"

जगमोहन की निगाह, देवराज चौहान के कठोर चेहरे पर जा टिकी।

"मैं समझा नहीं–।"

"तीन सौ दो, क्या है? किस चीज का नम्बर है? मुझे इस बात से कोई वास्ता नहीं, लेकिन जो लोग तीन सौ दो के बारे में जानते हैं, इससे वास्ता रखते हैं, वो ही महादेव के हत्यारे हैं और महादेव की हत्या मेरी बांहों में हुई है। ऐसे में मेरा फर्ज बनता है कि मैं महादेव के हत्यारे को सजा दूं। और महादेव के हत्यारे तक तभी पहुंच सकता हूं, जब तीन सौ दो नम्बर की हकीकत के बारे में जानूं, क्योंकि हत्यारे का सम्बन्ध तीन सौ दो नम्बर से है।"

जगमोहन ने सहमति से सिर हिलाया। चेहरे पर गम्भीरता थी।

"तीन सौ दो नम्बर के बारे में कैसे मालूम किया जाये?"

"शुरूआत महादेव से ही होगी।" देवराज चौहान ने दांत भींचकर कहा—"मेरा अभी खुले में जाना ठीक नहीं, क्योंकि बहुत-से लोगों ने महादेव को मेरी बांहों में दम तोड़ते देखा है और उसके मरने के बाद मैं वहां से चला आया। मुझे देखने वालों ने पुलिस को मेरा हुलिया बताया होगा। ताजा-ताजा हुलिया सुने पुलिस वाले मुझे देखकर पहचान सकते हैं। और मैं बेवजह वाले पुलिस के झंझट से दूर रहना चाहता हूं।"

जगमोहन, देवराज चौहान को देखता रहा।

"महादेव ने कहा था कि वो बीती रात से जान बचाता फिर रहा है?"

"हां।"

"तो मालूम करो महादेव किन-किन लोगों में बैठता थ। किन से मिलता था और इन दिनों क्या कर रहा था। खासतौर से यह मालूम करो कि कल रात वो कहां था।" देवराज चौहान ने भिंचे स्वर में कहा।

जगमोहन ने समझाने वाले ढंग से सिर हिलाया।

"कहां से शुरूआत करोगे?"

"महादेव के घर के आस-पास से ही। इस बारे में पहली खबर तो वहीं से मिलेगी।" जगमोहन ने कहा।

"अगर महादेव के घर पुलिस पहुंच चुकी हो तो, अभी पूछताछ मत करना।" देवराज चौहान बोला।

जगमोहन, बंगले से बाहर निकल गया।

देवराज चौहान उठा और बेचैनी से वहां टहलने लगा। महादेव की मौत को वह बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। खास वजह यह थी कि उसके सामने महादेव को गोली मारी गई। उसकी बांहों में वो मरा।

तभी फोन की बैल बजी।

देवराज चौहान ने रिसीवर उठाया।

दूसरी तरफ सोहनलाल था।

"महाद्रेव के बारे में सुना।" सोहनलाल की आवाज कानों में पड़ी—"किसी ने माहिम रेलवे स्टेशन के बाहर उसे गोली मार दी। वो मर गया है। ये एक-दो घण्टे पहले की बात है।"

देवराज चौहान के चेहरे पर कठोरता आ गई।

"उसके मरने के बारे में तुम्हें किसने बताया?"

"अभी दस मिनट पहले, किसी ने बताया था।" सोहनलाल की आवाज आई—"कल वो मुझे मिला था।"

"कौन—महादेव?"

"हां।"

देवराज चौहान मन ही मन सतर्क हुआ।

"कहां?"

"चैम्बूर में—वहां—।"

"उसके साथ क्या बात हुई?" देवराज चौहान ने उसकी बात काटकर पूछा।

"बात हो ही नहीं पाई। सड़क पर ही आमना-सामना हुआ। उसने मुझे कोई भाव नहीं दिया। मेरी तरफ देखकर सिर्फ मुस्कराया था। मैं समझ गया कि वो किसी फेर में है। क्योंकि तब उसके साथ कोई खूबसूरत युवती थी। मैंने भी उसे रोकने की कोशिश नहीं की। वो अपने रास्ते लग गया और मैं अपने रास्ते—।"

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ चुकी थीं।

"ये कितने बजे की बात है?"

"दोपहर का वक्त होगा। एक-दो-तीन के बीच का। तुम क्यों पूछ रहे हो?"

"इस वक्त क्या कर रहे हो?" देवराज चौहान ने कहा।

"खास कुछ नहीं। मैं–।"

"मेरे पास आओ। कुछ बात करनी है।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने रिसीवर रख दिया।

□□

□□

"समझे।" देवराज चौहान की कठोर निगाह, सोहनलाल के चेहरे पर थी–"महादेव ने मेरी ही बांहों में दम तोड़ा था।"

सोहनलाल सब-कुछ जान चुका था। चेहरे पर गम्भीरता लिए, उसने गोली वाली सिग्रेट निकाली और सुलगाकर कश लिया। निगाहें देवराज चौहान पर जा टिकीं।

"महादेव के मरने का वास्तव में अफसोस हुआ, क्योंकि वो अच्छा बंदा था। कई बार हमारे साथ काम कर चुका था।"

"तुमने उस युवती को अच्छी तरह देखा था, जिसके साथ कल महादेव था?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हां। बहुत अच्छी तरह देखा था। क्योंकि उसका और महादेव [illegible] कोई मेल ही नहीं था। वो खूबसूरत थी। जबकि महादेव उसके [illegible] चलता, बेहद गरीब इन्सान लग रहा था। वो लड़की पैसे वाली [illegible]ही थी। मेरे ख्याल से महादेव नोटों के फेर में ही उसके साथ होगा।" सोहनलाल बोला।

"तुम्हारा मतलब कि युवती का कोई काम करके, महादेव उससे नोट वसूलना चाहता होगा।"

"हां।"

"मैं नहीं मानता।"

"क्यों?"

"महादेव को मुद्दत बाद आज ही मैंने देखा है। वो बहुत कमजोर हो चुका है। इस काबिल नजर नहीं आया कि वो कोई काम कर सके या फिर कोई उसे काम करने को कहे। काम कराने वाले को उससे बढ़िया सेहत वाले और फुर्तीले लोग मिल सकते हैं तो वह युवती, मेरे ख्याल में महादेव से कोई काम नहीं करायेगी।"

"मैं समझा नहीं कि तुम कहना क्या चाहते हो?"

"यही कि किसी खास वजह के तहत महादेव उस युवती के साथ था।" देवराज चौहान ने शब्दों पर जोर देकर कहा।

सोहनलाल होंठ सिकोड़े, कई पलों तक सोचभरी निगाहों से देवराज चौहान को देखता रहा।

"मेरे ख्याल में उसी वजह के कारण ही महादेव की जान गई।"

"और वो वजह क्या थी?" सोहनलाल ने पूछा।

"अभी इस बारे में कुछ नहीं पता कि महादेव क्या कर रहा था।" देवराज चौहान के होंठ भिंच गये—"लेकिन यह तो पक्के तौर पर तय है कि महादेव किसी बड़े मामले में हाथ दे बैठा था और उस मामले का ताल्लुक किसी ऐसी चीज से था जो तीन सौ दो नम्बर से वास्ता रखती है। क्योंकि मरते वक्त, उसके मुंह से आखिरी शब्द यही निकले थे—तीन सौ दो।"

"यह तीन सौ दो क्या हो सकता है?"

"मैंने तुम्हें दो बातों के लिये बुलाया है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्या?"

"एक तो यह कि कल महादेव के साथ वो युवती कौन थी। अगर उसके बारे में मालूम हो जाये तो काफी हद तक मामला खुलकर सामने आ सकता है।" देवराज चौहान ने सोचभरे स्वर में कहा।

"यह काम इतना आसान नहीं।" सोहनलाल ने होंठ सिकोड़कर कहा।

"क्यों?"

"यह ठीक है कि मैं उस युवती को देखते ही पहचान लूंगा। लेकिन वो मिलेगी कहां? मुम्बई जैसे शहर में अपनी बीवी खो जाये तो उसे नहीं ढूंढा जा सकता। वो तो मेरे लिये बिल्कुल अंजान युवती थी। वो नहीं मिलने वाली।"

"उस युवती तक एक ही रास्ते से, पहुंच सकते हो।"

"कैसा रास्ता?"

"महादेव के बारे में जानना शुरू करो कि इन दिनों वो किस काम में था। ऐसे में हो सकता है कि वो युवती कहीं नजर आ जाये। साथ ही साथ ये भी जानने की कोशिश करो कि तीन सौ दो का क्या मतलब है। यह कौन-सा नम्बर है। तीन सौ दो कहकर, महादेव क्या बताना चाहता था।"

सोहनलाल ने सोचभरे अन्दाज में सिर हिलाया।

"कोशिश करता हूं।"

"मुझे महादेव के हत्यारे के अलावा और किसी चीज में दिलचस्पी नहीं है और तीन सौ दो के बारे में जाने बिना, महादेव के हत्यारे तक नहीं पहुंचा जा सकता।" देवराज चौहान ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा और उठकर वहां से सामने नजर आ रहे कमरे की तरफ बढ़ गया।

जब वापस आया तो हाथ में अखबार का छोटा-सा पैकिट था।

"ये पचास हजार रुपये हैं, भागदौड़ में खर्चे के लिए। खत्म हो जायें तो और ले लेना।"

"इसकी क्या जरूरत थी।" कहते हुए सोहनलाल ने पैकिट थामा और विदा लेकर बाहर निकल गया।

देवराज चौहान सोचभरे अंदाज में कई पलों तक खड़ा रहा। फिर मन ही मन तय किया कि पहचाने जाने की सोचकर बैठे रहना ठीक नहीं। महादेव के बारे में उसे भी छानबीन करनी चाहिये। इस सोच के साथ ही बाहर निकला और पोर्च में खड़ी कार, बाहर निकालता चला गया।

□□

□□

दस मिनट बाद देवराज चौहान की कार भीड़ वाली सड़क से गुजर रही थी कि तभी देवराज चौहान को महसूस हुआ कि उसके कान के पास से अंगारा, गर्म हवा देता निकला है। दूसरे ही क्षण वो अंगारा विण्डशील्ड में छेद बनाता हुआ बाहर कहीं खो गया।

गोली की आवाज नहीं गूंजी थी।

वो साईलैंसर लगी रिवॉल्वर से फायर था।

उसका निशाना लिया गया था। स्टेयरिंग विण्डों से गोली ने भीतर प्रवेश किया। खिड़की का शीशा पहले से ही नीचे था। देवराज चौहान चौंका। सतर्क हुआ। गर्दन फौरन घूमी और तब तक रिवॉल्वर निकलकर हाथ में आ चुकी थी। एक हाथ स्टेयरिंग पर था।

दायीं तरफ वो काली कार थी।

उसमें पांच आदमी ठूंसे हुए ढंग से बैठे हुए थे। देवराज चौहान को अपनी तरफ देखते पाकर, उनमें से दो ने उसे रिवॉल्वरों की झलक दिखाई।

देवराज चौहान समझ गया कि रिवॉल्वरें उन दो के ही नहीं, अन्यों के पास भी होनी चाहियें। क्योंकि उनके चेहरों से ये जाहिर हो रहा था कि मरना-मारना उनका काम है। लेकिन ये लोग हैं कौन? उसकी जान क्यों लेना चाहते हैं? गोली चलाने वाले का निशाना बढ़िया था।

मामूली-सा ही फर्क रह गया था उसका सिर उड़ने में। देवराज चौहान ने उन चेहरों को पहले कभी नहीं देखा था।

देवराज चौहान ने फौरन हिसाब लगाया कि अपनी रिवॉल्वर का इस्तेमाल इन लोगों पर करता है तो खास फायदा नहीं होने वाला। दो-तीन को खत्म भी कर देता तो चौथा-पांचवां तब तक उसका निशाना ले चुका होगा। ड्राईवर के अलावा चारों की खूनी निगाहें उस पर थीं।

अगले ही पल देवराज चौहान ने महसूस किया कि अब वो उसका निशाना नहीं ले रहे।

देवराज चौहान ने अपना ध्यान ड्राईविंग पर लगा दिया। रिवॉल्वर गोदी में रख ली। इसके साथ ही चेहरे पर कठोरता लिए, उनकी हरकतों पर भी निगाह रख रहा था। वो कार उसकी कार के बराबर आने की कोशिश कर रही थी। जाहिर था कि कोई और बात थी। दूसरी गोली उस पर चलानी होती तो अब तक चल चुकी होती।

देवराज चौहान ने कार की स्पीड कम की।

उस कार को बगल से पास आने दिया।

देवराज चौहान ने तसल्ली से काली कार में बैठे उन पांचों चेहरों को देखा।

"अपनी जान की खैरियत चाहते हो तो आगे जाकर खाली जगह मिलते ही, कार रोको। तुमसे बात करनी है। अगर हमारी बात नहीं मानी तो इस बार गोली तुम्हारे सिर पर लगेगी।" उस कार में से एक ने चिल्लाकर कहा।

देवराज चौहान ने शब्दों को सुना और खामोशी से सिर हिला दिया।

ट्रैफिक में कारें आगे बढ़ती रहीं। काली कार अब ठीक उसके पीछे हो गई थी। बैक मिरर से देवराज चौहान काली कार पर निगाह रखे था। नजरें सामने भी रखीं। वह इन लोगों के बारे में जानना चाहता था। परन्तु उससे भी ज्यादा जरूरी था, इन लोगों से पीछा छुड़ाना। इस वक्त इनका मुकाबला करना ठीक नहीं था।

तभी आगे लाल बत्ती आ गई।

देवराज चौहान ने कार धीमी की। आसपास के अन्य वाहन भी धीमे होने लगे। इसी दौरान उसके और काली कार के बीच एक अन्य कार आ गई थी। इससे बढ़िया मौका फिर नहीं मिलना था। देवराज चौहान की कार सबसे आगे थी। लाल बत्ती पर। सामने अन्य साईड का ट्रैफिक गुजर रहा था। किसी बात की परवाह न

करते हुए देवराज चौहान ने दांत भींचकर कार आगे बढ़ा दी। सामने से गुजरते ट्रैफिक में से किसी प्रकार निकाल ले गया। कई वाहनों को उसकी वजह से ब्रेक लगाने पड़े।

देवराज चौहान कार को भगाता ले गया।

काली कार उसके पीछे नहीं आ सकती थी, क्योंकि उसके आगे, दूसरी कार खड़ी थी। लाल बत्ती को पार कर ''गे जाकर, देवराज चौहान ने रास्ता बदल लिया; ताकि काली कार उसे ना पा सके। विण्डशील्ड टूट चुकी थी। गोली का छेद नजर रहा था। उसके आसपास क्रेक था। शीशा फौरन बदलवा लेना ा था। कोई भी देखकर समझ सकता था कि शीशे में वो गोली का छेद है।

देवराज चौहान ने गोदी में पड़ी रिवॉल्वर उठाकर, दस्ते से विण्डशील्ड का शीशा तोड़ा। गोली का निशान अब गायब हो गया। रिवॉल्वर को वापस जेब में रखा और बैक मिरर में देखा। पीछे अब कोई भी काली कार नजर नहीं आ रही थी।

देवराज चौहान के सामने सबसे बड़ा सवाल यह था कि वो काली कार वाले कौन थे? क्यों उसकी जान लेना चाहते थे? जबकि इन दिनों वह कोई काम नहीं कर रहा था। आज के दिन में यह दूसरी खास बात थी। पहले उसके सामने महादेव को गोली मारकर खत्म कर दिया गया और अब उसके साथ भी कुछ ऐसा ही करने जा रहे थे। मतलब कि यह मामला महादेव से वास्ता रखता हो सकता है।

लेकिन उन लोगों ने कहां से तलाश किया? कहां पहचाना?

इसका जवाब देवराज चौहान के पास एक ही था। महादेव की लाश को जब छोड़कर माहिम रेलवे स्टेशन से निकला तो, महादेव के हत्यारे ने उसका पीछा करके, बंगले के बारे में जाना और अब जब वो बाहर निकला तो, महादेव का हत्यारा और उसके साथी पीछे लग गये।

क्यों?

वो लोग सोच रहे हैं कि महादेव मरने से पहले वो बात उसे बता गया। जिसे छिपाने के लिये उन्होंने महादेव की हत्या की। इसलिये उसे भी खत्म करना चाहते हैं?

मतलब कि वो लोग फिर मिलेंगे। क्योंकि वे उसके बंगले से वाकिफ हो चुके हैं।

उसे सावधान रहना होगा। कहीं भी वे उसे निशाना बनाने की कोशिश कर सकते हैं। देवराज चौहान के लिये इसमें फायदे की

बात ये थी कि वे लोग उसके पास-करीब ही रहेंगे, जिनके बारे में वो जानना चाहता है। ऐसे में वो लोग कभी तो उसके हत्थे चढ़ेंगे।

कार का शीशा नया लगवाकर, रास्ते भर में सावधान रहकर वापस बंगले पर जा पहुंचा। बंगले के आसपास तो ऐसा कोई नजर नहीं आया कि शक हो, जो निगरानी कर रहा हो। कार को पोर्च में छोड़कर जब उसने बंगले के हॉल में प्रवेश किया, फोन की घण्टी को बजते पाया।

"हैलो।" देवराज चौहान ने रिसीवर उठाया।

"चालाकी से भागकर, बच निकले।" उसके कानों में शांत सपाट स्वर पड़ा।

देवराज चौहान चौंका। माथे पर बल उभरे।

"क्या मतलब?"

"इतने भोले तो नहीं कि मतलब न समझ सको।" वही स्वर, वही अंदाज—"वैसे मैं काली कार की बात कर रहा हूं।"

"तुम थे उसमें?" देवराज चौहान की आवाज में किसी तरह का भाव नहीं था।

"नहीं। मेरे आदमी थे।"

"तुम कौन हो?"

"ये फालतू का सवाल है।"

"तो काम का सवाल क्या है?" देवराज चौहान के होंठ भिंच गये।

"महादेव ने, मरने से पहले तुम्हें क्या बताया?" शांत, ठण्डा स्वर कानों में पड़ा।

देवराज चौहान के चेहरे पर खतरनाक भाव उभर आये।

"तुमने महादेव को गोली मारी थी?" देवराज चौहान ने एक-एक शब्द चबाकर कहा।

"मैंने मारी या मेरे आदमियों ने, क्या फर्क पड़ता है।"

"बहुत फर्क पड़ता है। तुम्हारे कहने पर उसे गोली मारी गई?" देवराज चौहान पूर्ववतः लहजे में बोला।

"हां। और मेरे कहने पर अब तुम्हें गोली मारी जायेगी। मेरे सवालों का जवाब दे दो तो शायद बच जाओ।"

देवराज चौहान के चेहरे पर जलजले के भाव उभरे, परन्तु स्वर पर काबू ही रखा।

"क्या जानना चाहते हो?" देवराज चौहान मालूम करना चाहता था कि वो क्या पूछना चाहता है।

"महादेव, तुम्हारा क्या लगता था?"

"दोस्त।"

"उसने तुम्हें माहिम रेलवे स्टेशन पर मिलने के लिये बुलाया?"

"हां।"

"और वहां, मरने से पहले उसने तुम्हें क्या बताया?"

"सब-कुछ।" देवराज चौहान का दिमाग तेजी से चल रहा था।

"क्या, सब-कुछ?" इस बार शांत-सपाट आवाज में कठोरता आ गई थी।

"सब-कुछ में, सब-कुछ आता है।" देवराज चौहान का स्वर तीखा हो गया।

"उस सब-कुछ का, कुछ बताओ।"

"तीन सौ दो।" देवराज चौहान ने अंधेरे में तीर छोड़ा।

"ओह!" शांत-सपाट आवाज में खतरनाक भाव आ गये थे—"जिस बात का डर था, वही हुआ। मरते-मरते वो बता गया तुम्हें सब-कुछ। हमने इसलिये मुंह बंद किया उसका कि, वो कुछ बोल न सके। अब तुम क्या चाहते हो तीन सौ दो के बारे में जानने के बाद?"

तीर निशाने पर लग चुका था।

"मैंने क्या करना है।"

"तुम इतने सीधे नहीं हो। यह तभी मालूम हो गया, जब तुम मेरे आदमियों की निगाहों से ओझल हो गये। वैसे भी महादेव के दोस्त हो तो महादेव वाले गुण तो तुममें होंगे ही। लेकिन मैं तुम्हें जीने का मौका देना चाहता हूं।"

"जीने का मौका?" देवराज चौहान के दांत भिंच गये।

"हां। महादेव अपनी बेवकूफी की वजहों से मारा गया। तुम मुझे समझदार लगते हो।"

"अपनी समझदारी का सबूत देने के लिए मुझे क्या करना होगा?" देवराज चौहान की आवाज में कड़वापन आ गया।

"इस सारे मामले को भूल जाओ। तीन सौ दो को तो हमेशा के लिए भूल जाओ, वरना तुम्हारी हालत महादेव जैसी ही होगी।"

"कह लिया?" देवराज चौहान के होंठों से गुर्राहट निकली।

"हां।"

"अब कान खोलकर सुनो, तुम जो भी हो।" देवराज चौहान

ने दरिन्दगीभरे स्वर में कहा—"मैंने जो करना है वो करूंगा। तुम मुझे रोक नहीं सकते। बहुत जल्द मैं तुम तक पहुंचने वाला हूं। अपनी सुरक्षा का बढ़िया से बढ़िया इन्तजाम कर लो, ताकि मरते वक्त तुम्हें ये मलाल न रहे कि, अपने बचाव में कुछ कर न सके।"

"मतलब कि तुम्हें मौत का खौफ नहीं?" कानों में पड़ने वाली आवाज में हिंसक भाव आ गये थे।

"उसी खौफ की तस्वीर तुम्हें दिखा रहा हूं। जिसे ठीक से तुम समझ नहीं पा रहे। रही बात तीन सौ दो की तो, यह आने वाला वक्त बतायेगा कि क्या होता है?"

"मौत का इन्तजार करो अब—।" इसके साथ ही दूसरी तरफ से लाईन काट दी गई।

देवराज चौहान ने रिसीवर रखा। चेहरा कठोर हुआ पड़ा था। देवराज चौहान जानता था कि ये जो भी है, अब हाथ धोकर उसके पीछे पड़ जायेगा। क्योंकि उसके मुंह से तीन सौ दो सुनकर, वो बुरी तरह बौखला गया है। और वो नहीं चाहता कि तीन सौ दो के बारे में कोई जाने। क्या है ये तीन सौ दो?

देवराज चौहान को लगने लगा जैसे इस तीन सौ दो के बारे में जानना बहुत जरूरी हो गया है। बहरहाल अब सावधानी की जरूरत है। उसे खत्म करने की भरसक चेष्टा की जायेगी। और उसे बचना होगा।

□□

□□

जगमोहन जब महादेव के एक कमरे वाले घर पर पहुंचा तो दरवाज बंद पाया। बाहर ताला लगा हुआ था। स्पष्ट था कि अभी पुलिस महादेव की लाश की शिनाख्त नहीं कर पाई, वरना पूछताछ के लिये पुलिस अब तक यहां पहुंची होती। ताले पर अपना ताला भी ठोक गई होती।

जगमोहन ने आसपास देखा। गली में दो दरवाजों को छोड़कर तीसरा दरवाजा खुला नजर आया तो जगमोहन वहां जा पहुंचा। खुले दरवाजे को थपथपाया तो बीस बरस का लड़का सामने आया।

"किससे मिलना है?" लड़के के बोलने का ढंग ही शायद अक्खड़ था।

"मैं, उस कमरे वाले से मिलने आया था।" जगमोहन ने हाथ से इशारा किया—"महादेव नाम है उसका। वहां ताला लगा हुआ है। तुम बता सकते हो वह कहां मिलेगा या कब गया था?"

लड़के के चेहरे पर उखड़ेपन के भाव गहरे हो गये।
"बुढ़ापे में मजे ले रहा है।"
"क्या मतलब?"
"बीते तीन-चार दिनों से साला खूबसूरत छोकरी को साथ रखे हुए है। दोनों कमरे में जाते ही, दरवाजा भीतर से बंद कर लेते हैं। जान तो है नहीं, मालूम नहीं उसके साथ क्या आचार डालता होगा।"
"तुम इतने नाराज क्यों हो रहे हो?" जगमोहन ने गहरी निगाहों से देखा।
"कल दोपहर को उसके साथ झगड़ा हो गया था मेरा।" उसने उसी ढंग से कहा।
"क्यों?"
"छोकरी के साथ घर से निकल रहा था तो थोड़ा-सा मजाक कर लिया छोकरी से। बस, वो साला महादेव उबल पड़ा, जैसे नया-नया जवान हुआ हो। लोगों ने बचा लिया, वरना बहुत मार खाता मेरे हाथों।"
जगमोहन ने समझने वाले ढंग से सिर हिलाया।
"तीन-चार दिन से महादेव उस लड़की के साथ था?"
"हां।" लड़का व्यंग्य से बोला–"हद होती है मेल-मिलाप की। वो सूखा-सा बूढ़ा और वो दस को पछाड़ने वाली घोड़ी। मेरे जैसे के साथ होती तो, देखने में तकलीफ नहीं होती।"
"बात तो तुम्हारी सही है।" जगमोहन ने फौरन कहा–"उस युवती का हुलिया बताना।"
"हुलिया क्या होता है वो तो बला की खूबसूरत थी।" लड़का अजीब-से स्वर में कह उठा–"देखो तो लार टपकती थी। न देखो तो सपनों में आकर, छाती पर बै[illegible] थी और–।"
"लम्बी थी?" जगमोहन ने उसे ख्यालों की दुनियां से बाहर निकाला।
"ठीक-ठीक थी। खूबसूरत इतनी कि सामने वाले की हाय-हाय करा देती थी। मेरी तो कितनी बार हो चुकी है।"
"क्या पहनती थी?"
"कमीज-सलवार। लम्बे सिल्की बाल, कंधों तक आकर, लहराते रहते थे। छरहरा बदन। जब मुस्कराती तो गालों में गड्ढे पड़ जाते। कानों में टॉप्स डाले रखती थी। गले में सोने की चेन। ऊंची एड़ी के सैंडिल पहनती थी। लेकिन बहुत सादे ढंग से चलती थी। उसे अपनी खूबसूरती पर जरा भी घमण्ड नहीं था।"

"बहुत बारीकी से देखा है..." लड़के ने
"देखने के अलावा और कर भी क्या सकता था।" लड़के ने
बुरा-सा मुंह बनाया।

"आखिरी बार उसे कब देखा?"

"कल ही। महादेव के साथ जा रही थी। तभी मेरा झगड़ा हुआ।
उसके बाद रात को नहीं लौटे। मैं तो उसकी राह में पलकें बिछाये
रहा। सोचा एक नजर जी भरकर देख लूं, तो चैन की नींद आयेगी।"

"महादेव भी उसके बाद नहीं लौटा?"

"नहीं। दोनों में से कोई भी नहीं लौटा। आज भी कहीं नहीं
गया कि उस बम को देख सकूं।"

"कोई और बात बता सकते हो, उनके बारे में?"

"नहीं।"

"महादेव से और कौन-कौन मिलने आता था?"

"मैं तो सिर्फ अपने काम की बातों से मतलब रखता हूं। और कोई
आता भी हो तो मैं नहीं जानता।" लड़के ने उसे देखा—"तुम कौन हो?"

"मैं भी उसी लड़की को ढूंढ रहा हूं।" जगमोहन ने बात समाप्त
करते हुए कहा।

"क्यों?"

"वो मुझे भी अच्छी लगती थी।" कहने के साथ ही जगमोहन
आगे बढ़ गया।

जगमोहन के लिये यह नई खबर थी कि महादेव के साथ तीन-चार
दिन से एक खूबसूरत लड़की रह रही थी। और कल जब वो एक
साथ यहां से निकले तो न तो महादेव लौटा और न ही लड़की और
आज महादेव को किसी ने गोली मारकर खत्म कर दिया।

गली के कोने में पान वाले की दुकान नजर आई तो जगमोहन
पहुंचा। महादेव सिग्रेट पीता था। उसे पूरा विश्वास था कि वो
महादेव को जरूर जानता होगा।

"महादेव आज आया?" जगमोहन ने छूटते ही पूछा।

"नहीं। कल आया था।" पान वाले ने लापरवाही से कहा—"घर
नहीं है क्या?"

"नहीं।"

"पहले तो अक्सर घर ही मिलता था। अब तो हवा में उड़ रहा
है छोकरी के साथ।" पानवाला मुस्कराया।

जगमोहन होंठ सिकोड़कर मुस्कराया।

"कहां से मारी महादेव ने छोकरी?" जगमोहन ने उसे कुरेदा।

"मालूम नहीं। जब से छोकरी साथ है, महादेव अकेला नहीं मिला। मिला होता तो पूछता।" पान वाले ने हंसकर कहा—"मुझे तो वो छोकरी ही सिरे से पागल लगती है।"

"क्यों?"

"महादेव में ऐसा क्या है जो उसके साथ चिपकी फिर रही है। मर्दों की कोई कमी है क्या।"

"उससे बढ़िया तो तुम हो?" जगमोहन ने मुस्कराकर उसे हवा दी।

"कोई शक है क्या?"

"जरा भी नहीं। वैसे महादेव को तुमने आखिरी बार कब देखा?" जगमोहन ने पूछा।

"कल दोपहर को। पहले उधर रहने वाले छोकरे से उसने झगड़ा किया। सुना है छोकरे ने लड़की को कुछ कह दिया था। उसके बाद जाते वक्त मेरे से सिग्रेट के दो पैकिट लेता गया था। आठ सौ रुपया हो गया। अभी तक चुकता नहीं किया। सोचा था बोलूंगा उससे लेकिन लड़की को साथ पाकर मैंने कुछ नहीं कहा।"

"महादेव से मिलने और कौन-कौन आता था?"

"मुझे तो ध्यान नहीं, मैंने उसे किसी और के साथ देखा हो। वो तो अकेला ही जिन्दगी बिता रहा है। सुना है उसे खून की कोई बीमारी है। डॉक्टर जवाब दे चुके हैं।"

"यहां से महादेव कहां जाता था, कुछ पता है तुम्हें?"

"मुझे कहां पता होगा। लेकिन इतना मालूम है कि जब से वो छोकरी उसके साथ रहने लगी है, तब से उसकी जेब में नोट आ गये हैं। उधर स्टैण्ड से टैक्सी पकड़कर जाता है रोज।"

"टैक्सी?"

"हां।"

"टैक्सी स्टैण्ड कहां है?"

"उस तरफ। जरा-सा आगे जाकर।"

□□

□□

जगमोहन टैक्सी स्टैण्ड पर पहुंचा।

"कहां जाना है बाबूजी?"

पेड़ की छाया की नीचे, चबूतरे पर बैठे ड्राइवरों में से एक ने पूछा। वक्त बिताने के लिये, पांच-छः टैक्सी ड्राईवर तांश खेल रहे थे।

जगमोहन उनके पास चबूतरे पर बैठा और बोला।

"जाना तो कहीं नहीं। कल दिन में पचास-पचपन बरस के आदमी ने कहीं जाने के लिए टैक्सी ली थी। उसके साथ खूबसूरत लड़की भी थी। पता करना है कि वो कहां गये। उन दोनों को कहां छोड़ा?"

"आप कौन हैं?" एक ने पूछा।

"मैं उनका रिश्तेदार हूं। कल से वो मिल नहीं रहे। मुझे तो बहुत चिन्ता हो रही है।"

एक ने दूसरे को देखा।

"कल कोई ऐसी सवारी आई थी?"

"हां उस्ताद। बारह-एक का वक्त होगा। कशमीरा लेकर गया था उन्हें।" दूसरे ने जवाब दिया।

"बुला कशमीरा को।"

"उस्ताद, वो तो सामने वाली दुकान पर पकौड़े खाने गया है। बहुत बुरी तरह उस पर सवार है, पकौड़े खाने का नशा।" कहने के साथ ही वो हंस पड़ा।

"साहब जी को कशमीरा के पास ले जा। उससे बात कर लेंगे।"

वो जगमोहन को सामने वाली दुकान पर मौजूद कशमीरा के पास छोड़ आया और कशमीरा को बता भी दिया कि क्या मामला है!

"पकौड़े खाओगे बाऊजी?"

"नहीं। मैं जानना चाहता हूं कि तुम उन्हें कहां ले गये थे, कल?"

"चैम्बूर–।"

"चैम्बूर में कहां छोड़ा?"

"मार्किट के पास ही सड़क पर उन्होंने टैक्सी रुकवा ली थी।"

"वो मार्किट जो सरकारी फ्लैटों के पास पड़ती है।"

"जी हां। वही मार्किट–।"

"उसके बाद वो कहां गये?"

"मैं क्या कहूं। मैंने तो किराया लिया और वहां से चल पड़ा। सवारी कहां जाती है। इससे हमें क्या मतलब?"

जगमोहन के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।

"कुछ मालूम है सफर के दौरान वे आपस में क्या बात कर रहे थे?" जगमोहन ने पूछा।

"खास तो नहीं बता सकता। क्योंकि सवारियों की बातों पर ध्यान देने का कोई मतलब नहीं है मेरा। इतना मालूम है कि लड़की कुछ घबराई-सी थी और आदमी रह-रहकर उसे तसल्ली दे रहा था,

कि वो सब ठीक कर देगा।" उसके बाद वो कुछ ऊंचे स्वर में बोला— "ओए, मालक की बाई की [illegible] और ले आ।"

"उनके बीच हुई कोई और बात?"

"मैंने बोला बाऊजी। मैं सवारियों की बातों पर ध्यान नहीं देता।" वो चटनी वाली उंगली चाटते हुए बोला— "वो आदमी लड़की से बोला था कि सुरेश जोगेलकर से मिलकर सब ठीक हो जायेगा। वो मेरा पुराना यार है। कुछ ही देर में हम उसके पास पहुंच जायेंगे।"

इसके अलावा उससे कोई काम की बात मालूम नहीं हुई।

□□

□□

जगमोहन चेम्बूर पहुंचा।

चेम्बूर की उसी मार्किट के सामने उसने कार रोकी। दो पल सोच भरी निगाहों से इधर-उधर देखता रहा। टैक्सी ड्राईवर के मुताबिक कल महादेव और लड़की ने यहीं टैक्सी छोड़ी थी और पैदल ही वे दोनों आगे बढ़ गये थे। यहां पर टैक्सी ड्राईवर के मुताबिक ही, सुरेश जोगेलकर से मिलने आये थे। महादेव ने कहा था कि वो उसका पुराना यार है। सब ठीक कर देगा।

महादेव किस चक्कर में था?

वो लड़की कौन थी, जिसे महादेव साथ लिए फिर रहा था। यकीनन वो खास मामला था, वरना महादेव की तबीयत ऐसी नहीं रहती थी कि भागदौड़ करता फिरे।

सुरेश जोगेलकर को इस इलाके में कहां तलाश करे? मात्र नाम के दम पर चेम्बूर जैसे इलाके में उसे नहीं तलाशा जा सकता। महादेव का कहना था कि वो उसका पुराना यार है। मतलब कि सुरेश जोगेलकर किसी न किसी रूप में गैरकानूनी धंधों से जुड़ा हुआ है। और ऐसे लोगों के लिये पूछताछ की सबसे बढ़िया जगह पान की दुकान होती है। क्योंकि यहां हर तरह के लोग आते हैं और हर तरह की बातें करते हैं। पानवालों के कान खुले रहते हैं और मुंह बंद रहता है।

जगमोहन ने पार्किंग तलाश करके कार पार्क की और पैदल ही आगे बढ़ गया। सड़क के दोनों तरफ दुकानें थीं। वो फुटपाथ पर चल रहा था और व्यस्त सड़क पर ट्रैफिक दौड़ रहा था।

कुछ आगे जाने पर दुकानों के बीच फंसी छोटी-सी पान की दुकान नजर आई। वहां एक-दो ग्राहक खड़े थे। जगमोहन वहां जा

पहुंचा। पान वाले ने कोल्ड-ड्रिंक भी रखी हुई थी। जगमोहन ने एक कोक की बोतल खुलवाई और घूंट भरने लगा।

जब वहां मौजूद उसके दोनों ग्राहक चले गये तो जगमोहन ने पूछा।

"सुरेश जोगेलकर कहां रहता है? जानते हो उसे?"

पचास वर्षीय पान वाले ने गहरी निगाहों से उसे देखा।

"क्या काम है उससे?"

"मिलना है।" जगमोहन समझ गया कि वो जोगेलकर को जानता है।

"मेरी मानों तो फौरन यहां से चले जाईये।" पानवाला धीमे स्वर में बोला।

जगमोहन ने आंखें सिकोड़कर उसे देखा।

"क्यों?"

"दो घण्टे पहले, चार लोग अपना चेहरा ढांपे जोगेलकर के रैस्टोरेंट में आये और उसे गोलियों से भूनकर चले गये। किसी को नहीं पता। मारने वाले कौन थे? लेकिन मरने वाला जोगेलकर ही था।"

"तुम उसकी लाश देखकर आये हो?"

"मेरी दुकान पर पचास तरह के लोग आते हैं और पान मुंह में दबाकर सिग्रेट सुलगाकर, आपस में अपनी-अपनी राय पेश करते हैं। ऐसे में मुझे किसी खबर को पाने के लिये कहीं जाना नहीं पड़ता। इस वक्त जोगेलकर के रैस्टोरेंट में पुलिस है। वहां जाओगे तो वो आपको भी पकड़कर बिठा लेंगे।"

जगमोहन समझ गया कि मामला गहरा होता जा रहा है। कल महादेव और उसके साथ की लड़की सुरेश जोगेलकर से मिले थे। पानवाले के मुताबिक दो घण्टे पहले जोगेलकर को मारा गया। जबकि महादेव को गोली लगे चार-पांच घण्टे हो चुके हैं।

तो क्या जोगेलकर को इसलिये मारा गया कि महादेव और वो लड़की उससे मिले थे?

"जोगेलकर क्या धंधा करता था।"

"बोला तो, रैस्टोरेंट था उसका। रैस्टोरेंट की आड़ में कई गलत काम करता था।"

जगमोहन को जब महसूस हुआ कि पान वाले से अब और कोई काम की बात नहीं मालूम होने वाली तो कोक के पैसे देकर वहां से चल पड़ा। महादेव और उसके साथ की लड़की किस काम में लगे हुए थे, यह जानने के लिये कोई दूसरा रास्ता तलाश करना होगा।

क्योंकि सुरेश जोगेलकर की मौत के साथ, आगे बढ़ने का यह रास्ता बंद हो गया था।

जगमोहन के सामने सबसे बड़ा सवाल था कि महादेव के साथ वो लड़की कौन थी?

□□

□□

जगमोहन ने फोन करके देवराज चौहान को सब कुछ बताया।

"अगर सुरेश जोगेलकर जिन्दा मिल जाता तो शायद मालूम हो पाता कि महादेव किस मामले में हाथ डाले था या फिर वो लड़की कौन थी जो चार-पांच दिनों से उसके साथ रह रही थी।" जगमोहन ने कहा—"अब मेरे पास आगे बढ़ने का ऐसा कोई रास्ता नहीं है कि महादेव या उस लड़की की हरकतों की जानकारी पा सकूं।"

"जगमोहन! यह मामला बहुत गम्भीर है। सावधान रहना। हो सकता है कोई तुम पर नजर रखे हुए हो।"

"ऐसा क्यों?"

जवाब में देवराज चौहान ने बताया कि किस तरह उन लोगों ने उसकी जान लेने की चेष्टा की और फिर बाद में धमकी भरा फोन आया।

"ओह! इसका मतलब, वो लोग हर समय तुम पर नजर रखे हुए हैं।"

"हां। ऐसे में मेरा भागदौड़ करना ठीक नहीं।"

"लेकिन वे लोग बंगले को घेरकर, तुम्हें खत्म करने की चेष्टा भी कर सकते—।"

"इस बात की तुम फिक्र मत करो। ऐसे लोगों से निपटने के लिए बंगले में पूरा इन्तजाम है।" जगमोहन के कानों में देवराज चौहान का खतरनाक स्वर पड़ा—"तुम बंगले में आने की कोशिश नहीं करना। अगर तुम भी उन लोगों की निगाहों में आ गये तो फिर काम करने में दिक्कतें पेश आयेंगी। जरूरत पड़ने पर रात किसी होटल में बिता लेना। इस तरफ नहीं आना।"

"समझ गया। लेकिन यह नहीं समझ पा रहा हूं कि अब इस मामले में आगे क्या करूं?"

"तुमने बताया कि वो लड़की चार-पांच दिन से महादेव के कमरे में टिकी हुई थी।" देवराज चौहान की आवाज आई।

"हां। पूछताछ में यही बात सामने आई है।"

"पुलिस अभी तक महादेव के कमरे तक नहीं पहुंची?"

"जब मैं वहां गया था तो नहीं पहुंची थी। क्योंकि किसी को नहीं मालूम था कि महादेव अब नहीं रहा।"

"किसी तरह महादेव के कमरे की तलाशी लो। वो लड़की चार-पांच दिन से वहां थी तो हो सकता है वहां ऐसी कोई चीज मिल जाये, जिससे कि मालूम हो–वो कौन थी।" देवराज चौहान की आवाज उसके कानों में पड़ी।

"ठीक है। मैं महादेव के कमरे की तलाशी लेता हूं।"

"पुलिस से बचकर। अगर पुलिस वहां हो तो कुछ भी करने की कोशिश मत करना।" देवराज चौहान ने उसे सावधान किया।

"इस बात का मैं ध्यान रखूंगा।" कहने के साथ ही जगमोहन ने रिसीवर रख दिया।

□□

□□

जगमोहन फौरन वापस महादेव के घर पहुंचा।

पुलिस अभी तक वहां नहीं पहुंची थी। जगमोहन ने कार को वहां से कुछ दूर ही खड़ा किया और पैदल ही महादेव के घर पहुंचा। पहले की तरह वहां ताला लटक रहा था। आसपास निगाह मारी। कोई नजर नहीं आया। गली खाली पड़ी थी। उस लड़के के घर का दरवाजा भी बंद था जो, पहले मिला था।

जगमोहन ने जेब से मास्टर 'की' निकाली और मात्र बीस सेकण्ड की कोशिश के बाद वो ताला खोल लिया। ताला हटाकर, सिटकनी खोली। भीतर प्रवेश किया फिर पलटकर दरवाजा भीतर से बंद करके सिटकनी चढ़ा दी। भीतर अंधेरा-सा लगा। इतनी ज्यादा रोशनी नहीं थी कि बारीकी से हर तरफ निगाह मारी जाये। जगमोहन ने आगे बढ़कर, लाईट ऑन कर दी।

बल्ब का पीला प्रकाश वहां फैल गया।

जगमोहन की निगाह हर तरफ फिरने लगी।

एक तरफ चारपाई पड़ी थी। जिस पर बिस्तरा बिछा हुआ था। जगमोहन जानता था कि यह महादेव का बिस्तरा था। दूसरी तरफ दीवार से लगा, फर्श पर ही एक बिस्तरा बिछा था। जगमोहन समझ गया कि नीचे बिछा बिस्तरा उस युवती का होगा, जो तीन-चार दिन से उसके साथ रह रही थी।

जगमोहन की निगाह हर तरफ घूम रही थी।

महादेव का सामान वैसे ही पड़ा था, जैसे उसने पहले देखा था।

जाने कितने महीनों पहले वह यहां आया था। कमरे में ही रस्सी बंधी थी। जिस पर बेतरकीबी से कपड़े टांग रखे थे।

जगमोहन की निगाह, एक तरफ पड़े खूबसूरत-से सूटकेस पर जा टिकी। जो कि यकीनन महादेव का नहीं हो सकता। जो कि पक्का उसी युवती का रहा होगा, जो उसके साथ रह रही थी। जगमोहन सूटकेस के पास पहुंचा और भीतर पड़े सामान को चैक करने लगा।

सबसे पहले उसके हाथ में सौ-सौ की तीन गड्डियां आईं। यानि कि तीस हजार रुपया। तीस हजार रुपया सूटकेस में मौजूद था। युवती के कीमती कपड़े पड़े थे। वो महादेव के साथ रह रही थी। अब महादेव मर चुका था। युवती का सामान यहां पड़ा था और वो लापता थी। नोटों की गड्डियां उसने वहीं रहने दीं।

युवती के बारे में दो ही बातें हो सकती थीं।

या तो महादेव की तरह उसे भी मार दिया गया है।

या फिर वो डर की वजह से कहीं छिपी बैठी है। कम से कम यह सामान या तीस हजार रुपया लेने यहां नहीं आने वाली।

जगमोहन सूटकेस की पॉकिट की तलाशी लेने लगा। उसकी उंगलियां किसी कागज जैसी चीज से टकराईं तो दो उंगलियों से उस कागज को दबाकर बाहर खींचा। वो विजिटिंग कार्ड था। उस पर अनिता गोस्वामी नाम लिखा था और नीचे पता लिखा था। जगमोहन ने कार्ड को जेब में रख लिया और बाकी चीजों की तलाशी लेने लगा। सूटकेस में कपड़ों के सबसे नीचे उसे पचपन-साठ वर्षीय व्यक्ति की तस्वीर मिली।

जगमोहन ने ध्यान से तस्वीर देखी।

तस्वीर वाला व्यक्ति यकीनन कोई अमीर आदमी था। अमीरी की छाप तो जैसे उसके चेहरे पर छपी नजर आ रही थी। वह स्वस्थ शरीर का मालिक था।

जगमोहन ने उस तस्वीर को भी जेब में रख लिया।

उसके बाद पूरे कमरे की तलाशी ली।

महादेव के सामान की भी एक-एक चीज को देखा। दोनों बिस्तरों को झाड़कर देखा कि कहीं सावधानी के नाते, उनमें तो कुछ छिपा नहीं रखा। लेकिन वहां कुछ नहीं था।

बीस मिनट जगमोहन को महादेव के उस कमरे में लगे।

उसके बाद वो बाहर निकला। दरवाजे पर सिटकनी चढ़ाकर

आगे बढ़ गया। गली में दो-चार लोग आ-जा रहे थे। लेकिन किसी ने.भी उसकी तरफ-ध्यान नहीं दिया।

ज्योंहि जगमोहन गली से बाहर निकला तो उसे पुलिस-जीप खड़ी दिखाई दी। जिसमें चार पुलिस वाले थे। साथ में एक व्यक्ति था जो जीप से उतरता हुआ पुलिस वालों से कह रहा था।

"आईये साहब! मैं आपको बताता हूं, महादेव कहां रहता था?"

स्पष्ट था कि महादेव की शिनाख्त हो चुकी है और वह आदमी पुलिस को महादेव के घर के बारे में बताने के लिये साथ ही आया था।

जगमोहन उनकी बगल से गुजरता हुआ आगे बढ़ता चला गया। सामने ही उसकी कार खड़ी थी। सोचों में वो वीजिटिंग कार्ड था, जिस पर पते के साथ अनिता गोस्वामी लिखा था। या तो वो कार्ड उसी युवती का था, जो महादेव के साथ रह रही थी। या फिर उस युवती की किसी सहेली, या पहचान वाली का होगा। और वो तस्वीर किस व्यक्ति की है, जो सूटकेस से मिली? जाहिर है, सूटकेस में तस्वीर है तो युवती का कोई खास ही रहा होगा। पिता भी हो सकता है, या फिर कोई और भी।

जगमोहन को लगा, जैसे मामला उलझा जा रहा है। महादेव मारा जा चुका है। जिस युवती को तलाश कर रहा है, उसका चेहरा तक नहीं जानता। ऐसे में तीन सौ दो नम्बर के बारे में जानना आसान नहीं कि वो किस चीज का नम्बर है। अगर वो युवती मिल जाये तो, शायद सारे सवालों का जवाब मिल जाये।

जगमोहन कार में बैठा और आगे बढ़ गया।

अब उसे अनिता गोस्वामी के पते पर जाना था, जिसका कार्ड युवती के सूटकेस में से मिला था।

□□

□□

सोहनलाल सीधा शेरू के दारूखाने में पहुंचा था। क्योंकि महादेव वहां अक्सर दारू पीने जाता था। सोहनलाल इस बात से बाखूबी वाकिफ था। यहां से महादेव की बीते-दिनों की दिनचर्या के बारे में जाना जा सकता था। बशर्ते कि महादेव यहां आता-रहा हो।

शाम के चार बज रहे थे।

दारू के ठिकाने पर बजे की परवाह किसे। उस हॉल में बेंचों और टूटी-फूटी टेबलों पर बैठे, पन्द्रह-बीस लोग पी रहे थे। दारू की स्मैल और उनकी न समझ में आने वाली आवाजें गूंज रही थीं।

एक तरफ सजा रखी दुकान को जैसे बार का रूप दे रखा था। दो-चार दारू देने और खाली गिलासों-कटोरियों को उठाने में व्यस्त थे। सोहनलाल ने एक ही निगाह में, वहां का नजारा लिया।

शेरू ने इलाके की पुलिस को पूरी तरह 'फिट' कर रखा था। धंधा जोरों से चल रहा था।

सोहनलाल बोतलों के आगे बने काउन्टर पर पहुंचा, यहां मोटा-सा व्यक्ति खड़ा उसे देख रहा था। उसके चेहरे से ही लग रहा था कि वो हर एक घण्टे में, एक पैग लगा ही लेता है।

"क्या हाल है लाला?" सोहनलाल पास पहुंचकर बोला।

"पहचान लिया सोहनलाल! मैं तो समझा था, भूल गया होगा।" लाला ने अपने चेहरे पर हाथ फेरा।

"सोहनलाल जिस गली से गुजर जाता है, उस रास्ते को कभी नहीं भूलता।" सोहनलाल मुस्कराया—"साल से ऊपर हो गया होगा, मुझे यहां आये?"

"हो गया होगा। मैं दिन-महीने साल नहीं गिनता। इतना मालूम है, तू बोत देर के बाद आया।"

सोहनलाल ने काउन्टर से टेक लगाकर गोली वाली सिग्रेट सुलगाई।

"शेरू कैसा है?"

"उसका हाल हमेशा बढ़िया ही रहता है। इस वक्त तो वो और भी बढ़िया हुआ पड़ा है।"

"इस वक्त, कोई खास बात?"

"चार दिन पहले ही उसने बीस बरस की छोकरी से शादी की है?"

"बीस बरस की छोकरी से शादी! शेरू ने—?" सोहनलाल ने मुंह बनाकर उसे देखा।

"हां। सुनकर मजा आया होगा।"

"दिमाग खराब हो गया है शेरू का जो—।"

"वो अक्लमंद है। उसका दिमाग़ कभी खराब नहीं होता।" लाला मुस्कराया।

"क्यों?"

"उसको मालूम है दो महीने बाद, छोकरी उसकी आदतों से तंग आकर भाग जायेगी। उसके बाद वो किसी और को पकड़ लेगा। दो महीने तो उसके मुफ्त में निकले।" लाला हौले से हंसा।

सोहनलाल गहरी सांस लेकर रह गया।

"तूने पीनी शुरू कर दी?" लाला ने उसे देखा।

"नहीं। मेरे लिये गोल्ड वाली सिग्रेट ही बहुत है।" सोहनलाल मुस्कराया।

"तो फिर खामखाह तो इधर आया नहीं होगा।"

"ठीक बोला तू।" सोहनलाल ने लापरवाही से कहा—"महादेव से काम था। लेकिन वो किधर भी मिल नहीं रहा। ध्यान आया कि वो इधर बराबर दारू पीने आता है। आता है क्या?"

"आता है।"

"आज आया या आयेगा?"

"मालूम नहीं।"

"क्यों?"

"दो दिन से नहीं आया। आखिरी बार जब आया था तो खूबसूरत-सी छोकरी उसके साथ थी। मैं तो उसके साथ छोकरी को देखकर हक्का-बक्का रह गया। लेकिन वो यहां रुका नहीं। पूरी की पूरी बोतल लेकर उल्टे पांव लौट गया। पूरे दो हजार उस पर चढ़ चुके हैं। आज-कल करता रहता है। देने का नाम नहीं लेता। किसी दिन साले की गर्दन पकड़नी पड़ेगी। शेरू को हिसाब तो मैंने देना होता है।" लाला ने मुंह बिचकाया।

सोहनलाल ने लाला को घूरकर देखा।

"उसके साथ छोकरी थी। वो भी खूबसूरत–।"

"हां।"

"दीमाग तो नहीं खराब हो गया तेरा। महादेव छोकरी के लायक है। उसकी हालत....।"

"वो मैं नहीं जानता कि छोकरी का क्या करता होगा। लेकिन उसके साथ छोकरी थी।" लाला ने उसकी बात काटी।

"हुलिया बता।"

"किसका?"

"छोकरी का बतायेगा। महादेव का तो नहीं पूछ रहा।" सोहनलाल की निगाह लाला पर पड़ी।

लाला ने छोकरी का हुलिया बताया।

सोहनलाल को वास्तव में हैरानी हुई कि ऐसी युवती महादेव के साथ। जबकि वो महादेव की आदत को अच्छी तरह जानता था कि औरतों में उसकी दिलचस्पी न के बराबर थी।

"आजकल महादेव के रंग-ढंग ठीक नहीं लग रहे।" लाला ने कहा।

"क्यों—और क्या किया है उसने?"

"मुझे लगता है कि उसकी आदतें बिगड़ चुकी हैं।" लाला पुनः बोला—।

"आगे तो बोल—।"

"पांच-छः दिन पहले असलम खान का आदमी आया था। तब महादेव यहां बैठा दारू पी....।"

"असलम खान—वो साला नशे का म बेचने वाला?" सोहनलाल ने टोका।

"जानता है?"

"हां। पहले उसी से सिग्रेट के लिये गोली ले था। लेकिन वो हरामी भाव तेज लगाता था। मैंने उससे माल लेना छोड़ दिया। उसका चार हजार रुपया मैंने देना है। खैर फिर क्या हुआ?"

"उसका आदमी आया। महादेव से मिला, दो मिनट तक दोनों ने घुट-घुट कर बातें कीं फिर महादेव दारू की बोतल बगल में दबाकर उसके साथ चला गया। लगता है महादेव ने नशा करना शुरू कर दिया है जो—।"

"नहीं। महादेव शराब के अलावा और कुछ नहीं लेता था।" सोहनलाल ने विश्वासभरे स्वर में कहा।

"नही लेता था! था से मतलब?" लाला ने सीधे-सीधे सोहनलाल को देखा।

"नहीं रहा वो अब।" सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

"मर गया?"

"मार दिया गया। गोली मार दी आज दिन में उसे किसी ने।" लाला के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।

"मुझे तो विश्वास नहीं आ रहा कि महादेव को किसी ने मार दिया। भला-चंगा होता था।" लाला ने सिर हिलाते हुए कहा—"मैं तो पहले ही कह रहा था महादेव की आदतें बिगड़ चुकी हैं। असलम खान नशीला माल ही बेचने का धंधा नहीं करता और भी कई उलटे-पुलटे काम करता है। महादेव को उससे वास्ता नहीं रखना चाहिये था।"

सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट का कश लिया।

"कुछ मालूम पड़ा, क्यों मरा महादेव?"

"नहीं।"

"सब बातें एक तरफ, ये बता कि तू उसके मरने के बाद, उसके बारे में क्यों पूछता फिर रहा है?"

"यूं ही।"

"यूं ही तो कुछ नहीं होता। वैसे वो तेरा दोस्त था ना?"

"दोस्त नहीं, जानकार–।"

"एक ही बात है। मरने के बाद, उसकी आत्मा को शान्ति पहुंचाना चाहता है तो कुछ कहूं।" लाला ने कहा।

"कह–।"

"उसका उधार चुका दे। तब वो चैन से स्वर्ग में रह सकेगा। बोल, खाता खोलूं उसका?"

सोहनलाल ने तीखी निगाहों से लाला को देखा।

"तेरे को शायद पता नहीं कि स्वर्ग से महादेव की चिट्ठी आई है। वहां उसकी आत्मा को चैन मिल चुका है और खासतौर से उसने लिखा है कि लाला को मेरा सलाम कहना।" कहने के साथ ही सोहनलाल वहां से हिला और बाहर की तरफ बढ़ता चला गया। सोचों में असलम खान था। महादेव का और उसका कोई मेल नहीं था।

□□

□□

सोहनलाल, असलम खान के उस ठिकाने पर पहुंचा, जहां से हर तरह का नशा मिलता था। मुद्दत बाद सोहनलाल यहां आया था। असलम खान से गोली लेनी उसने कब की छोड़ रखी थी।

कोई नया ही बंदा उसे वहां नजर आया।

"क्या चाहिये?" सोहनलाल को भीतर आते देख वो बोला।

"असलम खान कहां है?"

"क्यों, तेरे को क्या काम पड़ गया उससे? पहले कभी नहीं देखा तेरे को।" उसके माथे पर बल पड़े।

"पहले तूने इसलिये नहीं देखा कि पहले तू यहां नहीं था। समझा क्या।" सोहनलाल ने उसकी टेबल थपथपाकर कहा–"असलम खान को बोल, सोहनलाल आया है।"

"सोहनलाल?"

"हां, वो पहचानेगा।–जा।"

सोहनलाल को घूरता, वो पीछे लगे दरवाजे में चला गया। दूसरे ही मिनट लौटा।

"जा। वो तेरा इन्तजार कर रहा है। किधर को जाना है?"

"फिक्र मत कर। यहां का नक्शा कभी मैंने ही बनाया था। तू

अपनी ड्यूटी पर लगा रह।" कहने के साथ ही सोहनलाल पीछे के दरवाजे में प्रवेश कर गया।

तीन-चार कमरों को पार करने के बाद वो, केबिन जैसे छोटे-से कमरे में पहुंचा। वो जगह किसी ऑफिस की तरह लग रही थी। वहां बैठा पचास वर्षीय व्यक्ति फाइल खोले, हाथ में पैन थामे हिसाब लगाने में व्यस्त था। उसके चेहरे से स्पष्ट लग रहा था कि वो महा घिसा हुआ इन्सान था।

उसने एक निगाह सोलनलाल पर डाली फिर अपने काम में व्यस्त होता हुआ बोला।

"आ। बैठ सोहनलाल-।"

"कैसे हो असलम खान?" सोहनलाल बैठते हुए बोला।

"ठीक हूं। तेरे से चार हजार रुपया लेना है।" असलम खान अपने काम में व्यस्त बोला।

"मिल जायेगा। मैं भागा नहीं जा रहा।"

"दो साल पहले भी तूने यही कहा था।"

"वो अब भी कह रहा हूं।"

"कहते-कहते एक दिन मर जायेगा लेकिन मेरा चार हजार नहीं देगा। जल्दी देना।"

सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट सुलगाई।

"अब तू मेरे से गोली भी नहीं लेता। श्याम के यहां से माल लेता है ना?"

"वो भाव ठीक लगाता है।"

"मैं भी ठीक लगा दूंगा। यहां से ले जाया कर।" कहते हुए वो अभी भी हिसाब लगाने में उलझा था।

सोहनलाल ने कश लिया।

"बोल क्यों आया?"

"तूने शेरू के बार से, अपना आदमी भेजकर, महादेव को बुलाया था।" सोहनलाल की निगाह उस पर जा टिकी।

असलम खान की निगाह फाइल से उठकर सोहनलाल पर लग गई।

"पांच-छः दिन हो गये इस बात को। आज तू क्यों पूछने आया?"

"महादेव से काम है। वो मिल नहीं रहा।" सोहनलाल बोला- "उसके बारे में शेरू के दारूखाने में पूछने गया तो लाला ने बताया, तुम्हारा आदमी उसे ले गया था।"

"हां। वो आया था। लेकिन मैंने उसे बांध नहीं रखा। होगा कहीं। ढूंढ ले।"

"ढूंढा। नहीं मिला।"

"मिल जायेगा। मैंने उसे कोई काम दिलाया था। वो उसमें व्यस्त होगा। एक-दो दिन में नजर आ जायेगा।"

"क्या काम बताया था?"

असलम खान ने पैन फाइल में रख दिया।

"वो तेरे जानने का नहीं है। महादेव बताये तो उससे पूछ लेना—।" असलम खान बात समाप्त करने वाले ढंग से बोला।

"वो नहीं बतायेगा।" सोहनलाल ने सिर हिलाया।

"तेरी खास पहचान वाला है वो। नहीं बतायेगा तो तुम जानो।" असलम खान ने गहरी निगाहों से सोहनलाल को देखा—"महादेव के लिये तू इतना क्यों तड़प रहा है। मुझे मिला तो उसे, तेरे बारे में बोल दूंगा।"

"तेरे को भी नहीं मिलेगा।" सोहनलाल ने पुनः सिर हिलाया।

असलम खान की आंखें सिकुड़ीं।

"बात क्या है? खुलकर बोल।"

"महादेव को आज किसी ने गोली मार दी है। वो मर गया है।" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा।

असलम खान के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।

"महादेव को गोली मार दी। वो मर गया।" असलम खान की आवाज में अविश्वास था।

"वो उसी काम की वजह से मरा है, जो तुमने उसे दिलवाया था।" सोहनलाल ने तुक्का मारा।

"लेकिन वो काम मरने-मारने वाला नहीं था। उस काम में गोली चलने की कोई गुंजाइश ही नहीं थी।"

"क्या था वो काम?"

"तू क्या करेगा जानकर। महादेव मर गया तो बात खत्म।" असलम खान ने गहरी सांस ली।

"तेरे को मालूम है महादेव ने देवराज चौहान की बांहों में दम तोड़ा।" सोहनलाल ने उसे घूरा।

"क्या?"

"जब महादेव को गोली लगी तो देवराज चौहान से वो बात कर रहा था।"

असलम खान सतर्क-सा दिखने लगा।

"वो, देवराज चौहान को कुछ बताना चाहता था। बात करना चाहता था। लेकिन उससे पहले ही उसे शूट कर दिया गया। अब देवराज चौहान जानना चाहता है कि महादेव क्या काम कर रहा था। मेरी बात पर यकीन नहीं तो फोन लगाऊं देवराज चौहान को।" सोहनलाल ने फोन की तरफ हाथ बढ़ाया–"मेरे से बात करना तेरे को सस्ता पड़ेगा। देवराज चौहान से तूने सीधी बात की तो शायद तेरे लिए सौदा महंगा हो जाये।"

असलम खान ने सोहनलाल को रिसीवर नहीं उठाने दिया।

"बात मत बढ़ा। बात कुछ भी नहीं है।"

"वो जो बात कुछ भी नहीं है। वो ही मैं जानना चाहता हूं तूने महादेव को क्या काम दिलवाया?"

असलम खान ने होंठ सिकोड़कर दो पल के लिये सोचा।

उसे देखते सोहनलाल ने सिग्रेट सुलगाई।

"कहां गोली मारी?"

"माहिम रेलवे स्टेशन के सामने।"

"हो सकता है, पुरानी रंजिश का मामला हो। मेरे दिलाये काम की वजह से वो न मरा हो।"

"ये बात बाद में तय हो जायेगी। तू बात कर।"

"मेरे पहचान वाले आदमी ने बताया कि, एक युवती को किसी ऐसे आदमी की जरूरत है, जो मुम्बई बन्दरगाह के बारे में जानकारी रखता हो और गोताखोर भी हो। इसके लिये वह लाख रुपया दे सकती है। एक-दो दिन का काम [illegible] महादेव का ध्यान आया। कभी वो, जवानी के वक्त मुम्बइ बन्दरगाह पर ही कोई काम करता था और गोताखारी भी जानता है। मैं जानता था कि महादेव को पैसे की जरूरत है। वो बीमार है। मैंने उसे और युवती को मिला दिया। बस यही काम किया था मैंने। उसके बाद मुझे उन दोनों की कोई खबर नहीं।"

"सच कह रहा है?"

"इस मामले में देवराज चौहान है तो मैं झूठ नहीं बोल सकता।" असलम खान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्या नाम था उस युवती का?"

"अनिता गोस्वामी।"

"उसका पता?"

"पता तो–।" कहते-कहते असलम खान ठिठका, फिर टेबल का ड्राअर खोलते हुए बोला–"जब वो पहली बार मुझसे मिली थी तो उसने अपना कार्ड दिया था। वो शायद यहीं–ये रहा।" कहने के साथ ही ड्राअर से कार्ड निकालकर सोहनलाल की तरफ बढ़ाया–"यह अनिता गोस्वामी का पता है।"

सोहनलाल ने कार्ड लेकर देखा। उस पर अनिता गोस्वामी का नाम और पता लिखा था।

"ये अनिता गोस्वामी तेरे से कितनी बार मिली?"

"दो बार। पहली बार मेरा आदमी इसे लेकर मेरे पास आया था। दूसरी बार तब, जब महादेव को मैंने इसके साथ किया था। दोनों बार वो यहीं आई थी।" असलम खान ने बताया।

"अनिता गोस्वामी ने बताया नहीं कि मुम्बई बन्दरगाह पर उसे क्या काम है?"

"नहीं।"

"तुमने पूछा था?"

"हां। लेकिन उसने इस बात का जवाब नहीं दिया और मैंने भी दोबारा पूछने की जरूरत नहीं समझी।"

"अनिता गोस्वामी की कोई तस्वीर है तुम्हारे पास?"

"मेरे पास उसकी तस्वीर का क्या काम–।"

"इस मामले में कोई और बात बताने वाली?"

"नहीं।" असलम खान ने सिर हिलाया–"जो बात थी। मैंने सच-सच बता दी। मुझे तो अभी भी यकीन नहीं आ रहा कि महादेव इस मामले की वजह से मरा होगा। वो कोई पुराना दुश्मन–।"

"तू इस बारे में अपना दिमाग मत लगा।" सोहनलाल अनिता गोस्वामी के कार्ड को देखता हुआ बोला–"भूल जा इस सारी बात को। देवराज चौहान का नाम तो इस मामले में आना ही नहीं चाहिये।"

"मैं किसी से जिक्र नहीं करूंगा।"

"मुझे मालूम है तू समझदार है।" सोहनलाल उठ खड़ा हुआ। "देवराज चौहान को मेरा सलाम बोलना।"

"फिक्र नेई कर। मेरे को बोल दिया। समझ देवराज चौहान को बोल दिया।" सोहनलाल जाने लगा।

"वो मेरा चार हजार रुपया–।"

"दे दूंगा। भागा तो नहीं जा रहा!" कहने के साथ ही सोहनलाल बाहर निकल गया।

□□
□□
जगमोहन विजिटिंग कार्ड पर लिखे पते पर पहुंचा। वो छोटा-सा, लेकिन अच्छा मकान था। प्रवेश द्वार पर अनिता गोस्वामी की प्लेट लगी पाकर समझ गया कि, महादेव के साथ जो युवती थी, वो यहीं रहती थी। उसका नाम अनिता गोस्वामी था। जो कि विजिटिंग कार्ड पर लिखा था।

जगमोहन छोटा-सा गेट खोलकर भीतर प्रवेश कर गया और बरामदे में पहुंचकर बैल बजाई।

दो-तीन बार बैल बजाने पर भी जब जवाब नहीं मिला तो, जगमोहन को लगा जैसे घर में कोई नहीं है। उसने आसपास देखा। चलती सड़क पर मकान था। सड़क पर से ट्रैफिक गुजर रहा था। परन्तु कोई भी पड़ौसी नजर नहीं आया। न ही किसी की तवज्जो इस तरफ दिखाई दी।

जगमोहन ने जेब से मास्टर 'की' निकाली और सावधानी से उसे 'की' हॉल में फंसाकर ताला खोलने की चेष्टा करने लगा। पांच मिनट की भरपूर कोशिश के बाद भी वो लॉक नहीं खोल पाया। जगमोहन समझ गया कि दरवाजे में फिट बढ़िया किस्म का लॉक है, जो आसानी से नहीं खुलेगा। खिड़कियां बंद थीं। उन पर ग्रिल लगी हुई थी। यानि कि भीतर जाने का कोई रास्ता नहीं था।

शायद मकान के पीछे की तरफ से, भीतर प्रवेश करने का रास्ता मिले। यह सोचकर जगमोहन पलटा ही था कि ठिठक गया। मकान के बाहर, उसकी कार के पास, सोहनलाल की कार को उसने रुकते पाया तो चेहरे पर अजीब-से भाव आ गये।

सोहनलाल और यहां?

सोहनलाल ने कार से निकलकर, मकान पर नजर मारी तो जगमोहन को वहां पाकर उसे भी हैरानी हुई। वो आगे बढ़ा और गेट पार करके जगमोहन के पास आ पहुंचा।

जगमोहन उसे घूर रहा था।

"तुम यहां क्या कर रहे हो?" सोहनलाल ने मुंह बनाकर पूछा।

"यही सवाल मैं तुमसे करने वाला था।" जगमोहन के होंठ सिकुड़े।

"मैं तो यहां आता रहता हूं।" सोहनलाल ने लापरवाही से कहा।

"क्यों?"

"यहां मेरी मंगेतर रहती है।"

"अनिता गोस्वामी?" जगमोहन ने उसे सिर से पांव तक देखा।

"हां। तुम कैसे जानते हो उसे?"

"वो तो सुहागरात मेरे साथ मना चुकी है।" जगमोहन की आवाज में व्यंग्य आ गया।

"तो क्या हो गया। मंगेतर मेरी है, शादी मेरे साथ ही करेगी।" सोहनलाल ढीठता से बोला।

"हनीमून पर जाने का वायदा तो उसने मेरे साथ किया हुआ है।" जगमोहन पहले जैसे स्वर में कह उठा।

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। शादी मुझसे ही करेगी।" सोहनलाल ने ढीठता से कहा।

"जब तेरे को किसी चीज से फर्क नहीं पड़ता तो शादी करने की क्या जरूरत है।" जगमोहन का स्वर तीखा हो गया।

"उसी की तो जरूरत है।"

"क्यों?"

"शान तो वो मेरे ही घर की बनेगी।" सोहनलाल ने दांत फाड़े।

"बहुत शौक है तुझे शो पीस का।"

"हां। तभी तो कह रहा हूं कि वो शादी मेरे से ही करेगी। सुहागरात और हनीमून से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।"

"मान गया।"

"मुझे तो बड़े-बड़े मान जाते हैं।"

"तेरे से घटिया इन्सान कोई दूसरा नहीं।" जगमोहन का स्वर कड़वा हो गया।

"बहुत जल्दी ये बात तेरे को मालूम हो गई, वरना लोगों की उम्र बीत जाती है और मुझे बढ़िया बंदा समझते हुए मर जाते हैं।" सोहनलाल ने शांत स्वर में कहा—"महादेव के चक्कर में भागदौड़ कर रहा है?"

"हां।"

"तीन सौ दो का फेर है।"

"तीन सौ दो, तेरे को कैसे पता?" जगमोहन चौंका।

"देवराज चौहान ने बताया था। उसने मालूम करने को कहा कि महादेव आजकल क्या कर रहा था। नम्बर के बारे में भी बताया। बाकी बातें फिर, तू यहां खड़ा क्या कर रहा है?" सोहनलाल ने पूछा।

"महादेव, चार-पांच दिन से जिस लड़की के साथ था, उसके सामान में कार्ड मिला, जिस पर यहां का पता–।"

"सामान कहां मिला?"

"महादेव के घर पर।"

"कमाल है! जिसका यह घर हो। वो महादेव के साथ, सामान लेकर, झोपड़ी जैसे कमरे में क्या रह रही थी?"

"तुम्हें कैसे मालूम, यह उसी का घर है? मुझे तो उसके सूटकेस से यहां का विजिटिंग कार्ड मिला था।" जगमोहन बोला।

"बताऊंगा, कैसे मालूम हुआ।" सोहनलाल बोला–"अब भीतर की क्या पोजीशन है?"

"बैल का जवाब नहीं मिल रहा और मास्टर 'की' से दरवाजा भी नहीं खुल पा रहा।" जगमोहन ने कहा।

सोहनलाल ने दरवाजे के 'की' होल पर निगाह मारी।

"यह ऑटोमैटिक लॉक है। आसानी से नहीं खुलता।" सोहनलाल मुस्कराया–"और मेरा तो धंधा ही ताले खोलना है। तू मुझे आधे मिनट के लिये आड़ दे कि सामने से कोई न देख पाये, मैं क्या कर रहा हूं।" कहते हुए सोहनलाल दरवाजे के पास जा पहुंचा। जगमोहन इस तरह खड़ा हो गया कि सड़क पर उसकी हरकत को न देखा जा सके।

सोहनलाल ने अपनी फूलती कमीज ऊपर उठाई। कमर में बंधी बैल्ट में फंसे औजारों में से एक पतला-सा औजार निकाला और 'की' होल से उलझ गया।

कुछ ही सेकेण्डों में लॉक खुल चुका था।

सोहनलाल ने औजार वापस बैल्ट में फंसाया फिर बोला।

"हो गया काम।" कहने के साथ ही सोहनलाल ने दरवाजे के हैंडिल पर दबाव देकर धक्का दिया तो दरवाजा खुलता चला गया। दोनों भीतर प्रवेश कर गये। जगमोहन ने दरवाजा भीतर से बंद कर दिया।

सामने ही छोटा-सा, खूबसूरत ड्राईगरूम था। वहां गहरी खामोशी छाई हुई थी।

"सोहनलाल।" जगमोहन नजरें घुमाने के बाद बोला–"घर बिलकुल खाली है। अनिता गोस्वामी घर पर नहीं है। पूरे घर की तलाशी लो। शायद कोई ऐसी चीज मिले कि हम तीन सौ दो के बारे में जान सकें।"

सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट सुलगाई।
"मैं यहीं रहकर, अनिता गोस्वामी के आने का इन्तजार करूंगा। एक-आध दिन में, कभी तो आयेगी वो।"
"जो मन में आवे करना। पहले सामान की तलाशी लें।" जगमोहन ने कहा और ड्राईगरूम पार करता सामने दिखाई दे रहे दरवाजे की तरफ बढ़ गया।
सोहनलाल की निगाह ड्राईगरूम में दौड़ रही थी।
वो बैडरूम था। जिसमें जगमोहन ने प्रवेश किया था। एक कदम भीतर प्रवेश करते ही ठिठक गया। सामने ही खूबसूरत डबल बैड था। जिस पर खून में डूबी लाश पड़ी थी।
"सोहनलाल!" जगमोहन ने पुकारा।
"हां।"
"आ—जा।"
"क्यों?" उस कमरे की तरफ बढ़ते हुए सोहनलाल ने पूछा।
"दहेज में जो बैड तेरे को मिलने वाला था उसका सत्यानाश हो गया है।"
कमरे में कदम रखते ही सोहनलाल ठिठका। मुंह खुला का खुला रह गया।

वो पैंतालिस-पचास वर्षीय व्यक्ति की लाश थी। जिसके शरीर पर साधारण-से कपड़े थे—पैंट और कमीज। कमीज खून से लथपथ थी। देखने पर भी स्पष्ट नजर आ रहा था उसकी कमीज वाले हिस्से पर, बेतरकीबी से, धड़ाधड़ चाकुओं से वार किए गये हैं। चाकू का एक वार मरने वाले के गाल पर भी था और अंत में चाकू सिर के बीच अटका, भाले की तरह खड़ा था। जैसे वार करने वाला, वार करते-करते थक गया हो और चाकू को वहीं रहने दिया हो।
लाश की हालत वीभत्स हो रही थी।
एक ही निगाह देखने पर स्पष्ट हो रहा था कि इसे मरे ज्यादा देर नहीं हुई। क्योंकि कमीज और बैड पर, बहकर बिखरा खून अभी गीला था।
"तूने देखा है इसे पहले कभी?" जगमोहन ने पूछा।
"नहीं। पहली बार, वो भी मरी हालत में देख रहा हूं—।" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा।

जगमोहन बैड के पास पहुंचा और ध्यानपूर्वक उसके चेहरे को देखा। फिर जेब से तस्वीर निकाली, जो कि उसी सूटकेस में से व्यक्ति की निकली थी। जगमोहन ने तस्वीर को देखा। मरने वाला कोई और ही था। सोहनलाल ने पास पहुंचकर, तस्वीर को देखा।

"यह किसकी तस्वीर है?"

"अनिता गोस्वामी के सूटकेस में पड़ी मिली थी। लेकिन मरने वाला यह नहीं है।" जगमोहन ने कहा और तस्वीर वापस जेब में डाल ली। नजरें लाश पर जा टिकीं।

"बहुत बेरहमी से मारा गया है इसे–।" सोहनलाल ने कहा।

"नहीं।" जगमोहन की निगाह लाश पर जा टिकी–"चाकू मारने वाला अनाड़ी था। ध्यान से चाकू के वारों को देखो। घबराहट और अनाड़ीपन से वार किये गये हैं। गाल पर चाकू का वार। सिर पर भाले की तरह धंसा पड़ा चाकू इस बात की गवाही दे रहा है कि, जिसने भी इसे मारा, वो इस हद तक घबराया हुआ था कि उसे समझ नहीं आ रही थी कि कहां वो चाकू मारे कि यह मर जाये। सिर पर जब हत्यारे ने चाकू का वार किया, तब तक यह यकीनन मर चुका होगा।"

सोहनलाल एकाएक कुछ न कह सका।

"यह घर अनिता गोस्वामी का है, जो तीन-चार दिन से महादेव के साथ थी?" जगमोहन ने उसे देखा।

"हां।"

"यकीन के साथ कह सकते हो?"

"हां। पूरा दावा है। बाद में बताऊंगा कि किस दम पर दावा कर रहा हूं। तुम कहना क्या चाहते हो?"

"मेरे ख्याल में अनिता गोस्वामी ने ही यह कत्ल किया है।"

"यह बात तुम कैसे कह सकते हो?" सोहनलाल के होंठ सिकुड़े।

"इसलिये कि हत्या करने वाला अनाड़ी था। वो अनाड़ी अनिता गोस्वामी से बढ़िया और कौन हो सकता है!"

"यह तो कोई तर्क नहीं हुआ।"

"मेरा ख्याल है कि मेरा तर्क ठीक है। लेकिन अपने तर्क को मैं कोई सबूत नहीं दे पा रहा हूं। अगर यह हत्या अनिता गोस्वामी ने नहीं की तो कम से कम यह तो पक्का ही है कि किसी अनाड़ी हत्यारे ने की है, जो घबराया हुआ था।"

सोहनलाल ने जगमोहन को देखा।

"अब क्या करना है?"

"हम दोनों यहां की तलाशी लेते हैं।" जगमोहन ने गम्भीर स्वर में कहा—"यहां से हमें ऐसी कोई चीज तलाश करने की कोशिश करनी है, जिसका वास्ता तीन सौ दो नम्बर से हो।"

"ठीक है।"

"मैं मरने वाले की तलाशी लेता हूं। शायद इसके बारे में कुछ पता चले।" जगमोहन ने कहा और बैड पर पड़ी लाश के कपड़ों की जेबें टटोलने लगा।

सोहनलाल दूसरे कमरे में चला गया।

जगमोहन को उसकी जेब में से पर्स के अलावा कुछ नहीं मिला। पर्स खोलकर चैक किया तो उसमें मौजूद एकमात्र काम की चीज ड्राईविंग लायसैंस मिला। जिस पर मरने वाले का नाम गोपाल कुमार और उसका पता लिखा हुआ था।

जगमोहन ने ड्राईविंग लाइसैंस अपनी जेब में डाल लिया और पर्स वापस लाश की जेब में। उसके बाद कमरे में निगाहें दौड़ाईं। एक तरफ ड्रेसिंग टेबल थी। जगमोहन ड्रेसिंग टेबल को चैक करने लगा। वहां कोई भी काम की चीज नहीं थी। कमरे में पड़ी आलमारी के पास पहुंचा। उसे खोलकर देखा।

आलमारी में लेडीज कपड़े हैंगरों पर लटके हुए थे। या ठूंसे हुए थे। मर्द के कपड़े तो क्या मर्दाना रूमाल तक भी नजर न आया। जिससे जगमोहन समझ गया कि घर में अनिता गोस्वामी अकेली रहती है। आलमारी में से भी काम की चीज नहीं मिली। आलमारी के लॉकर में कुछ जेवरात अवश्य पड़े थे, जो उसने वहीं रहने दिए। एक तरफ टेबल और कुर्सी पड़ी थीं।

जगमोहन टेबल के पास पहुंचा और ड्राअर चैक करने लगा।

ड्राअर में कोई खास चीज नहीं मिली।

दस मिनट उसे चैक करने में ही बीत गये।

फिर जब पलटा तो बैड के पास ही नीचे फर्श पर छोटा-सा पर्स पड़ा नजर आया। जो कि लेडीज पर्स था। जगमोहन ने आगे बढ़कर फौरन पर्स को उठाया। उस पर जरा-सा खून भी लगा हुआ था। उसे खोलकर देखा तो भीतर सौ और पांच सौ के नोट ठूंसे हुए थे। साथ में छोटी-सी डायरी थी। जगमोहन ने डायरी निकालकर देखा, वो फोन नम्बर वाली डायरी थी। जिसमें नम्बर लिखे हुए थे।

तभी सोहनलाल ने भीतर प्रवेश किया। उसके हाथ में पोस्टकार्ड साईज की एलबम थी।

"यह देखो। इस एलबम में सारी तस्वीरें एक ही युवती की हैं। मेरे ख्याल से ये तस्वीरें अनिता गोस्वामी की हो सकती हैं।" सोहनलाल ने कहते हुए एलबम जगमोहन को दिखाई।

जगमोहन ने सरसरी तौर पर तस्वीरों को देखा।

"एलबम जेब में रख लो।" जगमोहन ने कहा और उसे लेडीज पर्स दिखाते हुए बोला—"मैंने बोला था कि इसकी हत्या अनिता गोस्वामी ने की हो सकती है। मेरा कहना सही था। यह पर्स, मुझे बैड के पास, फर्श पर से मिला है और इस पर खून लगा हुआ है। इसमें नोट भरे पड़े हैं और छोटी-सी फोन डायरी है। डायरी के पहले पन्ने पर, नाम लिखने वाली जगह पर अनिता गोस्वामी लिखा है। यानि कि उसने अपना नाम लिखा हुआ है। जब वो इस पर चाकू के वार कर रही थी, तब उसके हाथ में पर्स भी था जो हड़बड़ाहट में हाथों से गिर गया। बाद में इस हद तक घबरा चुकी थी कि पर्स को पूरी तरह भूल गई और भाग निकली।"

"शायद तुम ठीक कह रहे हो।" सोहनलाल ने गम्भीरता से सिर हिलाया।

जगमोहन ने पर्स और डायरी जेब में डाली और लाश के सिर में धंसा चाकू निकालकर उस पर से उंगलियों के निशान साफ करने लगा।

"यह क्या कर रहे हो?" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"यह चाकू इसी मरने वाले का है। जिसे किसी तरह अनिता गोस्वामी ने हथियाकर, इसे ही मार डाला। उसने मजबूरी में ही इसकी जान ली होगी। लेकिन पुलिस को यह बात नहीं समझाई जा सकती। चाकू पर से उसकी उंगलियों के निशान नहीं मिलेंगे तो उसके फंसने के चांस कम रहेंगे।" जगमोहन ने गम्भीरता से कहा।

"तुम खामखाह दूसरों को कब से बचाने लगे?" सोहनलाल ने व्यंग्य से कहा।

"मैं खासतौर से किसी को बचाने के लिये घर से नहीं निकला।" जगमोहन ने सोचभरे स्वर में कहा—"लेकिन यह बात मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि अनिता गोस्वामी की जान खतरे में है। वो भागी फिर रही है।"

"जो कुछ नजर आ रहा है, उससे तो यही लगता है।"

उसके बाद उन्होंने पूरे घर को छान मारा, परन्तु कोई काम की चीज नहीं मिली। दोनों वहां से निकले। अपनी-अपनी कारों में, वहां से रवाना हुए और काफी आगे जाकर सड़क पर ही दोनों ने बात की।

जगमोहन ने अपना बताया कि वो किस तरह पूछताछ करते हुए अनिता गोस्वामी के घर पहुंचा था।

सोहनलाल ने भी उसे अपनी भागदौड़ के बारे में बताया।

"इस वक्त हमारे सामने काम करने के कई रास्ते हैं। मरने वाले की जेब से मिला ड्राईविंग लाइसैंस है। उसके बारे में छानबीन करनी पड़ेगी कि वो कौन था। किसके लिए काम कर रहा था। अनिता गोस्वामी के घर त... कैसे पहुंच गया। अनिता गोस्वामी के ... में मिली फोन डायरी है। अब देखना यह है कि डायरी में ऐसा ... सा उसका खास नम्बर हो सकता है कि ऐसे मुसीबत के वक्त वो वहां पनाह ले सके। वो अपने सामान के साथ महादेव के घर ...ी पनाह लिए हुए थी। अब सारे हालातों पर गौर करने से यही जाहिर होता है।"

"मेरी जेब में पोस्टकार्ड साईज की एलबम है। हो सकता है कि वो सारी तस्वीरें अनिता गोस्वामी की ही हों।" सोहनलाल ने कहा—"मैं असलम खान को तस्वीरें दिखाकर पूछता हूं कि क्या ये ही, अनिता गोस्वामी है?"

"हां। कम से कम अनिता गोस्वामी के चेहरे की तो हमें पहचान हो, जिसे हम ढूंढ रहे हैं।" जगमोहन ने सोचभरे स्वर में कहा—"लेकिन इतनी भागदौड़ के बाद भी 'तीन सौ दो' के बारे में कुछ नहीं मालूम हो सका कि वह किस चीज का नम्बर है। मालूम हो जाता तो भागदौड़ का फायदा नजर आता।"

सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट सुलगाई।

शाम और रात का अंधेरा मिलने जा रहा था।

"मैं देवराज चौहान से फोन पर बात करके आता हूं।" जगमोहन ने कहा और सामने दिखाई दे रही मार्किट की तरफ बढ़ गया। सोहनलाल चेहरे पर सोच के भाव लिए उसे जाता देखता रहा।

□□

□□

...गमोहन ने फोन पर देवराज चौहान से बात की।

"...छ मालूम किया?" देवराज चौहान की आवाज कानों में पड़ी।

"हां। सोहनलाल भी मेरे साथ है।" कहकर जगमोहन ने सारी भागदौड़ बता दी।

"ठीक है।" देवराज चौहान का स्वर कानों में पड़ा—"अभी सारे काम रोक दो। तुम सोहनलाल के साथ उसके घर पहुंचो। मैं भी सोहनलाल के घर पर पहुंचता हूं मौका मिलते ही।"

"मौका मिलते ही।" जगमोहन के होंठों से निकला—"मैं समझा नहीं।"

"हां।" देवराज चौहान का शांत स्वर कानों में पड़ा—"महादेव जब मरा, उसे छोड़कर माहिम से जब मैं चला तो, महादेव की जान लेने वाला शायद मेरे पीछे लग गया था। अब वे लोग जानते हैं कि मैं यहां बंगले पर हूं। वे कोई एक नहीं, ज्यादा लोग हैं। फोन भी आया मुझे। यह पूछा गया कि महादेव ने मरने से पहले मुझे क्या बताया है। वे अब मुझे खत्म करना चाहते हैं और इस वक्त मैं महसूस कर रहा हूं कि वे बहुत सारे लोग हैं और बंगले को घेर रहे हैं। शायद अंधेरा होने पर वो बंगले के भीतर घुसने की चेष्टा करेंगे। मैं उनसे झगड़ा नहीं करना चाहता। क्योंकि मुझे तीन सौ दो नम्बर के बारे में जानना है। महादेव के असली हत्यारे को पकड़ना है। मैं कुछ ही देर में बंगले से निकलने जा रहा हूं। वो यही समझते रहेंगे कि मैं बंगले के भीतर हूं। यहां से मैं सीधा सोहनलाल के घर पहुंच रहा हूं।" इसके साथ ही देवराज चौहान ने रिसीवर रख दिया था। होंठ भींचे जगमोहन ने भी रिसीवर रख दिया।

रास्ते में जगमोहन और सोहनलाल, असलम खान से मिले। तस्वीरों वाली एलबम दिखलाकर यह बात पक्की कर ली कि वो तस्वीरें अनिता गोस्वामी की ही हैं।

□□

□□

देवराज चौहान जब सोहनलाल के कमरे में पहुंचा तो रात के दस बज रहे थे। देवराज चौहान की बांह मामूली-सी घायल थी। जिसे देखते ही जगमोहन बोला।

"गोली लगी है?"

"रगड़ खाती निकल गई।" देवराज चौहान बैठते हुए कह उठा।

"मतलब कि जब बंगले से निकले तो उन लोगों की निगाहों में आ गये।" जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं।

"हां।" देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाकर सहमति से सिर हिलाया–"उन लोगों का घेरा बहुत तगड़ा था। वह कुल आठ के करीब आदमी थे। हर कोई पेशेवर था और अचूक निशानेबाज था। बहुत ही अच्छे ढंग से उन्होंने बंगले को घेरा था कि भीतर वाला किसी भी हालत में बच न सके।"

"मालूम नहीं हो सका कि वे किसके लोग थे?"

"नहीं। सिर्फ एक ही बार उस आदमी का फोन आया था जो तीन सौ दो को भूल जाने को कह रहा था। उसके बाद धमकी देकर उसने फोन कर दिया था। बाद में उसी के आदमियों ने बंगले का घिराव किया, मुझे खत्म करने के लिये।" देवराज चौहान के होंठ भिंच गये–"तुम दोनों अपनी सुनाओ।"

"बहुत दिक्कत आ रही है हमें यह काम करने में। क्योंकि छानबीन वाला काम हमने पहले कभी किया नहीं।" जगमोहन ने गहरी सांस लेकर कहा–"अजीब-अजीब बातों से वास्ता पड़ रहा है।"

"सच में यह काम तो भूसे में से सुई ढूंढने जैसा काम है।" सोहनलाल ने कहा।

"वो कैसे?"

"इतने बड़े मुम्बई शहर में, उस लड़की को कैसे तलाश करें जो महादेव के साथ रह रही थी। इतना ही मालूम हो सका कि उसका नाम अनिता गोस्वामी है।" सोहनलाल बोला।

"मुझे वो सब बातें बताओ, जो तुम दोनों ने मालूम की हैं।" देवराज चौहान बोला।

जगमोहन और सोहनलाल ने अपनी सारी भागदौड़ देवराज चौहान को बताई और जेबों में डाल रखा सामान टेबल पर रख दिया। सामान में सूटकेस में मिली पचपन वर्षीय व्यक्ति की तस्वीर। अनिता गोस्वामी के घर पर मिली लाश की जेब से उसका ड्राईविंग लाईसेंस। बैड के नीचे छोटा-सा लेडीज पर्स, पर्स की फोन डायरी और वो एलबम थी, जिसमें सारी तस्वीरें अनिता गोस्वामी की थीं।

देवराज चौहान ने कश लेकर सोहनलाल को देखा।

"अनिता गोस्वामी मुम्बई बन्दरगाह के बारे में कुछ मालूम करना चाहती थी। साथ ही उसे गोताखोर की भी जरूरत थी।" देवराज चौहान सोचभरे स्वर में बोला।

"असलम खान का तो यही कहना है।"

"असलम खान ने यह नहीं बताया कि बतौर गोताखोर वो महादेव से समन्दर में से क्या तलाश करवाना चाहती थी?"

"यह बात असलम खान को भी नहीं पता।"

"तुमने पूछा था?"

"हां।"

सोचों में डूबे देवराज चौहान ने टेबल [illegible] तस्वीर को उठाया जो जगमोहन को सूटकेस में से मिल[illegible] एक ही निगाह में लग रहा था कि वो किसी अमीर आदमी [illegible]स्वीर है। उसने तस्वीर को पलटकर देखा। उसके पीछे कुछ भ[illegible]खा-छपा नहीं था।

देवराज चौहान ने तस्वीर रखते हुए जगमोहन से कहा।

"अनिता गोस्वामी अपने सामान के साथ, महादेव के घर रह रही थी। जबकि उसका अपना घर भी है।"

जगमोहन ने सहमति से सिर हिलाया।

"इसका मतलब कि वो कोई खास काम कर रही थी। शायद किसी के खिलाफ कुछ कर रही थी और उसे डर था कि उसकी जान लेने की कोशिश भी की जा सकती है। महादेव के यहां रहने की एकमात्र यही वजह हो सकती थी।"

"तो फिर महादेव की जान क्यों ली गई?"

"इसलिये कि, अनिता गोस्वामी, महादेव से जो काम करवा रही थी, कुछ लोग नहीं चाहते थे कि वो ऐसा करे। मेरे ख्याल में अनिता गोस्वामी को खतरे का एहसास हो गया होगा। वो तो खुद को बचा गई, परन्तु महादेव उनकी निगाहों में ही रहा और गोली का निशाना बन गया।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"बन्दरगाह पर मौजूद ऐसे किसी आदमी को जानते हो, जो [illegible]ादेव का वाकिफकार हो?"

"नहीं।"

"मैं भी नहीं।"

"महादेव, मुम्बई बन्दरगाह पर जो काम कर रहा था तो जाहिर है कि वहां उसका कोई सोर्स भी होगा। और महादेव ने ऐसी कोई खबर पा भी ली होगी, जो उसकी मौत की वजह बनी।" देवराज चौहान ने कहा।

"जिस तरह महादेव को शूट किया गया, हो सकता है कि

उसी तरह अनिता गोस्वामी की भी हत्या कर दी गई हो।" जगमोहन ने कहा—"क्योंकि वो भी तो जान बचाती भागी फिर रही थी।"

"तुम्हारी बात सच ही मानता, अगर अनिता गोस्वामी के घर पर, उस आदमी की लाश न पड़ी होती और खून लगा लेडीज पर्स पास में न मिलता। उससे स्पष्ट जाहिर है कि वो खून अनिता गोस्वामी ने ही किया है और अभी तक वो जिन्दा है, परन्तु मौत उसके पीछे है। वो खतरे में है। अगर वो हमें मिल जाये तो हमारे सारे सवालों का जवाब मिल जायेगा। एक-एक बात आईने की तरह साफ हो जायें। परन्तु जिसे जान का डर हो, वो आसानी से मिलने वाली नहीं। वो तो अपनी परछाई से भी दूर भागेगी।"

"यह बात तो है।" सोहनलाल ने सिर हिलाया।

"सुरेश जोगेलकर का मरना, मुझे समझ में नहीं आया।" जगमोहन कह उठा।

"तुमने मुझे बताया कि उन्हें चैम्बूर ले जाने वाला टैक्सी ड्राईवर कह रहा था कि लड़की घबराई हुई थी और महादेव उसे तसल्ली दे रहा था कि सुरेश जोगेलकर सब ठीक कर देगा। वो उसका दोस्त है। यानि कि महादेव चैम्बूर में, अनिता गोस्वामी के साथ, जोगेलकर से मिला। और जब तीन सौ दो नम्बर वालों को मालूम हुआ कि महादेव जोगेलकर से मिला है, तो उन्होंने जोगेलकर को खत्म कर दिया। यानि कि महादेव या अनिता गोस्वामी जिससे भी मिलते, वो लोग उन्हें खत्म कर देते। शायद यह सोचकर कि उन दोनों ने सामने वाले को उनके बारे में जाने क्या बताया होगा। जैसे कि उन्होंने मुझे भी खत्म करने की चेष्टा की। स्पष्ट जाहिर है कि वो लोग नहीं चाहते कि तीन सौ दो नम्बर की हकीकत किसी को पता चले।"

"ये तीन सौ दो है क्या?" सोहनलाल खीझभरे स्वर में कह उठा।

"यही तो मालूम करने की चेष्टा कर रहे हैं।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"अब तक जो बातें सामने आई हैं, मैं उन्हीं के आधार पर बातें बता रहा हूं। असल बात तो शायद बाद में मालूम हो, जब तीन सौ दो नम्बर के बारे में पता चलेगा कि वो किसका, किस चीज का नम्बर है।"

दोनों खामोश रहे। चेहरों पर सोचों के भाव नाच रहे थे।

देवराज चौहान ने टेबल पर पड़ा ड्राईविंग लायसैंस उठाया। उसे खोलकर देखा। मरने वाले की तस्वीर और उसका पता लिखा था। देवराज चौहान ने लायसैंस सोहनलाल को थमाते हुए कहा।

"मरने वाले के बारे में जानकारी इकट्ठी करो। नाम-पता भीतर लिखा है। वो कैसा आदमी था। किसके लिए काम करता था। या फिर ऐसी ही कोई बात।"

सोहनलाल ने सिर हिलाकर लायसैंस जेब में डाल लिया।

देवराज चौहान ने टेबल पर पड़ी अनिता गोस्वामी की फोन डायरी उठाई और एक-एक पन्ना पलटने लगा, उन पर लिखे फोन नम्बरों को चैक करने लगा।

पूरी डायरी चैक.करने के बाद उसने जगमोहन को देखा।

"इस डायरी में एक फोन नम्बर के साथ नाम की जगह मौसी लिखा है। इस मौसी को चैक करो। इसके अलावा और भी कई नम्बर हमारे काम के हो सकते हैं। सब नम्बरों को चैक करो। शायद कोई काम की बात मालूम हो।"

जगमोहन ने फोन की डायरी ले ली।

देवराज चौहान ने अनिता गोस्वामी की तस्वीरों वाली पोस्टकार्ड साईज की एलबम उठाई और एक-एक तस्वीर को गौर से देखने लगा। कोई तस्वीर भरे बाजार में ली गई थी। तो कोई तस्वीर पार्क में। कुछ तस्वीरें समन्दर के किनारे की थीं तो चंद तस्वीरें पानी से चलने वाले बड़े-बड़े जहाजों की थीं। जिस पर बेहद खुशनुमा चेहरे में अनिता गोस्वामी खड़ी नजर आ रही है।

"तस्वीरों और एलबम की हालत बताती है कि यह तस्वीरें हाल ही में ली गई हैं। आधी से ज्यादा तस्वीरों में एक ही जैसे कपड़े हैं यानि कि कैमरे में पड़ी फिल्म एक-दो दिन में खत्म कर दी गई है। तो सवाल यह आता है कि तस्वीरें खींचने वाला कौन है? जो भी है, अनिता का कोई खास ही होगा।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने जगमोहन और सोहनलाल को देखा।

"हर तस्वीर में वो खुलकर मुस्करा रही है तो तस्वीरें खींचने वाला उसका खास ही होगा।" जगमोहन बोला।

"और उस खास का फोन नम्बर इस डायरी में अवश्य होगा।" ...राज चौहान ने विश्वासभरे स्वर में कहा।

"हां।" जगमोहन ने सहमति से सिर हिलाया—"मैं कोशिश ...ा कि उसके बारे में जान सकूं।"

देवराज चौहान एलबम बन्द करने ही जा रहा था कि एकाएक ...ठक गया। अगले ही पल उसकी आंखें सिकुड़ गईं। चेहरे पर अजीब-से भाव आ गये।

तस्वीर में अनिता गोस्वामी के बाल हवा में उड़ रहे थे। चेहरे पर दिलकश मुस्कान थी। वो जहाज के नीचे वाले डैक पर खड़ी थी। उसके नीचे, जहाज पर 302 लिखा हुआ था और तस्वीर के नीचे पानी नजर आ रहा था। देवराज चौहान अपलक जहाज पर लिखे 302 को देखता रह गया।

अगले ही पल उसके चेहरे के भाव सामान्य होने लगे।

चेहरे पर सोचभरी गम्भीरता आ टिकी।

उसने एलबम से तस्वीर निकाली और जगमोहन की तरफ बढ़ाई।

"इस तस्वीर को देखो।"

जगमोहन ने तस्वीर को हाथ में लेकर देखा।

"कुछ नजर आया?" देवराज चौहान बोला।

"सब-कुछ नजर आ रहा है तस्वीर में। लेकिन तुम क्या दिखाना चाहते हो?" जगमोहन ने तस्वीर से निगाहें हटाईं।

"अभी मालूम हो जायेगा। सोहनलाल तुम देखो।"

सोहनलाल ने जगमोहन के हाथ से तस्वीर लेकर देखी।

"मानता हूं अनिता गोस्वामी बहुत खूबसूरत है।" कुछ देर बाद सोहनलाल तस्वीर से निगाहें हटाकर कह उठा—"खुशमिजाज भी लगती है। तस्वीर भी अच्छी ली गई है और—।"

देवराज चौहान ने उसके हाथ से तस्वीर ली और टेबल पर रखी।

"इस तस्वीर में जहाज पर—पानी के जहाज पर वो खड़ी है।" देवराज चौहान ने दोनों को देखा।

दोनों ने सहमति से सिर हिलाया।

"जहां वो खड़ी है। डैक पर। यह जहाज का नीचे वाला डैक है।"

"यह कैसे कहा जा सकता है। हो सकता है कि ऊपर वाला या बीच का डैक है।" सोहनलाल कह उठा।

"यह नीचे वाला डैक है। डैक की रेलिंग के नीचे देखो। तस्वीर के सबसे नीचे—।"

दोनों की निगाह तस्वीर में सबसे नीचे गई।

जहां बेहद छोटा-सा 302 लिखा नजर आ रहा था।

दोनों चौंके।

"तीन सौ दो।"

"यह तो तीन सौ दो नम्बर है।"

"हां।" देवराज चौहान ने सोचभरे ढंग में सिर हिलाया—"इसे हम जहाज नम्बर तीन सौ दो कह सकते हैं।"

जगमोहन और सोहनलाल की निगाह, देवराज चौहान पर जा टिकीं।

"तुम्हारा मतलब कि महादेव इसी जहाज नम्बर तीन सौ दो के बारे में कुछ कहना–।" जगमोहन ने कहना चाहा।

"हो भी सकता है और नहीं भी।" सोहनलाल ने फौरन कहा।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई और दोनों पर निगाह मारकर बोला।

"महादेव, इसी जहाज नम्बर तीन सौ दो के बारे में कुछ कहना चाहता था।"

"यह बात तुम इतने दावे के साथ कैसे कह सकते हो। हो सकता है तस्वीर में तीन सौ दो नम्बर जहाज का दिखना महज इत्तफाक हो। इस नम्बर को हम महादेव के साथ इसलिए जोड़ रहे हैं कि मरते वक्त महादेव के मुंह से तीन सौ दो निकला था।" जगमोहन ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा।

देवराज चौहान के होंठों पर अजीब-सी मुस्कान उभरी।

"तुम्हारी बात सही है कि इस वक्त हम यह जानने की चेष्टा कर रहे हैं कि तीन सौ दो नम्बर क्या है। ऐसे में जो भी तीन सौ दो नम्बर हमारे सामने आयेगा, उसे हम महादेव वाला तीन सौ दो समझने लगेंगे। इस वक्त अगर हम जहाज पर लिखे तीन सौ दो नम्बर के साथ-साथ अनिता गोस्वामी को भी साथ लें, जो कि तीन सौ दो नम्बर जहाज पर खड़ी है। जो आखिरी तीन-चार दिनों से महादेव के साथ रही थी और उस[illegible] बन्दरगाह पर कोई काम करवा रही थी, तो हमें यकीन करना पड़ेगा कि महादेव इसी जहाज नम्बर तीन सौ दो के बारे में कुछ कहना चाहता था। क्योंकि तीन सौ दो नम्बर के जहाज और अनिता गोस्वामी का एक ही जगह होना महज इत्तफाक नहीं हो सकता।"

जगमोहन और सोहनलाल देवराज चौहान को देखने लगे।

"मैंने पहले ही कहा था कि यह तस्वीरें हाल ही में ली गई लगती हैं। यानि कि ज्यादा से ज्यादा दस-बारह दिन पहले। इसका मतलब जहाज नम्बर तीन सौ दो मुम्बई बन्दरगाह पर ही इस वक्त लंगर डाले खड़ा है। इस तस्वीर से स्पष्ट जाहिर है कि तस्वीर खड़े जहाज पर ली गई है। तस्वीर लेने वाला समन्दर में बोट पर, या

अन्य किसी चीज पर सवार होगा। तस्वीर में दूर दो जहाजों की जरा-जरा झलक मिल रही है, जो कि यकीकन लंगर डाले खड़ा है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहने के साथ दोनों को देखा-
"महादेव का हत्यारे का जहाज नम्बर तीन सौ दो से वास्ता है। तीन सौ दो नम्बर जहाज के बारे में जानकारी हासिल करनी होगी, तभी महादेव के हत्यारे तक पहुंचा जा सकता है। हमारी यह कोशिश बहुत आसान हो सकती है, अगर अनिता गोस्वामी की तस्वीरें लेने वाला हमें मिल जाये या फिर उसका कोई ऐसा पहचान वाला मिल जाये, जो बता सके कि अनिता गोस्वामी किस फेर में थी।"

"मैं उस आदमी के बारे में छानबीन करता हूं जो अनिता गोस्वामी के घर मरा पड़ा था।" सोहनलाल ने कहा-"उसके ड्राईविंग लायसेंस पर उसका नाम-पता लिखा है।"

"और मैं अनिता गोस्वामी की फोन डायरी में लिखे, मौसी के नम्बर और अन्य नम्बरों के दम पर उसे तलाश करने की कोशिश करता हूं, जो अनिता गोस्वामी का नजदीकी है। जिसने ये तस्वीरें खींचीं।"

देवराज चौहान ने वो तस्वीर उठा ली। जिसमें जहाज पर अनिता गोस्वामी खड़ी मुस्करा रही थी। जिस जहाज के सबसे नीचे 302 लिखा नजर आ रहा था।

"मैं इस जहाज के बारे में छानबीन करता हूं।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"अनिता गोस्वामी खुद ही मिल जाये तो सारी कठिनाइयां दूर हो जायें।" सोहनलाल बोला।

"वो नहीं मिलेगी।" जगमोहन ने उसे देखा।

"क्यों?"

"बताया तो। वो डरी बैठी है। कहीं छिपी हुई है। उसकी जान को खतरा है। महादेव को साथ लेकर वो बन्दरगाह पर कोई खास काम कर रही थी। लेकिन महादेव की मौत के बाद तो उसे अपनी जान की फिक्र पड़ गई होगी। ऐसे में वो सामने आने वाली कहां।" जगमोहन ने पक्के स्वर में कहा।

देवराज चौहान ने तस्वीर पर से निगाह हटाकर सोहनलाल से कहा।

"जिन्होंने महादेव की जान ली है, वो मेरा चेहरा जानते हैं और मुम्बई बन्दरगाह से वास्ता रखते हैं। ऐसे में सीधे-सीधे बन्दरगाह पर

जाना खतरे वाला काम हो सकता है। तुम मेकअप के सामान का इन्तजाम करो। चेहरा बदलकर ही बन्दरगाह पर जाना ठीक रहेगा।"

"दो-तीन घण्टों में हुलिया बदलने का सारा इन्तजाम कर दूंगा।" सोहनलाल ने कहा।

जगमोहन ने टेबल पर से वो तस्वीर उठाई, जो पचपन वर्षीय किसी अमीर आदमी की थी और अनिता गोस्वामी के सूटकेस में से मिली थी।

"यह तस्वीर किसकी हो सकती है?" जगमोहन ने होंठ सिकोड़े।

"यह तस्वीर ऐसे किसी खास व्यक्ति की है, जो अनिता गोस्वामी के लिये खास अहमियत रखता है।" देवराज चौहान ने कहा—"क्योंकि वो सूटकेस में अपने कपड़े वगैरह लेकर महादेव के यहां आ छिपी थी। ऐसे में किसी की तस्वीर भी साथ ले आने का मतलब है कि तस्वीर खास आदमी की है।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने जगमोहन के हाथ से तस्वीर ली और अपनी जेब में डाल ली।

□□

□□

सुबह के आठ बज रहे थे।

देवराज चौहान मुम्बई बन्दरगाह पर पहुंचा। वह मेकअप में था।

बदन पर कमीज-पैंट परन्तु चेहरा पूरी तरह बदला हुआ था। गालों पर काले-सफेद बालों की खिचड़ीनुमा दाढ़ी थी। सिर के बाल भी काले सफेद नजर आ रहे थे। भौंहों पर भी वैसे ही बाल लगा रखे थे। आंखों पर नजर का चश्मा था। जबकि उसके शीशे प्लेन थे।

देखने में इस वक्त वो पचपन वर्षीय व्यक्ति नजर आ रहा था।

बन्दरगाह की विशाल बड़ी इमारत के सामने टैक्सी पर उतरा और किराया देकर, भीतर प्रवेश कर गया। भीड़ और गरमा-गरमी वहां नजर आ रही थी। हर कोई अपने काम में व्यस्त नजर आ रहा था। वर्दी पहने बन्दरगाह के कर्मचारी कोई अकेला और कुछ ग्रुप में आ-जा रहे थे।

कुछ आगे जाकर अलग-अलग काउन्टर बने हुए थे। जिन पर कर्मचारी मौजूद थे और लोग भी लाईन में खड़े थे। देवराज चौहान समझ गया कि, कोई यात्री जहाज के यह यात्री हैं। जिनकी रवानगी की तैयारी हो रही है। उन काउन्टरों के बीच, साफ-सुथरी राहदारी दूर तक जा रही थी। जहाज तक जाने के लिये यात्रियों को वहां से

गुजरना होता है और राहदारी के रास्ते में जगह-जगह बस स्टॉप जैसी जगहें बनी नजर आ रही थीं। जहां यात्रियों के सामान की चैकिंग होती थी। उसी राहदारी में चप्पे-चप्पे पर पुलिस वाले तैनात थे। उस तरफ यूं ही जाना, मुमकिन नहीं था।

देवराज चौहान एक ही जगह खड़ा इधर-उधर निगाहें दौड़ाता रहा। फिर एक ऐसे काउन्टर पर पहुंचा, जो बिल्कुल खाली था और जहां यूनिफार्म में युवती मौजूद थी।

"वेलकम सर-।" युवती उसे देखते ही बोली।

"मैडम। मैं तीन सौ दो नम्बर जहाज के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहता हूं कि-।"

"सॉरी सर! यह पूछताछ का काउन्टर नहीं है। आप उस तरफ जाईये।" युवती उसकी बात काटकर कह उठी।

"मैं किसी जहाज की रवानगी के वक्त, किसी जहाज के आने का समय नहीं पूछना चाहता।" देवराज चौहान ने फौरन मुस्कराकर कहा-"मैं जहाज नम्बर तीन सौ दो के बारे में-।"

"सर! जहाज को उसके नम्बर नहीं, नाम से जाना-पहचाना जाता है।" युवती बोली-"बन्दरगाह पर इतने जहाजों का आना-जाना लगा रहता है कि नाम से जानने में भी कई बार कठिनाई हो जाती है। अगर आप जहाज का नाम बतायें, तो शायद मैं बता सकूं जो आप पूछना चाहते हैं।"

"जहाज का नाम तो मुझे मालूम नहीं।"

"सॉरी सर! फिर मैं आपकी कोई सहायता नहीं कर सकती।"

देवराज चौहान काउन्टर से हट गया।

युवती ठीक कह रही थी कि जहाज के बारे में पूछताछ के लिये जहाज का नाम मालूम होना जरूरी है। जबकि उसके पास सिर्फ जहाज का नम्बर था।

देवराज चौहान समझ गया कि इस तरह वो 302 नम्बर जहाज के बारे में नहीं जान पायेगा। इस जानकारी को पाने के लिये उसे बन्दरगाह की गोदी पर जाना होगा। जहां सामान उतारने और लादने का काम होता है। वहां काम करने वाले मजदूर या कर्मचारी ऐसी जानकारी अवश्य रखते होंगे।

परन्तु गोदी पर जाना भी आसान काम नहीं था। इसके लिए चोर रास्ते का इस्तेमाल करना होगा। देवराज चौहान बन्दरगाह की इमारत से बाहर निकला और जेबों में हाथ डाले, इमारत के साथ-साथ

ही लापरवाही से चलता हुआ आगे बढ़ता चला गया। बाहर भी काफी चहल-पहल थी।

करीब दस मिनट चलने पर बन्दरगाह की इमारत समाप्त हुई और साथ ही रेलिंग शुरू हो गई। जो करीब पांच फीट ऊंची थी और काफी दूर तक जा रही थी।

रेलिंग के पार, काफी चौड़ा रास्ता आगे जा रहा था। उधर अधिकतर मजदूर या क्लर्क टाईप के ही कर्मचारी नजर आ रहे थे। जो ट्रालियों पर सामान लादे इधर-उधर जा रहे थे। देवराज चौहान जानता था कि आगे जाकर गोदाम है, वहां दूसरे देशों से आये सामान को रखा जाता था और जहाज पर ले जाने वाले सामान को भी पहले वहां रखा जाता था, उसके बाद जहाज पर लादा जाता था।

रेलिंग का बड़ा हिस्सा पार करने के बाद, रेलिंग के बीच लोहे के गेट पर जाकर रुका। जो कि बंद था। जो कि भीतर जाने का रास्ता था। जिसके पार मेज-कुर्सी रखे, मुंशी जैसा व्यक्ति बैठा था। टेबल पर रजिस्टर और उसमें फंसा पैन नजर आ रहा था। यानि कि माल के अन्दर-बाहर जाने का खाता वो ही रखता था।

गेट पर चौकीदार टाईप का व्यक्ति खड़ा था।

"खोलो।" देवराज चौहान बोला।

चौकीदार ने उसे सिर से पांव तक देखा।

"कहां जाना है साहब?"

"भीतर-।"

"भीतर जाने का रास्ता यहां से नहीं, उधर से है। वो इमारत की तरफ से।" चौकीदार ने कहा।

"मैं जानता हूं।" देवराज चौहान मुस्कराया-"लेकिन मैं यहीं से भीतर जाना चाहता हूं।"

"यहां से किसी बाहरी व्यक्ति का भीतर जाना मना है।" उसने लापरवाही से कहा।

"जाने दो यार-।"

चौकीदार ने ध्यानपूर्वक देवराज चौहान के मेकअप वाले पचपन वर्षीय चेहरे को देखा।

"काम क्या है?"

"मैं उपन्यास लिखता हूं।" देवराज चौहान के होंठों पर मुस्कान थी।

"उपन्यास?"

"हां, नॉविल, कभी पढ़े हैं?"

"बहुत पढ़े हैं। मेरा एक पड़ौसी भी था। वो भी बहुत पढ़ता था।" उसने गहरी सांस लेकर कहा।

"पढ़ता था, तो अब क्या हो गया उसे?"

"जेल में है। उम्र कैद की सजा भुगत रहा है, उपन्यास पढ़ने की बदौलत।"

"ये कैसे हो सकता है? मैं समझा नहीं।"

"उसकी नौकरी छूट गई थी। कहीं और नौकरी मिली नहीं। पल्ले बंधा नावां भी खा गया। अब नोटों की जरूरत थी। दो ही काम थे। भीख मांगे या चोरी करे। नौकरी मिलने की आस तो पूरी तरह खत्म हो गई थी। और वो ऐसे लेखक के उपन्यास पढ़ता था, जिसकी कहानियों में डकैती की योजनाएं होती थीं।" कहकर दो पल के लिये चौकीदार ठिठका–"साहब जी! आप लोग जो उपन्यास लिखते हो, वो कल्पना की उपज होती है। सोचो की पटरी होती है। हकीकत की हवा भी उपन्यास को छूकर नहीं गई होती। लेकिन कुछ पढ़ने वाले समझ बैठते हैं कि उपन्यास में सच लिखा है। मैंने पड़ौसी को बोत समझाया कि ये सब झूठ होता है, परन्तु वो नहीं माना। उसने उस उपन्यास लेखक के उपन्यास में से, ऐसा उपन्यास चुना, जिसमें उम्दा डकैती थी और इसी डकैती को सामने रखकर जैसे छोटे बच्चे पेपर देते हैं, वैसे ही उसने डकैती करने की कोशिश की और जेल में पहुंच गया। इतने पर भी उसे अक्ल नहीं आई। परसों ही जेल में उसकी बीवी उससे मिलने गई तो बीवी को बोला मुझे उसी लेखक के छांटकर वो उपन्यास लाकर दो, जिन उपन्यासों में उपन्यास का हीरो जेल से भागता है योजना बनाकर। मतलब कि अब वो जेल से भागने की सोच रहा है, उपन्यास के हीरो की तरह–।"

देवराज चौहान मुस्कराया।

"तो ये उपन्यास लिखने वाले की गलती हुई या पढ़ने वाले की!" देवराज चौहान बोला।

"लिखने वाले ने तो कल्पना से लोगों का मनोरंजन किया है। शायद उपन्यासों में ऐसा कुछ लिखा-छपा भी होता है कि ये नकली कहानी है। इसे मजे लेने के लिए ही पढ़ें। इस पर भी वो नहीं समझा तो गलती पढ़ने वाले की ही हुई कि नकली बातों को असली समझ कर चल दिया मुंह उठाकर–।" चौकीदार ने मुंह बनाया।

मुस्कराता हुआ देवराज चौहान उसे देखता रहा।

"आप वो ही उपन्यास-लेखक तो नहीं जो–।"
"नहीं। मैं तो प्रेम त्रिकोण पर अधिकतर उपन्यास लिखता हूं।"
"फिर तो आप बहुत भला करते हैं।"
"किसका?"
"जवान लड़के-लड़कियों का। आपके उपन्यास पढ़कर वो प्रेम करने के कई रास्ते ढूंढ निकालते होंगे।"
"मुझे तो ऐसी कोई खबर नहीं मिली–।"
"हमारी गली में एक लड़का-लड़की घर से भाग गये हैं। लड़का प्रेम के उपन्यास ही पढ़ता था।"
"हो सकता है।"
"आपने-अपने किसी उपन्यास में लिखा कि कोई लड़का किसी लड़की को भगा ले जाता है।"
"अभी तक तो नहीं लिखा।"
"तो फिर उस लड़के ने किसी और लेखक का उपन्यास पढ़ा होगा।" उसने समझने वाले भाव में सिर हिलाया।
"तुम उपन्यासों के बहुत शौकीन लगते हो।"
"हां। बहुत उपन्यास पढ़ता था। खान-बाले के, कर्नल विनोद, कैप्टन हमीद, कासिम, इमरान के। इब्ने सफी के–।"
"पुराने पापी हो।"
वो हंसा फिर बोला।
"बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर कि आप उपन्यास लिखते हैं। लेकिन काम क्या करते हैं?"
"उपन्यास लिखता हूं।" देवराज चौहान मुस्कराया।
"माना। सुना। लेकिन काम क्या करते हैं।" वो सिर हिलाकर बोला।
"ये काम नहीं है?"
"उपन्यास लिखना?"
"हां।"
"कमाल है। उपन्यास लिखना काम कैसे हो गया। इसमें नोट कहां आते हैं।"
"थोड़े-से आ जाते हैं।"
"हैरानी है। पहली बार सुन रहा हूं कि उपन्यास लिखना काम है। थोड़े-बहुत पैसे भी मिल जाते हैं। खैर छोड़ो होगा काम। मैं तो

इसे काम करना नहीं मानता।" उसने कुछ ज्यादा ही लम्बी सांस ली। थोड़ा-सा मुंह बनाया।

देवराज चौहान के होंठों पर बराबर मुस्कान छाई हुई थी।

बात आगे बढ़ाने के लिये वो पुनः बोला।

"आप कुछ कह रहे थे—?"

"मैं बता रहा था कि मैं उपन्यास लिखता हूं। और अब जो उपन्यास लिख रहा हूं उसमें मुम्बई बन्दरगाह दिखाना है। गोदी, सामान रखने की जगह और एक जहाज को अन्दर से देखना है कि वो कैसा होता है।"

"देखने के बाद ये सब चीजें आप उपन्यास में लिखेंगे?"

"हां।"

"फिर तो आपको ये भी जानना होगा कि जहाज पर कौन कर्मचारी, क्या-क्या काम करता है।"

"हां।"

"एक बात के अलावा बाकी बातें तो मैं पूरी कर सकता हूं।"

"कहां दिक्कत है?"

"जहाज भीतर से दिखाना मेरे बस से बाहर है।"

"क्यों?"

"किसी बाहरी आदमी को बन्दरगाह पर लंगर डाले जहाजों के भीतर नहीं ले जाया जा सकता। जमाना बड़ा खराब है। क्या मालूम कोई बम रखकर, जहाज को नुकसान पहुंचा दे।"

देवराज चौहान ने जेब से पांच सौ का नोट निकाला और उसकी हथेली में दबा दिया।

"यह क्या?"

"रख लो। मैं यह नोट खर्चे में डालकर फर्रा प्रकाशक को दे दूंगा कि ये पैसे उपन्यास लिखने की भागदौड़ में खर्च हुए तो वो हमें दे देता है। अब बताओ, जहाज को भीतर से देख सकता हूं?" देवराज चौहान मुस्कराया।

"प्रकाशक आपको इस तरह के खर्चे देता है तो फिर शायद जहाज को देखा जा सकता है।" वो मुस्कराया।

"दिखाओ। नोट और मिल जायेंगे।"

"आगे का काम मुंशी करेगा। वो जो कुर्सी पर बैठा है। आप यहीं रुकिये। मैं उसको एक ही लाईन में सारी बात समझा देता हूं। आपकी बात समझने में दो दिन लगा देगा।" देवराज चौहान को

वहीं खड़ा छोड़कर पीटीदार, कुर्सी सम्भाले मुंशी के पास पहुंचा और कान में फूंक मारकर उसे पास बैठा आया।

देवराज चौहान उसे ही देख रहा था।

"जाइये साहब! जाकर मुंशी साहब से बात कर लीजिये। लेखकों को तो वो खास पसन्द करते हैं।" कहने के साथ ही उसने गेट खोला तो देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया और चंद कदमों के फासले पर टेबल-कुर्सी पर बैठे पचास वर्षीय गिट्टे-पिट्टे व्यक्ति के पास जा पहुंचा।

उसने आंखों पर पड़े नज़र के चश्मे को ठीक किया।

"लेखक हो?" वो गोली मारने वाले ढंग में बोला।

"हां।"

"किताबें लिखकर रोटी-पानी का खर्चा निकाल लेते हो?"

"कभी निकल आता है, कभी नहीं।"

"कभी-कभी का मतलब नहीं समझा।" मुंशी ने चश्मा ठीक किया।

"समझने की जरूरत भी क्या है?"

"जरूरत इसलिये है कि मेरी बीवी दो महीनों से साड़ी की डिमांड कर रही है। तुम्हारी जेब में इतने पैसे हैं कि, वो मुझे दो और बीवी के लिए साड़ी खरीदकर, उसके सिर पर मार सकूं।"

"साड़ी के साथ पेटीकोट भी खरीद लेना।"

"क्या?"

"वो जो साड़ी के नीचे पहनते हैं।" देवराज चौहान ने उसे घूरा।

"समझदार हो।" कहने के साथ वो उठा—"मुझे सू-सू आ रहा है। तुम्हें भी आ रहा हो तो मेरे साथ आ जाओ। उधर खास कोना है। जहां बड़े-बड़े मसले हल हो जाते हैं।" कहने के साथ ही वो एक तरफ बढ़ गया। देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई और उसके पीछे चल पड़ा।

समन्दर से टकराकर आती हवा में, नमी और महक थी।

□□

□□

"सच में लेखक हो या कोई और चक्कर है?" वो एक खाली, अलग जगह उसे ले जाकर ठिठका।

"और क्या चक्कर हो सकता है?"

"वो तुम्हें पता होगा?"

"और कोई चक्कर नहीं है। तुम अपनी बात करो।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"मैं, तुम्हें गोदी दिखा सकता हूं। गोदाम दिखा सकता हूं। जहाज पर कौन कर्मचारी क्या करता है, किसके जिम्मे क्या काम होता है? वो बता सकता हूं। कहोगे तो समन्दर का छोटा-सा चक्कर भी लगवा देता हूं, बोट में। लेकिन किसी जहाज के भीतर नहीं ले जा सकता। नौकरी खतरे में पड़ जायेगी।"

"तुम्हारी बीवी की साड़ी कितने की आती है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"तीन हजार तो लगते ही। तुम पेटीकोट की बात कर रहे थे तो साढ़े तीन लगा लो।"

"इसके अलावा साड़ी के साथ-साथ और जो-जो भी कपड़े जाते हैं, उनकी कीमत लगाओ।"

"लेकिन-।"

"कीमत तो लगाओ।"

"फिर तो पांच हजार का खर्चा बैठ जायेगा।" उसने देवराज चौहान के चेहरे पर निगाह मारी।

देवराज चौहान ने जेब से दस हजार की गड्डी निकाली। उसकी आंखों के सामने फुरेरी दी और उसे वापस जेब में रखकर जेब को थपथपाया।

"इसे वापस क्यों रखा?"

"यह दस हजार मैं किसी और को दूंगा। जो मुझे किसी जहाज के भीतर भी घुमा देगा।"

"ये क्या कह रहे हो। फिर तो मेरी बीवी की साड़ी नहीं आयेगी।"

"मेरा काम करोगे तो साड़ी के साथ बाकी सामान भी आ जायेगा।" देवराज चौहान ने कहा-"दस हजार दूंगा। क्योंकि उपन्यास लिखने के लिए जहाज को भीतर से देखना बहुत जरूरी है। जो कि मैं देखकर ही रहूंगा। तुम दिखाओ नहीं तो कोई दूसरा दिखाता-।"

"दूसरे की बात मत करो। लाओ गड्डी मुझे दो।"

देवराज चौहान ने गड्डी निकालकर उसे दी, जो उसकी जेब में पहुंचकर गुम हो गई।

"सुनो, तुम्हारा काम मैं करा देता हूं। लेकिन याद रखना, तुम मेरे रिश्तेदार हो और तुमने कभी भी भीतर से जहाज नहीं देखा। तुम्हारी जिद्द और रिश्ते की मजबूरी में तुम्हें जहाज दिखा रहा हूं।

कहीं बात हो तो ये ही कहना। कहीं दस हजार के चक्कर में मेरी नौकरी मत लुढ़का देना।"

"फिक्र मत करो। लेकिन मैं वही जहाज भीतर से देखूंगा, जो मुझे बाहर से पसन्द आयेगा।"

"जब तक जहाज बन्दरगाह पर लंगर डाले खड़े हैं, तब तक वो अपना ही माल है, कोई भी देख लेना। तुम रुको। मैं अपनी जगह पर किसी और को फिट करके आता हूं।"

□□

□□

वो मुंशी, जिसका नाम रघुवीर सिंह था। उसने देवराज चौहान को गोदाम दिखाया उसके बाद डैक। देवराज चौहान वहां के माहौल को बारीकी से देख रहा था।

"सुनो।" रघुवीर सिंह बोला–"तुम्हारे उपन्यास की कहानी में लड़का बन्दरगाह पर आता है या कहानी की हीरोईन?"

"अभी यह तय करना बाकी है।" देवराज चौहान ने कहा।

"तो अभी तय नहीं किया। कहानी तैयार नहीं की अभी?"

"सब-कुछ तैयार है। जहाज के भीतर नजर मारने के बाद, बाकी बातें भी तय हो जायेंगी।" देवराज चौहान ने कहने के पश्चात् सिग्रेट सुलगाई।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"रोशन कुमार–।"

"रोशन कुमार–?" रघुवीर सिंह सोचभरे स्वर में कह उठा–"शायद मैंने तुम्हारा नाम सुन रखा है।"

"मेरा उपन्यास भी देखा होगा।"

"हां–हां, वो भी देखा है। याद आ गया।" रघुवीर सिंह जैसे याद आ जाने वाले लहजे में कह उठा।

देवराज चौहान के होंठों पर शांत मुस्कान उभरी।

"जहाज पर चलें?"

"हां–हां चलो। आओ, बन्दरगाह के किनारे की तरफ चलते हैं। वहां से बोट ले लेंगे। वहीं से तुम्हें लंगर डाले खड़े कई जहाज नजर आ जायेंगे। जो कहोगे, दिखा दूंगा।"

दोनों चल पड़े।

कई रास्तों से गुजरते हुए सात-आठ मिनट बाद वे दोनों बन्दरगाह के किनारे पर पहुंचे। समन्दर की सतह से टकराकर आती नमी से

भरी हवा बहुत अच्छी लग रही थी। पानी की खुशबू भी सांसों से टकराकर, दिलो-दिमाग को सकून पहुंचा रही थी।

समन्दर में जगह-जगह जहाज लंगर डाले हुए थे। कुल मिलाकर वो बारह जहाज थे। कोई दूर खड़ा था, तो कोई पास खड़ा था। पास किन्तु पानी की गहराई में।

जहाजों की तरफ से माल लादकर दो बोटें आ रही थीं। जबकि एक बोट में माल लादकर जहाज में भेजा जा रहा था। शायद वो जहाज अगले कुछ घण्टों में रवाना होने वाला था।

"इधर आओ।" रघुवीर सिंह, देवराज चौहान को लेकर एक तरफ खड़ी नीले रंग की बोट के पास पहुंचा। तभी चालीस बरस का कमीज-पायजामा पहने एक व्यक्ति पास आया–

"कहां की तैयारी हो रही है रघुवीर?"

"कुछ नहीं यार।" रघुवीर लापरवाही से बोला–"ये अपने रिश्तेदार हैं। दिल्ली से आये हैं। कहते हैं, जहाज को भीतर से कभी नहीं देखा। वो दिखा दूं। तुम तो जानते ही हो कि अपने को क्या कमी है। बन्दरगाह अपना है। पूरी चलती है। तीस बरस हो गये, यहां पर मुंशीगिरी करते हुए। तरक्की नहीं मिली तो क्या हुआ। तेरी बोट खाली है।"

"हां, चल मैं ले चलता हूं।" बोट चालक बोला।

"चल भाई रोशन कुमार! तेरे को जहाज दिखाता हूं।"

अगले ही पलों में वो तीनों बोट पर थे। बोट चल पड़ी।

"कौन-सा जहाज देखना है?" रघुवीर सिंह बोला–"बता, सब अपने हैं। क्यों गोपाल?"

"हां–हां, क्यों नहीं।" बोट चालक ने फौरन सिर हिलाया।

"सारे जहाजों के पास से बोट निकालो। जो अच्छा लगेगा, बता दूंगा।"

"समझ गया गोपाल–?"

"बिल्कुल समझ गया।" बोट समन्दर की छाती पर दौड़ने लगी।

देवराज चौहान दूर-दूर लंगर डाले खड़े जहाजों को ध्यानपूर्वक देख रहा था कि तस्वीर में दिखाई देने वाला जहाज नम्बर 302 कौन-सा हो सकता है।

परन्तु इतनी दूर से कोई अंदाजा नहीं लग पा रहा था।

बोट चालक एक जहाज के पास पहुंचा। दूर से जहाज कोई खास बड़ा नहीं लग रहा था, परन्तु पास पहुंचने पर, जहाज की

साइडें इतनी ऊंची थीं कि गर्दन पूरी पीछे को करके ऊपर को देखना पड़ता था। और पास खड़ी मोटरबोट ऐसी लग रही थी, जैसे वो छोटा-सा कोई खिलौना हो।

"क्यों रोशन भाई। ये जहाज बढ़िया रहेगा। दिखाऊं भीतर से क्या?"

"बोट से जहाज का चक्कर लो।" देवराज चौहान बोला–"हर जहाज के पास पहुंचकर ऐसा ही करना बता दूंगा।"

"ठीक है। चल भाई गोपाल।"

बोट ने जहाज का चक्कर लिया।

लेकिन देवराज चौहान को कहीं भी 302 लिखा नजर नहीं आया।

दूसरे जहाज पर पहुंचकर भी ऐसा ही किया।

बोट जब तीसरे जहाज पर पहुंची तो देवराज चौहान की आंखों में सतर्कता के भाव आ गये। उस जहाज के ठीक सामने नीचे वाले डेक के नीचे 302 लिखा हुआ था। वो काफी विशाल जहाज था। करीब छः मंजिलें और तीन बड़े-बड़े डैक नजर आ रहे थे। जहाज के बाहरी हिस्से सिल्वर जैसी कोई मजबूत परत थी। जहाज के दोनों तरफ साईडों में मोटे-मोटे अक्षरों में 'नीलगिरी' लिखा था।

मोटरबोट ने 302 का चक्कर लगाया।

"यह जहाज मुझे भीतर से दिखा दो।" देवराज चौहान ने कहा।

रघुवीर सिंह ने गोपाल को देखा।

"इस जहाज के भीतर कौन होगा?"

"सफाई वाले होंगे। सप्ताह पहले सिंगापुर से आया था और तीन दिन बाद फिर सिंगापुर जायेगा।" गोपाल बोला।

"यह सरकारी जहाज है?" देवराज चौहान ने जानबूझकर पूछा।

"नहीं। ये नीलगिरी शिपिंग कॉरपोरेशन का जहाज है। इस कम्पनी के चार बड़े-बड़े जहाज हैं। ब्रूटा साहब मालिक हैं इस कम्पनी के। बहुत बढ़िया आदमी हैं।" रघुवीर सिंह ने जवाब दिया–"गोपाल, बोट को सीढ़ी के साथ लगा जो नीचे लटक रही है। वहां से हम ऊपर चले जायेंगे।"

"लेकिन जहाज देखने में तो बहुत वक्त लगेगा।" गोपाल बोट का रुख उधर मोड़ता हुआ बोला।

"ये बात तो है।" कहते हुए रघुवीर सिंह ने प्रश्नभरी निगाहों से देवराज चौहान को देखा।

"मुझे पूरा जहाज देखना है।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

रघुवीर सिंह गहरी सांस लेकर गोपाल से बोला।

"अब जितना भी वक्त लगे रिश्तेदार को जहाज तो दिखाना ही पड़ेगा। नहीं तो बिरादरी में जाकर कहता फिरेगा कि रघुवीर ने मेरी इज्जत नहीं की। तू तीन घण्टे बाद लेने आ जाना हमें।"

"पहुंच जाऊंगा।" गोपाल ने बोट को लटकती सीढ़ी के पास रोक दिया।

"तीन घण्टे बाद आना।" कहने के साथ ही रघुवीर सिंह ने सीढ़ी पकड़ी और थोड़ा-सा ऊपर चढ़ गया।

देवराज चौहान ने भी सीढ़ी पकड़ी। वो साढ़े तीन फीट चौड़ी थी। पांव रखने की पर्याप्त जगह थी। चढ़ने में कोई परेशानी नहीं थी। दोनों ऊपर चढ़ने लगे।

नीचे, गोपाल की जाती बोट की आवाज़ उनके कानों में पड़ती रही।

□□

□□

उस सीढ़ी को चढ़कर, देवराज चौहान और रघुवीर सिंह जहाज के नीचे वाले डैक पर पहुंच गये। दूर-दूर तक समन्दर नजर आ रहा था। धूप थी तो नम हवा भी मजेदार लग रही थी। डैक इतना लम्बा-चौड़ा था कि वहां क्रिकेट का मैच आसानी से खेला जा सकता था।

जहाज की दीवार के साथ-साथ दूर-दूर तक लम्बी गली जाती दिखाई दे रही थी। वहां सफाई करने वाले दो कर्मचारी व्यस्त थे। देवराज चौहान की निगाह डैक की रेलिंग की तरफ गई, जहां अनिता गोस्वामी ने तस्वीर खिंचवाई थी। और रेलिंग के बाहरी तरफ सामने जहाज पर 302 लिखा था।

तभी सामने से एक आदमी उनकी तरफ बढ़ता नजर आया। वो चालीस बरस का, गठीले जिस्म का ठीक-ठाक सा दिखने वाला आदमी था।

"राजपाल तू यहां?" रघुवीर सिंह उसे देखते ही बोला।

"हां।" राजपाल पास पहुंचा—"नीलगिरी शिपिंग के सारे जहाजों की सफाई का ठेका मेरा ही है।" कहने के साथ ही उसने देवराज चौहान के, काली-सफेद दाढ़ी वाले चेहरे पर निगाह मारी फिर रघुवीर सिंह से बोला—"तू यहां कैसे? तेरे को तो इस वक्त टेबल-कुर्सी पर बैठकर, आने-जाने वाले माल को नोट करते होना चाहिये।"

"वो काम अब मेरा भतीजा कर रहा है।" रघुवीर सिंह मुस्कराया—"इनसे मिल। कहने को तो यह मेरे रिश्तेदार हैं, परन्तु असल में लेखक हैं। उपन्यास लिखते हैं। रोशन कुमार नाम है इनका। आजकल जो उपन्यास लिख रहे हैं, वो जहाज की कहानी है। इसलिये जहाज को भीतर से देखना चाहते हैं।"

"उपन्यास लिखते हैं।" राजपाल ने देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान शांत भाव से मुस्कराया।

"किस नाम से लिखते हैं?"

"रोशन कुमार के नाम से।" देवराज चौहान बोला।

"मैं उपन्यास पढ़ता हूं। खूब पढ़ता हूं। जहाजों पर अपने आदमियों को काम सौंपकर उसके बाद तो फुर्सत ही फुर्सत होती है। तब पढ़ता हूं। लेकिन रोशन कुमार के नाम का उपन्यास तो मैंने आज तक नहीं सुना।"

रघुवीर सिंह ने देवराज चौहान को देखा।

देवराज चौहान बराबर मुस्करा रहा था।

"किस लेखक के उपन्यास पढ़ते हो?"

"यूं तो बहुत लेखक हैं। लेकिन मेरा खास लेखक रामसिंह है। पीछे उसकी तस्वीर होती है।" राजपाल बोला।

"मुझे खुशी हुई कि तुम्हें मेरे लिखे उपन्यास अच्छे लगते हैं।"

"क्या मतलब? तुम तो रोशनलाल–।"

"रोशनलाल तो मैं हूं। लेकिन रामसिंह भी हूं। रामसिंह के सारे उपन्यास मैंने ही लिखे हैं। उनका लेखक मैं ही हूं।"

"उसके पीछे तस्वीर…?" राजपाल ने कहना चाहा।

"वो मेरे भाई रामसिंह की है। रामसिंह मेरा भाई है। उपन्यास के ऊपर नाम उसका होता है और पीछे तस्वीर उसकी होती है। असल लेखक मैं हूं। वो तो कोलाबा के सुपर बाजार में नौकरी करता है।"

"मैं समझा नहीं कि–।"

"दरअसल उसे तस्वीर छपवाने का बहुत शौक था और मैं मशहूर होने से घबराता था कि लोग फिर आराम से नहीं बैठने देंगे। ऐसे में मैंने अपने भाई के नाम से और उसकी तस्वीर के नाम से उपन्यास लिखने शुरू किए। अब हालत यह है कि कोलाबा सुपर बाजार में सामान लेने वाले कम और उसके आटोग्राफ लेने वाले ज्यादा आते हैं। वो परेशान हुआ पड़ा है। किसी को कह भी नहीं सकता कि उपन्यास मैं नहीं, मेरा भाई लिखता है। और मैं निश्चिंत होकर कहीं

भी आ जा सकता हूं। उसे लेखक मानते हुए उसके घर मिलने के वास्ते जाने कितने लोग आते हैं। उसका सोना, खाना-पीना हराम हुआ पड़ा है। उसकी बीवी हमेशा उसे कहती रहती है कि आपने उपन्यास पर अपनी तस्वीर और नाम क्यों दिया। भाई साहब लेखक हैं तो उनकी ही तस्वीर-नाम रहने दिया होता।"

राजपाल ने मुस्कराकर सिर हिलाया।

"ओह! समझ गया तो यह बात है। सच में मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मैं रत्नसिंह के उपन्यासों के असली लेखक से मिल रहा हूं।" उसने जबर्दस्ती वाले ढंग से, गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाया—"मैं कई बार सोचता था कि ऐसे बढ़िया उपन्यास लिखने वाला रत्नसिंह कैसा इन्सान होगा। लेकिन आप—आप तो हम जैसे ही हैं।" कहने के साथ ही वो ठठाकर हंस पड़ा।

रघुवीर सिंह मुस्कराया।

देवराज चौहान के चेहरे पर शांत मुस्कान मौजूद थी।

"लेकिन एक बात समझ नहीं आई।" राजपाल अपनी हंसी रोकते हुए बोला।

"आप रोशन कुमार। आपका भाई रत्नसिंह ___।"

"मेरा पूरा नाम रोशन कुमार सिंह है।"

"ओह! समझा। आइये भीतर चलते हैं। चाय लेते हैं।"

देवराज चौहान और रघुवीर सिंह, राजपाल के साथ चल पड़े।

वो सब केबिन में पहुंचे। राजपाल पांच मिनट के लिये बाहर गया और चाय के लिये कह आया। उनके बीच यूं ही इधर-उधर की बातें होती रहीं। देवराज चौहान सब्र के साथ काम ले रहा था। वह ऐसी कोई जल्दबाजी नहीं करना चाहता था कि, राजपाल को किसी तरह का शक हो। उसने जहाज को भीतर से अच्छी तरह देखना था। धीरे-धीरे बातों-बातों में कई तरह की बातें पूछनी थीं। यह सब काम धीमी गति वाले थे। पहले वह राजपाल के दिलो-दिमाग में उठे उफान को ठण्डा होने देना चाहता था, अपने फेवरेट लेखक से बातें करके।

चाय और साथ में खाने-पीने का सामान आ गया।

□□

□□

"अब बताओ मेरे लायक सेवा। मेरे से जो हो सकेगा, वो मैं तुम्हारे लिये करूंगा।" चाय के बाद राजपाल बोला।

"मैं इस वक्त जहाज से वास्ता रखती कहानी लिख रहा हूं।

पूरी कहानी जहाज पर है। और मुझे जहाज के भीतरी माहौल के बारे में खास जानकारी नहीं है। इसलिये मैं जहाज को देखना चाहता हूं कि भीतर क्या-क्या होता है। यानि कि ज्यादा से ज्यादा जितनी जानकारी हो सके, पा लेना चाहता हूं।"

"बस। ये तो मामूली-सी बात है।" राजपाल ने कहा।

"मेरे लिये नहीं।" देवराज चौहान मुस्कराया—"तभी तो यहां आया हूं।"

"आओ, मैं तुम्हें सब-कुछ बताऊंगा। एक-एक चीज समझाऊंगा और जब तुम्हारा जहाज वाला उपन्यास पढ़ूंगा तो मुझे भी बहुत अच्छा लगेगा कि मेरी जानकारी पर तुमने उपन्यास को पूरा किया।" कहने के साथ ही राजपाल उठ खड़ा हुआ।

देवराज चौहान और रघुवीर सिंह भी खड़े हो गये।

उसके बाद राजपाल, देवराज चौहान को जहाज का जर्रा-जर्रा दिखाता रहा और जरूरत की हर बात समझाता रहा। इंजन रूम से लेकर, सबसे ऊपरी डैक तक उसने देवराज चौहान को दिखाये। इस सारे काम में तीन घण्टे ऊपर का वक्त लग गया था।

देवराज चौहान को अभी तक जहाज में ऐसा कुछ नजर नहीं आया कि वो सोचने पर मजबूर हो कि महादेव क्या कहना चाहता था। जहाज की दूसरी मंजिल पर ऐसा कुछ अवश्य हुआ।

दूसरी मंजिल दिखाते-दिखाते राजपाल एक बंद दरवाजे के करीब जाकर ठिठका।

"दूसरी मंजिल पर, इस दरवाजे के पास जाने की इजाजत किसी को नहीं है। वैसे भी यह दरवाजा लॉक है।" राजपाल बोला।

देवराज चौहान की निगाह दरवाजे पर जा टिकी।

"क्यों इस दरवाजे के पार क्या है?"

"खास कुछ नहीं।" राजपाल मुस्कराया—"नीलगिरी शिपिंग कॉरपोरेशन के मालिक ब्रूटा साहब इस जहाज पर अकसर सफर करते हैं। यह जहाज उन्हें जाने क्यों बहुत अच्छा लगता है। शायद इसलिये कि उनकी शिपिंग कम्पनी का पहला जहाज यही था। इसके बाद ही उन्होंने बाकी जहाज खरीदे। इस जहाज को ब्रूटा साहब लक्की मानते हैं। दूसरी मंजिल का आधा हिस्सा उन्होंने अपने लिये रिजर्व रखा हुआ है। इस तरफ कोई यात्री, कोई कर्मचारी नहीं जा सकता। सिर्फ उनके खास आदमी ही जाते हैं। वहां की सफाई भी, उनके आदमी अपनी देख-रेख में करवाते हैं। जब भी नीलगिरी, मतलब कि

यह जहाज यात्रा पर रवाना होता है तो ब्रूटा साहब अकसर इसी जहाज पर यात्रा करते हैं। कभी नहीं भी करते। परन्तु इस तरफ कोई आम आदमी नहीं जा सकता, ब्रूटा साहब भीतर हों या न हों। जहाज की रवानगी के वक्त से ही यहां सख्त पहरा लग जाता है।"

देवराज चौहान को महसूस हुआ कि उसे मतलब की बात मालूम हो रही है। इतने बड़े जहाज के एक फ्लोर के आधे हिस्से को, इस तरफ हमेशा ही रिजर्व रखना, उसकी समझ से बाहर था। यकीनन कोई बात होनी चाहिये। शिपिंग कम्पनी का मालिक ब्रूटा, पागल तो होगा नहीं।

"तुम कभी भीतर गये हो? इस दरवाजे के पार—?" देवराज ने मुस्कराकर पूछा।

"हां। दो-तीन बार ब्रूटा साहब के आदमियों के साथ ही गया था।" राजपाल ने बताया।

"क्या है इस दरवाजे के पार। मतलब कि भीतर के रास्ते कैसे हैं और—?"

"सॉरी।" राजपाल ने सिर हिलाकर, मुस्कराकर कहा—"ब्रूटा साहब की तरफ से सख्त हिदायत है कि जहाज के प्राईवेट हिस्से के बारे में किसी से कोई बात नहीं की जाये। और आप तो उपन्यासकार हैं। कहीं अपने उपन्यास में भीतर के रास्तों का जिक्र कर दिया तो मेरी खैर नहीं।"

"यकीन रखिये। यह बात मैं उपन्यास के लिये नहीं, अपनी जिज्ञासा के लिये पूछ रहा हूं।"

"तो भी मैं माफी चाहूंगा। ब्रूटा साहब द तरफ से, इस बारे में बात करने की इजाजत नहीं है।

"कोई बात नहीं। मैं इस बात के लिये आप पर जोर नहीं डालूंगा। अब जहाज कब रवाना हो रहा है?"

"तीन दिन बाद। सिंग पुर के लिये। इस बार तो ब्रूटा साहब भी जहाज पर यात्रा करेंगे। आओ मैं तुम्हें जहाज की बाकी चीजें दिखाता हूं। उसके बाद तुम्हें जहाज के स्टाफ के बारे में बताऊंगा। उपन्यास लिखते समय शायद इन बातों की जरूरत पड़े।"

देवराज चौहान ने उस बन्द दरवाजे को देखा। फिर राजपाल और रघुवीर के साथ चल पड़ा। उस बन्द दरवाजे के पार, दूसरी मंजिल के, उस प्राईवेट हिस्से पर कुछ है। खास कुछ है। इसी वजह से उस तरफ किसी को जाने की इजाजत नहीं थी।

शिपिंग कम्पनी का मालिक ब्रूटा यहां क्या करता है?

क्या महादेव इसी सिलसिले के बारे में कुछ बताना चाहता था?

□□

□□

जहाज नम्बर 302 यानि कि नीलगिरी नामक जहाज का राजपाल ने जर्रा-जर्रा दिखाया और फिर देवराज चौहान को उसी पहले वाले केबिन में ले गया।

बोरियत महसूस कर रहा रघुवीर सिंह साथ ही रहा।

साढ़े तीन घण्टों में राजपाल के हाव-भाव में जरा भी थकान नहीं आई थी। केबिन में पहुंचकर उसने पुनः चाय और खाने का सामान मंगवाया और देवराज चौहान से बोला।

"रोशन कुमार जी!"

"जी–!"

"अगर आप जहाज के भीतर के सीन लिखेंगे उपन्यास में तो कहीं भी जहाज कर्मचारियों के बारे में भी बताना पड़ सकता है। मेरे ख्याल में आपको इस बात की जानकारी होनी चाहिये कि कौन-सा कर्मचारी जहाज पर क्या करता है और उसकी पोस्ट को क्या कहा जाता है।" राजपाल ने कहा।

देवराज चौहान बहुत ठण्डे-ठण्डे कामें ले रहा था। एकदम ये कहना कि वो चलता है। राजपाल की निगाहों में शक पैदा कर सकता था। उसका काम हो चुका था। जहाज को देख चुका था। और पूरे जहाज में उत्सुकता पैदा करने वाली कोई बात थी तो, वो थी जहाज की दूसरी मंजिल का आधा हिस्सा। जोकि हमेशा ही जहाज के मालिक ब्रूटा के अधिकार में रहता था। जिस तरफ अन्य किसी का जाना मना था। ब्रूटा जहाज में सफर कर रहा हो या न हो। जहाज की रवानगी के वक्त वहां पहरा आरम्भ हो जाता था कि कोई उस तरफ न जा सके। देवराज चौहान का मस्तिष्क तेजी से इसी तरफ चल रहा था।

देवराज चौहान ने मुस्कराकर राजपाल को देखा।

"हां! ये तो मालूम होना बहुत जरूरी है कि जहाज पर कौन कर्मचारी क्या करता है।"

"तो सुनो। मैं बताता हूं। चाय लो ठण्डी हो रही है।" कहकर राजपाल ने घूंट भरा फिर कह उठा—"जहाज पर आमतौर पर मुख्य तीन विभाग होते हैं। डेक विभाग। इंजन विभाग और सर्विस विभाग।"

राजपाल ठिठका तो देवराज चौहान ने सिर हिलाया।

लापरवाह-सा बैठा रघुवीर सिंह प्लेटें खाली करने में लगा था।
"डेक विभाग में जहाज के कप्तान, उप-कप्तान, सहायक कप्तान, चालाक सेरंग, पत्तन मास्टर आते हैं। कप्तान को चीफ् मेट या मास्टर भी कहते हैं। जहाज का सबसे बड़ा होने के नाते, कप्तान का मुख्य कार्य जहाज, उसके सारे कर्मचारियों को, जहाज के माल की और यात्रियों की सुरक्षा की जिम्मेवारी इस पर होती है। जहाज के चालक दल और कर्मचारियों पर इसका पूरा नियंत्रण होता है। यह जहाज के कर्मचारियों में अनुशासन बरकरार रखते हुए, सारे काम सफलता से निपटाता है। कहां, किस तरह सफर करना है। खराब मौसम में या एमरजैंसी में क्या करना है। सब कप्तान के हवाले है। जहाज पर होने वाली हर बात का हिसाब, लेखा-जोखा इसे रखना पड़ता है। अलग-अलग देशों के बन्दरगाह और कस्टम अधिकारियों से अच्छे सम्बन्ध बनाकर रखने पड़ते हैं; ताकि दूसरे देश भेजने वाले माल के लिये वे लोग उसका ही जहाज इस्तेमाल करें। इससे जहाज की आमदनी बढ़ती है। जहाज के मालिक और कर्मचारियों के बीच यह एक कड़ी का काम करता है।"

राजपाल के खामोश होते ही देवराज चौहान ने सिर हिलाया।

"उसके बाद फर्स्ट मेट या उप-कप्तान जहाज का दूसरा, मुख्य अधिकारी होता है। कप्तान की सहायता करने के साथ-साथ इसका मुख्य कार्य डेक कर्मचारियों, माल लदान-ढुलाई, जैसे कामों और यात्रियों की सुविधाओं का ध्यान रखना होता है। कौन-से कर्मचारी ने क्या काम करना है, फर्स्ट मेट ही यह तय करता है। सामान कहां रखना है, कहां उतारना है, यह सब काम इसके जिम्मे ही होते हैं।"

"इसके जिम्मे तो काफी काम रहता है।" देवराज चौहान ने कहा।

"हां। उप-कप्तान को बहुत कुछ संभालना होता है। लेकिन सबका काम ही कठिन होता है।" राजपाल ने सोचभरे स्वर में कहा—"उप-कप्तान के बाद सहायक कप्तान जहाज के मुख्य कामकाज करता है। मुख्य रूप से रात का काम इसे संभालना पड़ता है। क्रोमोमीटर, गाईरोकम्पास जैसे उपकरणों की देखभाल इसी के सिर होती है। कर्मचारियों की शिफ्ट ड्यूटी के मामले यही संभालता है। बन्दरगाह के बाहर, खड़े होने के लिए जब जहाज को लंगर डालना होता है तो जगह का चुनाव और सारा काम इसी की देखरेख में होता है। बीमार कर्मचारियों के इलाज करने तक की जिम्मेवारी इस पर होती है।"

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई।

"सबका काम अपनी-अपनी जगह महत्वपूर्ण है।" देवराज चौहान ने कहा।

"हां। पुर्जा छोटा हो या बड़ा। अपनी जगह वह महत्वपूर्ण ही होता है।" राजपाल ने सयानेपन से कहा।

देवराज चौहान के होंठों पर शांत मुस्कान उभरी।

"फिर बारी आती है थर्ड मेट की। इसका काम सिगनल उपकरणों, सुरक्षा से वास्ता रखती बातें और लाईफ बोट्स की देखभाल इसके ऊपर होती है। यह कप्तान के आदेशों को इंजन रूम तक भी पहुंचाता है और अपने सामने उनका पालन करवाता है।"

देवराज चौहान की निगाह राजपाल पर थी।

रघुवीर सिंह प्लेटें खाली करने के बाद पुनः बोर होने लगा था।

"उसके बाद पायलट ऑफ शिप की बारी आती है। इसके ऊपर जिम्मेवारी होती है, यह जानना कि जहाज के लायक कहां पानी है और वहां जहाज की गति कितनी होनी चाहिए। कई बार ऐसी जगहों पर से गुजरना पड़ता है, जहां पानी कम गहरा होता है तो जहाज की गति धीमी रखनी पड़ती है। कितनी धीमी रखनी है गति, इस बात को पायलट ऑफ शिप ही तय करता है।"

देवराज चौहान ने कश लिया। उसकी पूरी तवज्जो राजपाल पर थी। देवराज चौहान इस बात में हमेशा विश्वास रखता था कि कोई भी जानकारी बेकार नहीं होती। कभी न कभी काम आती है।

"इसके बाद पोस्ट आती है सेरंग की। सेरंग, कर्मचारियों पर नियंत्रण रखता है। उन पर नजर रखता है और सुपरवाईजरी करता है, ताकि सारा काम ठीक-ठाक ढंग से चले।" राजपाल बोल रहा था—"जहाज पर इंजन विभाग होता है। इस विभाग पर जहाज के इंजन और उसके उपकरणों की पूरी जिम्मेवारी होती है। खराबी पैदा होते ही तुरन्त उसे ठीक कर देते हैं। यह लोग मामूली मैकेनिक न होकर अधिकारी कहलाते हैं। जहाज में शिप इंजीनियर भी होता है। मुख्य अधिकारी होने के नाते इसे सभी इंजनों, बायलरों, इलैक्ट्रिकल, प्रशीतन, सैनिटरी उपकरणों, डेक मशीनरी और स्टीम कुनेक्शनों के सही और सहज संचालन की जिम्मेवारी निभानी होती है। यह इंजन रूम का प्रभारी होता है। वहां होने वाली गड़बड़ की जवाबदेही इसे ही देनी पड़ती है।"

देवराज चौहान, राजपाल को देख रहा था।

"वास्तव में।" रघुवीर सिंह कहा उठा—"जहाज पर काम करने वालों को कठिन जीवन गुजारना पड़ता है।"

"उसके बाद इलैक्ट्रिकल ऑफिसर होता है। इंजन रूम के सभी इलैक्ट्रिकल उपकरणों को संभालने की जिम्मेवारी इसी पर होती है। फिर रेडियो ऑफिसर होता है। यह मुख्य रूप से डैक पर काम करने वालों को कंट्रोल करता है। इसके लिए वायरलैस, कम्प्यूटर और अन्य अत्याधुनिक उपकरणों के संचालन और कोर्ड वर्ड के सन्देशों में एक्सपर्ट होता है। जहाज पर सीकोंनी होता है। जिसका अहम काम जहाज की गति-दिशा पर कंट्रोल करना और सिगनल सिस्टम की देख-रेख करना होता है। बन्दरगाह पर खड़े जहाज की सुरक्षा भी इसके ऊपर ही होती है। जहाज पर सेवा विभाग होता है। जहाज की मरम्मत करने से लेकर उस पर काम करने वाले कर्मचारियों, अधिकारियों, यात्रियों के लिये भोजन, रहने, जरूरत के हर सामान को मुहैया कराना इस विभाग का काम है। इसमें मुख्य स्टीवर्ड पूरे काम की देखभाल करता है और मुख्य रसोईया भोजन आदि का ध्यान रखता है। इस विभाग में कर्मचारियों की संख्या बहुत ज्यादा होती है। जहाज पर ड्रेस डाइवर होता है। इसे स्किन डाइवर भी कहते हैं। यह समन्दर में उतरकर जहाज के पेंदे, पंखों, पाईप वगैरह की जांच करता है।"

"हर तरह की फौज होती है, जहाज पर।" रघुवीर सिंह ने देवराज चौहान को देखकर कहा।

"हां।" राजपाल ने सिर हिलाया—"जहाज में लाइट कीपर होता है। जहाजों के मार्ग-निर्देशन, सिगनल लेने-देने का महत्वपूर्ण काम उसका लाइट हाऊस करता है। यह मौसम, तापमान, हवा का बहाव और समन्दरी हरकतों के आंकड़ों का भी हिसाब रखता है; ताकि रात में, समन्दरी तूफान में या फिर किस माहौल में जहाज को कैसे चलाया जाये। मुसीबत के वक्त मदद मांगने का काम भी यही करता है।"

"सब किसी को अपना काम जिम्मेवारी से करना होता है।" रघुवीर सिंह ने कहा—"एक की भी लापरवाही सबकी मेहनत पर पानी फेर सकती है। किसी का भी काम हल्का नहीं होता।"

देवराज चौहान ने उसे देखा। कहा कुछ नहीं।

राजपाल कहे जा रहा था।

"एक जगह नॉटिकल सर्वेयर की होती है। इसका काम सागर के खास-खास हिस्सों के नक्शे तैयार करना होता है; ताकि बीच

समन्दर में जहाज कहीं भटक न जाये या फिर समुन्द्री पर्वत या चट्टान से टकरा न जाये। इन सबके अलावा हर विभाग में अलग-अलग कई कर्मचारी और सफाई कर्मचारी होते हैं। मोटे तौर पर जहाज में होने वाले कर्मचारियों के बारे में जानकारी यही है।" राजपाल ने अपनी बात समाप्त की।

देवराज चौहान आभारभरे ढंग से मुस्कराया।

"वास्तव में आपने अपना कीमती वक्त देकर बहुत काम की जानकारी दी। मैं आपका शुक्रिया अदा''''।"

"अजी क्या बात करते हैं रोशन कुमार जी।" राजपाल बात काटकर हंसा—"मैं आपके किसी काम आ सका क्या यह कम है। आप तो उपन्यास लिखकर, लोगों को मनोरंजन देते हैं। उसके मुकाबले तो मैं आपके काम कुछ भी नहीं आया।"

"खैर, ये आपकी सोच है।" देवराज चौहान मुस्कराते हुए उठ खड़ा हुआ—"अब मुझे इजाजत दीजिये। कभी जरूरत पड़ी तो फिर मिलूंगा आपसे।"

"जरूर-जरूर। मुझे खुशी होगी मिलकर। और बाजार में, कुछ वक्त के बाद मैं आपका उपन्यास भी तलाश करूंगा, जिसमें जहाज की कहानी होगी।" राजपाल मुस्कराकर खड़ा हुआ।

"मैं कॉपी, भिजवा दूंगा।"

"यह तो और भी खुशी की बात है। लेकिन आप लोग यहां से जायेंगे कैसे?"

"वो गोपाल बोट वाले ने आना था तीन घण्टे बाद।" रघुवीर सिंह बोला—"अब तो चार घण्टे से ऊपर हो चुके हैं। कहीं आने के बाद वो वापस न चला गया हो।"

"चला गया होता तो बन्दरगाह तक पहुंचाने का इन्तजाम मैं करा दूंगा।" राजपाल ने कहा।

लेकिन गोपाल बोट के साथ, वहीं सीढ़ी के पास मौजूद था।

राजपाल से विदा लेकर दोनों बोट में बैठे तो बोट बन्दरगाह की तरफ दौड़ पड़ी। इस वक्त दोपहर के तीन बज रहे थे। सूर्य सिर पर चढ़ा था। चारों तरफ शांत समन्दर था।

"रघुवीर—!" देवराज चौहान बोला।

"हां।"

"बाकी सब तो समझ में आ गया। एक बात समझ में नहीं आई।" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"कौन-सी बात?"

"जहाज की दूसरी मंजिल के आधे हिस्से को, जहाज के मालिक ब्रूटा साहब ने प्राईवेट क्यों बना रखा है?" ऐसा प्राईवेट कि, उधर कोई न जाये, वहां की पहरेदारी रखी जाती है।"

"तेरे को इससे क्या। वो जहाज के मालिक हैं जो भी करें।"

"मेरा मतलब था कि अगर मालूम हो जाये कि वहां ब्रूटा साहब क्या करते हैं, तो हो सकता है इससे मेरे उपन्यास की कहानी को दम मिले और 'हिट' जाये।"

"ज्यादा हिट कहानी भी ठीक नहीं होती।" रघुवीर सिंह ने लापरवाही से कहा—"तुम्हारा काम हो गया। काम खत्म। अब मैं भी छुट्टी लेकर चलूंगा। बीवी के लिये साड़ी वगैरह भी खरीदनी है। रोज चिड़-चिड़ करती रहती है। आज तो साड़ी देखकर, अपने सड़े दांत फाड़ ही देगी।"

□□

□□

देवराज चौहान जब सोहनलाल के कमरे में पहुंचा तो शाम के छः बज रहे थे। कुर्सी पर बैठा, गोली वाली सिग्रेट के कश लेता मिला।

"मालूम किया, अनिता गोस्वामी के घर पर मरने वाला कौन था?" देवराज चौहान ने बैठते हुए पूछा।

"पता करने जा रहा था कि रास्ते में असलम खान से मुलाकात हो गई।"

"असलम खान?"

"वो ही, जिसने महादेव को अनिता गोस्वामी के साथ मिलाया था।" सोहनलाल ने कहा।

देवराज चौहान ने सिर हिलाया।

"अनिता गोस्वामी आज सुबह ही असलम खान के पास गई थी। उससे मिली थी।" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा—"चाहती थी कि असलम खान फिर किसी ऐसे आदमी से मुलाकात करवाये, जो बन्दरगाह के बारे में जानकारी रखता हो।"

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं।

"असलम खान ने मना कर दिया कि महादेव को उससे मिलवाकर वो पहले ही मुसीबत मोल ले चुका है। महादेव की मौत के बाद, उसके दोस्त उसके हत्यारे को ढूंढ़ रहे हैं। असलम खान ने

अनिता गोस्वामी से कहा कि, महादेव के दोस्त खतरनाक हैं और किसी कीमत पर उसके हत्यारे को नहीं छोड़ेंगे।"

देवराज चौहान का पूरा ध्यान सोहनलाल के शब्दों पर था।

"यह सुनकर उसने कहा कि महादेव के हत्यारे इस तरह नहीं मिलेंगे। अगर वो वास्तव में महादेव के हत्यारों तक पहुंचना चाहते हैं तो मुम्बई बन्दरगाह से तीन दिन बाद नीलगिरी जहाज सिंगापुर के लिये रवाना होगा। उस जहाज को तीन सौ दो नम्बर से भी जाना जाता है। वो नीलगिरी शिपिंग कॉरपोरेशन का जहाज है और उसका मालिक फेमस आदमी मिस्टर ब्रूटा है। महादेव को हत्यारे को पाने के लिये उस जहाज पर सिंगापुर के लिये सफर करना पड़ेगा। वो भी उस जहाज पर होगी। तब वो बता देगी कि जहाज पर हत्यारा कहां है।"

देवराज चौहान ने सोचभरे ढंग से सिग्रेट सुलगा ली।

"ऐसा है तो वो जहाज पर हमें कहां मिलेगी?"

"असलम खान के पूछने पर उसने बताया था कि सफर की पहली रात्त को ठीक ग्यारह बजे, छठी मंजिल के डेक पर, वो मिलेगी। असलम खान से वो मेरा-तुम्हारा नाम पूछ गई है।" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा—"असलम खान ने उसे एक घण्टा जबर्दस्ती बिठाये रखा; ताकि जान सके कि मामला क्या है। लेकिन अनिता गोस्वामी उसे यही कहती रही कि ये मामला तुम्हारे जानने लायक नहीं है। उसने पूरी कोशिश कर ली। लेकिन वो कुछ नहीं बोली।"

सोहनलाल के खामोश होते ही वहां खामोशी छा गई।

"तो—।" देवराज चौहान ने चुप्पी तोड़ी—"अनिता गोस्वामी हमें नीलगिरी जहाज यानि कि 302 नम्बर जहाज में उस दिन की रात को मिलेगी जिस दिन जहाज सिंगापुर के लिये मुम्बई बन्दरगाह छोड़ेगा।"

"असलम खान तो मुझे ऐसा ही बोला।" सोहनलाल बोला।

देवराज चौहान कश लेता सोच में डूबा रहा।

"बन्दरगाह से जहाज के बारे में तुम्हें कुछ मालूम हुआ?" सोहनलाल ने एकाएक पूछा।

"नीलगिरी जहाज को मैं पूरी तरह भीतर से देखकर आया हूं।"

"ओह!" सोहनलाल ने सिर हिलाया—"कोई खास बात?"

"सिर्फ यह कि जहाज की दूसरी मंजिल का आधा हिस्सा पूरी तरह से प्राईवेट है। वहां पर जहाज के मालिक ब्रूटा की इजाजत के

बिना कोई नहीं जा सकता। उस हिस्से की तरफ जाने के लिये ऐसे दरवाजों में से गुजरना पड़ता है। जोकि लॉक रहते हैं। जहाज की रवानगी के वक्त वहां पहरा लग जाता है। ब्रूटा और उसके खास आदमी ही उस हिस्से में जा सकते हैं। यात्री उस तरफ नहीं आ सकते।"

"अजीब बात है!"

"वास्तव में अजीब बात ही है।" देवराज चौहान ने होंठ सिकोड़े— "जहाज के मालिक ब्रूटा ने दूसरी मंजिल के आधे हिस्से को प्राइवेट बना रखा है। इसमें कोई खास सोचने की बात नहीं है। बड़े लोग। पैसे वाले लोग, अक्सर ऐसी सनकपन की हरकतें करते रहते हैं। सोचने और गौर करने लायक बात तो यह है कि वहां पर इतना सख्त पहरा क्यों लगा दिया जाता है जब जहाज अपनी यात्रा पर रवाना होता है। इस पहरे से इस बात का वास्ता नहीं है कि ब्रूटा जहाज में सफर कर रहा है या नहीं।" उन लोगों की अहम तवज्जो इस तरफ रहती है कि कोई जहाज के प्राइवेट हिस्से में न आने पाये। इतनी सावधानी, सख्ती किस वास्ते। जाहिर है कि वहां ऐसा कुछ है कि ब्रूटा नहीं चाहता कि उस बारे में कोई जाने।"

सोहनलाल चेहरे पर अजीब-से भाव लिए, देवराज चौहान को देख रहा था।

"तुम जहाज पर गये थे। तब भी जहाज के प्राईवेट हिस्से को नहीं देख पाये?" सोहनलाल बोला।

"नहीं। जहाज दिखाने वाले ने स्पष्ट तौर पर मना कर दिया। वैसे भी उधर का रास्ता बंद था। मजबूत दरवाजा लॉक था। और उस इन्सान की बातों से साफ लग रहा था कि वो ब्रूटा से खौफ खाता है। उसके बात करने के ढंग से मैं समझ गया था कि उसे कैसा भी लालच दे दो। वो मानने वाला नहीं। वैसे भी उस दरवाजे की चाबी उसके पास नहीं हो सकती।"

सोहनलाल ने गोली वाली सिगरेट का कश लिया।

"वो जहाज बेशक ब्रूटा की शिपिंग कम्पनी का है। लेकिन वो कई देशों के बन्दरगाह पर जाता होगा। ऐसे में बन्दरगाह के अधिकारी जहाज के हर हिस्से की तलाशी लेने का हक रखते हैं और लेते भी होंगे।"

देवराज चौहान मुस्कराया।

"तो ब्रूटा को क्यों इन्कार होगा। वह बिना किसी एतराज के

तलाशी लेने देता होगा। और उससे पहले वहां एतराज के काबिल जो भी चीज होती होगी हटा देता होगा।"

देवराज चौहान की इस बात पर, सोहनलाल ने फौरन सिर हिलाया।

"यकीनन ऐसा ही होता होगा।"

"सोहनलाल।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा- "बन्दरगाह पर, वो 302 नम्बर जहाज कहां खड़ा है, मैं देख आया हूं। आज रात मैं उस जहाज के, दूसरी मंजिल वाले प्राईवेट हिस्से को भीतर से देखना चाहता हूं। आखिर वहां है क्या? ऐसी क्या चीज है कि ब्रूटा उसे सबकी निगाहों से बचाकर रखना चाहता है?"

सोहनलाल ने बेचैनी से पहलू बदला।

"यह खतरे वाला काम होगा।"

"क्यों?"

"दिन में वहां क्या इन्तजाम था, मैं नहीं जानता। लेकिन रात को कम से कम उस प्राईवेट हिस्से में, ब्रूटा पहरा अवश्य रखवाता होगा। यूं ही वो जहाज लंगर डाले नहीं खड़ा रहता होगा।" सोहनलाल ने कहा।

"मैं इस बारे में सोच चुका हूं और जो भी खतरा सामने आयेगा, उससे निपटा जायेगा।" देवराज चौहान के दांत भिंचते चले गये- "लेकिन जहाज नम्बर 302 पर स्थित ब्रूटा के उस प्राईवेट हिस्से को देखना बहुत जरूरी है।" मुझे पूरा विश्वास है कि महादेव की हत्या की वजह वही जगह है।

सोहनलाल ने सिग्रेट को ऐश-ट्रे में मसला।

"लेकिन उस जगह को किसी तरह तब भी देखा जा सकता है, जब जहाज रवाना हो और तुम जहाज पर हो।"

"बेवकूफों वाली बातें न करो। तब सख्त से सख्त पहरा होगा और इस वक्त अगर पहरा होगा तो सामान्य पहरा होगा। हो सकता है, जहाज की रवानगी के बाद हम उस तरफ फटक भी न सकें।" देवराज चौहान ने दांत भींचकर कहा-"जैसे भी हो। आज रात ही जहाज के प्राईवेट हिस्से को देखा जायेगा। तुम साथ चलोगे। क्योंकि प्राईवेट हिस्से में जाने के लिये, रास्ते में बंद तालों को तुमने खोलना है। अपना सामान तैयार कर लो। कोई भी औजार छूटना नहीं चाहिए। क्योंकि जाने उस हिस्से में क्या है। समझ गये?"

"पूरी तरह समझ गया। उस जहाज तक पहुंचने के लिये किसी

मोटरबोट का इन्तजाम करना पड़ेगा। इन्तजाम भी इस तरह कि बाद में छानबीन पर भी मालूम न हो सके कि बोट को इस्तेमाल किसने किया था।" सोहनलाल बोला।

"बोट का इन्तजाम ठीक नहीं रहेगा।" देवराज चौहान गम्भीर सोच भरे स्वर में कह उठा।

"क्यों?"

"वो शोर करेगी। उसके इंजन की आवाज, अगर रात को जहाज पर कोई होगा तो, उसे सावधान कर देगी कि कोई इस तरफ आ रहा है। बोट का इस्तेमाल, गले में घण्टी बांधने जैसा होगा।" देवराज चौहान ने सोहनलाल को देखा—"इस काम में, जहाज तक पहुंचने के लिये, हम नाव का इस्तेमाल करेंगे।"

"नाव?"

"हां। कश्ती। छोटी-सी। पानी में चप्पू चलाकर, बिना किसी शोर के हम जहाज तक पहुंच सकते हैं।" कहते हुए देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ गये—"दिन में तो जहाज पर आने-जाने के लिये सीढ़ी लटक रही थी। लेकिन रात के वक्त यकीनन सीढ़ी उठा ली जाती होगी। हमें मजबूत रस्से का इन्तजाम करना होगा, जो हमारा बोझ बर्दाश्त कर सके। ऐसा कांटा भी होना चाहिये होगा, जिसे रस्सी के सहारे ऊपर फैंककर, जहाज की ऊपरी दीवार के किनारे पर फंसाकर रस्सी के सहारे ऊपर चढ़ा जा सके। इन सब चीजों का इन्तजाम तुम्हें अभी करना होगा। शाम हो चुकी है। कुछ और वक्त बीत गया तो फिर इन्तजाम करने में दिक्कत आयेगी।"

सोहनलाल फौरन खड़ा हो गया।

"मैं एक घण्टे में यह सामान लेकर आता हूं।"

"रिवॉल्वर पर लगाने के लिए साईलैंसर भी लेते आना।"

सोहनलाल ने प्रश्नभरी निगाहों से देवराज चौहान को देखा। देवराज चौहान के चेहरे पर कठोर-सपाट भाव थे।

"जहाज पर अगर फायरिंग की जरूरत पड़ी तो, रिवाल्वर पर साईलैंसर लगा होना जरूरी है। नहीं तो उस जगह से गोली की आवाज के धमाके, बन्दरगाह के तट तक जा सकते हैं और ऐसे कई लोग हों, जिन्हें गोली की आवाजों की पहचान होगी। बन्दरगाह पर जाहिर है कि रात को पुलिस वालों की भी ड्यूटी होगी।"

"साईलैंसर का इन्तजाम भी हो जायेगा।"

"जगमोहन आया?"

"नहीं।"

"तुम सामान का इन्तजाम करो।" देवराज चौहान ने नई सिग्रेट सुलगा ली।

सोहनलाल बाहर निकलता चला गया।

□□

□□

जगमोहन दिन भर बेहद व्यस्त रहा।

अनिता गोस्वामी की डायरी में लिखे फोन नम्बरों को चैक करते-करते शाम हो गई। फिर भी पूरे नम्बर नहीं चैक कर पाया था और जिन नम्बरों को चैक किया था, उनसे कोई फायदा नहीं हुआ था। कहीं भी आशाजनक बात नहीं हो पाई थी।

आखिरकार जगमोहन ने उस नम्बर पर बात की, जिस नम्बर के आगे मौसी लिखा था। उसके कानों में औरत की आवाज पड़ी। जगमोहन ने कहा कि वो उससे मिलना चाहता है, तो उसने बिना किसी पूछताछ के कहा, आ जाये और अपना पता बता दिया।

जगमोहन को अजीब-सा लगा कि उसके बारे में बिना जाने-पूछे उसे आने के लिये बोल दिया। बहरहाल जगमोहन मौसी वाले पते पर पहुंचा जो कि खूबसूरत मकान का पता था। दरवाजा खोलने वाली नौकरानी थी। उसने प्रश्नभरी निगाहों से जगमोहन को देखा।

"मैंने कुछ देर पहले फोन किया था तो मुझे आने के लिये कहा गया।" जगमोहन ने कहा।

"आ जाईये।"

जगमोहन भीतर पहुंचा। सजा हुआ, बेहद खूबसूरत ड्राईगरूम था। नौकरानी जगमोहन को वहां बिठाकर, चली गई। दो मिनट बाद पानी लाई और बोली।

"मेमसाहब अभी आ रही हैं।"

पानी के बाद नौकरनी चली गई।

करीब छठे मिनट उसने वहां कदम रखा।

जगमोहन की निगाह उस पर जा टिकी।

वो चालीस बरस की अवश्य रही होगी, परन्तु किसी भी तरह से तीस से ज्यादा नहीं लग रही थी। वो बेहद खूबसूरत थी। इसका अहसास, उसे भी था। तभी तो उसके होंठों पर विश्वास से भरी मुस्कान छाई हुई थी। उसने स्लैक्स पहन रखी थी। जिसकी वजह उसकी टांगों और कूल्हों की शेप स्पष्ट नजर आ रही थी। ऊपरी

हिस्से में ब्लाउज जैसी स्कीवी थी। जो कि इतनी छोटी थी कि जैसे लगता था अभी वो ऊपर उठ जायेगी। उसके होंठों पर सुर्ख लिपिस्टिक चमक रही थी। कानों में सोने के टॉप्स और दायें हाथ की उंगलियों में सुलगती सिग्रेट फंसी थी।

"हैलो जेन्टलमेन–।" पास पहुंचते हुए उसके होंठों की मुस्कान और गहरी हो गई।

जगमोहन उठा।

उसने जगमोहन से इस तरह हाथ मिलाया, जैसे बरसों पुरानी पहचान हो।

"सॉरी। आपको ज्यादा वेट तो नहीं करनी पड़ी–।" वो बैठते हुए बोली।

"नहीं।" जगमोहन मुस्कराया और बैठ गया–"आपने मुझे पहचाना?"

"मैंने आपको पहले कभी नहीं देखा, फिर कैसे पहचान सकती हूं।" वो हंसते से हंसी।

"तो मेरे फोन करने पर आपने बिना कुछ पूछे आने के लिये क्यों कह दिया। जबकि–।"

"मिस्टर! इस वक्त मैं फुर्सत में थी।" उसने कश लिया–"फोन आया तो मैंने आने के लिए कह दिया। अगर आप गलत आदमी हैं तो, यहां से आप कुछ नहीं ले जा सकते। क्योंकि मेरे पास कुछ भी नहीं है।"

"आप खूबसूरत हैं।" जगमोहन मुस्कराया।

"फिर भी कोई फर्क नहीं पड़ता।" उसके चेहरे की मुस्कान गहरी हो गई–"मेरी खूबसूरती भी कोई नहीं ले जा सकता। क्योंकि वो मेरी ही है। मुझसे जुदा नहीं हो सकती। यानि कि मैं जैसी हूं, वैसी ही रहूंगी। मुझे किसी भी सूरत में कोई फर्क नहीं पड़ेगा।"

"बहुत दुनिया देख रखी है आपने–।"

"बहुत तो नहीं, लेकिन जितनी देखनी चाहिये, देख ली। आप अपने बारे में बताइये?"

"आप अनिता गोस्वामी की मौसी हैं?"

वो चौंकी। फिर तुरन्त ही संभल गई।

"हां। हूं।"

"असली के नकली?" जगमोहन ने उसकी आंखों में झांका।

"अगर शगुन देना है तो असली। नहीं देना है तो नकली–।"

"शगुन देने नहीं आया?"

"तो फिर मैं उसकी मुंहबोली मौसी हूं। आगे कहो।" उसकी निगाह जगमोहन पर टिक चुकी थी।

"अनिता गोस्वामी से मिलना चाहता हूं मैं–।"

"एक घण्टा पहले आते तो मिल लेते। अब वो जा चुकी है और कहां है, मैं नहीं जानती।" उसने शांत स्वर में कहा–"लेकिन तुम उसे क्यों तलाश करते फिर रहे हो? कौन हो तुम?"

"उसके साथ मेरा दोस्त था। किसी ने उसकी जान ले ली। वो जानती है कि किसने उसकी जान–।"

"महादेव की बात कर रहे हो।" उसने सीधे-सीधे कहा।

"हां।" जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं।

"उसके हत्यारे को तलाश कर रहे हो?"

"हां।"

"क्यों? अपने दोस्त की मौत का बदला लेना है?" उसने जगमोहन की आंखों में झांका।

"हां।" जगमोहन के दांत भिंच गये।

"इतना दम-खम है तुममें कि उसके हत्यारे का सामना कर सको?" वो व्यंग्य से कह उठी।

"इस बात का जवाब वक्त आने पर मिल जायेगा। तुम हत्यारे के बारे में बताओ।" जगमोहन के दांत भिंचते चले गये–"दम-खम न होता तो महादेव के हत्यारे को तलाश नहीं करता।"

वो, जगमोहन को देखती रही।

"जवाब नहीं दिया तुमने?" जगमोहन बोला।

"इकट्ठा ही जवाब दे दूंगी। अगर कुछ और भी पूछना हो तो।"

"अनिता गोस्वामी, महादेव को लेकर क्या काम कर रही थी?" जगमोहन बोला।

"और सवाल?"

"अनिता गोस्वामी ने अपने घर पर किसी को चाकू मार दिया। क्यों?"

"क्योंकि वो उसकी जान लेने जा रहा था।" उसने शांत स्वर में कहा।

"बाकी सवालों का जवाब?"

"बाकी जवाब शायद मैं न बता सकूं।" उसने सोचभरे स्वर में कहा–"अनिता से ही पूछो तो ठीक रहेगा।"

"वही तो पूछ रहा हूं कि बताओ, वो कहां मिलेगी?"

"मैं नहीं जानती। लेकिन तीसरे दिन, मुम्बई बन्दरगाह से, सिंगापुर के लिये नीलगिरी नाम का जहाज रवाना होने वाला है। मैं इतना जानती हूं वो उस जहाज पर सफर करेगी।" उसका स्वर सोच से भरा था।

"यह खबर पक्की है? कहीं मैं जहाज पर चढ़ जाऊं और– ।"

"हां। खबर पक्की है।"

"वो जहाज पर कहां मिलेगी?"

"मैं क्या जानूं। ढूंढ लेना।" उसने लापरवाही से कहा।

जगमोहन, उसे देखता रहा।

एकाएक वो मुस्कराई।

"मैं जानती हूं कि मुझे देखते सोच रहे हो कि मैं कितनी खूबसूरत हूं। अगर– ।"

"मैं जानना चाहता हूं कि अनिता गोस्वामी का ब्वायफ्रैंड कौन है?" जगमोहन कह उठा।

"मैं कुछ नहीं जानती। जब उससे मिलो तो पूछ लेना।" उसने मुस्कानभरे स्वर में कहा–"अब कोई बात करनी है तो मेरे बारे में करो। मैं– ।"

जगमोहन उठ खड़ा हुआ।

"चल दिए, मुलाकात अधूरी छोड़कर– ।" उसने जानबूझकर आंखें फैलाईं।

"जो कमी रह गई है, वो अनिता गोस्वामी से मिलकर पूरी कर लूंगा।" कहने के साथ ही जगमोहन् पलटा और बाहर निकलता चला गया।

□□

□□

जगमोहन जब सोहनलाल के यहां पहुंचा तो आठ बज रहे थे।

दस मिनट पहले ही सोहनलाल मोटी, मजबूत रस्सी, कांटा और साईलैंसर लेकर आया था। जगमोहन उस सामान को देखते ही ठिठका।

"कोई जानकारी मिली?" देवराज चौहान ने पूछा।

जगमोहन ने सामान पर से निगाह हटाकर देवराज चौहान को देखा।

"मिली तो है।" जगमोहन खाली कुर्सी पर बैठ गया–"लेकिन

यकीन के साथ नहीं कह सकता कि वो कितनी सही है और कितनी गलत–।"

"बोलो–।"

"अनिता गोस्वामी की मौसी से मिला। जो कि उसकी असली मौसी नहीं है। वैसे भी वो किसी भी तरफ से मौसी नहीं लगती। वो तेज किस्म की औरत है। मेरे किसी सवाल का जवाब सीधा-सीधा नहीं दिया। पूछने पर यही बताया कि अपने घर में, उस आदमी को चाकू से खून अनिता गोस्वामी ने ही किया था। क्योंकि तब वो चाकू से, उसकी जान लेने जा रहा था। बचाव में वो खून कर गई।"

"उस वक्त तुमने भी कुछ ऐसा ही कहा था। तभी तो चाकू पर से उंगलियों के निशान साफ किए।" सोहनलाल बोला।

जगमोहन ने सिर हिलाया और देवराज चौहान को देखा।

"उस मौसी का कहना है कि वो नहीं जानती, अनिता गोस्वामी कहां है। अगर उससे मिलना है तो तीन दिन बाद नीलगिरी नाम का जहाज बन्दरगाह से सिंगापुर जा रहा है। अनिता गोस्वामी से उस जहाज में मिला जा सकता है। उसकी बातों से लगा कि महादेव का हत्यारा भी उसी जहाज में है। लेकिन उस मौसी के रंग-ढंग देखकर कह नहीं सकता कि उसने सच बोला है या झूठ–।"

सोहनलाल मुस्कराया।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई।

तभी जगमोहन कह उठा।

"आते वक्त मेरे दिमाग में बार-बार यही आ रहा था कि कहीं उस नीलगिरी जहाज का नम्बर 302 तो नहीं। हो भी सकता है और नहीं भी। कल मैं बन्दरगाह जाकर, उस जहाज के बारे में मालूम करूंगा।"

"नीलगिरी जहाज का नम्बर 302 ही है।" सोहनलाल बोला।

"क्या?" जगमोहन ने चौंक कर उसे देखा।

"और इस वक्त हम उसी जहाज पर जाने की तैयारी कर रहे हैं।" सोहनलाल ने पुनः कहा।

"मैं–।" जगमोहन की उलझनभरी निगाह रस्से और कांटे पर गई–"समझा नहीं।"

"मैं बताता हूं।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने, जगमोहन को बन्दरगाह की सारी बात बता दी।

उन बातों को सुनते ही जगमोहन सब कुछ समझता चला गया।

"तुम भी यही खबर लाये कि नीलगिरी जहाज जब बन्दरगाह से चलेगा तो अनिता गोस्वामी उस वक्त उसमें होगी। सोहनलाल भी, असलम खान से यह खबर लाया। मतलब कि यह बात तो पक्की हो गई कि अनिता गोस्वामी हमें नीलगिरी जहाज पर ही मिलेगी, जिसका नम्बर 302 है।" देवराज चौहान सोचभरे स्वर में कह रहा था—"नीलगिरी जहाज के चप्पे-चप्पे की बनावट क्या है, वो मैं देख आया हूं। लेकिन जहाज की दूसरी मंजिल का आधा हिस्सा, जहाज के मालिक ब्रूटा ने इस हद तक प्राईवेट क्यों बना रखा है कि वहां उसे सख्त पहरा लगाना पड़ता है। यह देखने के लिये कि हम आधी रात को उस जहाज तक पहुंचेंगे।"

"मैं भी चलूंगा।" जगमोहन कह उठा।

"वहां खतरा हो सकता है और तुम्हारे चले बिना भी हमारा काम आसानी से हो सकता—।"

"मेरे चलने से कोई नुकसान नहीं हो तो, मैं अवश्य साथ चलूंगा।" जगमोहन ने बात काटकर कहा।

"मर्जी तुम्हारी—।" देवराज चौहान का स्वर शांत था।

तभी सोहनलाल ने उठते हुए जगमोहन से कहा।

"यह अस्सी फीट लम्बा रस्सा है। तुम हर डेढ़ फीट पर गांठ लगाओ, ताकि लटकते रस्से को पकड़कर आसानी से जहाज तक पहुंचा जा सके। तब तक मैं खाना लेकर आता हूं। जो रस्सा बच जायेगा। वो मैं आकर कर दूंगा।" कहने के साथ ही सोहनलाल बाहर निकलता चला गया।

जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

"ये मामला तो हर कदम पर उलझता जा रहा है।" जगमोहन बोला।

"हां। और जहां तक मेरा ख्याल है, मामला जहाज पर ही सुलझेगा। जब जहाज बन्दरगाह से सिंगापुर के लिये रवाना होगा। और अनिता गोस्वामी से बात होगी।" देवराज चौहान ने कहा।

"अनिता गोस्वामी की हरकतें भी हमें उलझा रही हैं।" जगमोहन ने होंट सिकोड़कर कहा—"महादेव उसके साथ था, उसे गोली मार दी गई। महादेव के साथ वो सुरेश जोगेलकर से मिली तो जोगेलकर को गोलियों से भून दिया गया। यानि कि अनिता गोस्वामी की खुद की जान खतरे में है और मेरे ख्याल से वो ही जान का खतरा जहाज पर भी है। इस पर भी वो जहाज पर सिंगापुर के लिए सफर करेगी।"

"तुम्हारी बातें अपनी जगह सही हैं।" देवराज चौहान ने कश लिया– "लेकिन अब तक जो-जो बातें सामने आई हैं। उन्हें देखते हुए, यह नहीं कहा जा सकता कि अनिता गोस्वामी बेवकूफ है। खतरे को जानते हुए भी वो जहाज पर सफर करेगी तो जाहिर है, इसकी कोई खास ही वजह होगी। हम अभी तक इस मामले की ऊपरी सतह पर हैं, जबकि अनिता गोस्वामी मामले की सारी बातों से वाकिफ है। इसके अलावा और कोई नहीं जो सब कुछ हमें बता सकें। हम हालातों को जानने की कोशिश ही कर सकते हैं और वो ही कोशिश करने के लिये आज रात जहाज पर जाकर ब्रूटा की प्राईवेट जगह देखेंगे।"

"लेकिन हमें यह तो मालूम नहीं कि हमने वहां देखना क्या है।" जगमोहन बोला–"हमारा मकसद क्या होगा?"

देवराज चौहान मुस्कराया।

"उसी मकसद को तलाशने के लिये तो जहाज पर ब्रूटा की प्राईव्रेट जगह पर जाना है। क्योंकि महादेव ने मरते वक्त उसी जहाज का नम्बर '302' लिया था और उस 302 में ब्रूटा की प्राईवेट जगह के अलावा और कोई खास चीज तो मुझे नजर नहीं आई और वही देखना है कि उस खास चीज के भीतर खास क्या है। जिसे सख्त पहरे के पीछे छिपाया जाता है।" देवराज चौहान ने सिर हिलाकर कहा।

जगमोहन ने रस्सा थामा और गांठें लगानी शुरू कर दीं।

"तुम्हें यकीन है कि जहाज के उस प्राईवेट हिस्से में, कुछ खास हमें अवश्य मिलेगा।"

"वहां कोई खास बात है। इसमें कोई शक नहीं। लेकिन वो हमें मिलता है, दिखता है, या उस बारे में जान जाते हैं कि नहीं, इस बारे में कुछ कह पाना कठिन है।"

एक घण्टे से पहले ही सोहनलाल खाना पैक कराकर ले आया।

□□

□□

आसमान में बादल अपना-अपना झुण्ड बनाकर, हवा के संग बह रहे थे। कभी वो झुण्ड चन्द्रमा के सामने आ जाता तो, चमकता समन्दर, गुम-सा हो गया लगने लगता। जब वो टुकड़ा चन्द्रमा के आगे से हट जाता तो समन्दर फिर दूर-दूर तक चमकता नजर आने लगता।

चन्द्रमा की रोशनी में कुदरत का नियम भी लागू हो रहा था। दिन में सूर्य की रोशनी में समन्दर हमेशा शांत, जैसे नींद ले रहा हो,

वैसा रहता है। परन्तु चन्द्रमा की रोशनी में, समन्दर में उफान आ जाता है और लहरों के साथ उछलता है। पूर्ण चन्द्रमा में तो लहरें पूरे जोश पर होती हैं और फिर जब चन्द्रमा के जाने का वक्त आता है तो लहरों का उछलना बंद होना शुरू हो जाता है। सदियों से प्रकृति का यही नियम रहा है समन्दर और चन्द्रमा के बीच।

रात का एक बज रहा था।

उस छोटी-सी कश्ती को देवराज चौहान और जगमोहन पतवार के सहारे आगे बढ़ा रहे थे। बीच में बैठा सोहनलाल गोली वाली सिग्रेट के कश ले रहा था।

वो छोटी-सी कश्ती उन्होंने दूर घाट पर से उठाई थी। बड़े से पत्थर के साथ उसे बांध रखा था। किसी मछुआरे की थी वो। क्योंकि वैसी ही और कई कश्तियां वहां पर थीं। वहां से बन्दरगाह का इलाका दूर पड़ता था। परन्तु वहां तक पहुंचने का दूसरा कोई सुरक्षित रास्ता भी नहीं था।

कश्ती पर अस्सी फीट लम्बा रस्सा पड़ा था। रस्से में हर डेढ़ फीट पर मज़बूत गांठ लगा रखी थी कि उसे पकड़ते, उस पर पांव रखे, आसानी से ऊपर चढ़ा जाये। तीनों के कपड़ों में साईलैंसर लगे रिवॉल्वर फंसे थे। सोहनलाल ने अपने औजारों की बैल्ट को कमर से बांध रखा था। साथ ही छोटा-सा बैग था, जिसमें वाल्ट जैसी चीजों के ताले खोलने का सामान था।

करीब पैंतालिस मिनट कश्ती आगे बढ़ाने के बाद उन्हें बन्दरगाह के इलाके में लंगर डाले जहाजों के साये चन्द्रमा की रोशनी में नजर आने लगे।

"हमने उस तरफ जाना है। नीलगिरी वहां है।" देवराज चौहान बोला।

"वो ही तीन सौ दो नम्बर?" जगमोहन ने पूछा।

"हां।" देवराज चौहान के चेहरे पर दिन वाला ही मेकअप था। वही खिचड़ी जैसी दाढ़ी और वही सफेद-काले बाल। भौंहें भी सफेद काले बालों में डूबी थीं। इस वक्त आंखों पर प्लेन शीशे वाला सादा चश्मा नहीं था।

"सिग्रेट फेंक दे।" जगमोहन बोला।

सोहनलाल ने फोरन सिग्रेट को समन्दर में फेंक दिया। धीरे-धीरे कश्ती जहाजों की तरफ बढ़ती जा रही थी। सिग्रेट की चमक, अगर जहाजों पर कोई था तो उन्हें सावधान कर सकती थी। क्योंकि

वो बन्दरगाह का इलाका था और बाहरी लोगों का उस तरफ आना मना था। जहाजों की रखवाली के लिये बन्दरगाह की गश्ती पुलिस भी यदा-कदा बोट में इधर-उधर फेरा लगा लेती थी।

अब वो जहाजों के काफी करीब पहुंच गये थे।

"जहाज नम्बर तीन सौ दो कहां है?" सोहनलाल ने पूछा।

"ज्यादा दूर नहीं रहा।" पतवार चलाते देवराज चौहान बोला—"दाईं तरफ जो जहाज लंगर डाले खड़ा है उसी दिशा में करीब आधा किलोमीटर आगे 302 लंगर डाले खड़ा है।"

"जहाज कैसा है?" जगमोहन ने पूछा।

"छः मंजिला जहाज है। भीतर से बहुत ही शानदार।" देवराज चौहान ने कहा—"तीन डेक हैं। एक ग्राऊंड फ्लोर पर, दूसरा तीसरी मंजिल पर और तीसरा सबसे ऊपर छठी मंजिल पर। जहां से समन्दर का दूर-दूर तक का नजारा स्पष्ट नजर आता है। तीन दिन बाद हम भी इस जहाज पर, सिंगापुर के लिये रवाना होंगे। तब देखना ये जहाज भीतर से कैसा है?"

कश्ती धीमी गति से आगे बढ़ती रही।

"हम तीनों के पास नकली नामों से कई-कई पासपोर्ट हैं। ऐसे में जहाज पर यात्रा करने में हमें कोई भी परेशानी नहीं आयेगी। सिर्फ पासपोर्ट पर लगी तस्वीर जैसा मेकअप करना होगा।" सोहनलाल बोला।

अगले आधे घण्टे में उनकी कश्ती जहाज नम्बर 302 के पास पहुंच चुकी थी।

"यह जहाज का पीछे वाला हिस्सा है।" देवराज चौहान बोला—"अगर जहाज पर कोई होगा भी तो कम से कम इस तरफ नहीं होगा। इसी तरह से जहाज पर कांटा फैंकना ठीक रहेगा।"

"कांटा फैंकने का शोर भी हो सकता है।" सोहनलाल बोला।

"इतने बड़े जहाज में, कांटा फैंकने के शोर को सुन पाना इतना आसान नहीं। अगर कोई जहाज के पीछे वाले हिस्से पर हुआ तो जुदा बात है।"

चन्द्रमा दूसरी तरफ था। ऐसे में उनकी कश्ती जहाज की छाया में पूरी तरह अंधेरे का हिस्सा बनी हुई थी। अंधेरे में वे एक-दूसरे का चेहरा भी ठीक तरह से नहीं देख पा रहे थे।

जहाज की बाहरी दीवार, समन्दर के पानी से सत्तर फीट ऊंची

थी। जगमोहन ने रस्से का किनारा पकड़ रखा था। रस्से के दूसरे किनारे पर मजबूती से कांटा बांध रखा था। दो फीट की लोहे की मजबूत रॉड की चारों दिशाओं में, चार, एक-एक फीट लम्बी हुक जा रही थी, जिसके सिरे कुछ इस तरह मुड़े हुए थे कि वो जहां भी फंस जायें तो फिर उनका छूट पाना कठिन था।

रस्से का हुक वाला हिस्सा, देवराज चौहान के हाथ में था।

तभी बादलों का बड़ा-सा टुकड़ा चन्द्रमा के आगे आ गया तो, चन्द्रमा की रोशनी में चमकता समन्दर स्याह सा लगने लगा। जहाज दैत्य जैसा लगने लगा था।

देवराज चौहान ने हुक के पास से रस्सा जोरों से घुमाया और पूरी ताकत के साथ ऊपर की तरफ उछाला। दो पल के लिये वहां सन्नाटा छाया रहा। फिर कांटे के, जहाज से टकराने और कुछ पलों के बाद उसके पानी में गिरने की आवाज आई।

"नहीं फंसा।" सोहनलाल की आवाज उनके कानों में पड़ी।

करीब पांचवीं बार जाकर, वो कांटा, जहाज में ऊपर कहीं फंसा। रस्सा पकड़े जगमोहन ने उसे खींचा। हुक अपनी जगह ही कहीं अटका रहा। उसके बाद जगमोहन रस्से पर लटका। हुक नहीं छूटा।

"ठीक है।" जगमोहन ने कहा—"हुक फिट है। छूटने वाला नहीं।"

देवराज चौहान ने रस्सा थामा।

"मैं ऊपर जा रहा हूं। जब मैं जहाज पर पहुंचकर रस्सा जोरों से हिलाऊं फिर तुम लोग बारी-बारी ऊपर आ जाना। साइलेंसर लगी, अपनी रिवॉल्वरें चैक कर लेना।"

"ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से की वजह से जहाज पर पहरा अवश्य होगा।" सोहनलाल ने कहा।

देवराज चौहान ने रस्सा थामा और ऊपर चढ़ने लगा। रस्से के हर डेढ़ फीट पर लगी गांठ की वजह से, रस्सा थामने और चढ़ने में कोई परेशानी नहीं हो रही थी।

करीब पांच मिनट बाद ऊपर से रस्से को तीव्र झटका दिया गया।

जगमोहन समझ गया कि ये देवराज चौहान की तरफ से सिगनल है कि वे लोग ऊपर आ जायें।

"मैं जहाज पर जा रहा हूं, सोहनलाल।" जगमोहन बोला—"पांच मिनट बाद तुम भी ऊपर चढ़ना शुरू कर देना।"

ये कश्ती समन्दर में कहीं की कहीं खिसक जायेगी।

"रस्से का किनारा कश्ती के हिस्से से बांध देना।" कहने के साथ ही जगमोहन ने रस्सा पकड़ा और फुर्ती के साथ ऊपर चढ़ने लगा।

सोहनलाल ने रस्से का किनारा पकड़ा और कश्ती के कुण्डे से बांधने लगा।

□□

□□

कांटा जहाज की ऊपरी दीवार के किनारे में फंसा था।

देवराज चौहान ऊपर पहुंचा और रस्सा छोड़कर दोनों हाथों से किनारा पकड़ा फिर एक एक ही छालांग में जहाज के भीतरी हिस्से में कूद गया। बादल का टुकड़ा चन्द्रमा के आगे से हट चुका था और रोशनी में सब स्पष्ट नजर आ रहा था। यह जहाज़ के ग्राउण्ड फ्लोर कर हिस्सा था।

देवराज चौहान सतर्कताभरी निगाहें हर तरफ दौड़ाता रहा। लेकिन ऐसा कुछ भी नजर नहीं आया कि खतरे का एहसास होता। हर तरफ खामोशी और खालीपन था।

जगमोहन ऊपर आ पहुंचा।

"सब ठीक है।" जगमोहन ने पूछा।

"हां। अभी तक तो कोई खतरा नहीं आया।" देवराज चौहान ने सपाट स्वर में कहा।

"तुम्हारा क्या ख्याल है जहाज पर पहरा होगा?"

"होना तो हर हाल में चाहिये।" देवराज चौहान सतर्क स्वर में बोला।

"ठीक कहते हो। इतने बड़े जहाज को रात में अकेला नहीं छोड़ा जा सकता।" जगमोहन कह उठा।

सोहनलाल भी आया।

"यहां तो कोई भी नजर नहीं आ रहा।" वो बोला—"लगता है पहरेदार खा-पीकर मस्त हो रहे होंगे।"

"मैं आगे जाता हूं। तुम लोग फासला रखकर पीछे से मुझे कवर करोगे। जहाज में तीन-चार जगह से, ऊपर जाने के लिये सीढ़ियां हैं। इसी रास्ते पर कुछ आगे जाकर सीढ़ी है। वहां से हम पहली और फिर दूसरी मंजिल पर पहुंचेंगे। रास्ते में कोई मिले और वो हम पर हमला करना चाहे तो, उसे फौरन शूट कर देना जहां सोचने में वक्त गंवाया, उसी वक्त सामने वाला हमें शूट कर देगा।'

देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा और रिवॉल्वर निकालकर, उस पर लगा, साईलैंसर ठीक किया और आगे बढ़ गया।

चूंकि दिन में आकर वो जहाज का हर रास्ता देख गया था। इसलिये अंधेरे में भी उसे आगे बढ़ने में किसी तरह की परेशानी नहीं हो रही थी।

देवराज चौहान ने कुछ कदम पीछे आने वाले जगमोहन और सोहनलाल का सतर्क थे।

वे लोग पहली मंजिल पर पहुंच गये।

सब ठीक रहा।

हर तरफ चुप्पी-खामोशी थी।

कहीं पर से भी कोई आहट उठने का आभास-एहसास नहीं मिल रहा था उन्हें।

वे लोग दूसरी मंजिल पर पहुंच गये।

किसी से भी सामना नहीं हुआ।

जो कि उनके लिए हैरत की बात थी।

दूसरी मंजिल पर स्थित ब्रूटा का प्राईवेट हिस्सा, सामने की तरफ था। उस रास्ते पर तीनों ने एक-दूसरे को देखा।

"यहां तो कोई भी नजर नहीं आ रहा।" सोहनलाल के होंठों से धीमा स्वर निकला।

"कोई भी नजर नहीं आ रहा। ये ही सबसे ज्यादा खतरे की बात है।" देवराज चौहान होंठ भींचे हर तरफ निगाह घुमा रहा था—"कोई नजर आना तो हालातों को समझा जा सकता था। परन्तु इस वक्त जहाज के हालात हमें स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहे थे। जिन्हें कि अब तक दिखाई दे जाना चाहिये था।"

"हो सकता है, जहाज पर किसी तरह का कोई पहरा ही न हो।" जगमोहन बोला।

"पहरा है।" देवराज चौहान की आवाज में यकीनी भाव थे। उसने रिवॉल्वर की नाल चेहरे पर लगा रखी नकली दाढ़ी पर लगाई। उसकी आंखों में फैसले के भाव आ गये थे।

देवराज चौहान आगे बढ़ा।

जगमोहन, सोहनलाल पीछे दोनों के हाथों में साईलैंसर लगी रिवाल्वरें थीं।

राहदारी में लगा बल्ब पार किया तो आगे मोड़ से मुड गये। वो गैलरी थी। जिसके दोनों तरफ यात्रियों के लिये केबिन बने हुए थे।

उस रास्ते को पार करने के बाद वो पुनः मोड़ पर मुड़ गये उनके लिये वास्तव में हैरानी की बात थी कि उधर कोई पहरा नहीं था।

पांचवें मिनट देवराज चौहान एक बंद दरवाजे के सामने ठिठका। जो कि स्टील का ठोस दरवाजा था। और उसमें आटोमैटिक लॉक लगा था।

जगमोहन और सोहनलाल भी ठिठके।

देवराज चौहान ने सोहनलाल को देखा।

"इस दरवाजे के पार से या फिर यहीं से कह लो, ब्रूटा का प्राईवेट हिस्सा शुरू होता है। दिन में भी मुझे बस, ये दरवाजा दिखाया गया और इसके पार दिखाने को इन्कार कर दिया।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"खोलो इस दरवाजे को।"

सोहनलाल ने हाथ में दबी रिवॉल्वर वापस कपड़ों में डाली और झुककर, कुछ पलों तक 'की-होल' में देखता रहा। जगमोहन की सतर्क निगाह हर तरफ घूम रही थी।

सोहनलाल सीधा खड़े होते हुए बोला।

"सुरक्षा को ध्यान में रखकर दरवाजे पर उम्दा किस्म का डबल आटोमैटिक लॉक है। इसे खोल पाना हर किसी के बस का नहीं है। इस लॉक की चाबियां खो जायें तो, दरवाजा ही तोड़ना पड़ेगा।"

"तू अपना बोल। खोल सकता है कि नहीं।" जगमोहन ने तीखे स्वर में कहा।

"खोल दूंगा।" सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट निकालकर सुलगाई और कमीज उठाकर, कमर पर बांधी बैल्ट में फंसे कुछ औजारों को निकाला और फिर गले में लटका रखे छोटे से बैग को उतार कर नीचे रखा और खुद भी घुटनों के बल नीचे बैठते हुए बैग की 'जिप' खोली और वहां से भी कुछ औजार निकालकर, दरवाजे का लॉक खोलने में व्यस्त हो गया।

साईलेंसर लगी रिवाल्वरें थामे देवराज चौहन और जगमोहन की निगाहें पहरेदारी के रूप में हर तरफ घूम रही थीं। वह जानते थे कि खतरा कभी भी किसी भी रूप में किसी भी तरफ से उनके समने आ सकता है। अभी तक कोई खतरा सामने नहीं आया था और उनकी सोचों के मुताबिक यह बात भी खतरे वाली थी। आखिर कुछ तो नजर आना चाहिये था।

"क्या ख्याल है।" जगमोहन बोला—"हो सकता है जहाज पर

कोई खास पहरेदारी हो ही नहीं। कहीं एक-आध चौकीदार हो और वह भी नींद में डूबा हो।"

"ऐसा भी हो सकता है।" देवराज चौहान ने सपाट स्वर में कहा-"लेकिन ऐसी बात होगी। मैं यकीन नहीं कर सकता।"

"क्यों?"

"जहाज पर दूसरी मंजिल के इस हिस्से को ब्रूटा ने खास अहमियत दे रखी है। इसे प्राईवेट घोषित कर रखा है। ब्रूटा की इजाजत के बिना कोई इस दरवाजे के भीतर नहीं जा सकता तो ऐसे में कम से कम एक चौकीदार जिसने डण्डा पकड़ रखा हो, यहां अवश्य होना चाहिये। जो वो कहीं भी नजर नहीं आ रहा।

जगमोहन ने कुछ नहीं कहा।

सोहनलाल अपने काम में लगा रहा।

पांच मिनट बीत गये।

"और कितनी देर लगायेगा?" जगमोहन ने इसे देख।

"घड़ी देखता रहा। पता लग जायेगा।" सोहनलाल अपने काम में व्यस्त बोला।

आठवें मिनट सोहनलाल ने उस ऑटोमैटिक डबल लॉक को खोला।

"अब तू बूढ़ा हो रहा है। जो मामूली-सा ताला खोलने में इतनी देर लगा दी।" जगमोहन ने व्यंग्य से कहा।

"ये ताला खोलना बहुत कठिन था। बच्चा है तू। नहीं समझेगा।" सोहनलाल ने औजार समेटते हुए कहा।

देवराज चौहान ने दरवाजे के हैंडिल को दबाकर दरवाजा खोला और हाथ में रिवॉल्वर थामे भीतर प्रवेश कर गया। होंठ भिंचे हुए थे। आंखों में सतर्कता थी।

छः फीट चौड़ी गैलरी के दोनों तरफ सफेद रंग की खूबसूरत दीवार थी। दस फीट ऊंची छत थी और फर्श की जगह पर ब्राऊन कलर का कीमती कालीन बिछा हुआ था। वो गैलरी दस-बारह फीट से ज्यादा तरह लम्बी नहीं थी। गैलरी समाप्त होने पर सामने दीवार और बायीं तरफ रास्ता मुड़ रहा था।

देवराज चौहान कई पलों तक वहीं खड़ा रहा।

"चलें।" जगमोहन पास आ खड़ा हुआ।

"तुम इसी दरवाजे के बाहर, रिवॉल्वर लेकर खड़े रहोगे।" देवराज चौहान ने कहा।

"वो क्यों?"

"पीछे से आकर कोई भी अचानक हमें घेर सकता है। अगर किसी तरह इस दरवाजे को बाहर से किसी ने बंद कर दिया तो हम चूहेदान की तरह, भीतर बंद हो जायेंगे। सोहनलाल मेरे साथ जायेगा। हो सकता है भीतर किसी ताले को खोलने की जरूरत पड़ जाये।" देवराज चौहान के होंठों में कसाव आ गया था।

जगमोहन ने सहमति में सिर हलाया और दो कदम उठाकर भीतर प्रवेश कर गया।

सोहनलाल, देवराज चौहान के पास आ पहुंचा था।

"आओ।" कहने के साथ ही देवराज चौहान एक कदम ही आगे बढ़ा होगा कि ठिठक गया। उसकी आंखें सिकुड़ गईं। होंठ भिंच गये। निगाहें एक टक दस फीट आगे नजर आ रही, दीवार पर जा टिकी थी।

दीवार में करीब आठ फीट ऊपर, दीवार में ही फिट किया हुआ लैंस नजर आ रहा था। देवराज चौहान फौरन समझ गया कि वो वीडियो कैमरे का लैंस है।

"क्या हुआ?" उसे रुकते पाकर सोहनलाल ने पूछा।

देवराज चौहान फौरन घूमा और उस दरवाजे के ऊपर देखा, जिसका लॉक खोलकर वो भीतर आये थे। उस दरवाजे के ऊपर दीवार में फिट किया लैंस नजर आ रहा था।

"यहां वीडियो कैमरे फिट हैं।" देवराज चौहान ने सपाट स्वर में कहा।

"हां। वो देखो। एक सामने, लैंस नजर आ रहा है। दूसरा इस दरवाजे के ऊपर है। यानि कि यहां से आने-जाने वालों को इन कैमरों के जरिये देखा जाता है। मतलब कि ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से पर कहीं कंट्रोल रूम है। जहां से इन सारे कैमरों को कंट्रोल करने का मास्टर स्विच है। जहां टी०वी० स्क्रीनें भी होंगी, जिनसे हर तरफ की हरकतों को देखा जा सकता है। इन कैमरों के आपस में कनेक्शन दीवारों के बीच में से गुजरती तारों से हैं।"

"ओह—!" इसका मतलब भीतर कोई है और वो लोग हमें टी०वी० स्क्रीनों पर देख रहे होंगे। कहते हुए सोहनलाल के होंठ भिंच गये—"तो ये है यहां पर नजर रखने का इन्तजाम।"

दरवाजे पर खड़ा जगमोहन बाहर की तरफ नजर रखे खामोशी से बातें सुन रहा था।

"कोई जरूरी नहीं कि वो नजर रख रहे हो।" देवराज चौहान ने कहा- "जहाज खाली है। रुका हुआ है। ऐसे में पूरा चांस है कि इस वक्त कैमरे बंद हो और शायद भीतर भी कोई न हो।"

सोहनलाल कुछ न कह सका।

उसे साथ आने का इशारा करते हुए देवराज चौहान आगे बढ़ा। गैलरी समाप्त होते ही बाईं तरफ मुड़ गये। मुड़ते ही नीचे उतरने के लिये चार सीढ़ियां थीं। जिसके पार बहुत बड़ा हाल दिखाई दे रहा था। वे हाथ में रिवाल्वरें थामे सावधानी से हाल में पहुंचे।

उस हाल को बेशकीमती चीजों से सजाया हुआ था। लगता था ब्रूटा ने दिल खोलकर पैसा लगाकर अपने प्राईवेट हिस्से को तैयार करवाया था। फर्श वाली जगह पर सफेद रंग का बेहद कीमती कालीन, जिस पर कई तरह की कारीगिरी की गई थी। वहां पड़े बड़े-बड़े सोफे विदेशी थे। एक तरफ मौजूद डायनिंग टेबल भी विदेशी और करीब बीस आदमियों के बैठने का वहां इन्तजाम था। दीवारों पर पेंटिंग्स थी, जिनकी कीमत का अन्दाजा लगाना आसान नहीं था। दीवारों पर विदेशी वॉल पेपर लगा था। और भी कई तरह का सामान वहां पड़ा था। जो देखते ही बनता था।

"पूरी एय्याशगाह बना रखी है ब्रूटा ने।" सोहनलाल कह उठा- "लगता है साले ने मौज-मस्ती के लिये अपने लिये यह जगह बना रखी है।"

"मौज-मस्ती के लिये, जगह-जगह वीडियो कैमरे नहीं लगाये जाते। हर जगह इस तरह नजर नहीं रखी जाती। सिर्फ दरवाजा बंद कर लेना और बाहर एक आदमी खड़ा कर देना ही बहुत होता है।"

सोहनलाल ने देवराज चौहान को देखा।

"यहां चार वीडियो कैमरे लगे हैं। एक तो वो देखो। ठीक सीनरी के बीच। जिसे आसानी से नहीं पहचाना जा सकता कि वहां कैमरे का लैंस है। दूसरा वो देखो। दीवार पर घड़ी लगी है। देखने वाला वहां नजर मारेगा, वक्त देखने के लिये। घड़ी के बड़े डायल पर डिजाईन है। ऐसा डिजाईन कि उसके बीच फिट कैमरे का लैंस नहीं पहचाना जा सकता। तीसरे कैमरे का लैंस उधर जो शो-पीस पड़े हैं। उनमें इस तरह रखा है कि देखने वाला, यह सोचेगा कि कोई शो-पीस है। चौथा लैंस उस घोड़े की आंख में है, जिसकी बड़ी सीनरी दीवार पर फिट है। और उसकी बड़ी-बड़ी शीशे की आंखें बना रखी हैं। जिनमें कि हकीकतन एक लैंस है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

अजीब बात है कि यहां इतने कैमरों के लैंस क्यों लगाये गये? सोहनलाल कह उठा।

"स्पष्ट है कि यहां ब्रूटा खास-खास लोगों से मिलता होगा। मीटिंग होती होगी। कई तरह की बातचीत होती होगी। उन लोगों पर निगाह रखने के लिये यहां वीडियो कैमरे के लैंस लगाये गये हैं। लेकिन पीछे से दीवार के भीतर से तारें जा रही हैं और कहीं, जहां कंट्रोल रूम है, वहां कैमरा होगा, जो जब चलता होगा तो ये सारे लैंस काम करना, तस्वीरें लेना शुरू कर देते हैं।"

"इससे तो यही मतलब निकलता है कि ब्रूटा कोई गलत काम करता है कि–।"

"हां। इस सारे इन्तजाम से तो ये जाहिर है।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने ड्राईंगहाल पार किया और सामने नजर आ रहे दरवाजे को धकेला।

वो खुला ही था।

देवराज चौहान भीतर प्रवेश कर गया।

शानदार बेडरूम था।

फर्श की जगह पर नीले रंग का गद्देदार कालीन था, कि पांव रखते ऐसा महसूस होता था कि वो नीचे धंसे जा रहे हों। कमरे के बीचोंबीच आठ फीट की गोलाई लिये हुए, इतना बड़ा बैड था कि चार व्यक्ति एक साथ उस पर लेट सके। दीवारों पर कई तरह की पेंटिंग्स थीं। सजावट का हर तरह का सामान वहां था। वहां की हर चीज से दौलत की महक आ रही थी।

सोहनलाल भी वहां आ पहुंचा।

"जहाज का यह हिस्सा इतना शानदार होगा, मैंने तो सोचा भी नहीं था।" सोहनलाल बोला।

देवराज चौहान ने उसे देखा। बोला कुछ नहीं।

पांच मिनट तक देवराज चौहान की निगाहें बेडरूम में फिरती रहीं।

"यह ब्रूटा का व्यक्तिगत बेडरूम है।" देवराज चौहान ने कहा।

"पक्के तौर पर कैसे कह सकते हो।" सोहनलाल बोला।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई।

"क्योंकि इस बेडरूम में वीडियो कैमरे का कनेक्शन नहीं है। कहीं भी तस्वीर लेने वाला लैंस नहीं है।"

"ओह!" सोहनलाल ने समझने वाले ढंग में सिर हिलाया।

उसके बाद उन्होंने वहां के बाकी हिस्से की तलाशी ली।
वहां छोटे-छोटे किन्तु खूबसूरत केबिन बने हुए थे, जिनकी संख्या दस थी। एक खेल की जगह बना रखी थी, वहां टेबिल टेनिस, बैडमिंटन के अलावा और भी कई खेलों का इन्तजाम था। और उन्हें वे कंट्रोल रूप भी नजर आया, जहां से पहरेदारी के लिये वीडियो कैमरा कंट्रोल किया जा सकता था।

वो सामान्य कमरा था। दीवारों के साथ-साथ छोटे-छोटे रैक थे जहां तरतीब से कैसेट लगा रखी थी। एक तरफ खूबसूरत टेबल था। जहां कई बटनों, कई उपकरणों के साथ चालू हालत में वीडियो कैमरा मौजूद था। वो नई टैकनीक का कम्प्यूटराईज़ आटोमैटिक वीडियो कैमरा था। जैसे कि इस वक्त वहां सामने लगी तीनों स्क्रीनों को देखने के लिये कोई मौजूद नहीं था, परन्तु स्क्रीनों पर, वो गैलरी, जहां से प्रवेश किया था। वो ड्राईंग हाल और खेल वाला हिस्सा नजर आ रहा था। और जो नजर आ रहा था उसकी रिकार्डिंग वीडियो कैमरे में मौजूद, कैसेट में हुई जा रही थी। और ठीक आधे घण्टे के बाद, कम्प्यूटराईज़ सिस्टम की मेहरबानी से कैमरे में पड़ी कैसेट खुद-ब-खुद बाहर निकलकर, समाने पड़ी ट्रे में आ जाती और कम्प्यूटर की मूवमैंट की बजह छः इंच दूर पड़ी कैसेट को, चिमटे जैसी चीज पकड़ती और उसे कैमरे में फिट कर देती। ऐसा होते ही कैमरा पुनः चालू हो जाता। स्क्रीनों पर दृश्य दिखने लगते और कैसेट रिकार्डिंग होने लगती।

जैसे कि इस वक्त वहां कोई नहीं था तो बाद में, रिकार्डिंग हुई कैसेटों को देखा जा सकता था कि, उनकी गैर मौजूदगी में पीछे कौन आया। कौन गया। क्या हरकत हुई।

देवराज चौहान वो सब सामान देखते ही समझ गया कि निगरानी का क्या सिस्टम है।

"ये इतना बड़ा तामझाम क्या फैला रखा है।" सोहनलाल बोला।

"ब्रूटा ने इस प्राईवेट हिस्से की निगरानी का बहुत तगड़ा इन्तजाम कर रखा है।" देवराज चौहान होंठ सिकोड़े सोचभरे स्वर में कह उठा—"इस इन्तजाम के बाद, निगाहों से बचकर कोई ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से में कदम नहीं रख सकता।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने बताया कि वीडियो कैमरा कैसे मूवमेंट कर रहा है।

"ओह!" ऐसा प्रवन्ध तो पुलिस हैडक्वार्टर में भी नहीं होता।

देवराज चौहान ने कश लिया और गम्भीर स्वर में कह उठा।

"सोहनलाल, इसमें कोई शक नहीं कि ब्रूटा यहां कोई गलत काम करता है।"

कैसा गलत काम?

"कह नहीं सकता।" देवराज चौहान की निगाह स्क्रीनों पर जा रही थी—"लेकिन इस बात का पक्का विश्वास है कि महादेव जान गया था कि वो गलत काम क्या है। यही कारण, उसकी मौत की वजह बना।"

"लेकिन हमने तो यह जगह पूरी तरह छान मारी है।" सोहनलाल ने देवराज चौहान को देखा—"हमें तो ऐसा कुछ भी नजर नहीं आया कि, जो तुम्हारी बात के पक्केपन की तरफ इशारा करता हो।"

"सबसे पहला सबूत तो यहां की निगरानी का सिस्टम है। कोई भीतर आये तो फौरन खबर हो जाये, इसका इतना पुख्ता इन्तजाम तभी किया जाता है, जबकि भीतर कोई खास बात हो रही हो।"

सोहनलाल, देवराज चौहान को देखता रहा।

"जहाज के आधे फ्लोर को प्राईवेट घोषित करना ही गलत है। बिजनेसमैन, बिजनेस करता है, आय को बढ़ाने के लिये। यहां भी अगर यात्रियों के लिये केबिन हो तो आय में बढ़ोतरी होती। लेकिन ब्रूटा को इस बात की जरा भी परवाह नहीं। कि यहां केबिन न होने की वजह से काफी बड़ा नुकसान हो—।"

"वो पैसा वाला आदमी है। मौज-मस्ती के लिये····।"

"मौज-मस्ती के लिये, निगरानी के इतने पुख्ता सिस्टम का इन्तजाम नहीं किया जाता और इस सिस्टम को संभालने के लिये यहां, कम से कम दो आदमी अवश्य बैठते होंगे। दिन में मुझे पता चला कि जहाज की रवानगी के वक्त हथियारबंद पहरेदार भी मौजूद होते हैं। यानि कि यहां कोई बात होती है, जो सिरे से ही गलत है।"

सोहनलाल ने समझने वाले भाव में सिर हिलाया।

"ट्रे में रखी आठ-दस कैसेट उठा लो।"

"क्यों?"

"यूं ही। यह देखने के लिये कि यहां कौन-कौन आता है। उनके चेहरे कैसेटों में होंगे।"

सोहनलाल ने ट्रे में रखी कैसेट उठाई और गले में लटक रहे, बैग में डाल ली।

"इसका मतलब, हमने भीतर प्रवेश किया तो कैसेट में हमारे चेहरे भी आ गये होंगे।" सोहनलाल बोला।

"हां।"

"तो वो कैसेट कौन-सी होगी। हम-।"

"रहने दो। वो लोग हमारे चेहरे देख भी लेंगे तो हमें कोई फर्क नहीं पड़ता।" देवराज चौहान ने सोचभरे स्वर में कहा–"हम यहां की होने वाली गड़बड़ को देखने-पकड़ने आये थे। लेकिन सफल नहीं हो सके। इसकी यह वजह भी हो सकती है कि, यहां जो भी होता हो, वो तब होता हो, जहाज अपनी यात्रा के लिये रवाना होता हो और ब्रूटा भी जहाज में होता हो।"

सोहनलाल, देवराज चौहान को देखने लगा।

"तीन दिन बाद यात्रियों को लेकर यह जहाज सिंगापुर के लिये रवाना होगा। आज दिन में मालूम पड़ा कि तब जहाज में ब्रूटा भी होगा।" होंठ भींचे देवराज चौहान बोला–"हम भी होंगे। तब देखेंगे कि जहाज के इस हिस्से में ब्रूटा क्या करता है।"

"लेकिन हम कैसे देख सकते हैं।" तुमने देखा ही है कि सुरक्षा का इतना तगड़ा इन्तजाम है कि हम इस तरफ आ भी नहीं सकेंगे, जब जहाज चलेगा। सोहनलाल ने कहा।

"हमें इधर आना ही पड़ेगा। इसके लिये कोई रास्ता निकालना होगा। सोचने के लिये हमारे पास तीन दिन का वक्त है। इतने वक्त में रास्ते निकल ही आते हैं आओ। अब यहां से चलें।"

□□

□□

मलानी।

नरेश मलानी। ब्रूटा का सबसे खास आदमी। छत्तीस साल की उम्र। पिछले पन्द्रह सालों से ब्रूटा के साथ था। लम्बा कद। फुर्तीला जिस्म। सिर के बार सामान्य ढंग से कटे हुए। होंठों पर छोटी-छोटी मूंछें। बदन पर अक्सर सूट पहने रहता था। लम्बा नाक। बड़ी-बड़ी आंखें। चेहरे से निहायत ही शरीफ़ परन्तु भीतर से बेहद खतरनाक लगने वाला, नरेश मलानी।

ब्रूटा जैसे अरबोपति व्यक्ति के जाने कितने काम थे। किस काम में कब क्या करना है, मलानी को मुंह-जबानी याद रहता। कोई भी काम भूलता नहीं था। ब्रूटा उसकी समझदारी का हमेशा कायल रहा था। पिछले पन्द्रह सालों में एक बार भी ब्रूटा को उसके काम पर नाराज होने का मौका नहीं मिला था और मलानी का हुक्म, लगभग ब्रूटा का ही हुक्म माना जाता था।

वही मलानी सुबह ठीक आठ बजे नीलगिरी, यानि कि जहाज नम्बर तीन सौ दो पर था। जब से जहाज ने सिंगापुर से आकर लंगर डाला था। तब से एक बार भी जहाज पर नजर मारने नहीं आया था। जबकि ब्रूटा से वास्ता रखती हर चीज का रखवाला था।

जहाज पर उस वक्त सिर्फ दो कर्मचारी थे। जो रात की चौकीदारी भी करते थे और रात को खूब तगड़ी नींद लेकर सुबह सात बजे उठे थे।

मलानी वहां दो आदमियों के साथ स्टीमर में पहुंचा था। जहाज पर मौजूद व्यक्तियों ने सीढ़ी नीचे लटकाई तो मलानी अपने दोनों आदमियों के साथ जहाज पर आ गया।

दोनों ने मलानी को सलाम किया।

"राजपाल नहीं आया?" मलानी ने शांत स्वर में पूछा।

"नहीं साहब जी। राजपाल जी, नौ बजे सफाई कर्मचारियों को लेकर यहां आते हैं।" एक ने कहा।

"मलानी अपने दोनों आदमियों के साथ जहाज की दूसरी मंजिल पर पहुंचा तो ठिठक कर रह गया। आंखों में हैरानी के समन्दर उभरा। ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से में जाने वाला पहला दरवाजा खुला हुआ था। जबकि वो अच्छी तरह जानता था कि दरवाजे पर ऑटोमैटिक, डबल लॉक है। बिना चाबी कि खुलने वाला नहीं।"

"यह क्या?" उसके साथ के एक आदमी के होंठों से निकला।

"मलानी ने दरवाजे के ताले को चैक किया। वो ठीक-ठाक था। ऐसा लगता था कि जैसे चाबी लगा कर खोला गया हो। लेकिन उस लॉक की दो चाबियां थीं। एक उसके पास दूसरा ब्रूटा साहब के पास। वो यहां आया नहीं और ब्रूटा साहब आये होते तो उसे खबर अवश्य की जाती। न भी खबर मिलती तो ब्रूटा साहब दरवाजे को इस तरह खुला छोड़कर नहीं जाते। जाहिर है कि यह काम किसी बाहरी बन्दे का है।"

"उन दोनों कर्मचारियों को बुलाओ।" मलानी शांत स्वर में बोला।

दो में से एक वहां से चला गया।

"मलानी साहब, यह दरवाजा कैसे खुला है।" दूसरा बोला—"इधर तो—।"

"देखते रहो। मैं भी तुम्हारी तरह अंजान हूं।" मलानी ने कहा। लेकिन भीतर जाने की चेष्टा नहीं की।

वो गया आदमी, दोनों कर्मचारियों को ले आया।

"ये दरवाजा किसने खोला?" मलानी ने उनसे पूछा।
उन्होंने दरवाजे को देखा। फिर एक-दूसरे को।
"हमें क्या मालूम साहब। हम तो इस तरफ आये भी नहीं। इधर आने की हमें मनाही है।" एक ने कहा।
"जहाज पर कोई बाहरी आदमी आया?"
"कल कोई साहब आये थे। राजपाल साहब ने पूरा जहाज दिखाया। राजपाल जी बता रहे थे कि वो बहुत बड़े लेखक हैं। जहाज पर कोई उपन्यास लिख रहे हैं, इसलिये जहाज देखने आये ?"
मलानी के चेहरे पर सोच के भाव उभरे।
"कोई और आया?"
"नहीं। और तो कोई नहीं आया।"
"जाओ।"
"वे दोनों चले गये।
"तुम।" मलानी ने अपने एक आदमी से कहा—"बाहर जाओ। राजपाल नौ बजे आता है। जब वो आये तो उसे लेकर सीधा मेरे पास आ जाओ। मैं भीतर हूं।"
"जी।"
मलानी, अपने एक आदमी के साथ भीतर प्रवेश कर गया। ड्राईंगहाल में पहुंचा।
"तुम यहीं रुको।" कहने के साथ ही मलानी, बूटा के बैडरूम की तरफ बढ़ गया। जिसका दरवाजा खुला हुआ था। भीतर प्रवेश करके उसने दरवाजा बंद कर लिया था।
करीब पांच मिनट बाद वो बैडरूम से बाहर निकला। चेहरा शांत था। वहां से वह अपने आदमी के साथ कंट्रोल रूम में पहुंचा। कैमरा अपना काम कर रहा था।
"जो कैसेट ट्रे में पड़ी है। उन्हें वी०सी०आर० में लगाओ। जो भी भीतर आया होगा, उसका चेहरा वीडियो कैमरे ने कैच कर लिया होगा।" मलानी खाली कुर्सी पर बैठते हुए बोला।
मलानी का साथी फौरन उसके काम में जुट गया। ट्रे में करीब बीस कैसेट पड़ी थी। एक-एक करके उन्हें वी०सी०आर० पर चढ़ाता रहा और फारवर्ड करके जल्दी-जल्दी चैक करने लगा।
पच्चीस मिनट बाद वो कैसेट हाथ लगी जिसमें चेहरे नजर आये।
"इस कैसेट में ये कुछ चेहरे हैं।" वी०सी०आर० स्टॉप करते हुए बोला।

"इसे शुरू से लगाओ। मेरे ख्याल में ये इस कैसेट में रात की रिकार्डिंग होगी।" मलानी बोला।

उसने हिसाब लगाया और बोला।

"ये कैसेट कल शाम के बाद की रिकार्डिंग की है। मतलब कि जो भी भीतर आया वो शाम से लेकर हमारे आने तक के बाद किसी भी वक्त आया हो सकता है।" कहने के साथ ही उसने कैसेट ठीक तरह से लगा दी।

□□

□□

सबसे पहले स्क्रीन पर देवराज चौहान का चेहरा नजर आया, जो दरवाजा खोलकर शुरू वाली गैलरी में प्रवेश हुआ। मलानी और उसका साथी सतर्क निगाहों से उसे देखने लगे। देवराज चौहान के चेहरे पर सफेद-काले बालों की दाढ़ी थी। सिर के बाल भी ऐसे ही थे।

"मेरे लिये ये आदमी अंजान है।" मलानी बोला—"तुमने इसे कभी देखा है विक्रम—?"

"नहीं। मैंने भी इसे पहले कभी नहीं देखा।" मलानी का साथी विक्रम कहा उठा।

दोनों की निगाहें स्क्रीन पर थीं।

फिर सोहनलाल और जगमोहन नजर आये।

"इन दोनों को भी मैंने पहले कभी नहीं देखा।" विक्रम उलझन-भरे स्वर में कह उठा।

"वो जो पतला वाला है।" मलानी ने कहा—"उसी ने दरवाजे का ऑटोमैटिक लॉक खोलने का कमाल दिखाया है। इसमें कोई शक नहीं कि उसके हाथों में कमाल है।"

"लेकिन ये लोग हैं कौन? यहां करने क्या आये हैं?"

"देखते रहो। बातें सुनते रहो।" मलानी की आंखें सिकुड़ी हुई थीं।

वे दोनों, देवराज चौहान और सोहनलाल की हरकतें देखते रहे। उनकी बातें सुनते रहे।

"मलानी साहब! ये लोग, जहाज पर कोई खास चीज तलाश करने की फिराक में हैं।"

"ये लोग आपस में बातें कर रहे हैं कि बूढ़ा साहब, यहां कोई [illegible]त काम करते हैं।" मलानी की निगाहें स्क्रीन पर नजर आ रहे

देवराज चौहान और सोहनलाल के चेहरों पर थीं—"इस बात के लिये कोई सबूत ढूंढ रहे हैं।"

"ये पुलिस के आदमी हो सकते हैं।"

"नहीं पुलिस के आदमी नहीं हैं।" मलानी ने विश्वासभरे स्वर में कहा।

दोनों की निगाहें बराबर स्क्रीन पर आ रहे, देवराज चौहान और सोहनलाल पर टिकी रहीं। उनकी बातें सुनते रहे। मलानी और विक्रम की आंखों में सतर्कता नजर आ रही थी।

जब देवराज चौहान और सोहनलाल इस कंट्रोल रूम में आये थे, तो उनकी उस वक्त की मौजूदगी, कैसेट में दर्ज नहीं थी।

"ये लोग जहाज में सफर करने की बात कर रहे हैं जब जहाज सिंगापुर रवाना होगा। वो दाड़ीवाला कह रहा है कि चलते जहाज में वो इस हिस्से में आने की कोशिश करेगा—।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है।" मलानी के चेहरे पर अजीब-सी मुस्कान उभरी।

"क्या मतलब?"

"अब हमें इनकी तलाश नहीं करनी पड़ेगी।" मलानी की आवाज में तीखी मुस्कान भर आई थी—"ये लोग जहाज पर सफर करेंगे और हम आसानी से इन्हें तलाश कर लेंगे कौन है और यहां की छानबीन करने का असली मकसद क्या है। उसके बाद इन लोगों का इन्तजाम भी हो जायेगा।"

तभी मलानी के दूसरे साथी ने भीतर प्रवेश किया।

"राजपाल आया है।" वे आते ही बोला।

"बुलाओ उसे।" मलानी की निगाहें स्क्रीन पर थीं।

वो बाहर निकला और राजपाल को लेकर भीतर आ गया।

राजपाल का चेहरा घबराहट से भरा हुआ था। वो भीतर आते ही बोला।

"साहब जी नमस्कार! मैं खुद हैरान हूं कि कौन भीतर आ गया। जबकि ताला तो मजबूत है और पक्की तरह बंद था। कल शाम को जाने से पहले मैंने खुद दरवाजा चैक किया था। और वह—।"

"स्क्रीन देखो।" मलानी की निगाह अभी भी स्क्रीन पर थी—"देखो, इनमें से किसी को पहचानते हो?"

राजपाल की नजरें टी०वी० स्क्रीन तरफ उठीं।

अगले ही पल वह चिहुंक उठा।

"रोशन कुमार— ।" राजपाल के होंठों से निकला।
मलानी की गर्दन घूमी और राजपाल को देखने लगा।
"कौन रोशन कुमार?"
"वो, दाढ़ी वाला। वो रोशन कुमार है। बहुत बड़ा उपन्यासकार है।" राजपाल ने हैरानी से सूखे होंठों पर जीभ फेरी।
"बहुत बड़ा उपन्यासकार है।" मलानी के होंठ सिकुड़े।
राजपाल ने अपना घबराहट से भरा चेहरा हिलाया।
"तुमने उसके उपन्यास पढ़े हैं?"
"जी हां। रामसिंह के बहुत उपन्यास पढ़ता हूं।"
"रामसिंह? अभी तो तुम रोशन कुमार कह रहे थे।"
"उसका नाम रोशन कुमार ही है। लेकिन रामसिंह के नाम से उपन्यास लिखता है।" राजपाल कह उठा।
"यह बात तुम कैसे जानते हो?" मलानी बराबर उसे देख रहा था।
"कल ही उसने बताया था, जब वो जहाज पर आया था।"
"जहाज पर—मतलब कि इस जहाज पर?"
"हां। रघुवीर सिंह लाया था। गोदाम का मुंशी। उसका कहना था कि रोशन कुमार उसका दूर का रिश्तेदार है और जहाज को भीतर से देखना चाहता है। और रोशन कुमार का कहना था कि वो उपन्यासकार है और जहाज पर कहानी लिख रहे हैं, इसलिये भीतर से देखना चाहता है कि जहाज कैसा होता है?"
"और तुमने जहाज दिखाया?" मलानी ने हौले से सिर हिलाया।
"हां-हां— ।" राजपाल ने हिचकिचाकर, सूखे होंठों पर जीभ फेरकर सिर हिलाया।
"साले— ।" विक्रम ने दांत भींचकर फौरन रिवॉल्वर निकाली।
परन्तु मलानी के इशारे पर वह रुक गया।
"जहाज का यह हिस्सा भी दिखाया?"
"वो देखने को कह रहा था, लेकिन मैंने बोला, इधर जाना मना है।" विक्रम के हाथ में रिवॉल्वर देखकर, राजपाल घबरा गया था।
"उसके बाद वो जहाज देखकर चला गया।"
राजपाल की गर्दन हिली।
"तो तुम्हारा वो उपन्यासकार, यहां भीतर क्या कर रहा है। उसके साथ दो आदमी और हैं। देख लो, यहां का कोना-कोना छान रहा है।" मलानी के चेहरे पर सोच के भाव थे।

राजपाल के होंठ हिलकर रह गये।

"इसने जहाज पर किसी को आने कैसे दिया।" विक्रम खतरनाक स्वर में बोला–"इसे गोली मार कर–।"

"नहीं।" मलानी ने हाथ हिलाया–"इसकी कोई गलती नहीं है। वो रघुवीर सिंह को देखो, जो रोशन कुमार को अपना रिश्तेदार बता रहा था। मुझे पूरा यकीन है कि वो उसका रिश्तेदार नहीं है। उसकी जेब गर्म करके, उसे जहाज दिखाने को तैयार होगा। बात करके आओ उससे–।"

विक्रम और उसका साथी फौरन बाहर निकल गये।

मलानी ने सिग्रेट सुलगाई और राजपाल को देखा।

"मुझे माफ कर दीजिये साहब।" राजपाल सूखे स्वर में कह उठा–"मुझसे गलती हो गई।"

"वो दिन में आया और जहाज के सारे रास्ते देख गया और रात को चुपचाप, ब्रूटा साहब के प्राईवेट हिस्से में आ पहुंचा। अगर तुमने उसे दिन में नहीं आने दिया होता तो वो इस तरह अपने दो आदमियों के साथ रात को इतनी आसानी से यहां तक नहीं पहुंच सकता था।" मलानी ने एक-एक शब्द पर जोर देकर कहा।

"मैं–मैं अपनी गलती की माफी–।"

"तुम्हें जहाजों की सफाई का ठेका दिया जाता है और मेरी तरफ से सख्त मनाही है कि जहाज पर कोई अजनबी नहीं आना चाहिये और तुम उसे जहाज पर घुमाते रहे। कितनी गलत बात की है तुमने। उपन्यासकार इस तरह ताले नहीं तोड़ते। वो कोई बहुत ही चालाक आदमी था और किसी खास बात की खातिर आया था।"

राजपाल कुछ नहीं बोला।

"स्क्रीन देखो। उसके साथ जो आदमी है उसे जानते हो?" मलानी बोला।

राजपाल ने स्क्रीन पर नजर आ रहे सोहनलाल को देखा।

"नहीं। मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा।"

मलानी ने कैसेट रिवाईंड की ओर जगमोहन का चेहरा देखा।

"इसे?"

"नहीं। इसे भी नहीं देखा।"

मलानी ने वी०सी०आर० ऑफ कर दिया।

"तुमने कल उस आदमी को पूरे जहाज में घुमाकर बहुत बड़ी गलती की है। ऐसी बातें मैं कभी पसन्द नहीं करता।" मलानी की

आंखों में क्रूरता के भाव चमके—"ब्रूटा साहब अब तक तुम्हें सजा दे चुके होते।"

"मैं माफी—।"

"जाओ।" मलानी ने भिंचे स्वर में कहा—"और इस बात का जिक्र किसी से मत करना कि जहाज पर इस तरह कोई चोरी-छिपे आया। खासतौर से ब्रूटा साहब के इस प्राइवेट हिस्से में—।"

"ज—जी—।" राजपाल ने घबराये ढंग से सिर हिलाया और जान बची वाले ढंग में निकलता चला गया।"

मलानी की सोचभरी निगाह ऑफ हो चुकी टी०वी० स्क्रीन पर जा टिकी।

—

विक्रम अपने साथी के साथ डेढ़ घण्टे बाद लौटा और मलानी से बात की।

"रघुवीर सिंह मुंशी से बात हुई। डण्डा चढ़ाया तो बोला कि रोशन कुमार उसका रिश्तेदार नहीं था। वो खुद को उपन्यासकार कह रहा था और जहाज को भीतर से देखने के लिये कह रहा था। इसके लिये रोशन कुमार ने उसे दस हजार दिए तो वह उसे जहाज दिखाने के लिये यहां ले आया।"

"मुझे भी पूरा विश्वास था कि वो उसका रिश्तेदार नहीं होगा।" मलानी के होंठ भिंच गये।

"थोड़ा और डण्डा चढ़ने पर रघुवीर सिंह बोला कि रोशन कुमार ने ही, इसी जहाज को दिखाने के लिय कहा था। यानि कि रघुवीर सिंह सीधे, उसे इस जहाज पर नहीं लाया था।"

"दस हजार रुपया खर्च करके, सिर्फ जहाज को भीतर से देखना ही उसका मकसद नहीं रहा होगा।" मलानी ने कठोर निगाहों से विक्रम को देखा—"दिन में वो जहाज के भीतरी रास्ते को देख गया और रात में जहाज के इस प्राईवेट हिस्से में आ पहुंचा। उनकी आपस में होने [illegible]ों ने साफ जाहिर है कि उन्हें यकीन है कि ब्रूटा साहब, यहां कोई गलत काम करते हैं और उसी गलत काम को मालूम करने के लिये वो यहां आये थे। क्यों, वो कौन थे, इन बातों का जवाब पाना जरूरी है।"

"इन्हें ढूंढने की कोशिश करें?"

"कोई जरूरत नहीं।" मलानी शब्दों को चबाकर बोला—"जब

जहाज सिंगापुर के लिये रवाना होगा तो वो लोग भी इसी जहाज में होंगे। तब फिर उन्होंने कोशिश करनी है कि जहाज के इस प्राइवेट हिस्से में आकर, देखें कि यहां बूटा साहब क्या करते हैं और तब तो इन तरफ वो किसी भी कीमत में नहीं आ सकते। वैसे भी उससे पहले ही मैं उन्हें ढूंढ निकालूंगा।"

"रोशन कुमार भी, उसका असली नाम नहीं होगा।" विक्रम का साथी बोला।

"सुन्दर—।" मलानी ने उसे देखा—"उसका नाम भी नकली है और चेहरे की दाढ़ी, सिर के बाल भी नकली है। स्क्रीन पर उसे गौर से देखो तो यह बात समझ में आ जाती है कि वो खासा फुर्तीला इन्सान है चेहरे और दाढ़ी के सफेद बाल, उसकी फुर्ती से मेल नहीं रखते।"

"ओह—!" सुन्दर ने सिर हिलाया।

"अब क्या करना है?"

"उस दिन का इन्तजार करो जिस दिन जहाज यहां से रवाना होना है।" मलानी का चेहरा सुलग रहा था।

"लेकिन जहाज रवाना होने से पहले, वो फिर इस तरफ आ सकते हैं। इसलिये यहां पहरा—।"

"नहीं विक्रम।" मलानी ने दृढ़ताभरे स्वर में कहा—"वे इतने बेवकूफ नहीं होंगे। कि इस तरह अब दोबारा आकर खुद को मुसीबत में डालें। वे जानते हैं कि दरवाजा खुला पाकर, हम लोग सतर्क हो गये होंगे।" कहने के साथ ही मलानी आगे बढ़ा और वी0सी0आर0 से कैसेट निकालकर, अपने कब्जे में ले ली।

दो पलों तक वहां खामोशी रही।

"रघुवीर सिंह से कह दिया। कि इस बारे में किसी से जिक्र न करे कि—।"

"कहने की जरूरत नहीं रही। उसके हाथ-पांव इस तरह तोड़ दिये हैं कि अब वो तीन-चार महीने अस्पताल में रहेगा और किसी से कहेगा भी नहीं कि उसके हाथ-पांव किसने तोड़े हैं?" विक्रम ने कहा।

मलानी सिर हिलाकर रह गया।

□□

□□

अगले दिन सुबह नौ बजे देवराज चौहान की आंख खुली। सुबह चार बजे तीनों वापस आये थे। उस वक्त उनके बीच कोई खास बात नहीं हो पाई थी। देवराज चौहान गहरी सोचों में

डूबा हुआ था। सोहनलाल उससे पहले ही नींद से उठ बैठा था और देवराज चौहान के उठने तक तो वो नहा-धोकर तैयार हो चुका था।

सोहनलाल ने 'बेड टी' बनाई और एक गिलास देवराज चौहान को थमाया और दूसरा जगमोहन को नींद से उठाकर, उसे थमा दिया।

"इसी तरह सेवा करता रह।" जगमोहन ने चाय का घूंट भरा—"तेरा बेड़ा पार हो जायेगा।"

"अभी तो देवराज चौहान का दिया पचास हजार मेरी जेब में है।" सोहनलाल मुस्कराकर बोला—"जब तक वो खत्म नहीं होता, तब तक तो तेरी सेवा करने का मेरा फर्ज बनता है।"

"पचास हजार—।" जगमोहन हड़बड़ाकर बोला—"कब दिया तेरे को?"

"तभी जब मैं इस काम पर लगा था और—।"

"क्यों दिया?"

"भागदौड़ में खर्च तो होता ही है। तू तो खाली-खाली लटका देता। बल्कि मेरी जेब में हजार, दो हजार होते तो वे भी निकालने की कोशिश करता। देवराज चौहान ने पचास हजार मुझे दे दिए।"

जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा फिर सोहनलाल से कह उठा।

"वापस दे।"

"क्यों?"

"दो हजार खर्च हो गया होगा। अड़तालीस हजार वापस दे दे। निकाल—।"

"उलटा मत बोल। अड़तालीस खर्च हो चुके हैं। बाकी के दो बचे हैं। दो तेरे किस काम के। निनयानवें के फेर में मत पड़। चाय ठण्डी हो रही है। मजे ले-लेकर पी।"

"मतलब कि नहीं देगा।"

सोहनलाल ने मुस्कराकर गोली वाली सिग्रेट सुलगाई।

"छोड़ूंगा नहीं।" जगमोहन उखड़े स्वर में बोला—"ब्याज के साथ वसूल करूंगा।"

सोहनलाल ने तगड़ा कश लिया।

"तेरे से तीन लाख पहले भी लेना है।"

"ये पचास भी जमा कर ले।" सोहनलाल मुस्कराया।

"समझ ले, डायरी में लिख लिया।" जगमोहन ने जल-भुनकर कहा।

"डायरी संभाल कर रखना। ऊपर रबड़ भी लगा लेना। कहीं मेरा वाला पन्ना खो न जाये।"

जगमोहन तीखे स्वर में कुछ कहने लगा कि देवराज चौहान कह उठा।

"सोहनलाल! वो वीडियो कैसेट कहां है जो जहाज से लाये थे?"

"बैग में ही पड़ी है। जिसमें औजार रखे थे।" सोहनलाल बोला।

"कहीं से वी०सी०आर० और टी०वी० लेकर आ। उन्हें देखना बहुत जरूरी है।"

"अभी लाया।" कहने के बाद सोहनलाल ने जगमोहन को देखा–"तू पचास हजार को रहा है। अब मुझे नया वी०सी०आर० और टी०वी० खरीदना पड़ेगा। पल्ले से डालना पड़ेगा रोकड़ा।"

"तू–।" जगमोहन तीखे स्वर में बोला–"नया खरीदेगा?"

"हां। अभी लाया, चमचमाता हुआ।" कहने के साथ ही सोहनलाल बाहर निकलता चला गया।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगा ली।

चाय का घूंट लेते जगमोहन कह उठा।

"इन वीडियो कैसेट में कुछ खास होगा?"

"कैसेटों के जरिये कम से कम यह तो जाना जा सकता है कि ब्रूटा के जहाज के प्राईवेट हिस्से में ब्रूटा के अलावा और कौन-कौन आता है। शायद यह भी मालूम हो सके कि वहां क्या होता है।"

"लेकिन रात हमारा जहाज़ पर जाना बेकार ही रहा। कोई खास बात हाथ नहीं लगी।"

"अभी इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता कि जहाज पर जाने से हमें फायदा हुआ कि नहीं।" देवराज चौहान ने सोचभरे स्वर में कहा–"कभी-कभी सफलता न मिलने पर भी, ऐसी सफलता मिल जाती है, जिसे हम पहचान नहीं पाते और जिसका एहसास बाद में जाकर होता है।"

जगमोहन कुछ नहीं बोला। चाय के घूंट लेता रहा।

"अब तक तो दरवाजा खुला देखकर, उन्हें मालूम हो गया होगा कि कोई जहाज के प्राईवेट हिस्से में गया है। ऐसे में जहाज की पहरेदारी करने वालों पर तो मुसीबत आ गई होगी।"

"मुसीबत आनी तो नहीं चाहिये, क्योंकि दरवाजे पर लगे डबल ऑटोमैटिक लॉक को खोलकर हम लोग भीतर गये थे। ऐसे में जाहिर है कि जहाज पर मौजूद, कोई भी इस काम में हमारी सहायता

नहीं करेगा। ब्रूटा जैसे बड़े आदमी का डर अवश्य उनके मन में होगा।" देवराज चौहान ने सिर हिलाकर कहा—"पूछताछ से यह बात तो वे लोग जान ही गये होंगे कि दिन में रोशन कुमार नाम का कोई आदमी जहाज पर आया था और जब हम उस हिस्से में गये तो वो वीडियो कैमरे चालू थे। कैमरों ने हमारी हरकतों को अपने में कैद किया होगा। शायद अब तक उन लोगों ने कैसेट में दर्ज हमारे चेहरों को देख भी लिया हो और राजपाल को दिखाकर मालूम कर लिया हो कि दिन में आने वाला आदमी यही था।"

"ऐसे में तो उन्होंने हमारी तलाश शुरू कर दी होगी कि हम कौन लोग हैं।"

"वो जो भी करें उसे हमें फर्क नहीं पड़ता।" देवराज चौहान का स्वर सोच से भरा था।

"जहाज पर जाने और उसे हिस्से की छानबीन के बाद भी हमें कुछ नहीं मिला कि मालूम होता, ब्रूटा वहां क्या करता है?" जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

"लेकिन उस जगह को और वहां के इन्तजामों को देखने के बाद इस बात का तो यकीन हो गया कि जहाज के उस प्राईवेट हिस्से पर यकीनन कोई गलत-गैरकानूनी काम होता है।" देवराज चौहान की आवाज में दृढ़ता थी—"और उस काम को ब्रूटा बेहद सावधानी से करता है।"

सोहनलाल टी०वी०, वी०सी०आर० ले आया।

वो आठ वीडियो कैसेट थीं, जिन्हें जहाज के प्राईवेट हिस्से में स्थित, सुरक्षा कंट्रोल रूम से वे उठाकर लाये थे। वी०सी०आर० पर लगाकर उन्होंने एक-एक कैसेट को देखा।

परन्तु सब की सब कैसेट खाली थीं।

"यह क्या! इन कैसेटों में तो किसी का भी चेहरा नहीं है।" सोहनलाल के होंठों से निकला—"हर कैसेट में जहाज के उस प्राईवेट हिस्से के दृश्य हैं। कहीं तो वो गैलरी है, जहां से हम भीतर प्रवेश हुए थे। कहीं खूबसूरत बैडरूम है। तो हाल ड्राईंगरूम। या फिर छोटे-छोटे केबिन। खेलने के लिए बड़ा सा हाल। ऐसी और भी कई जगह। लेकिन एक भी इन्सान का चेहरा कैसेटों में दर्ज नहीं है। कितनी अजीब बात है—।"

सोहनलाल सिर्फ सिर हिलाकर रह गया।

"यह अजीब या हैरानी की बात नहीं है।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"क्यों?"

"जहाज पर मुम्बई बन्दरगाह पहुंचा। लंगर डाला। कई दिनों से जहाज खाली खड़ा हुआ है। यह सारी वीडियो कैसेट, तब की है, जब से जहाज खाली खड़ा है। इन कैसेट की रिकार्डिंग के दौरान, इत्तफाक से वहां कोई नहीं आया। जबकि बूटा के जहाज के प्राईवेट हिस्से में वीडियो कैमरा और जगह-जगह लगे लैंस चौबिसों घण्टे ऑटोमैटिक सिस्टम के मुताबिक काम करते रहते हैं कैसेट की फिल्म जब भर जाती है तो कम्प्यूटराईज सिस्टम कैसेट के कैमरे से निकलकर ट्रे में धकेल देता है और नई कैसेट वहां आकर लग जाती है।"

दो पल के लिये कोई कुछ नहीं बोला।

"मतलब कि हमारी सारी मेहनत खराब-बेकार गई।" सोहनलाल गहरी सांस लेकर कह उठा।

"मेहनत कभी बेकार नहीं जाती।" देवराज चौहान के चेहरे पर सोच के भाव थे—"तुम इन कैसेटों को संभालकर रखो। मैं बन्दरगाह जा रहा हूं।"

"वहां—क्यों?" जगमोहन ने उसे देखा।

"दो दिन तक जहाज ने सिंगापुर के लिये रवाना होना है। उसमें सफर करने के लिये टिकट बुक करानी है। तुम दोनों मेकअप में जाओगे। क्योंकि तुम दोनों के चेहरे जहाज पर मौजूद वीडियो कैमरे में आ चुके हैं और उन लोगों ने देख भी लिए होंगे। मैं रोशन कुमार वाले चेहरे में नहीं जा सकूंगा। और न ही असल चेहरे में क्योंकि मेरा असल चेहरा महादेव की मौत के वक्त वो लोग देख चुके हैं। इसलिये हम तीनों मेकअप में, चेहरे-हुलिये बदलकर, सफर करेंगे। पासपोर्टों में, कोई भी ले लेना। मैं टिकट बुक कराकर आता हूं।"

"टिकट तो मैं ले आता हूं बन्दरगाह से।" सोहनलाल बोला।

"नहीं।" देवराज चौहान ने सोचभरे ढंग से सिर हिलाया—"जहाज में मुझे दूसरी मंजिल के उस हिस्से के केबिनों में जगह लेनी है, जहां यात्री आ-जा सकते हैं।"

"ताकि बूटा के प्राईवेट हिस्से तक पहुंचने में आसानी हो।" जगमोहन कह उठा।

देवराज चौहान ने गम्भीर निगाहों से दोनों को देखा।

"मैं कोई ऐसा रास्ता निकालना चाहता हूं कि जहाज पर, प्राईवेट हिस्से की निगरानी भी चलती रहे। कैमरे भी चलते रहें और उन्हें हमारे भीतर आने का पता भी न चले।" देवराज चौहान ने होंठ भींचकर सोचभरे स्वर में कहा।

"ऐसा कैसे हो सकता है कि कैमरे भी चलते रहें और पता भी न चले।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"ये नहीं हो सकता।" सोहनलाल दृढ़ताभरे स्वर में कह उठा।

"मैं जानता हूं नहीं हो सकता।" देवराज चौहान ने पूर्ववत् लहजे में कहा—"लेकिन सोचना यह है कि हो तो, कैसे हो सकता है।"

जगमोहन और सोहनलाल की निगाहें मिलीं।

"तुम्हारा मतलब कि किसी और जगह से रास्ता बनाकर, उस प्राईवेट हिस्से में जाया जा—?"

"नहीं जाया जा सकता।" देवराज चौहान ने सिर हिलाया—"उस हिस्से में सेंध नहीं लगाई जा सकती। सेंध लगाकर भीतर चले गये तो, वो कैमरे हमें पकड़ लेंगे।"

"ऐसा है तो फिर हम जहाज के प्राईवेट हिस्से में नहीं जा सकते। चोरी-छिपे नहीं पहुंच सकते।"

"मैंने कब कहा है कि पहुंच सकते हैं।" देवराज चौहान का स्वर शांत-सपाट था—"मुझे चोरी-छिपे वहां पहुंचने के लिए रास्ता निकालना पड़ेगा। और रास्ता निकालकर रहूंगा।" कहने के साथ ही देवराज चौहान बाथरूम में चला गया।

जगमोहन और सोहनलाल की निगाहें मिलीं।

"जहाज के उस प्राईवेट हिस्से पर नजर रखने के लिये, हर वक्त वीडियो कैमरे चालू रहते हैं।" जगमोहन गम्भीर स्वर में कह उठा—"ऐसे में बिना निगाहों में आये वहां प्रवेश नहीं किया जा सकता और प्रवेश कर भी लिया जाये तो दूसरे ही मिनट वे लोग स्क्रीनों पर हमें देख लेंगे और हम उनकी कैद में होंगे।"

"यही तो मैं कह रहा हूं। ऐसे में देवराज चौहान कौन-सा नया रास्ता निकालेगा। रास्ता कोई है ही नहीं।" सोहनलाल की आवाज में विश्वास और दृढ़ता थी।

दोनों सवालिया निगाहों से एक-दूसरे को देख रहे थे।

दस मिनट बाद देवराज चौहान नहा-धोकर बाहर निकला।

"मेकअप बॉक्स देना।" देवराज चौहान ने कहा।

सोहनलाल ने खामोशी से देवराज चौहान को देखकर सिर
हिला दिया।

□□

□□

मुम्बई बन्दरगाह पर नदीम खान बुकिंग क्लर्क था। पैंतालिस बरस उसकी उम्र हो चुकी थी। बाईस-तेईस बरस की उम्र में उसे यह नौकरी मिली थी और बाखूबी अपना काम कर रहा था। आज तक तरक्की नहीं मिली थी, परन्तु वो खुश था कि घर का खर्चा-पानी आराम से चल रहा है।

आज उसकी ड्यूटी सुबह आठ बजे से दोपहर तीन बजे तक थी।

ठीक तीन बजे वो बुकिंग ऑफिस की इमारत से बाहर निकला और हमेशा की भांति पैदल ही आगे बढ़ गया। बस स्टॉप यहां से दूर पड़ता था। अभी वह कुछ ही आगे चला होगा कि पीछे से आवाज सुनकर ठिठका और पलटकर देखा।

दो कदम पीछे देवराज चौहान था। जो पास आ पहुंचा था। देवराज चौहान ने फ्रैंच कट दाढ़ी और उससे लग रही मूंछें लगा रखी थीं। आंखों पर धूप का चश्मा था।

"आपने मुझे बुलाया?" नदीम खान ने उसे प्रश्नभरी निगाहों से देखा।

"हां।" देवराज चौहान मुस्कराया—"आपसे छोटा-सा काम था।"

"कहिये?"

"दो दिन बाद नीलगिरी जहाज सिंगापुर के लिये रवाना होगा।"

"जहाज नम्बर 302 की बात कर रहे हैं।"

"ठीक समझे आप। मुझे उस जहाज की दूसरी मंजिल पर तीन केबिन बुक कराने हैं। छोटे वाले केबिन।" छोटे केबिन में सिंगल बेड और टेबल के अलावा दो कुर्सियां होती हैं।

"तो जाकर 'बुक' करा लीजिये।" नदीम खान ने लापरवाही से कहा।

"मुझे खास केबिन चाहिये। इस मामले में आप मेरी मदद कर सकते हैं।"

नदीम खान ने देवराज चौहान को सिर से पांव तक देखा।

"जो केबिन आपको चाहिये, उसके लिये मैं आपकी मदद क्यों करूंगा?"

"क्योंकि आप बुकिंग क्लर्क हैं और अगर आप मेरी मदद करेंगे तो मैं उस मदद की कीमत दूंगा।" देवराज चौहान ने कहा—"आपने किसी का उधार देना हो तो, वो उधार मैं अपनी जेब से चुकता करूंगा।"

यह सुनते ही नदीम खान फौरन संभला।

"मेरा उधार दे देंगे आप?"

"हां।"

"वो ज्यादा हुआ तो?"

"कितना उधार ले रखा है आपने लोगों से। कहिये तो सही।" देवराज चौहान मुस्कराया।

"पच्चीस हजार—।" नदीम खान फौरन बोला।

"मैं चुकता कर दूंगा।"

"उस पर पांच हजार तो ब्याज चढ़ चुका होगा।" नदीम खान जैसे उसे हलाल करने पर उतारू हो गया।

"मतलब कि कुल तीस हजार हुआ।"

"हां।"

"ठीक है। मैं तीस हजार आपको दे दूंगा। आप उधार चुकता कर देना""।"

"कब देंगे आप?"

"जब आप नीलगिरी में दूसरी मंजिल पर मेरे पसन्दीदा तीन केबिन, बुक करवा देंगे।"

"कौन-कौन से नम्बर वाला केबिन चाहिए?" नदीम खान सिर हिलाकर बोला।

"नम्बर का तो मुझे ध्यान नहीं है। अगर तुम मुझे जहाज की दूसरी मंजिल के नक्शे का बुकिंग चार्ट दिखा दो तो मैं तुम्हें बता सकता हूं कि मुझे कौन-कौन से केबिन चाहियें।" देवराज चौहान ने कहा।

"मामूली बात है। आओ मेरे साथ।"

"कहां—?"

"भीतर। मैं तुम्हें बुकिंग चार्ट दिखाता हूं।"

"किसी को क्या कहोगे कि मुझे चार्ट क्यों दिखा रहे—।"

"चिन्ता मत करो। कोई कुछ नहीं पूछेगा। तुम कैन्टीन में बैठना। मैं चार्ट लेकर वहीं आता हूं।"

दोनों वापस बन्दरगाह की इमारत की तरफ बढ़ गये।

भीतर पहुंचकर देवराज चौहान कैन्टीन में जा बैठा और नदीम

खान दूसरी तरफ चला गया और पांच मिनट बाद ही कैण्टीन में पहुंचा। हाथ में तह किया कागज था। उसके सामने कुर्सी पर बैठते हुए उसने वो कागज खोला जो डेढ़ बाई दो फीट का था।

"यह दूसरी मंजिल के केबिनों का नक्शा है। इसे सामने रखकर ही केबिन बुक करते हैं।"

देवराज चौहान ने देखा, छोटे-छोटे खानों में नम्बर लिखे हुए थे। नम्बरों, यानि कि केबिनों के बीच वैसे ही रास्ते थे, जैसे जहाज पर थे। नक्शे का आधा हिस्सा स्याह करके बंद कर रखा था।

"इस जगह पर काली स्याही का छापा क्यों है?" जानते हुए भी देवराज चौहान ने पूछा।

"यह जहाज के मालिक का प्राइवेट हिस्सा है। यह जगह यात्रियों के लिए नहीं है।" नदीम खान बोला।

देवराज चौहान ने सिर हिलाया फिर ध्यानपूर्वक नक्शे को देखने के बाद बोला।

"मुझे चौदह-पन्द्रह और सोलह नम्बर केबिन चाहियें।"

नदीम खान ने नक्शा अपनी तरफ घुमाया। वहां नजर मारी। फिर बोला।

"चौदह-सोलह नम्बर केबिन बुक हो चुके हैं। पन्द्रह नम्बर मिल सकता है।"

"चौदह-सोलह जिसे दिए हैं, उसे कोई और दे दो।" देवराज चौहान बोला।

"ये नहीं हो सकता।" नदीम खान ने इन्कार में सिर हिलाया—"हो चुकी बुकिंग को कैंसिल करने की खास वजह होनी चाहिये। यह वजह पर्याप्त नहीं है कि तुम मेरा तीस हजार का उधार चुकता कर रहे हो। आखिर मुझे भी अपने ऑफिसरों को जवाब देना पड़ेगा। वहां भारी परेशानी खड़ी हो जायेगी।"

देवराज चौहान नक्शे को देखता रहा।

"कोई और केबिन पसन्द कर लो।"

देवराज चौहान ने जहाज की दूसरी मंजिल का नक्शा चैक करने के बाद दो अन्य केबिनों का चुनाव किया। जिनके तीन और पांच नम्बर थे।

"पन्द्रह, तीन और पांच नम्बर केबिन किस नाम से बुक करें?" नदीम खान ने पूछा।

देवराज चौहान ने बताया।

"पासपोर्ट तैयार है। परसों जहाज पर सवार होने से पहले पासपोर्ट चैक कराने होंगे।"

"सब कुछ है।"

"ठीक है। टिकटों के पैसे मुझे दो। मेरा तीस हजार दो। यहीं बैठो। दस मिनट में सारी बुकिंग कराकर, टिकट यहीं ला देता हूं।" नदीम खान ने नक्शे वाले कागज को तह करते हुए कहा।

देवराज चौहान ने टिकटों के अलावा, तीस हजार उसको दिए।

नदीम खान चला गया।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई और सोचभरे ढंग में कश लेने लगा।

नदीम खान पच्चीस मिनट बाद वापस लौटा। देवराज चौहान को तीन टिकट थमाये। देवराज चौहान ने टिकटों को चैक किया। वो दूसरी मंजिल के पन्द्रह-तीन और पांच नम्बर केबिन की बुकिंग थी।

"जहाज परसों दोपहर को ठीक तीन बजे यहां से रवाना होगा। इस पर यात्रा करने के लिये, कम से कम ढाई घण्टे पहले पहुंचना पड़ेगा। पासपोर्ट और सामान की चैकिंग में वक्त तो लगता ही है।"

देवराज चौहान ने मुस्कराकर सिर हिलाया और उठ खड़ा हुआ।

नदीम खान भी उठा।

"कोई खास वजह है इन नम्बरों वाले केबिनों को बुक कराने के लिये?" नदीम खान ने पूछा।

"नहीं। मैं जब भी कहीं जाता हूं तो सीट नम्बर या केबिन नम्बर अपनी पसन्द के लेता हूं।"

"अजीब आदत है। सनकीप[illegible]।"

"हो सकता है। लेकिन मैंने अपनी इस आदत पर कभी खास गौर नहीं किया। तुम अपना उधार चुकता करो और मैं सफर की तैयारी शुरू करता हूं।"

□□

□□

हरी किशन ब्रूटा।

कौन था। कहां से आया। इसकी जानकारी शायद ही कोई रखता हो। अचानक ही यह नाम उभरा था और मुम्बई बिजनेस उद्योग पर छाता चला गया। यह आज से बीस बरस पहले की बात है। आज मुम्बई में कई बड़े-बड़े बिजनेस ब्रूटा के चल रहे थे। वह खुद नहीं जानता था कि उसके कुल कितने कर्मचारी हैं।

सब काम ठीक तरह चल रहे थे।

मुम्बई में ब्रूटा के दो खूबसूरत बंगले थे। दो अचूक निशानेबाज, बतौर गनमैन अक्सर ब्रूटा के साथ रहते थे, जब वो बाहर निकलता था। तीन-चार बार उसकी जान लेने के लिए उस पर हमले हो चुके थे, परन्तु उसके गनमैनों ने ब्रूटा का कुछ भी बिगड़ने नहीं दिया था।

ब्रूटा का परिवार था—पत्नी और दो बच्चे। लड़की की शादी हो चुकी थी और वो फ्रांस में अपने पति के साथ रहती थी। लड़का मुम्बई में ही था और बाप की दौलत और रसूख के दम पर भरपूर ऐश कर रहा था। ब्रूटा के पास इतना वक्त नहीं था कि अपने परिवार की तरफ जरा भी ध्यान दे पाता।

इस वक्त ब्रूटा अपने ऑफिस में नरेश मलानी के साथ था। कुछ पल पहले ही वो टी०वी० स्क्रीन पर फिल्म देखकर हटा था। उस फिल्म में मेकअप में देवराज चौहान था। सोहनलाल और जगमोहन के चेहरों को भी उसने देखा। जहाज के प्राईवेट हिस्से पर घूमते और उनकी बातों को सुना।

फिल्म खत्म होते ही मलानी ने टी०वी० ऑफ कर दिया।

ब्रूटा ने हाथ की उंगली में पड़ी सोने की रिंग को घुमाया और सिग्रेट सुलगाकर मलानी को देखा। मलानी चार कदम के फासले पर सतर्क ढंग में खड़ा था।

"तुम ये सब देखकर किस नतीजे पर पहुंचे?" ब्रूटा का स्वर शांत था।

"सर! सबसे पहली बात तो यह है कि ये लोग ताला खोलने में बहुत एक्सपर्ट हैं। उस दरवाजे पर डबल आटोमैटिक लॉक था। जिसे चाबी के बिना खोल पाना सम्भव नहीं। लेकिन वो लॉक इन लोगों ने इस तरह खोला कि लॉक को जरा भी नुकसान नहीं हुआ। वैसे ही सफाई के साथ खोला गया, जैसे चाबी से खोला जाता है।"

"मैं जानना चाहता हूं कि यह लोग किस मकसद की खातिर मेरे प्राईवेट हिस्से में आये थे?" ब्रूटा ने पूछा।

"इनकी बातों से यही लगता है कि ये लोग यह जानना चाहते है कि आप जहाज के प्राईवेट हिस्से पर क्या काम करते हैं। इन लोगों की बातों से जाहिर है कि जैसे इन्हें विश्वास हो कि वहां आप कोई गलत काम करते हैं। हो सकता है इन लोगों को हमारे किसी दुश्मन ने भेजा।"

"नहीं।" ब्रूटा ने इन्कार किया—"मेरे जो भी दुश्मन हैं उनकी

इतनी हिम्मत नहीं कि इस तरह जहाज के प्राईवेट हिस्से में आ जाये। ये कोई दूसरी बात ही लगती है।"

"दूसरी कैसी बात?" भवानी ने बूटा को देखा।

"कह नहीं सकता। बहरहाल इन्होंने जहाज पर सफर करने का प्रोग्राम बना रखा है।" बूटा ने भवानी को देखा—"इस बार तुम भी जहाज पर सफर करोगे मेरे साथ ही इस बार चलोगे और इन लोगों को जहाज में पहचानने की कोशिश करोगे।"

"ठीक है सर! लेकिन मुम्बई के काम कौन संभालेगा?"

"वो काम किसी भरोसे के आदमी के हवाले कर दो।" बूटा ने शांत लहजे में आदेश दिया।

"वैल सर—!"

□□

□□

जगमोहन और सोहनलाल की निगाह देवराज चौहान पर टिकी थी।

सोचों में डूबे देवराज चौहान ने कश लिया।

"हम यह सोचकर चल रहे हैं कि महादेव की हत्या बूटा या उसके आदमियों के इशारे पर हुई है।" जगमोहन कह उठा—"महादेव के हत्यारे की तलाश में ही हम जहाज नम्बर 302 पर सिंगापुर के लिये सफर करेंगे और सफर के दौरान बूटा के उस प्राईवेट हिस्से में प्रवेश करके ऐसा कुछ तलाश करना है कि महादेव की हत्या की वजह के साथ-साथ, उसके हत्यारे का भी पता चले। लेकिन यह भी तो हो सकता है कि हम गलत रास्ते पर बढ़ रहे हों। महादेव का हत्यारा कहीं और हो और—।"

"तुम अनिता गोस्वामी को भूल रहे हो जगमोहन।" सोहनलाल [illegible]ला।

"मैं समझा नहीं।"

"उसने असलम खान को कहा था कि महादेव का हत्यारा जहाज में होगा, जब जहाज रवाना होगा।"

जगमोहन सोहनलाल को देखता रहा।

"और वो मौसी, जिससे तुम मिलकर आये थे। उसने भी यही कहा था।" सोहनलाल पुनः बोला—"अनिता गोस्वामी हमें जहाज की छठी मंजिल के डेक पर, जहाज की रवानगी की रात मिलेगी और बतायेगी कि महादेव का हत्यारा कौन है?"

जगमोहन गहरी सांस लेकर रह गया।

"जो भी हो, जहाज पर हम अपनी मनमानी नहीं कर सकेंगे।"

"क्यों?"

"ब्रूटा का वो जहाज है। सफर के दौरान ब्रूटा भी वहां होगा। अपने प्राईवेट हिस्से में होगा और अब तक उसे मालूम हो चुका होगा कि कोई ताला खोलकर, उसकी प्राईवेट जगह में आया है। हमारे चेहरे भी वीडियो फिल्म में उसने देख लिए होंगे। ऐसे में इस बार वो वहां सख्त पहरा रखेगा, जब कि हम भीतर जाने की सोच रहे हैं।"

सोहनलाल ने देवराज चौहान को देखा।

"यह तो अब देवराज चौहान ही बतायेगा कि इसने क्या सोच रखा है कि ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से में, उनकी निगाहों से बचकर कैसे प्रवेश किया जा सकता है।" सोहनलाल का स्वर गम्भीर था।

देवराज चौहान बराबर उन दोनों को देख रहा था।

"इस बात का जवाब मैं जहाज पर पहुंचकर ही दूंगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"अब क्यों नहीं?"

"कुछ बातें मौके पर बताई जाती हैं। वैसे भी मैं अभी पक्के नतीजे पर नहीं पहुंच पाया हूं कि किस तरह ब्रूटा के उस प्राईवेट हिस्से पर पहुंचना है। और कुछ भी करने से पहले, जहाज पर अनिता गोस्वामी से मुलाकात करूंगा। हो सकता है कि उसकी बातों से भी हमें अपने काम में सहायता मिले।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट सुलगाई।

कुर्सी पर बैठे-बैठे पुश्त से सिर टिकाकर आंखें बंद कर लीं जगमोहन ने।

"जो-जो सामान साथ में ले जाना है, उसके बारे में सुन लो।" देवराज चौहान ने सोहनलाल से कहा।

"ये आठों वीडियो कैसेट तुमने जहाज पर ले जानी हैं।"

"वापस–।" सोहनलाल अजीब से स्वर में कह उठा।

"हां।"

"लेकिन इनका इस्तेमाल क्या है? ये तो खाली हैं। ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से की रिकॉर्डिंग है। जिनमें कोई इन्सान नजर नहीं–।"

"ये बाद की बात है कि इनका इस्तेमाल क्या है।" देवराज चौहान ने बात काटकर कहा–"तुमने इन कैसेटों को जहाज पर ले

जाना है। तुम्हारा केबिन पन्द्रह नम्बर वाला है। पासपोर्ट को ही इस्तेमाल करना, जिस नाम से तुम्हारे नाम केबिन बुक कराया है।"

"ठीक है।"

"अपने औजार साथ ले जाना।"

"ठीक है।"

"एक वी०सी०आर० और टी०वी० भी साथ ले जाना है।" देवराज चौहान ने कहा।

"वी०सी०आर०—टी०वी०—?"

"हां।"

"लेकिन लोग तो बाहर से सामान लाते हैं, मैं यहां से सामान लेकर बाहर के देश में जाऊं। कस्टम वाले शक करेंगे कि अवश्य कोई बात है।" सोहनलाल ने कहा।

"कोई शक नहीं करेगा। तुम्हारी आदत है फिल्म देखने की। पागलपन की हद तक तुम पर फिल्में देखने का भूत सवार रहता है, इसलिये वी०सी०आर० और टी०वी० तुम साथ रखते हो। किसी को क्या एतराज हो सकता है? साथ में कुछ कैसेट फिल्मों की भी ले लेना।"

"टी०वी० तो जहाज के केबिन में भी होगा?"

"होने दो। तुम अपना ले जा रहे हो। किसी को क्या एतराज हो सकता है।"

"ठीक है। मैं वी०सी०आर०, टी०वी०, कैसेट जहाज पर ले जाता हूं। लेकिन इनका इस्तेमाल क्या होगा?"

"अगर मैं ठीक सोच रहा हूं तो इसका इस्तेमाल बहुत बढ़िया होगा।" देवराज चौहान मुस्कराया।

"तुम क्या सोच रहे हो?"

"इस बारे में जहाज पर पहुंचने के बाद ही बातें करेंगे।"

सोहनलाल समझ गया कि देवराज चौहान के मस्तिष्क में कोई योजना आ चुकी है।

"करीब बीस फीट लम्बी टी०वी० वाली तार साथ ले लेना।"

सोहनलाल ने खामोशी से सिर हिलाया।

"और टेप! जिससे तारों को चिपकाया जा सके।"

"बिजली के काम में इस्तेमाल होने वाली टेप—?" सोहनलाल ने होंठ सिकोड़े।

"हां। साथ में कटर, जिसे कि बिजली वाले ही इस्तेमाल करते

है। कोई ऐसा नुकीला औजार, जिससे कि धीमे-धीमे, बेआवाज लकड़ी को उधेड़ा जा सके।" देवराज चौहान ने सोचभरे स्वर में कहा।

"और–?"

"अभी तो इन सब चीजों का इन्तजाम करो। कुछ और ध्यान में आया तो बता दूंगा।"

सोहनलाल सिर हिलाकर रह गया।

"इसका मतलब कि तुम्हारे दिमाग में कोई योजना आ चुकी है।" जगमोहन ने कहा।

"हां।"

"क्या?"

"इस बारे में जहाज पर ही बात करेंगे। अभी योजना में कुछ कमी है। उसके बारे में सोच रहा हूं।"

"जहाज कब बन्दरगाह से रवाना होगा?"

"कल।" देवराज चौहान ने कहा–"कल दिन में बारह के आसपास अलग-अलग हमें बन्दरगाह पर पहुंचना है।"

□□

□□

जहाज का लंगर उठाया जा चुका था। सब यात्री जहाज में पहुंच चुके थे। कुछ अपने केबिन में थे तो कुछ धूप में ही डेक पर खड़े थे।

जहाज का भोंपू (सायरन) कई बार बज चुका था। केबिनों में लगे छोटे-छोटे स्पीकरों से मध्यम-सी आवाज निकलकर, इस बात की सूचना दे रही थी कि जहाज रवाना होने वाला है। डेक पर लगे स्पीकर, वहां खड़े यात्रियों को भी इस बात की सूचना दे रहे थे।

और फिर धीरे-धीरे जहाज समन्दर की छाती पर रेंगने लगा। बन्दरगाह धीरे-धीरे दूर होने लगा। भोंपू बार-बार बज रहा था। धीरे-धीरे भोंपू बजना बंद हो गया। जहाज पन्द्रह मिनट में ही खुले समन्दर की छाती पर रफ्तार के साथ दौड़ना शुरू हो चुका था और उसकी स्पीड बढ़ती जा रही थी।

शाम के चार बज रहे थे।

जहाज में अधिकतर यात्री अपने-अपने केबिनों में थे। सोहनलाल के नाम से पन्द्रह नम्बर केबिन बुक थी। पासपोर्ट

की तस्वीर के मुताबिक ही उसने अपने चेहरे पर मेकअप कर रखा था। आंखों पर नजर का चश्मा। सिर के बाल पीछे करके, चोटी [illegible] [illegible] लेकर बालों को, उस पर रबड़ चढ़ा रखी थी। ठोड़ी पर छोटी-सी, नुकीले ढंग वाली दाढ़ी थी, जो कि उसके पतले-सूखे चेहरे और शरीर से बराबर मेल खा रही थी।

बदन पर, रेडीमेड सिल्क, नया सूट था।

अपने साथ वो सब सामान ले आया था, जिसके लिये देवराज चौहान ने कहा था।

जगमोहन तीन नम्बर केबिन में था।

पासपोर्ट की तस्वीर के मुताबिक ही उसने मेकअप कर रखा था। चेहरे पर काली दाढ़ी-मूंछें थीं। बदन पर टी-शर्ट और नेकर पहन रखा था। खुद को उसने मस्तमौला पर्यटक बना रखा था। जिसका काम ही इधर-उधर घूमते रहना हो। बालों का थोड़ा-सा स्टाईल बदल रखा था। ताकि ब्रूटा के आदमी उस पर किसी भी तरफ से शक न कर सकें।

देवराज चौहान पांच नम्बर केबिन में था।

चेहरे पर वो ही मेकअप था, जब वह बुकिंग क्लर्क नदीम खान से मिला था। फ्रेंचकट दाढ़ी और मूंछें। इसके अलावा सिर पर 'पी' कैप लगा रखी थी। उसने ऐसे रंग-ढंग अपना रखे थे कि देखने वाला उसे फौजी ही समझे। होंठों के बीच हरदम सुलगा या बुझा सिगार फंसा हुआ था।

केबिन में सिंगल बैड, फर्श पर कालीन और टेबल के अलावा दो कुर्सियां थीं। अटैच बाथरूम था। दरवाजा खोलने पर साढ़े तीन फीट की गैलरी थी, जिसके सामने की लाईन में और दायें-बायें हर तरफ केबिन बने थे। जिनमें यात्री थे।

इस वक्त गैलरी खाली नजर आ रही थी।

देवराज चौहान ने इन्टरकाम पर रूम सर्विस को कॉफी के लिये आर्डर दिया। उसके बाद कुर्सी पर बैठा और सिग्रेट सुलगा ली।

दस मिनट में ही वेटर कॉफी ले आया।

"क्या नाम है तुम्हारा?" देवराज चौहान ने पूछा।

"राजन!" वेटर ने कहा।
देवराज चौहान ने पचास का नोट निकालकर उसे थमाया।
"इसकी क्या जरूरत थी सर!"
देवराज चौहान ने मुस्कराकर एक और सौ का नोट निकाला और उसकी तरफ बढ़ाया।
"और क्या सेवा करूं सर?" वेटर राजन नोट थामते हुए बोला।
"सेवा भी बता दूंगा।" देवराज चौहान ने सिग्रेट ऐश-ट्रे में रखी– "आते माल को फौरन जेब में डाल लेना चाहिये।"
वेटर ने तुरन्त नोटों को जेब में डाला।
"जाओ।"
वेटर चला गया।
देवराज चौहान ने कॉफी उठाई और सोचभरे ढंग में एक-एक घूंट लेते, कॉफी समाप्त की फिर उठकर केबिन का दरवाजा बंद करके सिटकनी चढ़ाई और बैड पर रखा सूटकेस खोलकर उसमें पड़ा सारा सामान निकाला। उसके बाद सूटकेस के तले की परत उठाई तो नीचे साईलैंसर लगे दो रिवॉल्वर और फालतू राऊण्ड नजर आये। देवराज चौहान ने दोनों रिवॉल्वर उठाकर बाहर रखे फिर तले को वैसे ही फिट किया और सारा सामान वापस रखकर सूटकेस बंद किया फिर एक रिवॉल्वर तकिये के नीचे रखा। दूसरा उठाकर कपड़ों में छिपाया और बाहर निकलकर, दरवाजा बंद करने के पश्चात् वो आगे बढ़ा और चार नम्बर केबिन पार करके तीन नम्बर के सामने ठिठका।
दरवाजा भीतर से बंद था।
देवराज चौहान के थपथपाने पर जगमोहन ने दरवाजा खोला। देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया। दरवाजा पुनः बन्द हो गया। देवराज चौहान ने रिवॉल्वर निकालकर उसे दी।
"इसे रख लो।"
जगमोहन ने रिवॉल्वर लेकर, अपने कपड़ों में रख ली।
देवराज चौहान कुर्सी पर बैठ चुका था।
"अब तक तो सब ठीक रहा–।" जगमोहन ने कहा।
"हां।"
"आगे का क्या प्रोग्राम है? तुम्हारी क्या योजना है? बूटा के उस प्राईवेट हिस्से में कैसे प्रवेश करना है?"
"आज रात दस बजे अनिता गोस्वामी से मिलना है।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा–"उसके बाद ही इस बारे में बात करेंगे।"

"ब्रूटा जहाज में सफर कर रहा है?" जगमोहन ने पूछा।
"मैंने पूछताछ नहीं की, इस बारे में। पहले की खबरों के मुताबिक उसे जहाज में ही होना चाहिये।"
"मैं मालूम करूं कि वो जहाज में है कि नहीं?"
"इस तरह की पूछताछ से किसी को शक हो सकता है। अगर वो जहाज में है तो, दो-चार घंटों में मालूम हो जायेगा। खामोशी से आसपास के माहौल का जायजा लेते रहो।"
जगमोहन ने सिर हिलाया।
"मैं सोहनलाल से मिलकर आता हूं।"
देवराज चौहान सोहनलाल के केबिन में पहुंचा।
सोहनलाल ने वी०सी०आर० पर हिन्दी फिल्म लगा रखी थी।
देवराज चौहान के आने पर सोहनलाल मुस्कराकर बोला।
"वैसे तो कभी फिल्म देखी नहीं। अब मौका मिला है तो सोचा फ़िल्मों की जो कैसेट लाया हूं वो सब देख लूं।"
"वो आठ कैसेट कहां हैं, जो हम जहाज से ले गये थे।" देवराज चौहान ने पूछा।
"उधर बैग में। निकालूं?"
"नहीं।"
"तुम करना क्या चाहते हो?" सोहनलाल की निगाह देवराज चौहान पर जा टिकी।
"रात को अनिता गोस्वामी से मिलने के बाद इस बारे में बात करेंगे।" देवराज चौहान ने कहा—"हर तरफ से सावधान रहना। हो सकता है ब्रूटा के आदमियों को इस बात का अहसास हो कि दरवाजे का ताला खोलकर, प्राईवेट हिस्से में प्रवेश करने वाले जहाज में सफर कर रहे हैं और उनके आदमी यात्रियों के बीच में से हमें तलाश करने की कोशिश करें। अभी तक हम इन लोगों की असलियत नहीं जानते कि यह क्या दम-खम रखते हैं।"
सोहनलाल सिर हिलाकर रह गया।
"सबसे पहले हमने ब्रूटा के आदमियों की पहचान करनी है। ब्रूटा को भी देखना है। अभी तक ब्रूटा के चेहरे से भी हम वाकिफ नहीं हैं और भी कई चीजें होंगी, जिनके बारे में हमें जानकारी हासिल करनी होगी।" देवराज चौहान ने सोचभरे स्वर में कहा—"अभी हम सारे मामले से पूरी तरह अंजान हैं।"
जहाज तेज रफ्तार के साथ समन्दर की छाती पर दौड़े जा रहा था।

□□

□□

जहाज अरेबियन 'सी' में पन्द्रह से बीस डिग्री चैनल पर था। शाम के सात बज रहे थे।

देवराज चौहान सूप का आर्डर देकर हटा था। जब से जहाज ने मुम्बई बन्दरगाह छोड़ा था, तब से वो, जगमोहन और सोहनलाल से मिलने के अलावा केबिन से बाहर नहीं निकला था। केबिन में बंद अपनी योजना पर गौर कर रहा था। केबिन के कोने में छोटा-सा, खूबसूरत टी०वी० मौजूद था, परन्तु देवराज चौहान ने उसे ऑन करने की चेष्टा नहीं की थी। उसे इन्तजार था, दस बजने का। अनिता गोस्वामी से मुलाकात करने का।

तभी केबिन में लगे स्पीकर से निकलने वाली मध्यम-सी, स्पष्ट आवाज कानों में पड़ी।

"जहाज पर यात्रा कर रहे यात्रियों को शाम का शुभ नमस्कार।" मीठी आवाज किसी युवती की थी–"आशा है आप यात्रा का भरपूर आनन्द ले रहे होंगे। आप सबको यह जानकर खुशी होगी कि जहाज के मालिक श्री हरीकिशन बूटा भी आपके साथ, जहाज में सफर कर रहे हैं और आज मिस्टर बूटा का जन्मदिन भी है। इस खुशी के मौके पर मिस्टर बूटा जहाज के सब यात्रियों को कॉकटेल पार्टी दे रहे हैं। मिस्टर बूटा को पूरा विश्वास है कि आप जब कॉकटेल पार्टी में शामिल होकर, जन्मदिन के इस मौके पर, उनकी लम्बी उम्र की दुआ अवश्य करेंगे। यह पार्टी जहाज के ग्राऊण्ड फ्लोर के पार्टी हॉल में है। आशा है कि आप सबने पार्टी हॉल में पहुंचने की तैयारी शुरू कर दी होगी। धन्यवाद!" आवाज आनी बंद हो गयी।

देवराज चौहान के होंठ सिकुड़ चुके थे।

बूटा का जन्मदिन था आज और जहाज के सब यात्रियों को कॉकटेल पार्टी दे रहा था।

तभी वेटर राजन ने भीतर प्रवेश किया।

"ईवनिंग सर!" कहने के साथ ही उसने सूप का प्याला ट्रे से उठाकर टेबल पर रखा।

"आज तो बूटा साहब पार्टी दे रहे हैं।" देवराज चौहान एकाएक मुस्कराकर बोला।

"जी हां सर!" वेटर ने सीधा होते हुए कहा।

"जन्मदिन की खुशी में—।" देवराज चौहान मुस्करा रहा था।

"सर!" वेटर भी मुस्कराया—"बड़े लोगों का जन्मदिन तो साल में बारह बार आता है।"

"वो कैसे?"

"तीन महीने पहले भी इसी तरह जहाज के यात्रियों को अपना जन्मदिन होने की बात कहकर ब्रूटा साहब ने कॉकटेल पार्टी दी थी। तीन महीने बाद आज फिर जन्मदिन आ गया।"

देवराज चौहान बराबर मुस्कराता रहा।

"ब्रूटा साहब का असली जन्मदिन कब आता है?"

"क्या मालूम साहब! सब जन्मदिन असली ही है। बड़े लोगों की बातें भी अजीब होती हैं।" कहने के साथ ही वो खाली ट्रे थामे बाहर निकलता चला गया।

देवराज चौहान के चेहरे पर सोच के भाव नाच उठे।

तभी जगमोहन ने भीतर प्रवेश किया।

"तुमने घोषणा सुनी?"

"जन्मदिन की एवज में कॉकटेल पार्टी वाली?" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"हां—।"

"वेटर बता रहा था कि तीन महीने पहले भी इसी तरह उसने अपने जन्मदिन की पार्टी दी थी।"

जगमोहन के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।

"तीन महीने पहले—?"

"हां। तीन महीने पहले भी उसने अपना जन्मदिन मनाया था और आज भी मना रहा है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"मेरा ख्याल है कि आज की पार्टी जानबूझकर रखी है उसने?"

"क्या मतलब?"

"शायद ब्रूटा जानता है कि उस दिन जो लोग दरवाजे का ताला खोलकर, उसक प्राईवेट हिस्से में गये थे, वो इसी जहाज में हैं और—।"

"ये बात ब्रूटा को कैसे मालूम हो सकती है।" जगमोहन ने बात काटी।

"जब हमने भीतर प्रवेश किया तो निगरानी करने वाले वीडियो कैमरे चल रहे थे। यानि कि एक कैसेट उसके पास है, जिसमें हमारे चेहरे हैं। अब लगता है कि निगरानी वाले कैमरों के साथ, बातचीत

रिकॉर्ड होने का भी सिस्टम है। यानि कि हमारी बातें भी सुनी गई। तब मैंने-सोहनलाल से कहा था कि जब यह जहाज रवाना होगा तो हम, जहाज पर सफर करेंगे और ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से में भी किसी तरह जाने की चेष्टा करेंगे। स्पष्ट है कि यह सब बातें ब्रूटा के पास है। पार्टी खासतौर से इसी वजह से रखी गई है कि, पार्टी के दौरान ब्रूटा के आदमी हमें पहचानने की चेष्टा करेंगे।"

"ओह! लेकिन वो पहचान नहीं सकेंगे।" जगमोहन सिर हिलाकर कह उठा–"उस वक्त हमारे चेहरे कुछ थे और अब बदले हुए हैं।"

"ये बाद की बात है कि वो पहचान पाते हैं कि नहीं। अपनी कोशिश तो वे जारी रखेंगे।"

"कोई जरूरी तो नहीं कि हम पार्टी में जायें।" जगमोहन ने एकाएक कहा।

"कोई जरूरी नहीं।" देवराज चौहान मुस्कराया–"लेकिन जाने में हमें फायदा हो सकता है। दो बातें नई मालूम होंगी। और हमने ऐसी काई हरकत नहीं करनी है कि वो हमें पहचान सकें या शक कर सकें। एक-एक करके केबिनों में तो वे देख नहीं सकते। इसीलिये पार्टी रखी है कि सब वहां इकट्ठे हों और उनमें से वो हम लोगों को तलाश कर सकें।"

जगमोहन ने सिर हिलाया।

"तुमने पार्टी में ब्रूटा के खास-खास आदमियों की पहचान करनी है। ब्रूटा के कई आदमी यात्रियों की तरह ही, वहां लोगों में शामिल होंगे कि, बीच में घुसकर हमारे बारे में कुछ मालूम कर सकें। सावधान रहना।"

"मैं इस बात का ध्यान रखूंगा।"

"सोहनलाल को भी समझा देना।"

"ठीक है।"

"ब्रूटा के इस तरह पार्टी देकर, उनमें से हमें तलाश करने की कोशिश करने का मतलब है कि वो यकीनी तौर पर कोई गलत काम करता है। और वो जानना चाहता होगा कि हम क्यों उसके पीछे हैं। अगर जहाज के प्राईवेट हिस्से में कोई गलत काम न होता तो दरवाजा खुला देखकर वो यही सोचता कि कोई चोर चोरी करने आया होगा।" देवराज चौहान ने पक्के स्वर में कहा।

"ठीक कहते हो। मैं सोहनलाल से मिलकर आता हूं।" जगमोहन बाहर निकलता चला गया।

□□

□□

ब्रूटा जहाज के प्राईवेट हिस्से में था। उसी विशाल, खूबसूरत ड्राईंग हॉल में। गद्देदार सोफे में धंसा हुआ था। चेहरे पर शांत भाव थे।

मलानी सामने खड़ा था।

"जहाज के यात्रियों को पार्टी की घोषणा कर दी गई है सर–!"

ब्रूटा ने हौले से सिर हिलाया।

"अपने आदमियों को वो वीडियो फिल्म दिखा दी। जिनमें उन तीनों के चेहरे हैं–।" ब्रूटा बोला।

"यस सर! जब से जहाज रवाना हुआ है। उसी वक्त से उन्हें फिल्म ही दिखाई जा रही है। वो लोग तीनों के चेहरे बहुत अच्छी तरह पहचान गये हैं। धोखा खाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता।"

"गुड!" ब्रूटा ने कहा–"तुम्हें विश्वास है कि वो तीनों या तीनों में से कोई हमारे हाथ लग जायेगा?"

"श्योर सर–!"

"लेकिन मुझे ऐसा कम ही लगता है।"

"मैं समझा नहीं सर–!"

"वो लोग होशियार हैं। उन्हें भी इस बात की आशंका होगी कि, शायद हम उन्हें जहाज पर पहचानने की कोशिश करेंगे। ऐसे में वो अपने हुलिये भी बदल सकते हैं।" ब्रूटा ने कहा।

"आप ठीक कह रहे हैं। मैं इस बात पर पहले ही ध्यान दे चुका हूं। यह बात मैंने सब आदमियों को समझा दी है कि हर आदमी पर गौर करें। उनके हुलिये जैसा भी कोई लगे तो पूरी पड़ताल करें।"

"गुड!" ब्रूटा ने सिर हिलाया–"अगर हम अपने ही जहाज पर उन लोगों को न तलाश कर सके तो यह हमारे लिये शर्म की बात है।"

"ऐसा नहीं होगा सर! वो हमें मिल जायेंगे।" मलानी की आवाज में विश्वास के भाव थे।

ब्रूटा कई पलों तक मलानी के चेहरे को देखता रहा।

मलानी शांत भाव से खड़ा रहा।

"वे लोग महादेव की पहचान वाले हो सकते हैं?"

"क्या मतलब?"

"महादेव अपने किसी दोस्त से बात करके मरा था। 302

नम्बर यानि कि जहाज के बारे में बताकर मरा था। परन्तु उसका दोस्त चालाक निकला और हमारे आदमियों को धोखा देकर, बंगले से भाग निकला। हो सकता है यह लोग वही हों और–।"

"ऐसा नहीं हो सकता। ये लोग, वो नहीं हो सकते।" मलानी कह उठा।

"क्यों–?"

"वो तीनों, आपके इस प्राईवेट हिस्से में आये। वीडियो फिल्म में उनकी सारी हरकतें सामने हैं। अगर वे महादेव के साथी होते तो, यहां के बारे में सब जानते होते। एक-एक चीज की छानबीन ना करते। फिल्म में नजर आने वाली उनकी हरकतों से जाहिर है कि वे खुद नहीं जानते यहां क्या तलाश कर रहे हैं। मतलब कि उनमें से कोई भी महादेव को नहीं जानता।"

"हो सकता है। तुम्हारा कहना ठीक हो। लेकिन यह सब अटकलबाजी हैं। सच क्या है, हकीकत क्या है? हम नहीं जानते। उसे जानने की कोशिश करो।" ब्रूटा के स्वर में आदेश था–"अनिता गोस्वामी अभी तक आजाद है। जबकि उसका आजाद रहना हमारे लिए ठीक नहीं।"

"सर! मुम्बई में हमारे आदमी हर जगह उसे तलाश कर रहे हैं। एक बार वो हमारे आदमी के हाथ लग गई थी लेकिन जाने कैसे उसकी जान लेकर भाग निकली। उसके नजर आते ही हमारे आदमी उसे फौरन खत्म कर देंगे। वो बचने वाली नहीं।" मलानी ने जल्दी से कहा।

"तुम्हारे ये शब्द मैं कब से सुन रहा हूं।"

"सर! चिन्ता की कोई बात नहीं। वो पुलिस के पास भी नहीं जा सकती। गई तो पुलिस वाले उसकी बात नहीं सुनेंगे। और तुरन्त उसे हमारे हवाले कर देंगे। मैंने सारा इन्तजाम कर रखा है।"

"मैं तुम्हारे इन्तजाम के बारे में नहीं जानना चाहता।" ब्रूटा के चेहरे पर नाराजगी के भाव उभरे–"मैं चाहता हूं अनिता गोस्वामी को खत्म कर दिया जाये। वो हमारे लिये मुसीबत खड़ी कर सकती है।"

मलानी कुछ न कह सका।

"जाओ। कोशिश करो कि पार्टी में उन लोगों को पहचाना जा सके।"

"जी। माल कब रिसीव करना है?" मलानी ने पूछा।

"पार्टी नौ-साढ़े नौ बजे अपने रंग पर होगी। उस वक्त कुछ देर के लिए जहाज रोका जायेगा। जहाज क्यों रुका? कोई इस बात की परवाह भी नहीं करेगा। वैसे हम वहां तक कितने बजे पहुंचेंगे?"

"करीब यही, नौ-दस का वक्त होगा।"

"ठीक है। वहां पहुंचते ही जहाज रोक लेना और माल रिसीव कर लेना।" कहने के साथ ही ब्रूटा उठ खड़ा हुआ। चेहरे पर शांत भाव थे—"वैशाली कहां है?"

"वो यहीं, अपने केबिन में····।"

"भेजो उसे।"

मलानी चला गया।

पांच मिनट बाद ही सजी-संवरी वैशाली ने भीतर कदम रखा। वैशाली कोई और नहीं, वो ही थी, जिससे जगमोहन मिला था। जो अनिता गोस्वामी की मौसी बनी बैठी थी। इस वक्त उसकी खूबसूरती को चार चांद लग रहे थे।

"हाय डार्लिंग—!" वैशाली ने जान लेने वाले अंदाज में कहा। उसे देखते ही ब्रूटा के चेहरे पर मीठी मुस्कान फैल गई।

□□

□□

जहाज के ग्राऊंड फ्लोर पर स्थित पार्टी हॉल इतना बड़ा था कि वहां छः सौ व्यक्तियों के बैठने का इन्तजाम था। करीब डेढ़ सौ टेबल थीं। हर टेबल के गिर्द चार कुर्सियां थीं। एक तरफ बड़ा-सा स्टेज बना हुआ था। जो इस वक्त रोशनियों से चमक रहा था।

छः-सात सौ लोगों के खड़े होने का इन्तजाम था। वहां औरतों की संख्या भी काफी थी।

उस हॉल में आने-जाने के बहुत दरवाजे थे।

एक तरफ करीब सौ फीट से ज्यादा लम्बा बार काऊन्टर था। वार काऊन्टर के पीछे करीब पन्द्रह वार-टैण्डर सर्विस के लिये मौजूद थे। टेबल पूरी नहीं भरी थी। फिर भी वहां तीन-साढ़े तीन सौ के लगभग लोग मौजूद थे। लोगों की बातें करने-हंसने और ठहाकों की आवाजें वहां गूंज रही थी।

स्टेज पर डांस शुरू हो गया था। एक खूबसूरत लड़की, चार अन्य लड़कियों के साथ डांस कर रही थी। उसके शरीर पर नाममात्र के ही कपड़े थे। कोई उसकी तरफ ध्यान दे रहा था तो कोई अपनी बातों में व्यस्त था। कॉकटेल पार्टी अभी शुरू नहीं हुई थी।

देवराज चौहान, जगमोहन और सोहनलाल पार्टी हॉल में आ चुके थे। वे अलग-अलग थे। आपस में बात करने या पास आने की भी उन्होंने कोशिश नहीं की थी।

मलानी कुर्सी पर बैठा, शांत निगाहों से सब चेहरों को देख रहा था।

तभी स्टेज पर होने वाला डांस रुक गया। सब डांसर वहां से चली गईं। देखते ही देखते स्टेज पर हरीकिशन ब्रूटा नजर आने लगा। उसके साथ दो गनमैन थे। एक व्यक्ति ने छोटा-सा माईक थाम रखा था। स्टेज पर बीचोंबीच रुकते ब्रूटा ने माईक थामा और मुस्कराती आवाज में बोला।

"सबको ब्रूटा का नमस्कार।"

हर किसी की निगाह स्टेज पर उठ चुकी थी।

अगले ही पल देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ीं। स्टेज पर माईक थामे जिसने खुद को ब्रूटा कहा था उसकी तस्वीर को देख चुका था। वो ही तस्वीर जो महादेव के कमरे में पड़े अनिता गोस्वामी के बैग से मिली थी। जिसे जगमोहन लाया था। अनिता गोस्वामी सूटकेस में ब्रूटा की तस्वीर लिए घूम रही थी?

देवराज चौहान ने घड़ी देखी।

आठ बजे थे।

अनिता गोस्वामी से मिलने में अभी दो घण्टे बाकी थे।

"आप सब लोगों का बहुत-बहुत धन्यवाद जो आप लोगों ने मेरे जन्मदिन की पार्टी में आकर, मेरी खुशी बढ़ाई। जन्मदिन की खुशी में कॉकटेल पार्टी का इन्तजाम किया गया है। मुझे विश्वास है कि आप सब इस पार्टी का पूरा मजा उठायेंगे।" इसके साथ ही ब्रूटा ने माईक पास खड़े आदमी को थमाया। फिर स्टेज से उतरकर बार काऊन्टर की तरफ बढ़ गया। दोनों गनमैन सतर्क से बराबर उसके साथ थे।

रास्ते में नजर आने वाले लोगों से हैलो-हैलो करता आगे बढ़ता रहा। ब्रूटा के चेहरे पर खुशनुमा मुस्कान फैली हुई थी। ब्रूटा बार काऊन्टर के पास पहुंचा तो बार टैण्डर ने पैग तैयार करके ट्रे में रखकर उसकी तरफ बढ़ा दिया।

ब्रूटा ने पैग उठाया और वहां खड़े लोगों की तरफ घूमते हुए हंसकर ऊंचे स्वर में बोला।

"आज की शाम, मेरी लम्बी उम्र के नाम।" इसके साथ ही ब्रूटा ने एक ही बार में पैग खाली कर दिया।

पार्टी शुरू हो गई।
लोग कॉकटेल पार्टी का मजा लेने लगे।
ब्रूटा लोगों के बीच घूमता, जन्मदिन की बधाईयां लेता रहा। करीब आधा घण्टा वह वहां रहा। लोग कॉकटेल के रंग में रंगने लगे तो ब्रूटा खामोशी से, पार्टी हाल से बाहर निकल गया।
मलानी वहीं था और पिछले दस मिनट से कई लोग उसके शक के दायरे में आये थे और अपने आदमियों को उन पर खास निगाह रखने को कह दिया था।
देवराज चौहान एक पैग लेकर, टेबल पर आ बैठा था और यदा-कदा घूंट ले लेता था। मलानी उसकी निगाहों में आ चुका था कि वो ब्रूटा का खास आदमी है। मलानी को, आदमियों को आदेश देते भी देखा था। वो समझ गया कि ये लोग उन्हीं लोगों को भीड़ में से तलाश करने की चेष्टा कर रहे हैं।
देवराज चौहान ने भीड़ में से, जगमोहन को तलाशा।
जगमोहन हाथ में पैग थामे दो लोगों से बातचीत में व्यस्त था।
लेकिन सोहनलाल, विक्रम की निगाहों में आ गया था।

सोहनलाल के दुबले-पतले शरीर को, विक्रम ने टी०वी० स्क्रीन पर अच्छी तरह देखा था। परन्तु आंखों पर लगे चश्में और ठोढ़ी पर लगा रखी चार इंच लम्बी दाढ़ी उसे बचा भी लेती। लेकिन विक्रम को उसका गोली वाली सिग्रेट सुलगाना और कश लेने का अंदाज खटक गया।
उसे ध्यान आया कि वीडियो फिल्म में जो सूखा-सा, पतला-सा आदमी था वो भी कमीज की जेब से सिग्रेट और पैंट से माचिस निकालकर इसी तरह सुलगाता था और कश भी इसी तरह लेता था। विक्रम देर तक सोहनलाल को देखता रहा। नोट करता रहा और फिर उसे पूरा यकीन हो गया कि यही वह इन्सान है जो जहाज के प्राईवेट हिस्से में, चोरी-छिपे आया था।
जितनी देर विक्रम ने सोहनलाल को पहचानने और फैसला करने में लगाई, तब तक सोहनलाल विक्रम की निगाहों को देखकर समझ चुका था कि कोई गड़बड़ है। सोहनलाल ने गिलास टेबल पर रहने दिया और उस दरवाजे की तरफ बढ़ गया, जिधर बाथरूम था।
दरवाजा खोलते सोहनलाल ने पीछे देखा तो विक्रम को आते

पाया। अब शक की कोई गुंजाईश नहीं थी कि वो पहचाना जा चुका है।

उस वक्त बाथरूम खाली था। सोहनलाल ने जेब से रिवॉल्वर निकाली जिस पर साईलेंसर लगा हुआ था। और सू-सू करने वाले ढंग में खड़ा हो गया।

विक्रम ने भीतर प्रवेश किया। बाथरूम में अन्य किसी को न पाकर सीधा सोहनलाल के पास पहुंचा और रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ली फिर कठोर स्वर में कह उठा।

"तुमने क्या सोचा था कि तुम्हें कोई भी पहचान नहीं सकेगा। दाढ़ी और चश्मा लगाकर बच जाओगे।"

"क्या मतलब?" उसी अंदाज में खड़ा सोहनलाल बोला। गर्दन घुमाकर उसे देखा।

"उस रात ताला खोलकर, तुम अपने साथी के साथ, जहाज पर ब्रूटा साहब के प्राईवेट हिस्से में गये थे।" उसकी आवाज में भरे विश्वास को सोहनलाल ने पहचाना।

"कैसे पहचाना?"

"पहले बोलो मैंने ठीक कहा है?"

"ठीक कहा है। तभी तो पूछ रहा हूं कि कैसे पहचाना?"

"तुम्हारे सिग्रेट निकालने, सुलगाने और कश लेने के ढंग से पहचाना।" विक्रम दांत भींचकर बोला।

"मेहरबानी। जो बता दिया।" सोहनलाल बेहद सतर्क था—"आगे से इस बात का ध्यान रखूंगा।"

"तुम अभी मेरे साथ चलोगे?"

"कहां?"

"ब्रूटा साहब के पास। उसी प्राईवेट हिस्से में।" विक्रम का स्वर कठोर था—"बाथरूम से बाहर निकलकर किसी तरह का तमाशा करने की कोशिश मत करना। जहाज पर हमारे बहुत आदमी हैं। तुम अब अपनी किसी भी चालाकी में कामयाब नहीं हो सकोगे। समझ गये।"

"समझा।" सोहनलाल कहते हुए आराम से पलटा और हाथ में दबी साईलेंसर लगी रिवॉल्वर से फायर कर दिया। गोली उसकी छाती में लगी। उसके शरीर को तीव्र झटका लगा। वह पीछे की दीवार से जा टकराया। रिवॉल्वर उसके हाथ से निकल गई। गिरने से पहले उसकी जान निकल गई थी।

सोहनलाल ने जल्दी से रिवॉल्वर को अपने कपड़ों में छिपाया और बाथरूम से बाहर निकलकर, अपनी टेबल की तरफ बढ़ गया। चेहरे पर सामान्य भाव थे। मन ही मन यही सोच रहा था कि अगर उसके पास साईलैंसर वाली रिवॉल्वर न होती तो आज बुरा फंस जाना था। साथ ही इस बात का अहसास हो गया कि बूटा के आदमी सतर्क रहने वाले लोग हैं।

कॉकटेल पार्टी की रंगीनी बढ़ती जा रही थी।

□□

□□

जगमोहन चौंका।

अजीब-सी निगाहों से वो वैशाली को देखता रह गया। जिसे अनिता गोस्वामी की मौसी के नाते वो मिला था। ये और यहां?

उसके देखते ही देखते वैशाली बार काऊन्टर पर पहुंची और पैग लेकर इधर-उधर खड़े लोगों से बातें करने लगी थी। कभी एक के पास खड़ी होती तो कभी दूसरे के पास। अपनी खूबसूरत मुस्कान हर तरफ बिखेरे जा रही थी। जगमोहन ये नहीं समझ पाया कि ये यहां कैसे? लेकिन यह बात फौरन दिमाग में आई कि इससे अनिता गोस्वामी के बारे में मालूम किया जा सकता है कि वो जहाज पर कहां है?

जगमोहन गिलास थामे उठा और टहलने के ढंग से वैशाली की तरफ बढ़ने लगा। कुछ देर बाद जब वैशाली के सामने पड़ा तो तब वो अकेली थी।

"हैलो मौसी जी–!" जगमोहन मुस्कराकर मीठे स्वर में कह उठा।

वैशाली चौंकी। उसकी आंखें सिकुड़ीं। परन्तु होंठों पर मुस्कान छाई रही।

"मैं वही, जो अनिता गोस्वामी के बारे में पूछने आपके घर पर आया था और–।"

"मुझसे दूर रहो बेवकूफ!" वैशाली के चेहरे पर बराबर मुस्कान छा रही थी–"वरना पहचाने जाओगे। जहाज पर तुम लोगों को ढूंढा जा रहा है।" कहने के साथ ही उसने हाथ में थाम रखा गिलास बाय करने के अंदाज में थोड़ा-सा ऊंचा किया और आगे बढ़ गई।

जगमोहन ने भी जवाब में मुस्कराकर सिर हिलाया जैसे उस

जैसी खूबसूरत से बात करके बहुत खुश हो गया हो। फिर गिलास से घूंट भरकर अपनी टेबल की तरफ बढ़ गया। मस्तिष्क में वैशाली की कही बात ही गूंज रही थी। इसका मतलब वैशाली जहाज पर कोई महत्व रखती है। और उन पर मंडरा रहे खतरे के प्रति उन्हें वह सतर्क कर गई है। जगमोहन के दिमाग में वैशाली ही घूम रही थी।

तभी हाल के बाथरूम में विक्रम की लाश पड़ी होने की खबर मिलते ही शोर पड़ गया।

कॉकटेल पार्टी का मजा खराब हो गया।

मलानी दांत भींचे बाथरूम में पड़ी विक्रम की लाश को देखे जा रहा था। विक्रम उसका खास आदमी था। उसका इस तरह मर जाना, उसे किसी भी सूरत में पसन्द नहीं आया था।

लाश देखने वाले लोगों को बाथरूम से बाहर कर दिया गया था।

अब वहां पर सारे मलानी के ही आदमी थे।

"किसने शूट किया, विक्रम को?" मलानी गुर्राया।

कौन देता जवाब?

"तुममें से किसी ने, किसी को बाथरूम जाते देखा?" मलानी ने पूछा।

"नहीं।"

"विक्रम को किसी ने इस तरफ आते देखा?"

"नहीं।"

"इसे साईलैंसर लगे रिवॉल्वर से गोली मारी गई है।" मलानी की आवाज सुलग उठी—"और ये काम उन तीनों का ही है, जिन्हें हम जहाज पर तलाश कर रहे हैं। विक्रम ने उन तीनों में से किसी एक को पहचान लिया होगा। परन्तु विक्रम कुछ न कर सका और उसे गोली मार दी गई।"

सब मलानी को देख रहे थे।

"इससे साफ जाहिर होता है कि वो लोग पूरी तैयारी के साथ जहाज पर है।" मलानी सबके चेहरों पर नजरें दौड़ाता कह उठा—"किसी की जान लेने से उन्हें कोई परहेज नहीं। वो खतरनाक लोग हैं और किसी खास मकसद के तहत जहाज पर हैं। उनकी तलाश जारी रखो।"

"विक्रम की जान लेना इतना आसान काम नहीं था।" एक ने कहा।

"ठीक कहते हो।" मलानी गुर्रा उठा—"बहुत चालाकी के साथ विक्रम को गोली मारी गई है। सावधानी के साथ इन लोगों को ढूंढो। मैं कुत्ते की मौत मारूंगा उन्हें। हमारे ही जहाज पर वे लोग हुलिया बदलकर मौजूद हैं और हम उन्हें तलाश नहीं कर पा रहे।"

"वह बचेंगे नहीं। हम उन्हें ढूंढ कर रहेंगे।"

"जहाज के सिक्योरिटी ऑफिसर को बुलाओ और–।"

तभी सिक्योरिटी ऑफिसर ने वहां कदम रखा। साथ में उसके चार असिस्टेंट थे।

मलानी ने उसे देखा।

"जहाज के किसी यात्री ने विक्रम को शूट किया है।" मलानी का स्वर सख्त था—"लाश के साथ जो भी खानापूर्ति करनी है, वो करो और हत्यारे को ढूंढो।"

सिक्योरिटी ऑफिसर ने गम्भीर भाव में सिर हिलाया।

"हॉल में बहुत कम लोग बचे हैं। पूरी तरह पूछताछ अब नहीं हो सकेगी।" सिक्योरिटी ऑफिसर बोला।

"इस बारे में जितना ज्यादा से ज्यादा कर सकते हो, करो। मैं विक्रम के हत्यारे को अपने सामने देखना चाहता हूं।"

गुस्से में कहता हुआ मलानी बाहर निकलता चला गया।

□□

□□

देवराज चौहान के केबिन में जगमोहन और सोहनलाल मौजूद थे।

"उस आदमी की जान लेने के अलावा मेरे पास और कोई रास्ता नहीं था।" सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा—"उस वक्त मेरे पास रिवॉल्वर न होती, उस पर साईलेंसर न लगा होता तो इस वक्त मैं ब्रूटा की कैद में होता।"

"जो हुआ, वो गुजर गया।" देवराज चौहान बोला—"अब सावधान रहो। हो सकता है किसी ने तुम्हें बाथरूम में जाते या आते देखा हो। ऐसे में जहाज वाले तुमसे कड़ी पूछताछ कर सकते हैं।"

सोहनलाल गहरी सांस लेकर रह गया।

"तुम अपने केबिन में जाओ। जरूरत पड़ने पर मैं ही तुम्हारे पास आऊंगा।"

देवराज चौहान के कहने पर सोहनलाल बाहर निकल गया।

"अनिता गोस्वामी की मौसी मिली थी पार्टी हॉल में–।"

"वो जो काली ड्रेस में थी?" देवराज चौहान ने कहा।

"ओह! तुमने देखा था।" जगमोहन के होंठों से निकला। फिर बताया कि उससे क्या बात हुई।

जगमोहन की बात सुनकर देवराज चौहान ने सोचभरे स्वर में कहा।

"इसका मतलब वो औरत ब्रूटा से कोई वास्ता रखती है। तभी वो तुम्हारे सामने ठहरी नहीं।"

"हो सकता है, ऐसा ही हो।" जगमोहन बोला–"दोबारा अकेली मिली तो शायद उससे कुछ बात हो।"

देवराज चौहान ने घड़ी पर निगाह मारी। साढ़े नौ बज रहे थे।

"मैं छठी मंजिल के डेक पर जा रहा हूं। दस बजे अनिता गोस्वामी ने वहीं मिलने को कहा था। पन्द्रह मिनट तो वहां पहुंचने में लग जायेंगे।" कहने के साथ ही देवराज चौहान उठा और बाहर निकल गया।

जगमोहन भी बाहर निकला। देवराज चौहान के केबिन का दरवाजा बंद किया और अपने केबिन में जा पहुंचा। दरवाजा खोलते ही ठिठका।

सामने कुर्सी पर वैशाली मौजूद थी।

"म–मौसी जी आप–?" जगमोहन के होंठों से निकला।

"मुझे वैशाली कहते हैं।" उसने सपाट स्वर में कहा।

जगमोहन ने उसे गहरी निगाहों से देखा। वो, वो ही काली ड्रेस में थी। कहर ढा रही थी। परफ्यूम की स्मैल पूरे केबिन में फैली थी। कोई शक नहीं कि वो लाजवाब खूबसूरत थी।

"अन्दर आकर दरवाजा बंद कर लो।" उसने शांत स्वर में कहा– "मेरा यहां देखा जाना, हम दोनों के लिये ही ठीक नहीं है। इन्सान को वक्त से पहले मरने का सामान इकट्ठा नहीं करना चाहिये।"

जगमोहन ने भीतर से दरवाजा बंद कर दिया और कुर्सी पर बैठते हुए बोला।

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि यह मेरा केबिन है?"

"जहाज पर मेरे लिए कुछ भी मालूम करना कठिन नहीं।"

"वो कैसे?"

"वक्त बरबाद मत करो। बूटा, मेरा इन्तजार कर रहा होगा।"

जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं।

"बूटा से तुम्हारा क्या वास्ता?"

"बहुत गहरा वास्ता है।"

"मैं उसी गहरे वास्ते के बारे में जानना चाहता हूं।" जगमोहन का स्वर शांत था।

"मैं बूटा की सब कुछ लगती हूं।"

"क्या सब कुछ?"

"सब कुछ।"

"और उस सब कुछ में सब कुछ आता है सिवाय उसकी बीवी होने के।" जगमोहन बोला।

"ठीक समझे।" वैशाली ने गहरी निगाहों से जगमोहन को देखा–"मैं तो तुम्हें समझदार समझती थी, लेकिन तुम तो निहायत ही बेवकूफ किस्म के इन्सान निकले।"

"क्या मतलब?"

"विक्रम को गोली क्यों मारी?"

"कौन विक्रम?" जगमोहन के माथे पर बल उभरे।

"वो ही, जिसे पार्टी हाल के बाथरूम में, तुमने शूट किया। तुम क्या समझते हो, बच जाओगे। तुम्हारी तलाश में वो जहाज का चप्पा-चप्पा उधेड़ देंगे। नकली दाढ़ी और मूंछ लगाकर तुम बच नहीं सकते।"

"मैंने उसे नहीं मारा।"

"झूठ मत बोलो। तुमने ही–।"

"मानों। मैंने उसे नहीं मारा। मेरे साथी ने उसे मारा है।"

"ओह!" वैशाली ने समझने वाले ढंग में सिर हिलाया–"तो साथी भी साथ हैं। कितने हैं?"

जगमोहन खामोश रहा।

"कुल मिलाकर तीन हो तुम लोग। जो उस वीडियो फिल्म में थे।" वैशाली की निगाह जगमोहन पर थी।

"हां।"

"वीडियो फिल्म देखते ही मैंने तुम्हें पहचान लिया था। क्योंकि फिल्म में भी तुम्हारा चेहरा बिना मेकअप के था और तुम मेरे पास आये थे, तब भी असली चेहरे में थे। हॉल में मैंने तुम्हारी आवाज

की वजह से तुम्हें पहचाना। लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि तुम लोग जहाज में आये ही क्यों?"

"महादेव के हत्यारे को ढूंढने। तुमने कहा था कि वो जहाज–!"

"पागलों वाली बातें मत करो।" वैशाली तीखे स्वर में कह उठी–"तुम महादेव के हत्यारे को छू भी नहीं सकते। ज़रा भी क़दम बढ़ाओगे तो अपनी मौत को दावत दोगे। तुममें इतना दम-खम नहीं कि उसका बाल भी उखाड़ सको। मेरा कहना मानों तो जहां भी जहाज रुके, खामोशी से अपने साथियों के साथ निकल जाना।"

जगमोहन, वैशाली को देखे जा रहा था।

"क्या देख रहे हो।"

"सोच रहा हूं कि तुम्हें मेरे या मेरे साथियों के जहाज पर होने की वजह से तकलीफ क्यों हो रही है?"

"पागलपन की हरकतें देखकर तकलीफ तो होती ही है। पहले मैं अनिता गोस्वामी को बर्दाश्त कर रही थी। वो मेरी बात समझी नहीं कि अब तुम आ गये। तुम्हारे दोनों साथी आ गये। वो लोग तुम्हें तलाश कर रहे हैं। तुम पकड़े गये तो, मुंह खोल सकते हो कि मैंने तुम्हें कहा था कि महादेव का हत्यारा जहाज पर है।"

"समझा। तो तुम अपने को बचाने की खातिर, मुझे जहाज से बाहर धकेलना चाहती हो।"

वैशाली सख्त निगाहों से उसे देखती रही।

"अगर यही वजह है तो फिक्र मत करो। ऐसे किसी बुरे वक्त पर, मेरे मुंह से तुम्हारा नाम भी निकलेगा।"

वैशाली ने बेचैनी से पहलू बदला।

"आजकल तो किसी का भला करना, खुद को मुसीबत में डालना है।" वो उखड़े स्वर में बोली।

"अब एक बात तो बता दो।"

"क्या?"

"महादेव की जान किसने ली?"

"मेरा मुंह क्यों खुलवाते हो। अनिता गोस्वामी से मिलोगे तो जान लोगे।" वो पुनः उखड़े स्वर में बोली।

"उससे तो मेरा साथी मिलने गया है।"

"कब?"

"कुछ देर पहले। उसने छठी मंजिल के डेक पर मिलना है। यही मैसेज मिला है हमें।"

वैशाली गहरी सांस लेकर उठ खड़ी हुई।

"जा रही हो। बिना जवाब दिए।"

"तुम लोगों को हर बात का जवाब अनिता गोस्वामी से मिल जायेगा। उसके बाद जो फैसला करना हो कर लेना। लेकिन मेरी सलाह यही है कि उसकी पागलों वाली बातों में मत आना। वो तो मौत का रास्ता तलाश कर रही है।" वैशाली ने जगमोहन की आंखों में देखा– "इस जहाज पर तुम्हारी नहीं चल सकती। चलाओगे तो मरोगे। अगर पकड़े गये तो कभी भी यह मत कहना कि अनिता गोस्वामी की तलाश में तुम मेरे यहां गये थे और मैंने तुम्हें बोला कि महादेव का हत्यारा इस जहाज पर मिलेगा।"

"ऐसा नहीं होगा। लेकिन तुम–।"

वो रुकी नहीं। केबिन का दरवाजा खोलकर उसने इधर-उधर देखा और बाहर निकल गई।

जगमोहन खुले दरवाजे को देखता रहा। आखिर ये क्यों नहीं चाहती कि वो अपने कदम आगे बढ़ाये। कहने को ये बूटा की सब कुछ है तो ···बाकी सवालों का जवाब, देवराज चौहान से मिलेगा, जो अनिता गोस्वामी से मिलने गया है। जरा-जरा सुनकर किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सकता।

□□

□□

बूटा ने सिग्रेट सुलगाई और सामने खड़े मलानी को देखा।

"मैंने कॉकटेल पार्टी का इन्तजाम इसलिए किया था कि वो तीनों, जो मेरे इस हिस्से में आये थे, उन्हें तलाशा जा सके। वो वहां थे, पार्टी में। विक्रम का मारा जाना, इस बात का सबूत है कि विक्रम ने उनमें से किसी को पहचान लिया था।" बूटा ने एक-एक शब्द चबाकर कहा।

"आप ठीक कह रहे हैं सर!" मलानी के होंठ हिले।

"तो फिर तुम लोग उन्हें ढूंढ निकालने में नाकामयाब क्यों रहे? वो सिर्फ तीन। तुम सब कितने थे। उनमें एक को भी नहीं पकड़ सके।" बूटा की नजरें मलानी के चेहरे पर थीं–"पार्टी हॉल में तीन सौ से ऊपर लोग थे। ऐसे में उन्होंने विक्रम को साईलैंसर लगी पिस्तौल से खत्म कर दिया और किसी को मालूम नहीं हो सका। कोई यह बताने वाला भी नहीं कि विक्रम कब बाथरूम गया। किसी ने उसे जाते नहीं देखा।"

मलानी खामोश ही रहा।

"वो मेरे जहाज पर, मेरे आदमी को मारने में कामयाब हो गये और तुम लोग उन्हें देख भी न सके। ये तो बहुत ही गलत बात है। तुम्हें क्या हो गया है मलानी।"

मलानी चुप!

"जब से अनिता गोस्वामी का मामला शुरू हुआ है, तुम तसल्लीबख्श काम नहीं कर पा रहे हो। इसकी वजह मेरी समझ में नहीं आ रही। महादेव को भी तब खत्म किया गया, जब सारा मामला मेरे सामने आया और मैंने तुरन्त महादेव को खत्म करने को कहा। तुम तो तब भी हाथ-पर-हाथ रखे बैठे थे।"

"मैं उसे जिन्दा पकड़ना–।"

"क्या जरूरत थी। महादेव हमारी पोल खोल सकता था। ऐसे में उसका खत्म हो जाना ही ठीक था। उसके बाद अनिता गोस्वामी को तुम ढूंढ नहीं सके। काम करते-करते अगर थक गये हो तो महीना-दो महीने आराम कर लो। लेकिन इस तरह की लापरवाही नहीं होनी चाहिये।"

"इस बात का मैं ध्यान रखूंगा सर–!"

"जिस बात का ध्यान, तुम्हें बिना कहे रखना चाहिये, वो ध्यान तुम मेरे कहने पर रखने जा रहे हो तो यह भी अजीब बात है, मेरे लिए।" ब्रूटा ने सिर हिलाकर धीमे स्वर में कहा–"महादेव का दोस्त, मरने से पहले महादेव ने जिसे जहाज के बारे में बता दिया था। जिसे खत्म करने के लिए तुमने आदमी भेजे थे। वो भी तुम्हारे हाथ नहीं आया। नहीं मलानी। ये सब नहीं चलने वाला।"

"मैं अपनी गलतियों को सुधार लूंगा।"

"तुम जानते हो, जहाज पर कुछ भी गलत होना, हमारे हक में ठीक नहीं है। विक्रम की मौत का क्या जवाब देंगे कि उसे किसने मारा। उसका हत्यारा कौन है? इस बात की छानबीन करते किसी की निगाह हमारी हरकतों पर पड़ गई तो हरी किशन ब्रूटा तो गया। हो गया मेरा काम।" ब्रूटा की आवाज में तीखापन आ गया था–"मुझे शिकायत का मौका मत दो। जाओ, माल रिसीव करने का वक्त हो रहा है। जहाज को ज्यादा देर मत रोकना। काम जरूरी निपटाना।"

मलानी फौरन बाहर निकल गया।

तभी वैशाली ने वहां कदम रखा।

"क्या हुआ बूटा साहब? आप कुछ उखड़े-उखड़े से लग रहे हैं।" पास आते वैशाली ने मुस्कराकर कहा।

"जहाज में इस तरह हमारे आदमी की हत्या हो जाना, ठीक बात नहीं है।" बूटा ने गम्भीर स्वर में कहा।

वैशाली के कुछ कहने से पहले ही इन्टरकॉम बजा।

बूटा ने हाथ बढ़ाकर रिसीवर उठाया।

"बूटा साहब!" उसके कानों में आवाज पड़ी—"मैं सुन्दर बोल रहा हूं।"

"बोलो।"

"खास बात आपसे कहना चाहता हूं, अगर मेरा नाम बीच में न आये तो।"

"कहो।" बूटा के माथे पर बल पड़े।

"जहाज के बन्दरगाह से रवाना होने से पहले बन्दरगाह पर मैंने मलानी को अनिता गोस्वामी के साथ देखा था।" सुन्दर की दबी आवाज बूटा के कानों में पड़ी।

बूटा को लगा जैसे उसके मस्तिष्क में किसी ने सुई चुभो दी हो।

"जानते हो, क्या कह रहे हो?"

"ये बात अगर मलानी को मालूम हो गई तो वो मेरी जान ले लेगा।" सुन्दर की घबराई आवाज आई।

"मैंने कहा है अगर ये बात झूठ हुई तो?"

"ये सच है।"

"साबित कैसे करोगे?"

"अब तक मैंने आपको ये बात इसलिये नहीं बताई कि मेरे पास साबित करने को कुछ नहीं था। अब भी नहीं है। ये सब आपसे कहकर मैंने खुद को मुसीबत में डाल लिया है, मैं जानता हूं। लेकिन अगर आप चाहें तो ये बात साबित हो सकती है।" सुन्दर के स्वर में गम्भीरता थी।

"तुम्हारा मतलब कि मैं साबित करूं।" बूटा के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।

"रास्ता मैं बताता हूं। साबित आप कर देंगे।"

"बोलो।"

"अनिता गोस्वामी जहाज पर है।"

"क्या कह रहे हो?" बूटा चौंका।

"मैंने अपनी आंखों से उसे देखा है।"

"तो पकड़ा क्यों नहीं?"

"इसलिये कि आप मलानी का असली चेहरा देख सकें कि वो आपको धोखा दे रहा है। बन्दरगाह पर मैंने दोनों को साथ देखा। अब अनिता गोस्वामी जहाज पर है। मतलब कि मलानी जानता है कि वो लड़की जहाज पर है। इस पर भी उसे पकड़ नहीं रहा। आपको भी कुछ नहीं बता रहा। जाहिर है कि बीच में कुछ है, जिससे आप अन्जान हैं। आप अनिता गोस्वामी से बात करें तो मेरी कही बात सच होकर सामने आ जायेगी।"

बूटा के होंठ भिंच गये।

"इस समय वो कहां है?"

"मैंने उसे छठी मंजिल के डेक पर खड़े देखा है। कहें तो उसे पकड़कर—।"

"तुम अभी अपना मुंह बंद रखो। उससे मैं बात करता हूं।" कहने के साथ ही बूटा ने इन्टरकॉम का रिसीवर रखा और उखड़े अंदाज में सिग्रेट सुलगाई।

वैशाली की निगाह बूटा पर थी।

"क्या हुआ?"

बूटा ने वैशाली को इस तरह देखा, जैसे उसकी मौजूदगी भूल गया हो।

"समझ में नहीं आता क्या हो रहा है?" बूटा उठते हुए बोला।

"क्यों?"

"तुम्हारा क्या ख्याल है? मलानी मुझे धोखा दे सकता है?" बूटा ने शब्दों को चबाकर कहा।

"कैसा धोखा?"

"कैसा भी?"

"धोखा, कोई भी, कभी भी, किसी को भी दे सकता है।" वैशाली मुस्कराई। उसकी आंखों में सतर्कता थी।

बूटा ने सिग्रेट ऐश-ट्रे में डाली फिर जेब से रिवॉल्वर निकालकर चैक की।

वैशाली की आंखें सिकुड़ी।

"अभी आपने किससे बात की बूटा साहब?" वैशाली ने लापरवाही से पूछा।

"आओ। बाहर घूमने चलते हैं। आज छठी मंजिल के डेक पर ठण्डी हवा का मजा लेंगे।"

छठी मंजिल का डेक?

जहां अनिता गोस्वामी किसी से मिलने वाली है? वैशाली के मस्तिष्क में गड़बड़ की घंटी बज उठी।

"वो बाद में!" वैशाली ने मुस्कराकर कहा और बूटा की बांह थामी—"पहले बैडरूम····।"

"बेवकूफी वाली बात मत करो। मेरे र चलो।" बूटा का स्वर एकाएक सख्त हो गया।

□□

□□

जहाज की छठी मंजिल का डेक उस वक्त खाली ही था, जब देवराज चौहान वहां पहुंचा था। चन्द्रमा की रोशनी में डेक अजीब-सी खामोशी के साथ चमक रहा था। पांच फीट ऊंची, मजबूत रेलिंग भी लगभग सपाट नजर आ रही थी। जहाज की रफ्तार तीव्र होने के कारण देवराज चौहान को सिग्रेट सुलगाने में काफी दिक्कत आई। डेक काफी बड़ा था। देवराज चौहान आगे बढ़ा और रेलिंग के पास जा खड़ा हुआ।

मिनट भर भी न बीता होगा कि आहट हुई।

देवराज चौहान फौरन पलटा।

वो, वो ही थी। अनिता गोस्वामी। देवराज चौहान ने स्पष्ट पहचाना। एलबम में उसकी तस्वीरों को उसने अच्छी तरह देखा था और चन्द्रमा की रोशनी में उसका चेहरा इस हद तक स्पष्ट नजर आ रहा था कि उसे पहचाना जा सके। वो रेलिंग पर पांच-सात कदम दूर आकर खड़ी हो गई थी।

उसने एक बार भी देवराज चौहान की तरफ नहीं देखा था।

देवराज चौहान आगे बढ़ा और उसके पास पहुंच गया। अनिता गोस्वामी ने गर्दन घुमाकर एक निगाह उस पर मारी फिर चन्द्रमा की रोशनी में चमकते समन्दर पर निगाह टिका दी। दूर-दूर तक काला समन्दर नजर आ रहा था। आकाश में तारे चमकते बहुत अच्छे लग रहे थे।

"आज हमने यहां मिलना था।" देवराज चौहान बोला—"तुमने ही मिलने का वक्त और जगह तय की थी।"

"कौन हो तुम?" अनिता गोस्वामी का स्वर शांत था।

"महादेव का दोस्त।"

"क्या चाहते हो?"

"महादेव के हत्यारे को चाहता हूं। उसने मेरी
तोड़ा था।" देवराज चौहान का स्वर गम्भीर था।

"मुझे कैसे पहचाना?"

"तुम्हारी तस्वीर से। तुम्हारे घर से एलबम मिली थी। जिसमें तुम्हारी तस्वीरें थीं।"

अनिता गोस्वामी खामोश रही।

"मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं।" देवराज चौहान बोला—"तुम—।"

"एक-एक सवाल में बहुत वक्त लग जायेगा।" अनिता गोस्वामी कह उठी।

"तो?"

"मैं ही सब कुछ बता देती हूं। जो बात न समझ में आये, वो बाद में पूछ लेना।"

"बोलो।"

"उधर आ जाओ। वहां डेक पर अंधेरा है और ऊपर शेड भी है। वहां हमें कोई नहीं देख पायेगा।"

"यहां तुम्हें किसी का डर है?" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"मैं पहचानी जा सकती हूं और ऐसा होते ही ब्रूटा या उसके आदमी मुझे खत्म कर देंगे।"

"ब्रूटा?"

"आओ।"

देवराज चौहान और अनिता गोस्वामी डेक पर अंधेरे वाले हिस्से में पहुंचे और दोनों वहीं नीचे फर्श पर बैठ गये। उस वक्त डेक पर कोई भी नहीं था।

"तुम असलम खान से मिलीं। तब हमसे भी मिल सकती थीं और—।"

"ब्रूटा के आदमी हर पल मेरी तलाश में थे। अगर मैं उन्हें मिल जाती तो मेरा हाल भी महादेव जैसा ही होता। महादेव की मौत का वास्तव में अफसोस है मुझे।" उसने धीमे स्वर में कहा।

देवराज चौहान खामोश रहा था।

कुछ पलों बाद उसने चुप्पी तोड़ी।

"मेरा नाम अनिता गोस्वामी है। पिताजी बचपन में ही चल बसे थे। जब मैं बीस बरस की हुई तो मां भी नहीं रही। मकान और कुछ पैसा मेरे लिये छोड़ गये थे। वो पैसा भी ज्यादा देर नहीं चलने वाला

था। पढ़ाई पूरी कर चुकी थी, तो मैंने नौकरी कर ली। मेरा कोई रिश्तेदार भी नहीं है। बहरहाल मुझे नौकरी मिली नीलगिरी शिपिंग कॉरपोरेशन में। पैडर रोड पर ऑफिस है। चार हजार रुपये तनख्वाह मिलती थी। जो कि मेरे लिए काफी थी। पांच सालों से मैं नीलगिरी शिपिंग के ऑफिस में नौकरी कर रही थी। वहां पर नरेश मलानी का आना अक्सर होता रहता था। हम दोनों करीब आ गये। वो उम्र में कुछ ज्यादा अवश्य है, परन्तु मुझे अच्छा लगता था।"

"नरेश मलानी कौन?"

"बूटा का सबसे नजदीकी, सबसे खास आदमी है।" अनिता गोस्वामी ने बताया।

देवराज चौहान ने पार्टी हॉल में देखे मलानी का हुलिया बताया।

"हां। यही है नरेश मलानी!" अनिता गोस्वामी ने सहमति में सिर हिलाया—"करीब आते-आते हम इतने करीब आ गये कि जब भी फुर्सत मिलती, हम मिलते। और फिर जैसे हमें आदत ही पड़ गई एक-दूसरे की। हमने शादी का फैसला भी कर लिया और यह तय था कि हम इसी साल में शादी कर लेंगे। करीब पन्द्रह दिन पहले ही या फिर बारह दिन पहले की बात होगी कि मलानी का फोन आया ऑफिस में कि आज उसे फुर्सत है, मैं आ जाऊं। दिन-भर घूमेंगे। मैंने फौरन ऑफिस छोड़ा और उसकी बताई जगह पर पहुंच गई। शाम के करीब तीन बजे तक हमने खूब मौज-मस्ती की। लंच भी बढ़िया होटल में लिया। मलानी ने कैमरा ले रखा था, उसने मेरी तस्वीरें लीं।"

"उस दिन तुम इसी जहाज पर भी आये।" देवराज चौहान ने टोका।

"हां। तुम्हें कैसे पता?"

"तस्वीरों वाली एलबम देखकर। उन तस्वीरों में जहाज वाली तस्वीरें भी हैं। उसी ड्रेस में।"

"हां। जहाज पर आये। यहां दो-तीन कर्मचारी थे। बहरहाल मलानी मुझे जहाज के उस प्राईवेट हिस्से में ले गया। जो बूटा का है। वहां उसने अपने हाथों से कॉफी बनाकर पिलाई। खूब बातें करते रहे हम। शाम हो गई। लेकिन मुझे भला जाने की क्या जल्दी थी। मेरा तो इन्तजार करने वाला भी कोई नहीं है। जल्दी पहुंचू या देर से जाऊं। मेरी जिन्दगी मेरी ही है।" अनिता गोस्वामी कहे जा रही थी—"अंधेरा होने के बाद मलानी ने व्हिस्की की बोतल खोल

ली। मैं जानती थी कि वो पीता है। और इस बात का मैंने कभी ऐतराज भी नहीं उठाया। अभी दो पैग ही लिए होंगे कि उसकी जेब में पड़े मोबाईल फोन की बैल बजी। मलानी ने फोन पर बात की। दूसरी तरफ ब्रूटा था।"

अनिता गोस्वामी दो पल के लिए खामोश हुई।

देवराज चौहान की निगाह उस पर थी।

"मलानी ने ब्रूटा को बताया कि इस वक्त वो जहाज पर ही है। कुछ देर बात करने के बाद मलानी ने फोन बंद करके जेब में रखा और गिलास खाली करके मुझे कहा कि उसे जहाज पर ही आधे घण्टे का काम है। मुझे उस ड्राईंगहाल में छोड़कर वो ब्रूटा के बैडरूम में चला गया। मैं वो बैडरूम देख चुकी थी और वहां ऐसा कुछ नहीं था कि किसी काम में आधा घण्टा लगे। दस मिनट बीतने पर मैं अपनी जगह से उठी और बैडरूम के दरवाजे के पास पहुंचकर उसे धकेला तो वो खुल गया। मैं तुम्हें बता दूं कि बैडरूम में आठ फीट की गोलाई लिए खूबसूरत-सा बैड है और।"

"ब्रूटा के उस प्राईवेट हिस्से के जर्रे-जर्रे से वाकिफ हूं मैं। तुम आगे बात करो।"

"तुमने वो जगह कैसे देखी? वहां तो कोई जा नहीं सकता।" अनिता गोस्वामी के होंठो से निकला।

"तीन दिन पहले, चोरी-छिपे जहाज पर आकर, उस जगह को देखा था।"

"ओह—!" अनिता गोस्वामी ने समझने वाले ढंग में सिर हिलाया—"खैर, तो मैंने बैडरूम में झांककर देखा तो वो खाली था। मलानी वहां भी नहीं था। मैंने सारा बैडरूम छान मारा। उसे आवाजें दीं। वहां से बाहर जाने का अन्य कोई रास्ता तलाश किया। रास्ता भी कोई नजर नहीं आया। हैरान-परेशान-सी मैं वापस हाल में आ गई। मेरे पास मलानी की वापसी के इन्तजार के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। साथ ही सोचे जा रही थी कि आखिर वो बंद क़मरे में से कहां चला गया?"

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ चुकी थीं।

"उसके बाद मलानी कहां से वापस आया?" देवराज चौहान ने पूछा।

"उसी बैडरूम से। एक घण्टे बाद उसकी बांहें और जूते भीगे हुए थे। सिर के बाल भी बिखरे हुए थे। स्पष्ट नजर आ रहा था कि

वो मेहनत का काम करके आ रहा है। मुझे देखकर मुस्कराया और बोला, पांच मिनट में बाथरूम से होकर आता हूं। कहकर हॉल से बाहर निकल आया। उसके जाते ही मैं फिर उठी और बैडरूम का दरवाजा खोलकर भीतर गई, तो कमरे के एक कोने में मजबूत प्लास्टिक के दो बोरे पड़े थे। ऐसा सफेद प्लास्टिक जिसके आर-पार देखा जा सके। बोरों का मुंह इस कदर सख्ती से बंद था कि उनके बीच हवा-पानी भी नहीं जा सकता था। और उन बोरों में रिवॉल्वरें पड़ी चमक रही थीं। बोरे गीले थे। उन पर पानी की बूंदें थीं। मुझे समझते देर न लगी कि यह रिवॉल्वरों के भरे बोरे समन्दर से लाये गये हैं। इस बैडरूम से कोई रास्ता समन्दर में जाता है।"

अब देवराज चौहान को समझ आ रहा था, ब्रूटा के उस प्राईवेट हिस्से का मतलब क्या है? वहां क्यों सख्त पहरेदारी है?

"मैंने एक बार फिर वो गुप्त रास्ता तलाश करने की कोशिश की लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। इससे पहले कि मैं वहां से बाहर निकल पाती मलानी वहां आ पहुंचा।"

"तुम्हें यहां नहीं आना चाहिये था।" मलानी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्यों?" अनिता गोस्वामी की तीखी निगाह मलानी पर जा टिकी– "मुझे यहां इसलिये नहीं आना चाहिये था कि, तुम्हारा असली चेहरा न देख पाऊं। तुम शरीफ मलानी बने धोखे से भरे प्यार का नाटक मुझसे करते रहो। तुम–तुम–।"

"मेरा प्यार धोखा नहीं है।" मलानी का स्वर गम्भीर ही रहा।

"तो फिर यह क्या हैं?" अनिता गोस्वामी रिवॉल्वरों वाले बोरों की तरफ इशारा किया।

मलानी ने बोरों को देखा। बोला कुछ नहीं।

"कितनी रिवॉल्वरें होंगी यह?" अनिता गोस्वामी के चेहरे पर गुस्सा नजर आ रहा था।

"एक बोरे में, एक हजार।"

"मतलब कि यह दो हजार रिवॉल्वरें हैं। हे भगवान! अगर ये रिवॉल्वरें दो हजार लोगों को थमा दो, जानते हो कि वो कितना खून-खराबा कर सकते हैं।" अनिता गोस्वामी के होंठों से निकला।

मलानी खामोश रहा।

"कहां से लाया गया इन रिवॉल्वरों को?"

"अमेरिकन मेक की रिवॉल्वरें हैं और पाकिस्तान से भेजी गई हैं।" मलानी गम्भीर था।

"किस वास्ते?"

"हिन्दुस्तान में फैलाने के लिये। पाकिस्तान ने यह रिवॉल्वरें मुफ्त में भेजी हैं। लेकिन बूटा साहब के आदमी इन रिवॉल्वरों को ऊंचे दामों में बेचेंगे। पाकिस्तान के इरादे भी पूरे हो जायेंगे कि उनके भेजे हथियार हिन्दुस्तान में फैल गये। इधर बूटा साहब को तगड़ी कमाई हो जायेगी।"

अनिता गोस्वामी मलानी का चेहरा देखती रही।

"किस रास्ते से, इस बैडरूम में यह थैले लाये गये?"

मलानी खामोश रहा।

"मैंने इन थैलों को देखा है। इन पर पानी की बूंदें हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि इस जगह से कोई रास्ता समन्दर तक जाता है। उसी रास्ते से ये हथियार यहां पहुंचे।"

मलानी ने कुछ नहीं कहा।

"यह सब तो हमेशा चलता ही रहता होगा। अक्सर छोटे-बड़े हथियार आते रहते होंगे।"

मलानी ने शराफत से, सहमति से गर्दन हिलाई।

"मैं नहीं जानती थी कि तुम ऐसा गिरा हुआ काम करते हो। अगर मुझे मालूम होता तो–।"

"मैं बूटा साहब की नौकरी करता हूं।" मलानी ने कहना चाहा–"वो–।"

"तुम नौकरी की आड़ में बूटा के गलत काम करते हो। देश में दंगा-फसाद करवाने में, हथियार बांटकर गलत लोगों की सहायता करते हो। मैंने जिन्दगी में पहली बार प्यार किया और वो भी गलत आदमी से। यह मैं ही जानती हूं कि मुझे कितनी शर्म आ रही–।"

"प्लीज अनिता, मुझे समझने की कोशिश करो।"

"अब समझने को बाकी रहा ही क्या है।" अनिता गोस्वामी का स्वर गुस्से से भर उठा–"देख लिया तुम्हारा असली चेहरा। वक्त से पहले देख लिया। मैं यहां से जाना चाहती हूं।"

"प्लीज अनिता!" मलानी ने कहना चाहा।

"मैंने कहा है, मैं यहां से जाना चाहती हूं।" उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था।

"मैं तुम्हें जाने से नहीं रोकूंगा। लेकिन मेरी बात सुनकर ही तुम्हें जाना होगा। हॉल में चलो, वहां बैठकर बातें करते हैं।" कहने के साथ ही मलानी ने उसकी बांह पकड़ी और दूसरे कमरे में ले गया। उसे सोफे पर बिठाया और खुद भी सामने बैठ गया।

अनिता गोस्वामी भी दांत भींचे मलानी को देखे जा रही थी।

मलानी ने मोबाईल फोन निकाला और ब्रूटा से बात की।

"सर! सामान आ गया है।"

"गुड। तुम जहाज पर ही रहना। अंधेरा हो चुका है। मैं दो घण्टे तक सामान ले जाने के लिए आदमी भेज रहा हूं।" ब्रूटा की आवाज मलानी के कानों में पड़ी।

मलानी ने फोन बंद करके जेब में डाला फिर उसे देखा।

"अब कहो। तुम क्या कह रही थीं।" मलानी बातों के दौरान गम्भीर ही रहा।

"मैं कुछ नहीं कहना चाहती। मैं यहां से जाना चाहती हूं।" अनिता गोस्वामी ने दांत भींचकर कहा।

"इसलिये कि मैं गलत काम करता हूं।"

"हां। तुम–।"

"यह काम मैं नहीं ब्रूटा करता है। वो हथियारों का बहुत बड़ा सौदागर है। कभी पाकिस्तान से हथियार आते हैं तो कभी चीन और अमेरिका से। और यह जहाज ब्रूटा के इसी काम आता है। कोई नहीं जानता कि एशिया में हथियारों का सबसे बड़ा सौदागर है ब्रूटा। कोई जान भी जाये तो उसके खिलाफ सबूत नहीं मिल सकता।"

"और तुम हथियारों के इस बड़े सौदागर के खास साथी हो। तुम–।"

"मैं कुछ भी नहीं हूं।" मलानी गम्भीर स्वर में कह उठा–"पन्द्रह सालों से ब्रूटा के साथ हूं। बनते-बनते उसका खास आदमी बनता चला गया। मुझे गलत मत समझो। मैं–।"

"सब कुछ सामने है और तुम कहते हो कि मैं तुम्हें गलत न समझूं। सॉरी मलानी, ये हमारी आखिरी मुलाकात है। आज के बाद कभी मुझसे मिलने की कोशिश मत करना।"

"ये सम्भव नहीं। मैं तुमसे दिल से प्यार करता हूं।"

"तो क्या मेरे साथ जबर्दस्ती करोगे।" अनिता गोस्वामी के दांत भिंच गये–"अगर करते हो तो मुझे हैरानी नहीं होगी, क्योंकि तुम्हारा असल रूप देख चुकी हूं मैं। तुम कुछ भी कर सकते हो।"

मलानी ने पैग बनाया। घूंट भरा फिर शांत स्वर में बोला।
"प्यार में जबर्दस्ती नहीं होती अनिता, मैं तुमसे शादी करना—।"
"ये अब नहीं हो सकता। तुम जो काम करते हो, वो छोड़ोगे तो तभी हमारी शादी होगी।"
"इस काम में जो एक बार आ जाये, तो बाहर नहीं निकल सकता। ब्रूटा को इस बात का अहसास भी हो गया कि मैंने ऐसा कुछ सोचा है तो वो मुझे खत्म करवा देगा। ब्रूटा की ताकत से तुम वाकिफ नहीं हो।"
"तो मैंने तुम्हें कब कहा है ब्रूटा को छोड़ो।" अनिता गोस्वामी कड़वे स्वर में कह उठी—"मैंने तो कहा है कि हम दोनों शादी नहीं कर सकते। भविष्य में मुझसे मिलने की कोशिश मत करना।"
मलानी सोचभरे ढंग से घूंट भरता रहा।
"अगर मैं ब्रूटा का साथ छोड़ दूं, यह काम छोड़ दूं तो तब तुम्हें मेरे से शादी करने में कोई एतराज है?"
"तब कोई एतराज नहीं।"
"ठीक है। मैं कोशिश करूंगा कि ब्रूटा से अलग हो सकूं। हो सकता है इसमें साल-छः महीने का वक्त लग जाये।"
"मैं इन्तजार कर सकती हूं। लेकिन उससे पहले तुम मुझसे मिलने की कोशिश नहीं करोगे।" कहने के साथ ही वो उठ खड़ी हुई—"मुझे बन्दरगाह तक पहुंचा दो।"
मलानी ने उसे देखा और शांत भाव में कहा।
"ब्रूटा के आदमी आने वाले हैं। इस व्रक्त मैं जहाज छोड़कर नहीं जा सकता। लेकिन बोट वाला, तुम्हें बन्दरगाह तक छोड़ आता है।" मलानी उठ खड़ा हुआ—"यहां जो भी तुमने देखा है, इसका जिक्र किसी से मत करना। बात खुली तो हम दोनों के लिये खतरा हो सकता है।"
इतना बताने के बाद अनिता गोस्वामी ठिठकी।
देवराज चौहान की निगाह बराबर, अनिता गोस्वामी पर थी।
"मलानी ने ही बातों के दौरान मुझे बताया था कि इस बार जब जहाज सिंगापुर के लिये रवाना होगा तो रास्ते में पाकिस्तान द्वारा भेजी गई हथियारों की बहुत बड़ी खेप, बीच समन्दर में ही जहाज पर, ब्रूटा रिसीव करेगा और उस खेप को अपने आदमियों द्वारा, मुम्बई रवाना कर देगा। और मैं नहीं चाहती थी कि हथियार हिन्दुस्तान में पहुंचे। क्योंकि—।"

"यह बात बाद में।" देवराज चौहान ने टोका—"पहले महादेव वाली बात पूरी करो।"

दो पलों की चुप्पी के बाद अनिता गोस्वामी पुनः बोली।

"उस रात जहाज से जाने के बाद मेरा चैन जाने कहां गुम हो गया। मेरी आंखों के सामने रिवॉल्वरों वाले थैले ही घूमते रहे और सोचती रही कि दो हजार रिवॉल्वर कितने घर तबाह कर देंगे। यह बात ठीक कही थी मलानी ने कि ब्रूटा को हथियारों का सौदागर साबित कर पाना आसान काम नहीं था। पुलिस के पास भी जाती तो वह मुझे पागल कहकर भगा देते और हो सकता था कि ब्रूटा को मेरी हरकत की खबर लग जाती तो वह अपने आदमी मेरे पीछे डाल देता। ब्रूटा के पास वास्तव में बहुत ताकत है। मैं सोचती रही कि क्या करूं कि पाकिस्तान जो हथियार हिन्दुस्तान में फैला रहा है, वह न फैले। मेरा ध्यान जहाज के बैडरूम पर गया कि वहां से कोई गुप्त रास्ता, नीचे समन्दर तक जाता है। वहां से अवैध हथियार जहाज के भीतर लाये और निकाले जाते हैं। मैंने सोचा पहले जहाज के उस रास्ते का पता लगाना चाहिये। अगर पता लगा जाता है तो फिर जैसे-तैसे पुलिस कार्यवाही भी करवाई जा सकती है। इस काम के लिये मुझे ऐसे इन्सान की जरूरत थी जो बन्दरगाह की जानकारी रखता और गोताखोरी जानता हो। मैंने गोताखोर की तलाश की। इसी तलाश के दौरान किसी ने मुझे असलम खान का पता बताया। असलम खान से बात हुई तो उसने मुझे महादेव से मिलवा दिया। महादेव बन्दरगाह के बारे में जानता था और गोताखोरी भी जानता था। वह कमजोर जान अवश्य था, परन्तु मेरे काम का था। मैंने उसे एक लाख रुपये देने का वायदा करके, उसे भरोसे में लेकर कहा कि बन्दरगाह पर 302 नम्बर का जो जहाज खड़ा है उसके पेंदे से कोई रास्ता जहाज में जाता है, वो—वो रास्ता तलाश करे।"

"और महादेव जहाज के नीचे से रास्ता तलाश करने लगा।" देवराज चौहान बोला।

"हां। महादेव ने काम तो शुरू किया, लेकिन दूसरी बार में ही जहाज वालों को उस पर शक हो गया। वो जब ऑक्सीजन सिलेंडर के साथ, समन्दर में जहाज के पेंदे में कोई जोड़—कोई रास्ता तलाश कर रहा था, तब जहाज का ड्रेस डाईवर, भी जहाज के पेंदे की रूटीन चैकिंग कर रहा था। दोनों का टकराव हो गया। वो महादेव को पकड़कर खींचता हुआ, बन्दरगाह के तट तक ले गया। मैं वहां खड़ी

देख रही थी और समझ गई कि महादेव मुसीबत में है। तब वे दोनों अकेले थे। मैं नहीं चाहती थी कि महादेव मुंह खोले। मैं फौरन उनके पास पहुंची और महादेव को छुड़ाने की कोशिश करने लगी। लेकिन तब तक वहां दो आदमी और आ गये और महादेव के साथ-साथ मुझे भी पकड़ लिया और वहीं बन्दरगाह के एक ऑफिस में हमें बंदी बनाकर रखा। आधे घण्टे में ही वहां ब्रूटा का कोई आदमी पहुंचा और उसने पूछा कि वो ऑक्सीजन सिलेंडर लगाकर जहाज के पेंदे में क्या तलाश कर रहा था। चुप रहने पर महादेव की ठुकाई होने लगी। महादेव में इतनी ताकत नहीं थी कि वो मार बर्दाश्त कर पाता। आखिर गुस्से में मैंने कह दिया कि तुम लोग जहाज की आड़ में हथियार लाकर देश में बेचते हो। मैं जानती हूं कि नीचे से कोई रास्ता, ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से में बने बैडरूम में जाता है।"

अनिता गोस्वामी ठिठकी।

देवराज चौहान ने गहरी सांस ली।

"ऐसा कहकर तुमने गलत काम किया। कोई और बहाना बनाया जा सकता था। तुम ब्रूटा की इतनी बड़ी बात से वाकिफ हो गई तो वह तुम लोगों को जिन्दा क्यों छोड़ेगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"मेरे इतना कहने की देर थी कि उस आदमी ने मेरे सामने ही ब्रूटा को फोन करके सारी बात बताई तो, अगले एक घण्टे में ही ब्रूटा ने मलानी को वहां भेज दिया। मुझे देखते ही मलानी समझ गया कि क्या मामला है। मैं जहाज के रास्ते के बारे में छानबीन कर रही हूं। मलानी ने अकेले में मुझे समझाया कि अभी भी वक्त है। इस मामले से मैं दूर हो जाऊं। वह सब ठीक कर लेगा और मौका पाकर उसने मुझे और महादेव को वहां से भगा दिया। उन लोगों में से एक मुझे जानता था कि मैं नीलगिरी शिपिंग में काम करती हूं। मैं समझ गई कि अब बचना आसान नहीं। मैंने यह बात महादेव को बताई तो महादेव ने कहा, मैं उसके घर पर रह लूं। वहां से मैं सीधा अपने घर गई और सूटकेस में सामान भरकर, महादेव के घर पहुंच गई।"

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगा ली।

"उसके बाद महादेव ब्रूटा के आदमियों की निगाहों में आ गया और मारा गया। लेकिन मैं बचती रही।"

"अपने घर पर तुमने किसी की जान ली थी?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हां।" अनिता गोस्वामी सिर हिलाकर कह उठी—"वो वक्त

याद करती हूं तो जिस्म कांप उठता है। महादेव के मरने के बारे में सुना तो समझ गई कि अब महादेव के यहां रहना खतरे से खाली नहीं। मुझे लगा इस वक्त सबसे बढ़िया जगह छिपने की मेरा घर ही है। वे लोग तसल्ली कर चुके होंगे कि मैं अपने घर पर नहीं हूं। यही सोचकर मैं अपने घर पहुंची। दरवाजा खोला तो भीतर उस आदमी को पाया। जो बूटा की तरफ से वहां मेरे इन्तजार में था कि शायद मैं वहां आ पहुंचूं और पहुंच भी गयी। उसने मुझे पकड़ लिया और चाकू निकालकर मुझे मारना चाहा। मौत सामने देखकर जाने मुझमें कहां से हिम्मत आ गई और मैं उसका मुकाबला करने लगी। मुझे नहीं याद कि कब मेरे हाथ में चाकू आया और कब उसके जिस्म पर वार करना शुरू किया। बहुत घबराई हुई थी मैं। जब वो मर गया तो तब मुझे लगा कि मैंने अपनी जान बचा ली है।"

देवराज चौहान ने कश लिया।

"और वो मौसी, जो कि बूटा की खास है। उससे तुम्हारा क्या रिश्ता है?"

"इन्सानियत का रिश्ता है। वो अक्सर बूटा के ऑफिस में आती थी। मुझे पसन्द करती थी और मिला करती थी। उसने कई बार मुझे समझाया कि मलानी के साथ मैं सुखी नहीं रह सकती। खैर, वे अलग बात है। वैसे तो वे लोग मुझे ढूंढकर महादेव की तरह खत्म कर चुके होते, लेकिन मैं जानती हूं कि मलानी की वजह से मैं बची हुई हूं। वो वास्तव में मुझे सच्चा प्यार करता है लेकिन बूटा की वजह से मजबूर है। मलानी इस वक्त भी जानता है कि मैं जहाज पर हूं और कौन-से केबिन में हूं। कोई और रास्ता न पाकर, मजबूरी में मुझे खतरा उठाकर जहाज पर सफर करना पड़ा। मलानी को मैंने स्पष्ट तौर पर कह दिया है कि बूटा का यह जहाज वापस हिन्दुस्तान नहीं आना चाहिये। रास्ते में या सिंगापुर बन्दरगाह पर कहीं भी इसे तबाह हो जाना चाहिये। तभी मैं उससे शादी करूंगी। क्योंकि बूटा इसी जहाज की आड़ में हथियारों को हिन्दुस्तान में फैला रहा है। इस जहाज का प्राईवेट हिस्सा, जो कि उसके कब्जे में रहता है, वो खास ढंग से बना रखा है, जिसके कारण वो आसानी से, सालों से अपने काम में सफल है।"

देवराज चौहान ने कश लिया और सिग्रेट बंद कर दी।

"तुम्हारी केबिन जहाज में इस वक्त कहां है।"

वो चुप रही।

"जो मैं पूछता हूं बताती जाओ।"

"छठी मंजिल पर। केबिन नम्बर अट्ठारह।" अनिता गोस्वामी बोली।

"अब तुम मुझसे क्या चाहती हो?"

"तुम्हें महादेव का कातिल चाहिये, तो वह ब्रूटा है। और मैं ब्रूटा को तबाह हुआ देखना चाहती हूं। अगर तुम ब्रूटा को खत्म भी कर देते हो, तो भी मेरा काम खत्म हो जायेगा।"

"तुम्हें ब्रूटा की इस बात से इतनी नफरत क्यों, कि वह हथियारों का सौदागर है।"

"मुझे हथियारों से नफरत है।" अनिता गोस्वामी की आवाज में गुस्सा आ गया—"मेरी मां बताती थी कि मेरे पिताजी की मौत की क्या वजह थी। मैं छोटी थी, तब पिताजी बाजार से सामान खरीद कर ला रहे थे कि रास्ते में दंगा हो गया। कई गोलियां उनके शरीर में लगीं और वो मर गये। दंगे में इस्तेमाल होने वाले हथियार भी कोई इसी तरह देश में लाया होगा। अब भी जो हथियार देश में फैलाये जा रहे हैं, उनसे मेरे जैसी कई बेटियां बिना बाप के प्यार के रह जायेंगी। मैं जानती हूं जब पिता का साया सिर पर नहीं होता तो, जीना कितना कठिन हो जाता है।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा।

"आज रात ब्रूटा के जहाज में हथियारों के साथ-साथ पचास करोड़ डॉलर की रकम भी मिलेगी। जो कि उसके पिछले कामों की पेमेन्ट है। हथियार तो वह चोरी-छिपे हिन्दुस्तान रवाना कर देगा और डॉलरों के रूप में मिली रकम को सिंगापुर में, बैंक में डाल देगा। मलानी ने यह बात बताई थी।"

"पचास करोड़ डॉलर?" देवराज चौहान के माथे पर बल पड़े।

"हां। बहुत बड़ी रकम होती है यह। हिसाब लगाओ। चालीस-पचास रुपये का एक डॉलर हुआ—तो पचास करोड़ डॉलर के कितने रुपये बनेंगे।"

देवराज चौहान के होंठों पर शांत मुस्कान उभरी।

"करोड़ों का हिसाब मैं कम्प्यूटर से भी जल्दी लगा लेता हूं।" देवराज चौहान उसकी बचकानी बात पर मन ही मन मुस्करा रहा था—"यह हथियार और रकम ब्रूटा को कब डिलीवर की जायेंगी?"

"मैं नहीं जानती। लेकिन यह काम आज रात होगा। कहीं पर

भी जहाज दो-चार मिनट के लिये रुकेगा और उसी गुप्त रास्ते से पचास करोड़ डॉलर और हथियार बूटा के पास होंगे।"

"तो उन हथियारों को लेकर बूटा के आदमी कब मुम्बई की तरफ चलेंगे–।" देवराज चौहान ने पूछा।

"यह नहीं जानती मैं–।"

"तुम जानती हो कि जहां बूटा है। जहाज के उस प्राइवेट हिस्से में पहुंच पाना सम्भव नहीं।"

"खास तो कुछ नहीं जानती। लेकिन मलानी ने एक बार बताया था कि उनकी मर्जी के बिना वहां कोई नहीं जा सकता। किसी को जाते ही उन्हें फौरन खबर मिल जाती है।"

तभी डेक पर आहटें और आवाजों की आवाज आई।

बैठे-बैठे दोनों की निगाह उस तरफ घूमी।

चन्द्रमा की रोशनी में बूटा और वैशाली स्पष्ट नजर आये।

"यहां तो कोई भी नजर नहीं आ रहा।" बूटा की मध्यम-सी आवाज उनके कानों में पड़ी।

"तुम्हें किसी ने गलत खबर दी है कि–।"

"सुन्दर में इतनी हिम्मत नहीं कि मुझे गलत खबर दे।"

"ओह! सुन्दर ने खबर दी है तुम्हें।" वैशाली की आवाज सुनाई दी।

"यह बूटा है।" अनिता गोस्वामी कान में सूखे स्वर में बोली।

"जानता हूं।" देवराज चौहान की आवाज भी धीमी थी।

"साथ में मौसी है।"

"उसे भी जानता हूं।"

"तुम्हारे पास रिवॉल्वर है?" एकाएक अनिता गोस्वामी ने पूछा।

"है।"

"बहुत बढ़िया मौका है। बूटा को गोली मारकर समन्दर में फैंक दो।"

"चुप रहो। वो हमारी आवाज सुन सकते हैं।"

वे दोनों अंधेरे में थे। इसलिये आसानी से उन्हें देख पाना सम्भव नहीं था।

"चलें डार्लिंग!" वैशाली का स्वर उनके कानों में पड़ा।

जवाब में बूटा ने कुछ नहीं कहा। मिनट भर डेक पर रहने के बाद वे दोनों चले गये।

"तुमने बूटा को गोली क्यों नहीं मारी।" अनिता गोस्वामी कह

उठी—"इसी के कहने पर, इसके आदमियों ने तुम्हारे दोस्त महादेव को मारा था। तुमने अपने दोस्त की मौत का बदला क्यों नहीं लिया? डेक पर कोई नहीं था। मौसी को मैं समझा लेती। इतना बढ़िया मौका तुमने हाथों से गंवा दिया।"

देवराज चौहान ने शांत भाव में सिग्रेट सुलगाई।

"दोस्त की मौत का बदला लेने आ गये और गोली चलाने की हिम्मत नहीं।" वो तीखे स्वर में बोली।

"ब्रूटा जहाज पर ही है। जाने वाला नहीं।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"क्या मतलब?"

"अगर ब्रूटा को अभी खत्म कर देता तो वो पचास करोड़ र हाथ नहीं आयेंगे।"

"मैं समझी नहीं।" अनिता गोस्वामी की आवाज में उलझन आ गई।

देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ।

अनिता गोस्वामी भी उठी।

"ब्रूटा बचने वाला नहीं। यह उसकी जिन्दगी की आखिरी यात्रा है।" देवराज चौहान ने सपाट स्वर में कहा—"पचास करोड़ डॉलर जहाज पर तभी आयेंगे, जब ब्रूटा जिन्दा होगा। इसलिये अभी इसका जिन्दा रहना जरूरी है। ब्रूटा को खत्म करने के साथ-साथ अगर पचास करोड़ डॉलर भी हाथ आ जायें तो क्या बुराई है।"

"समझी। लेकिन जहाज पर ब्रूटा के ढेरों आदमी हैं। ऐसे में उस पर हाथ डालना आसान नहीं। मेरे ख्याल में तुम दौलत के लालच में पड़कर अपना मकसद भूल रहे हो।"

देवराज चौहान मुस्कराया।

अनिता गोस्वामी कुछ कहने ही वाली थी कि ठिठक गई। उसे लगा जैसे जहाज की रफ्तार बिल्कुल कम हो गई हो। वो रुकने जा रहा हो। देवराज चौहान भी इस बात को महसूस कर चुका था।

"जहाज रुक रहा है।"

देवराज चौहान के माथे पर बल उभर आये थे।

"यहां—यहां शायद ब्रूटा पचास करोड़ डॉलर और हथियार लेगा, उसी गुप्त रास्ते से।" अनिता गोस्वामी के होंठों से निकला—"तभी जहाज रुकने जा रहा है।"

देवराज चौहान वहां से फौरन आगे बढ़ा और रेलिंग के पास

पहुंचकर आसपास निगाहें दौड़ाने लगा। चन्द्रमा की रोशनी में समन्दर स्पष्ट नजर आ रहा था। देवराज चौहान ने जहाज के हर तरफ देखा, परन्तु उसे कोई भी हलचल नजर नहीं आई।

अनिता गोस्वामी भी देखने की कोशिश कर रही थी कि जहाज के पास कोई है या नहीं?

"जहाज के आसपास तो कोई भी नहीं है?" अनिता गोस्वामी उसके पास आती हुई बोली।

"अगर जहाज में माल पहुंचाया जा रहा है तो वे लोग गोताखोरों को इस्तेमाल कर रहे हैं।" कहने के साथ ही देवराज चौहान की निगाह समन्दर में हर तरफ दूर-दूर तक दौड़ने लगी।

दूसरे ही मिनट दूर, बहुत दूर समन्दर की छाती पर छोटा-सा धब्बा नजर आया। वो छोटा जहाज था। जिसकी पूरी लाईटें बंद थीं। देवराज चौहान समझ गया कि जो सामान भी जहाज पर पहुंचाया जा रहा है, उसे गोताखोर पानी के भीतर ही खींचते हुए जहाज तक लाये होंगे।

"समझ नहीं आ रहा है कि जहाज यहां रुका क्यों है?" अनिता गोस्वामी बोली।

"जहाज में माल पहुंचाया जा रहा है।" देवराज चौहान बोला।

"यह तुम कैसे कह सकते हो?"

"वो देखो, उधर दूर अंधेरे में छोटा जहाज खड़ा है। उसकी सारी लाईटें बंद हैं। उसी जहाज से इस जहाज में माल पहुंचाया जा रहा है।" देवराज चौहान ने सोचभरे स्वर में कहा—"तुमने ठीक कहा था कि जहाज के पेंदे में गुप्त रास्ता है, जहाज के भीतर माल पहुंचाने का।"

"पेंदे में रास्ता कैसे होगा। वो रास्ता अगर खुला तो जहाज में पानी घुस जायेगा।"

"पेंदे से रास्ता है और रही बात पानी का जहाज में जाने की तो, उस पानी को रोकना मामूली बात है।"

वो जहाज वहां करीब पांच-छः मिनट रुका उसके बाद फिर चल पड़ा।

"जहाज में हथियार और पचास करोड़ डॉलर पहुंच चुके हैं।" अनिता गोस्वामी बेचैनी से बोली—"अब बूटा उन हथियारों को हिन्दुस्तान पहुंचाने का कोई इन्तजाम कर रहा होगा।"

देवराज चौहान ने अंधेरे में अनिता गोस्वामी को देखा।

"मलानी तुमसे मिलेगा?"

"हां। वो रात को किसी वक्त अवश्य मेरे पास आयेगा, अपने प्यार का इजहार करने।"

"तो वो जब आये तो उससे जहाज में माल पहुंचने के बारे में मालूम करना।" देवराज चौहान ने कहा–"मैं कल सुबह इस बारे में पूछने तुम्हारे केबिन में आऊंगा।"

"ठीक है। लेकिन–।"

"बहुत बातें हो चुकी हैं, और बातें करनी हों तो सुबह करना जब मैं आऊं। बेहतर होगा कि तुम अपने केबिन में रहो। ब्रूटा के कई आदमी तुम्हें पहचानते हैं।" कहने के साथ देवराज चौहान नीचे जाने वाली सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया। जहाज अब समन्दर की छाती पर तेजी से दौड़ने लगा था।

□□

□□

जहाज के प्राईविट हिस्से पर स्थित ब्रूटा के खूबसूरत बैडरूम में प्लास्टिक के थैलों में बंद असंख्य हथियार नजर आ रहे थे। खतरनाक-से-खतरनाक, जानलेवा हथियार। वह करीब पच्चीस बोरे थे। बाजार में उन हथियारों की कीमत कई करोड़ों में थी। और वह पांच बड़े बोरे थे, जिनमें से डॉलर झलक रहे थे। हर बोरे में बड़े-बड़े नोटों की शक्ल में दस करोड़ डॉलर की रकम थी। यानि कि पूरे पचास करोड़ डॉलर। एक बोरा ही इतना भारी था कि उसे उठाने के लिये दो-तीन आदमियों की जरूरत थी।

ब्रूटा की आंखों में तीव्र चमक लहरा रही थी।

वहां मलानी के अलावा तीन अन्य आदमी मौजूद थे।

"मलानी!" ब्रूटा मुस्कराकर बोला।

"जी!"

"पहला काम तो पूरा हो गया। अब दूसरा काम करो। हथियारों को फौरन हिन्दुस्तान भेजने का इन्तजाम करो। यह तुम्हें बता ही चुका हूं कि किस रास्ते से इस बार हथियार हिन्दुस्तान ले जाने हैं और हिन्दुस्तान के कौन-से तट पर हथियार पहुंचाने हैं तुम्हें?" ब्रूटा बोला।

"याद है ब्रूटा साहब!"

"हिन्दुस्तान में हथियार रिसीव करने के लिये ह[illegible]

"हिन्दुस्तान में हथियार रिसीव करने के लिये हर... बांधव वहां मौजूद होंगे। हथियारों को लाईफ बोटों में बांधव

फैंक देना, जब हमारे आदमियों का सिगनल मिले। कुछ आगे समन्दर में वो हमारा इन्तजार कर रहे हैं।" बूटा ने कहते हुए हथियारों पर निगाह मारी।

"अगर ऐसा है तो उन लोगों से, हमारे लोग ही हथियार रिसीव कर लेते और—।"

बूटा हंसा और मलानी को चुप हो जाना पड़ा।

"मलानी! अगर मैं बीच में से निकल जाऊं तो फिर मुझे पूछेगा ही कौन। वह लोग आपस में सम्पर्क बना लेंगे। समझे, मुट्ठी को बंद रखना पड़ता है। मुट्ठी खुल गई तो सारा खेल खत्म—।"

"आप ठीक कह रहे हैं।" मलानी ने शांत स्वर में कहा।

"जाओ। हथियारों को लाईफ बोटों के साथ बांधो। आधे घण्टे बाद पश्चिम की तरफ से लाल रोशनी का तीन बार सिगनल मिलेगा। तब हथियारों वाली लाईफ बोटों को समन्दर में फैंक देना। वे लोग ले लेंगे। और इन डॉलरों को सिंगापुर-हांगकांग के बैंकों में जमा करानी है। इन्हें एक नम्बर केबिन में पहुंचा देना।" कहने के साथ ही बूटा बाहर निकलता चला गया।

□□

□□

बूटा कंट्रोल रूम में पहुंचा। वहां दो आदमी मौजूद थे और सामने नजर आ रही स्क्रीनों पर नजर रख रहे थे। स्क्रीनों पर बूटा के बैडरूम के अलावा हर हिस्सा स्पष्ट नजर आ रहा था।

"सब ठीक है?" बूटा ने पूछा।

"यस सर!" दोनों ने सतर्क स्वर में कहा।

"इस बार कुछ ज्यादा ही सावधान रहने की जरूरत है। जहाज पर हमारे दो-तीन दुश्मन मौजूद हैं। जिन्हें अभी ढूंढा नहीं जा सका। अगर वह भीतर प्रवेश करने की कोशिश करें तो फौरन खतरे का अलार्म बजा देना। इस मामले में कहीं भी लापरवाही नहीं होनी चाहिये।" बूटा की आवाज में आदेश था।

"कहीं भी लापरवाही नहीं होगी। हम हमेशा सावधान रहते हैं।"

"निगरानी का सारा सिस्टम ठीक है?"

"यस सर!"

बूटा वहां से निकला और उस हिस्से की तरफ बढ़ गया। जहां कुछ केबिन बने थे। फिर एक केबिन का दरवाजा खोलकर भीतर प्रवेश किया और दरवाजा बंद कर लिया।

भीतर सुन्दर मौजूद था।
बूटा को देखते ही उसने फौरन उठने की कोशिश की।
"बैठे रहो।" बूटा ने कहा और खुद भी कुर्सी पर बैठ गया।
सुन्दर की आंखों में व्याकुलता भरी स्पष्ट नजर आ रही थी।
बूटा ने खोजभरी निगाह उस पर मारते हुए सिग्रेट सुलगाई।
"तुम यकीन के साथ कहते हो कि मलानी का अनिता गोस्वामी
के साथ वास्ता है?" बूटा शांत स्वर में बोला।
"हां। लेकिन मैं साबित नहीं–।"
"अभी मैं साबित करने को नहीं कह रहा हूं। जो पूछ रहा
सिर्फ उसी बात का जवाब दो।"
सुन्दर ने बेचैनी से पहलू बदला।
"अनिता गोस्वामी को जहाज पर देखा?"
"हां। बन्दरगाह पर मलानी से बातें करते और उसके बाद
पार्टी हॉल में विक्रम की मौत के बाद, अनिता गोस्वामी को जहाज
की छठी मंजिल के डेक पर देखा। खूब अच्छी तरह पहचाना उसे।"
सुन्दर बेचैनी से कह रहा था–"मैं समझ नहीं पा रहा था कि ये
बातें आपसे कहूं या न कहूं। लेकिन आपसे धोखेबाजी की मैं सोच
भी नहीं सकता। इसलिये आपको इन्टरकॉम पर बता दिया कि–।"
"मुझे खबर करने के बाद तुम वहीं रहे?"
"जी हां।"
"अनिता गोस्वामी डेक से नीचे नहीं उतरी?"
"नहीं।"
"तो मेरे जाने पर वो कहां गायब हो गई?" बूटा का स्वर शांत

था।
"मैं नहीं जानता। तब वो अकेली थी। वहां मैंने एक और
इन्सान को जाते देखा था। वह कोई यात्री था जिसे मैं नहीं जानता।
डेक पर लोग टहलने के लिये लोग जाते ही रहते हैं।"
"मैंने पूछा है, वो डेक से नीचे नहीं उतरी तो क्या उसने
समन्दर में छलांग लगा दी?"
"मैं नहीं जानता।" सुन्दर ने दांतों से निचला होंठ काटते हुए
कहा–"जब आप, मैडम वैशाली के साथ डेक पर गये तो मैं सीढ़ियों
के पास से यह सोचकर हट गया कि डेक पर आप अनिता गोस्वामी
से मुलाकात कर लेंगे। मुझे नहीं मालूम था कि डेक पर वो आपको
मिलेगी ही नहीं।"

बूटा सोचभरी निगाहों से सुन्दर को देखता रहा।

सुन्दर ने पुनः बेचैनी से पहलू बदला।

"बूटा साहब।" सुन्दर ने फंसे स्वर में कहा—"मैं जानता हूं कि यह बात बताकर मैंने अपने आपको मुसीबत में डाल लिया है। आपके सामने मैं साबित नहीं कर सकता कि, मैं सच कह रहा हूं। अनिता गोस्वामी जाने किस केबिन में है। जहाज के सारे केबिनों की तलाशी ले पाना सम्भव नहीं। उधर मलानी को मालूम हो गया कि मैंने आपको ये बात बताई तो वो मुझे छोड़ने वाला नहीं।"

बूटा मुस्कराया। शांत मुस्कान।

"डेक पर से वो कहां चली गई। यह कोई गम्भीर बात नहीं है। वहां अंधेरा था। रात का वक्त है। हो सकता है कि तब वो किसी शेड के नीचे हो और मैं उसे देख न सका। लेकिन इस बात पर मैं यकीन करता हूं कि तुम मलानी के बारे में जो कह रहे हो वो सही कह रहे हो। मलानी ने आज तक हर काम पूरा किया। महादेव भी नहीं बचा, जो इस जहाज का रहस्य जान गया था। लेकिन अनिता गोस्वामी बची रही। इस बात पर मैं खुद हैरान था कि वो हाथ क्यों नहीं आ सकी। लेकिन अब समझ चुका हूं कि वो, मलानी की मेहरबानी से सलामत रही।" बूटा ने एक-एक शब्द पर जोर देकर कहा।

सुन्दर, एकटक बूटा को देखे जा रहा था।

"मलानी की शह पर, अनिता गोस्वामी इस जहाज पर सफर कर रही है तो इसमें दो राय नहीं हैं कि मलानी के मन में मेरे लिये विद्रोह की भावना आ चुकी है।" बूटा ने जैसे अपने आपसे कहा—"मेरे खिलाफ इतनी हिम्मत मलानी करेगा। मैं सोच भी नहीं सकता। मेरे से झूठ। मेरे से गद्दारी। गलत बात है। मलानी की यह हरकतें तो मुझे डुबो कर रख देंगी।"

सुन्दर, बूटा की आंखों में अजीब-सा पागलपन देख रहा था।

"हमारे धंधे में जो एक बार धोखा कर जाये तो उससे फिर कभी भी धोखे की उम्मीद की जा सकती है। तेरा क्या ख्याल है सुन्दर! मैंने ठीक बोला?" बूटा के दांत भिंचे हुए थे।

"आप ठीक कह रहे हैं।"

"सुन! अनिता गोस्वामी जहाज पर ही है ना?"

"जी हां।"

"तू खामोशी से उसे तलाश कर। कहीं न कहीं वो मिलेगी।

जहाज के सिंगापुर पहुंचने से पहले ही उसे ढूंढ निकालना तेरा काम है। कर लेगा इस काम को?"

"हां, सिंगापुर पहुंचने से पहले तो उसे तलाश कर ही लूंगा।"

"तू ये काम कर।" ब्रूटा उठ खड़ा हुआ—"मलानी को मैं देखता हूं।"

□□

□□

देवराज चौहान सोहनलाल के केबिन में पहुंचा। तब सोहनलाल 'डिनर' लेकर हटा था।

"खाना लिया?" सोहनलाल बोला।

"अभी नहीं।" देवराज चौहान ने बैठते हुए कहा—"जगमोहन को ले आ।"

"अनिता गोस्वामी मिली?" सोहनलाल ने खड़े होते हुए पूछा।

"हां।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगा ली।

सोहनलाल, जगमोहन को बुला लाया।

"अनिता गोस्वामी से क्या बात हुई?" जगमोहन ने पूछा।

देवराज चौहान ने सारी बात बताई।

"ओह! तो यह चक्कर है।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"लेकिन उस रात तो हमने ब्रूटा का बैडरूम छान मारा था।" सोहनलाल ने कहा—"वहां तो हमें ऐसी कोई चीज नजर नहीं आई कि लगे, वहां कोई गुप्त रास्ता भी है।"

"तब हमें खुद नहीं मालूम था कि हम क्या तलाश कर रहे हैं। क्या ढूंढ रहे हैं।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"ऐसे में किसी गुप्त रास्ते को कैसे, तलाश कर पाते।"

सोहनलाल ने सिर हिलाकर जगमोहन को देखा।

"तू क्या सोच रहा है?" सोहनलाल ने पूछा।

"पचास करोड़ डॉलर के बारे में कि इतनी बड़ी रकम जहाज पर पहुंच चुकी है।" जगमोहन मुस्कराया।

"तो ले आ। ब्रूटा माल को अपने नीचे रखकर सिकाई कर रहा होगा।" सोहनलाल व्यंग्य से बोला।

जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

"...टा के प्राईवेट हिस्से में जाने के बारे में कोई रास्ता सोचा?" ... ने पूछा।

...चौहान ने कश लिया।

"हम यहां महादेव के कातिल को सजा देने के मकसद से आये थे। लेकिन पचास करोड़ डॉलर जैसी बड़ी रकम की मौजूदगी के बारे में जानकर, उसे पाना दूसरा मकसद बन गया है।" देवराज चौहान ने दोनों को बताया—"बूटा कहीं [illegible] जाता नहीं। वो सिंगापुर तक जहाज पर ही रहेगा और महादेव की मौत की कीमत उसे अपनी जान देकर ही चुकानी होगी।"

"लेकिन बूटा जहां है, वहां की पहरेदारी ऐसी है कि, वहां कदम रखते ही उन लोगों को हमारे बारे में मालूम हो जायेगा। भीतर जो लोग होंगे, वो हमें तुरन्त घेर लेंगे।" सोहनलाल बोला।

"हर चीज की 'काट' होती है। कोई योजना हो तो उसे भी काटा जा सकता है। इसी तरह कहीं सख्त-से-सख्त पहरेदारी हो तो उसे भी काटा जा सकता है।" देवराज चौहान मुस्कराया।

"तुम्हारा मतलब कि बूटा ने जो सिक्योरिटी का इन्तजाम कर रखा है, हम उससे निपट सकते हैं।"

जगमोहन के होंठ सिकुड़ गये। वो समझ गया कि देवराज चौहान ने कोई रास्ता निकाल लिया है।

देवराज चौहान ने दोनों पर निगाह मारी।

"वो कैमरे के लैंस कितनी ऊंचाई पर लगे थे?" देवराज चौहान ने सोहनलाल से पूछा।

"करीब साढ़े सात-आठ फीट की ऊंचाई पर।" सोहनलाल ने जवाब दिया।

"और जानते हो, तुम इस वक्त कहां पर हो?"

"क्या मतलब?" सोहनलाल की आंखें सिकुड़ीं।

जगमोहन मन-ही-मन सतर्क हुआ।

"केबिन नम्बर पन्द्रह, यानि कि यह केबिन, उस छोटी-सी गैलरी की दीवार के दूसरी तरफ है, जिस गैलरी में दरवाजे का डबल ऑटोमैटिक लॉक खोलकर गये थे। जो गैलरी दस फीट लम्बी थी।"

दोनों चौंके। उनकी निगाह केबिन के पीछे वाली दीवार पर जा टिकी।

"तुम्हारा मतलब कि हम इस लकड़ी की दीवार को तोड़ दें तो बूटा के प्राईवेट हिस्से में पहुंच जायेंगे।"

"ठीक समझे।" देवराज चौहान ने सिर हिलाया—"लेकिन दीवार तोड़कर बूटा के प्राईवेट हिस्से में जाने का मेरा कोई प्रोग्राम नहीं है। हम वैसे ही उस जगह में प्रवेश करेंगे, जैसे पहले किया था।"

"दरवाजा खोलकर?" सोहनलाल के होंठों से निकला।

"हां।" देवराज चौहान खास अन्दाज में मुस्कराया—"लेकिन इस बार उनके कैमरे हमारी फिल्म नहीं ले सकेंगे। उनके कैमरे चालू रहेंगे, कंट्रोल रूम में बैठे आदमी टी०वी० पर नजरें टिकाये होंगे। लेकिन उन्हें टी०वी० स्क्रीन पर हम नजर नहीं आयेंगे। जबकि कैमरे बराबर अपना काम ठीक कर रहे होंगे। और हम भीतर होंगे।"

"ये कैसे हो सकता है।" जगमोहन के होंठों से निकला।

"ये होगा। क्योंकि मेरी योजना का यही अहम हिस्सा है। तभी तो हम लूटा तक पहुंच सकेंगे।" देवराज चौहान ने कश लिया—"अपनी कोशिश में सफल हो सकेंगे।"

"ये सब कैसे होगा? मेरी तो समझ में कुछ नहीं आ रहा।" जगमोहन उत्सुकता से बोला।

सोहनलाल खुद हैरान था।

"मैं बताता हूं।" देवराज चौहान ने दोनों को देखा—"दरवाजे से भीतर प्रवेश करते ही वीडियो कैमरे का लैंस ठीक दरवाजे के ऊपर लगा है और दूसरा दस फीट दूर गैलरी मोड़ पर।"

दोनों ने सहमति से सिर हिलाया।

"उन दोनों कैमरे के लैंसों के बीच एक ही तार है, जो इसी दीवार के भीतर से गुजर रही है। कंट्रोल रूम में मास्टर वीडियो कैमरा है, जो वहां लगे सारे लैंसों को कंट्रोल करता वहां होने वाली घटनाओं की तस्वीरें ले रहा है।"

"एक मिनट—।" जगमोहन ने टोका—"मैं नहीं जानता कि तुम क्या कहने जा रहे हो। मैं यह कहना चाहता हूं कि कोई जरूरी तो नहीं कि वीडियो कैमरे की तार इस दीवार के बीच में फिट की गई हो। यह भी तो हो सकता है कि वो तार गैलरी की दूसरी दीवार के हिस्से में हो।"

"नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"क्योंकि उस तरफ की, लकड़ी की दीवार पतली है और इस तरफ की मोटी इसलिए है कि इधर केबिन पड़ते हैं। ऐसे में तार मोटी दीवार के बीच दी जायेगी, क्योंकि तार डालने से पहले दीवार में पाईप भी फंसाये गये होंगे। जहां जगह की ज्यादा गुंजाईश होगी, ऐसे पाईप वहीं डाले जाते हैं।" देवराज चौहान बोला।

जगमोहन होंठ सिकोड़े सिर हिलाकर रह गया।

"आगे बताओ, क्या कहने जा रहे थे?" सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट सुलगा ली।

"बूटा के प्राईवेट हिस्से में हर जगह कैमरे के लैंस लगे हैं और लकड़ी की दीवारों के भीतर तारों का जाल बिछा है। जो उन लैंसों को एक-दूसरे से जोड़ रहा है और अंत में वो तार कंट्रोल रूम में मौजूद वीडियो कैमरे से जा जुड़ता है। यानि कि वीडियो कैमरा वो ही कैच करेगा जो तारों से होता हुआ सिगनल उस तक पहुंचेगा।" कहते हुए देवराज चौहान पल भर के लिये ठिठका।

दोनों की निगाह देवराज चौहान पर थी।

"हमारे पास आठ ऐसी वीडियो कैसेट हैं जिनमें भीतर का सारा हाल दर्ज है। जो तब ली गई थीं, जब जहाज बन्दरगाह पर लंगर डाले खड़ा था। जिन्हें हम तीनों देख चुके हैं। हमारी सारी योजना इन कैसेटों पर ही निर्भर करती है।"

उनकी निगाहें देवराज चौहान पर टिकी थीं।

"हम दीवार के इस तरफ से लकड़ी की दीवार को सावधानी से कुरेदकर वो पाईप तलाश करेंगे, जिसमें से वीडियो कैमरे की तार जा रही है। पाईप को थोड़ा-सा हटाकर उस तार में कट मारकर अपनी तार में जोड़ देंगे। सोहनलाल ने पहरेदारों की रिकॉर्डिंग वाली कैसेट वी०सी०आर० पर चला रखी होगी। वी०सी०आर० से एक तार टी०वी० में जा रही होगी। हमें बूटा के प्राईवेट हिस्से का ही नजारा नजर आ रहा होगा, जो कि कैसेट में दर्ज है। जो तार दीवार की तार में काट मारकर उसमें जोड़ी होगी, उनका कनेक्शन, वी०सी०आर० से जो लीड निकलकर, टी०वी० तक जा रही है उसमें दे देंगे। ऐसा करने से जो हमारी चलाई कैसेट के दृश्य होंगे, वो तारों में सप्लाई होकर, बूटा के कंट्रोल रूम में मौजूद टी०वी० में दिखाई देने लगेंगे। ऐसे में अगर हम भीतर प्रवेश करते हैं तो, वो हमें किसी भी सूरत में नहीं देख सकेंगे। वो टी०वी० में खाली गैलरी या अन्य जगहों को देख रहे होंगे।"

दो पल के लिए वहां चुप्पी छा गई।

दोनों देवराज चौहान को देख रहे थे।

"तुम्हारा मतलब कि उनकी तार में इस वी०सी०आर० की तार से कनेक्शन देने से, उनका वीडियो कैमरा काम करना बंद कर देगा और—।"

"नहीं। मैंने ये नहीं कहा।"

"तो?"

"उनका वीडियो कैमरा ठीक काम करता होगा। वो हमारी हरकतों की तस्वीरें, कंट्रोल रूम में कैच कर रहा है। वीडियो कैमरे में मौजूद कैसेट में हमारी हरकतों की रिकॉर्डिंग हो रही होगी। लेकिन सामने मौजूद टी०वी० स्क्रीनों पर उनको हर तरफ खाली जगहें नजर आ रही होंगी, जो कि कैसेट हमने अपने वी०सी०आर० में लगाकर उनका कनेक्शन उनके लैंसों की तार में दिया होगा।" देवराज चौहान ने कहा—"हर कैसेट आधे घण्टे की है। सोहनलाल कैसेट को वी०सी०आर० पर पच्चीस मिनट के बाद बदलता रहेगा। मैं और जगमोहन भीतर जायेंगे। भीतर शायद हमें ज्यादा देर न लगे। डेढ़-दो घण्टों में हमारा काम खत्म हो सकता है। हमारे पास साढ़े तीन घण्टों की कैसेट हैं। अगर देर भी हो जाये तो कैसेटों को फिर से, बार-बार लगाई जा सकती हैं।"

कई पलों तक उनके बीच चुप्पी रही।

"यह जरूरी तो नहीं कि वो लोग हमारे इस झांसे में आ जायें।" जगमोहन बोला।

"कोई जरूरी नहीं। जिस तरह हम उनकी पहरेदारी को काट रहे हैं। उसी तरह हो सकता है, हम ही अपनी योजना में फंस जायें। यह खतरा तो उठाना ही पड़ेगा।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"मैं खतरा उठाने को तैयार हूं।" जगमोहन मुस्कराया—"पचास करोड़ डॉलर जैसी बड़ी रकम का सवाल है।"

"एक दिक्कत आ सकती है। भीतर जाने पर हमें सावधान रहना होगा।" देवराज चौहान बोला—"इन कैसेट्स में तब की रिकार्डिंग है, जब जहाज लंगर डाले खाली खड़ा था और जहाज पर कोई नहीं था। जबकि इस समय जहाज पर, प्राईवेट हिस्से में कई लोग मौजूद हैं। खुद बूटा भी है। ऐसे में वो स्क्रीन पर किसी को नहीं देखेंगे तो, शक खा सकते हैं। तब गड़बड़ हो सकती है। लेकिन अपने शक को वे पक्का करते-करते दो घण्टे लगा देंगे और इतना वक्त हमारे लिये बहुत होगा। वैसे भी हम कल रात को ही भीतर जायेंगे। रात के वक्त वैसे भी चहल-पहल कम होगी तो कंट्रोल रूम में बैठे लोगों को कम ही शक होगा।"

"ये योजना तो खतरनाक है।" सोहनलाल के होठों से निकला।

"दुनिया में कोई योजना फुल प्रूफ नहीं होती। और हर योजना

का अहम हिस्सा खतरे में डूबा होता है। इन्सान कोई भी योजना लेकर चले, उसके साथ-साथ खतरा न हो तो वो योजना ही बेकार होती है।"

"इसमें जितना खतरा बच जाने का है। उतना ही फंसने का।"

जवाब में देवराज चौहान मुस्कराया।

"क्या ख्याल है ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से में कितने आदमी होंगे?" जगमोहन ने पूछा।

"इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता।" देवराज चौहान ने सिर हिलाया—"जहाज उसका है तो जाहिर है जहाज में ढेरों उसके आदमी होंगे। पास में वो कितने आदमी रखता है, इस बात का पक्का नहीं है।" देवराज चौहान बोला।

"सामान्य अवस्था में ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से में जाने का सिस्टम पता है?" जगमोहन ने पूछा।

"उस दरवाजे के सामने सफेद कपड़े पहने एक आदमी हर वक्त मौजूद रहता है। यानि कि किसी न किसी की ड्यूटी लगी रहती होगी। मैंने दो बार उधर दूर से ही देखा है तो दोनों बार अलग-अलग आदमी देखने को मिले। ऐसे में भीतर से ही आकर कोई दरवाजा खोलता होगा। ब्रूटा अगर समझदार होगा तो बाहर खड़े आदमी के पास ऐसा कुछ नहीं होना चाहिये कि जिससे दरवाजा खोला जा सके। ऐसे में बाहरी आदमी, उसका फायदा उठाकर भीतर जा सकता है।"

"हम कैसे भीतर जायेंगे?"

"उस आदमी पर काबू पाना होगा। बेहोश करके उसे कहीं ऐसा डालना होगा कि कम से कम दो-ढाई घण्टे उसे होश न आ सके। इस दौरान सोहनलाल दरवाजे का लॉक खोल देगा और वापस केबिन में आकर, वी०सी०आर० में चलती कैसेट पर नजर रखेगा। हम भीतर प्रवेश करके दरवाजा भीतर से बंद कर लेंगे? ताकि पीछे से कोई भीतर आकर हमारे लिये मुसीबत न बन सके।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"यह है भीतर प्रवेश करने की योजना। जरूरत पड़ने पर इसमें बदल-फेर भी कर लेंगे।"

कोई कुछ न बोला।

"सोहनलाल—!"

"हां।"

"तुम केबिन के पीछे वाली दीवार की साढ़े सात फीट की

ऊंचाई पर छेद करना शुरू कर दो। धीरे-धीरे लकड़ी को उधेड़ना। फैलाव ज्यादा न हो। नुकीले औजार का इस्तेमाल करना। दरवाजा भीतर से बंद रखना। वेटर आने पर छेद को देख सकता है। ऐसे में दूसरी दीवार पर लगी सीनरी को, छेद के ऊपर लगा देना; ताकि वेटर या कोई दूसरा आये तो होते छेद को न देख सके।" देवराज चौहान ने कहा।

सोहनलाल ने सहमति में सिर हिलाया।

"दीवार में संभालकर छेद करना। हमें वह पाईप तलाश करनी है, जिसमें वो तार है, जो कंट्रोल रूम में मौजूद कैमरे तक जा रही है। अगर छेद ज्यादा हो गया और दूसरी तरफ की लकड़ी उधड़ गई तो हमारी सारी योजना फेल हो जायेगी और ये केबिन तुम्हारा है। इसलिये सबसे पहले वे तुम्हें पकड़ेंगे।"

"इस बात का मैं ध्यान रखूंगा।" सोहनलाल मुस्करा पड़ा।

□□

□□

रात के बारह बज रहे थे। मलानी अपने काम से फारिग हो चुका था। ठीक वक्त पर उसने और उसके आदमियों ने समन्दर में से सिगनल देख लिए थे और लाईफ बोटों के साथ बांध रखे हथियारों के बड़े-बड़े बोरे, उसके आदमियों ने उठाकर समन्दर में फैंक दिए थे। अब उन हथियारों को संभालकर, हिन्दुस्तान तक ले जाना उनकी जिम्मेवारी थी।

इस काम से निपटकर जब मलानी, ब्रूटा के पास जा रहा था तो वैशाली मिली। वो पिए हुए थी। उसी काली ड्रेस में थी। शाम की तरह ही खूबसूरत लग रही थी।

"हाय मलानी!" वैशाली की आंखें नशे से भारी हो रही थीं।

"हैलो।" मलानी ने उसे देखकर सिर हिलाया—"ब्रूटा साहब कहां है?"

"बैडरूम में।" वैशाली हंसी—"पचास करोड़ डॉलर पाकर वो बहुत खुश है। इस वक्त उसे मेरी भी जरूरत नहीं पड़ रही। डिनर लेकर आ रही हूं।"

मलानी सिर हिलाकर आगे बढ़ने को हुआ कि वैशाली ने टोका।

"सुन्दर से तुम्हारा कोई मनमुटाव है?"

"नहीं—क्यों?"

"उसने ब्रूटा को बता दिया है तुमने अनिता गोस्वामी को जहाज पर रखा हुआ है।"

"क्या?" मलानी चिहुंक पड़ा।

"ब्रूटा सब कुछ जान चुका है अनिता गोस्वामी के मामले में तुम उससे धोखेबाजी कर रहे हो। अनिता गोस्वामी तुम्हारी वजह से बची हुई है। संभलकर रहना। मैंने तुम्हें सावधान कर दिया है।"

मलानी का चेहरा कठोर हो गया।

"यह सब सुन्दर ने ब्रूटा को बताया?"

"हां।"

"ब्रूटा साहब ने विश्वास कर लिया?" मलानी के दांत भिंच पड़े थे।

"तुम क्या समझते हो, सुन्दर की बात को ब्रूटा हवा में उड़ा देगा। जो बात ब्रूटा को जंचे, उस पर वो विश्वास करता है और सुन्दर की बात ब्रूटा को जंच गई है।" कहने के साथ ही वैशाली आगे बढ़ गई।

चेहरे पर सख्ती समेटे, मलानी उसे जाते देखता रहा।

मलानी, ब्रूटा से मिला।

ब्रूटा अपने बैडरूम में कुर्सी पर डॉलरों के बोरों को देखता हुआ, पैग से घूंट भर रहा था।

"आओ मलानी।" ब्रूटा उसे देखते ही मुस्कराया—"काम हो गया होगा?"

"जी हां। सिगनल मिलते ही, हथियारों वाली लाईफ बोटें समन्दर में फैंक दीं। मेरे ख्याल में अब तक उन लोगों ने सारे हथियारों को संभाल भी लिया होगा।" मलानी ने शांत स्वर में कहा।

"गुड। तुम हर काम बहुत अच्छे ढंग से करते हो। सोचता हूं तुम्हारे न होने पर, मुझे बहुत दिक्कत होगी।"

ब्रूटा के इन शब्दों पर, मलानी मन-ही-मन सतर्क हुआ।

"पैग चलेगा?" ब्रूटा ने निगाहें उठाकर, मुस्कराकर उसे देखा।

"नहीं। अब मैं खाना खाकर आराम करना चाहता हूं।" मलानी भी मुस्कराया।

"ठीक है। आराम करो। बहुत काम किया है तुमने। थक गये होंगे। विक्रम को किसने शूट किया, मालूम हुआ?"

"अभी नहीं मालूम हुआ। मैं खुद व्यस्त रहा हूं। जहाज के

सिक्योरिटी ऑफिसर से बात करता हूं कि उसने [illegible] है और किस नतीजे पर पहुंचा है।" मलानी सिर हिलाकर बोला।

ब्रूटा ने सिर हिलाया।

"मलानी! तुम जानते हो कि जहाज पर हम क्या काम करते हैं। किसी को हमारे कामों की भनक पड़ गई तो मामला संभालना कठिन हो सकता है। इसलिये जहाज पर ऐसा कोई भी आदमी न रहे, जो हमारे लिये मुसीबत खड़ी कर सकता हो। उन दो-तीन लोगों को ढूंढो, जो जाने किस मकसद से जहाज पर मौजूद हैं। खत्म कर दो। खामखाह की मुसीबत साथ लेकर चलना ठीक नहीं होता।"

"आप ठीक कह रहे हैं।"

"जाओ आराम करो। बाकी बातें कल करेंगे।"

मलानी, ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से से बाहर निकला और स्टॉफ के डिनर रूम की तरफ चल पड़ा, जहां उस जैसों के लिए अलग केबिन था, ड्रिंक और खाने के लिये। साथ-ही-साथ ब्रूटा की बातों के बारे में सोचता रहा, जो उससे की थीं। उसकी बातों से ऐसा कुछ नहीं झलका था कि वो उस पर किसी तरह का शक कर रहा हो। लेकिन वैशाली भी उससे झूठ क्यों बोलेगी।

इन्हीं सोचों में था कि सामने से आता सुन्दर दिखाई दिया।

"कैसे हो सुन्दर?" मलानी ने मुस्कराकर कहा।

"बढ़िया मलानी साहब!" सुन्दर भी मुस्कराया।

"विक्रम के हत्यारे का कुछ पता चला?"

"नहीं। मैं उसी भागदौड़ में लगा हुआ हूं।" सुन्दर बोला।

"मुझे कुछ मालूम हुआ है। आओ बताता हूं।"

सुन्दर, मलानी के साथ चल पड़ा। मलानी उसे लेकर तीसरी मंजिल के डेक पर पहुंचा। ठण्डी हवा चल रही थी। तेज रफ्तार के साथ समन्दर की छाती पर जहाज दौड़ा जा रहा था। दूर-दूर तक समन्दर-ही-समन्दर नजर आ रहा था। समन्दर की तेज लहरें उठतीं तो चन्द्रमा की रोशनी में वो चमक उठतीं।

सुन्दर ने न समझने वाली निगाहों से मलानी की तरफ देखा। उस वक्त रात के बारह बज रहे थे। डेक पर उनके अलावा और कोई भी नहीं था।

"आप क्या बताने जा रहे थे मलानी साहब?" सुन्दर ने पूछा।

"अभी मैं ब्रूटा साहब से मिलकर आ रहा हूं।" मलानी की आवाज शांत थी।

"अच्छा।"

"ब्रूटा साहब ने बताया कि तुमने, उन्हें अनिता गोस्वामी के बारे में बताया कि वो जहाज पर है और–।"

"क्या?" हक्के-बक्के-से सुन्दर के होंठों से निकला।

मलानी की आंखों में एकाएक खूंखारताभरी चमक आ ठहरी। जबकि सुन्दर की आंखों में खौफ उभरा।

"यानि तुममें और ब्रूटा साहब में जो बातें हुईं, वो सब उन्होंने मुझे बतायीं।" मलानी एक-एक शब्द चबाकर कह उठा–"यह सब बात ब्रूटा साहब से करने से पहले तुम्हें सोचना चाहिये था कि मलानी ने तुम्हारे साथ कभी बुरा नहीं किया। अपने करीब रखकर, तरक्की ही दी तुम्हें। और तुम ब्रूटा साहब से मेरी शिकायत करके, मेरी ही जड़ें काट रहे हो। कितनी बुरी बात है।"

"ये–ये।" सुन्दर ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी–"ये बात नहीं है।"

"तो क्या बात है?"

"वो–वो ब्रूटा साहब के सामने मेरी जुबान फिसल गई थी। गलती हो गई। फिर कभी ऐसा नहीं होगा। मैं तो आपका ही हुक्म मानता हूं। मैं तो–।"

"हरामजादे।" मलानी के होंठों से वहशी गुर्राहट निकली। उसके दोनों हाथ उठे। एक हाथ से सिर के बाल पकड़कर गर्दन को टेढ़ा किया। दूसरा हाथ गर्दन पर पड़ा।

हड्डी टूटने की आवाज वहां गूंजी।

सुन्दर की गर्दन एक तरफ लटक गई। वो मर चुका था। मलानी ने उसे संभाला। दोनों हाथों में फंसाकर उसके शरीर को ऊपर उठाया और पूरी शक्ति से समन्दर की तरफ उछाल दिया।

सुन्दर का शरीर समन्दर में गिरने की आवाज कानों में पड़ते ही, दांत भींचे मलानी ने दोनों हाथ झाड़े और पलटकर वापस चल पड़ा। चेहरे पर सिमटी खूंखारता धीरे-धीरे कम होती जा रही थी।

□□

□□

रात के दो बजे तक सोहनलाल नुकीले औजार से लकड़ी को उधेड़ता रहा। गहराई में और कुछ ऊंचाई में। बहुत धीरे-धीरे, सावधानी से काम कर रहा था। वह अपने अनुमान के अनुसार काम कर रहा था कि कम से कम वो दीवार आठ इंच या ज्यादा से ज्यादा बारह इंच मो[illegible]ये।

दीवार में चार इंच की गहराई करने के बाद वो रुक गया। इससे ज्यादा गहराई करना ठीक नहीं था। पाईप कुछ ऊपर और कुछ नीचे भी हो सकतीं थी।

फिर सोहनलाल ने हुए छेद से दो इंच नीचे झिरी निकाली, जो कि चार इंच ही गहरी रही। परन्तु वहां भी कोई पाईप नहीं मिली।

उसके बाद सोहनलाल ने छेद के ऊपरी तरफ झिरी निकालनी शुरू की।

करीब एक इंच के बाद ही सोहनलाल को रुक जाना पड़ा। उसका नुकीला औजार किसी सख्त-सी चीज से टकराया था। इस वक्त वो कुर्सी पर खड़ा था। जल्दी से नीचे उतरा और टेबल से टार्च उठा लाया। उसे रोशन करके, छेद में देखा तो आंखों में तसल्ली के भाव उभरे।

सफेद-सी पाईप की जरा-सी झलक मिल रही थी। देवराज चौहान का ख्याल ठीक ही निकला कि पाईप इसी दीवार में होगी। वो मिल गई थी। इस वक्त सुबह के चार बज चुके थे। सोहनलाल ने औजारों को समेटकर थैले में रखा। वहां बिखरे लकड़ी के टुकड़े उठाकर, कपड़ों के बैग में रख लिए कि किसी को नजर न आयें। दीवार पर हुए छेद पर, छोटी-सी सीनरी लटका दी। जों कि दूसरी दीवार पर लगी थी।

फिर लाईट ऑफ करके बैड पर लेट गया।

पाईप मिल गई थी। आगे का काम कठिन नहीं था। दिन में आसानी से किया जा सकता था।

□□

□□

दरवाजे पर पड़ने वाली हल्की थपथपाहट से अनिता गोस्वामी की आंख खुली। केबिन में ऑन जीरो वॉट के बल्ब की रोशनी में उसने वक्त देखा। सुबह के चार बज रहे थे।

वह उठी और दरवाजे के पास पहुंची।

"कौन है?"

"मलानी–।" बाहर से आती मलानी की आवाज उसके कानों में पड़ी।

अनिता गोस्वामी के चेहरे पर नापसन्दगी के भाव आये। उसने दरवाजा खोला तो मलानी भीतर आया।

"तुम मेरे पास आओ, यह मुझे पसन्द नहीं।" अनिता गोस्वामी ने उसे नींदभरी निगाहों से घूरा।

मलानी ने भीतर से दरवाजा बंद किया और अनिता गोस्वामी को देखा।

"इतनी नाराजगी ठीक नहीं अनिता! मैं-।"

"मैं तुम्हारी कोई बात नहीं सुनना चाहती। मेरा साथ चाहते हो तो ब्रूटा का साथ छोड़ दो। धंधा छोड़ दो। नहीं तो मुझे भूल जाओ।" अनिता गोस्वामी ने पहले वाले लहजे में कहा।

"मैं पूरी कोशिश कर रहा हूं कि ऐसा हो जाये। मेरे ख्याल में जल्दी ही नतीजा सामने आयेगा।"

"क्या मतलब?" अनिता गोस्वामी ने मलानी के गम्भीर चेहरे को देखा।

"ब्रूटा इस बात को जान चुका है कि तुम इस जहाज पर ही हो।"

"तुमने ही बताया होगा।" वो कड़वे स्वर में कह उठी।

"पागलों वाली बातें मत करो। सुन्दर ने ब्रूटा को यह सब बातें बताई हैं। हालात ठीक नहीं है। ब्रूटा कभी भी मेरे साथ कुछ कर सकता है। ऐसे में मुझे भी कुछ करना पड़ेगा।" मलानी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"तो ब्रूटा को खत्म कर दो। सब ठीक हो जायेगा।"

"ये इतना आसान नहीं।"

"क्यों-डरते हो ब्रूटा से?"

"जहाज पर ब्रूटा के आदमी हैं। मैंने ऐसा कुछ किया तो, वो मेरे को छोड़ेंगे नहीं।" मलानी के दांत भिंच गये।

अनिता गोस्वामी की निगाह मलानी के चेहरे पर थी।

"तुमने बताया था कि जहाज पर हथियार और पचास करोड़ डॉलर आने हैं।" उसने पूछा।

"हां। वो कब के आ चुके हैं।"

"मेरे पास क्यों आये हो?"

"अनिता, तुमसे मिले बिना, बात किए बिना रहा भी तो नहीं ज़ाता। मैं-।"

"लेकिन मैं तुम्हारे कामों से नफरत करती हूं। अगर मुझे पाना चाहते हो तो जहाज को तबाह कर दो। ब्रूटा को खत्म कर दो। याद रखना मलानी, अगर जहाज सिंगापुर पहुंच गया तो, फिर मैं तुम्हें माफ नहीं करूंगी। और न ही कभी तुमसे बात करूंगी। शायद कभी तुम मुझे देख भी न सको।"

"ऐसा मत कहो अनिता! तुम-।"

"तुम्हारी कोई बात नहीं चलने वाली। अच्छा यही होगा कि तुम यहां से चले जाओ। लोग अपना प्यार पाने के लिए सब कुछ कर देते हैं और तुम तो मेरे कहने पर एक कदम भी आगे बढ़ाने को तैयार नहीं।"

मलानी, अनिता गोस्वामी को देखता रहा।

अनिता गोस्वामी के चेहरे पर दृढ़ता के भाव मौजूद थे।

"कुछ कर सको तो अब मेरे पास आना, वरना मत आना।"

मलानी चेहरे पर गम्भीरता लिए पलटा और केबिन से बाहर निकल गया।

□□

□□

देवराज चौहान ने सोहनलाल द्वारा किए छेद में से पाईप को देखा फिर पलटकर बोला।

"आज का सारा दिन तुम्हारे पास है। इस पाईप को तीन इंच नजर आना चाहिये। उसके बाद धीरे से, पाईप को जरा-सा तोड़कर, उसकी तार को सिर्फ इंच-सवा इंच बाहर खींचना; ताकि उसमें कट मारकर अपनी तार का कनैक्शन उसमें दिया जा सके।"

"समझ गया।"

"दरवाजा बंद करके काम करना।" देवराज चौहान ने उसे सतर्क किया।

"मैं लापरवाह नहीं होता। वैसे आज रात पक्का है, ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से ही वाली जगह में जाने का।"

"हां।"

देवराज चौहान वहां से निकलकर जहाज की छठी मंजिल पर, अनिता गोस्वामी के केबिन में पहुंचा।

"आओ।" अनिता गोस्वामी उसे देखते ही मुस्कराई और पीछे हट गई।

देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया। कुर्सी पर बैठा।

दरवाजा बंद करके वो पलटते हुए बोली।

"मलानी से बात हुई थी। जहाज पर पचास करोड़ डॉलर और हथियार आ चुके हैं।"

देवराज चौहान ने सिर हिलाते हुए सिग्रेट सुलगाई।

अनिता गोस्वामी पास की कुर्सी पर आ बैठी।
"तुम अब क्या करोगे?"
"वही, जो कल बताया था।" देवराज चौहान ने कश लिया।
"ब्रूटा के जहाज वाले प्राईवेट हिस्से में जाओगे?"
"हां।"
"लेकिन वहां प्रवेश कर पाना इतना आसान नहीं।" अनिता गोस्वामी व्याकुल स्वर में कह उठी।
"वो देखना मेरा काम है। ब्रूटा ने पचास करोड़ डॉलर कहां रखे हैं। मलानी ने इस बारे में बताया?"
"बात नहीं हुई डॉलरों के बारे में।"
"वो रास्ता, जो ब्रूटा के बैडरूम से, जहाज के पेंदे तक जाता है, वो किधर से है?"
"मैं नहीं जानती।"
"मलानी ने बताया नहीं?"
"एक बार पूछा था, लेकिन उसने नहीं बताया।" अनिता गोस्वामी बोली।
देवराज चौहान उठ खड़ा हुआ।
अनिता गोस्वामी भी जल्दी से उठी।
"तुम उन डॉलरों को लूटोगे, जो ब्रूटा के पास हैं?" उसकी आवाज में व्याकुलता थी।
"हां।"
"दौलत के लालच ने तुम्हें भटका दिया है। कल रात तुम डेक पर आसानी से ब्रूटा को खत्म कर सकते थे। लेकिन पचास करोड़ डॉलर की बात सुनकर, उसे नहीं मारा। तुम भूल गये हो कि जहाज पर तुम अपने दोस्त महादेव की हत्या का बदला लेने आये हो और हत्यारा ब्रूटा है।" अनिता गोस्वामी ने उसे हवा दी।
देवराज चौहान शांत भाव में मुस्कराया।
"मैं तुम्हें याद दिला रही हूं कि तुम यहां क्यों आये थे और तुम मुस्करा रहे हो।"
"मुझे सब याद रहता है कि मैंने कब-कहां-क्या करना है। इसलिये मुझे वह याद मत दिलाओ, जो मैं कभी भूलता नहीं।"
अनिता गोस्वामी की निगाह देवराज चौहान पर टिकी रही।
"महादेव तुम्हें चैम्बूर में सुरेश जोगेलकर नाम के आदमी के पास लेकर गया था। वहां क्या हुआ था?"

"महादेव का कहना था कि जोगेलकर उसका पुराना दोस्त है और जहाज नम्बर 302 से उसका कोई वास्ता है। शायद वो ब्रूटा के लिये काम करता था। महादेव को विश्वास था कि जोगेलकर को अगर जहाज के पेंदे में बने रास्ते के बारे में जानकारी हुई तो वह अवश्य बता देगा।" अनिता गोस्वामी ने गहरी सांस ली।

"उसने बताया?"

"नहीं। उसने इस सिलसिले में कोई भी बात नहीं की।"

"मालूम है, उसके बाद जोगेलकर को गोलियों से भून दिया गया।" देवराज चौहान बोला।

"हां। सुना था। यह काम भी ब्रूटा के इशारे पर ही हुआ था। जाहिर है जोगेलकर को उस रास्ते के बारे में कोई न कोई जानकारी अवश्य होगी। कहीं वह मुंह न खोल दे। इसी वजह से उसे मारा गया।"

देवराज चौहान दरवाजे की तरफ बढ़ने लगा तो अनिता गोस्वामी ने टोका।

"मतलब कि अब तुम पचास करोड़ डॉलर लूटोगे। महादेव की मौत का बदला लेने का कोई इरादा नहीं।"

"दोनों काम होंगे और साथ-साथ होंगे।"

"मालूम नहीं क्या होने वाला है। मलानी बोलता है कि वो कुछ करेगा। इधर तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आ रही। जबकि जहाज पर ब्रूटा के आदमी मौजूद हैं।" अनिता गोस्वामी आहत नजर आ रही थी।

देवराज चौहान ने मुस्कराकर उसे देखा और बाहर निकलता चला गया।

जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

"अभी सोहनलाल के पास से होकर आया हूं।" जगमोहन बोला—"उसने दीवार में जा रही पाईप तलाश कर ली है। तुमने ठीक कहा था कि वीडियो कैमरे वाली तार वहीं से निकल रही होगी।"

"मालूम है। सोहनलाल से मिल चुका हूं।" देवराज चौहान ने कहा—"मैं अभी अनिता गोस्वामी से बात करके आ रहा हूं। पचास करोड़ डॉलर जहाज पर, ब्रूटा के पास पहुंच चुके हैं। उसे मलानी ने बताया है।"

जगमोहन की आंखें चमक उठीं।

"इतना मोटा माल हाथ आ जाये तो मजा आ जाये।"

देवराज चौहान ने उसे घूरा तो जगमोहन सकपका उठा।

"इतना आसान नहीं है मजा लेना। अक्ल सीधी रखा करो।"

"मैं—मैं तो मजाक कर रहा था।" जगमोहन खिसियाकर बोला।

"मालूम करो, जहाज पर कितने यात्री हैं।" देवराज चौहान ने कहा।

"जहाज पर, यात्री–?"

"और यह भी कि अगर यात्रियों को जहाज में आई मुसीबत के वक्त समन्दर में उतरना पड़े तो उसके लिये लाईफ बोटों का पर्याप्त इन्तजाम है।" देवराज चौहान का स्वर शांत था।

"समझा। क्या मालूम करना है?" जगमोहन के चेहरे पर गम्भीरता के भाव आ गये—"लेकिन।"

"जो मालूम करने को कहा है, पहले वो काम करो। बाकी बातें बाद में हो जायेंगी।"

जगमोहन ने फौरन सहमति में सिर हिलाया।

देवराज चौहान बाहर निकल गया।

दिन के ग्यारह बज रहे थे।

वैशाली इस वक्त लाल सुर्ख ड्रेस में थी। हाथ में चाय का प्याला पकड़े गैलरी में आगे बढ़ रही थी। मस्ती के मूड में थी वो। चलते-चलते चाय का घूंट भी भर लेती थी। इस वक्त वो तीसरी मंजिल पर थी। कुछ आगे नीचे जाने के लिये सीढ़ियां नजर आईं तो उतरते-उतरते ठिठकी।

नीचे से ब्रूटा ग्रुप का खास आदमी ऊपर आ रहा था।

जब वो ऊपर आया तो वैशाली ने पूछा।

"सुन्दर को देखा है।"

"सुन्दर, नहीं तो, कोई खास बात?" उस आदमी ने पूछा।

"नहीं, यूं ही उससे काम था।" वैशाली ने लापरवाही से कहा।

वो आदमी आगे बढ़ गया।

वैशाली चाय का प्याला थामे हौले-हौले सीढियां उतरने लगी। पिछले दो घण्टों में उसने सात-आठ लोगों से सुन्दर के बारे में पूछा था। परन्तु कोई भी ऐसा नहीं मिला था जिसने कहा हो, उसने

सुन्दर को देखा है। अगले ही पल वो ठिठकी। सीढ़ियों से उसे जगमोहन उतरता नजर आया।

"हैलो मौसी जी। आज तो आप–।"

"शटअप!" वैशाली दबे किन्तु तीखे स्वर में बोली–"मेरा नाम वैशाली है। मैं तुम्हें मौसी लगती हूं?"

"और जो भी हो, आज तो आप 'बम' लग रही हैं।" जगमोहन मुस्कराया।

"बम–?"

"हां। बम। मानना पड़ेगा कि आप सिर से पांव तक खूबसूरत हैं।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

"ऐसा है तो मुझे खूबसूरत कहो। बम नहीं।" एकाएक वैशाली मुस्कराई।

"बम को बम ही कहा जायेगा मैडम।"

"चलना है।" वैशाली ने होंठ सिकोड़े।

"कहां?"

"केबिन में।"

"क्यों?"

"बम को फाड़कर नहीं देखोगे कि कैसी आवाज आती है।" वो दिलकश अन्दाज में मुस्कराई।

"मेहरबानी। शुक्रिया। धन्यवाद–।"

"किस बात का?"

"कि आपने मुझे इस काबिल समझा। जबकि मेरा ख्याल था, तुम्हारी फटी की आवाज ब्रूटा ही सुनता–।"

"धीमे बोलो। मरना है क्या?"

जगमोहन ने गहरी निगाहों से वैशाली को देखा।

"ब्रूटा के साथ रहती हो और मन से उसके खिलाफ हो क्यों?" जगमोहन की आवाज धीमी थी।

"उसके साथ रहना मजबूरी है, क्योंकि जो एक बार उसके सा लग जाता है। फिर वो मर कर ही अलग हो सकता है। कोई भी अप जिन्दगी नहीं जी सकता, ब्रूटा के इशारों पर, अपनी जिन्दगी बिता है। ब्रूटा की असलियत जानने के बाद जिसने भी उससे अलग ह की कोशिश की, वो मर गया।" वैशाली गम्भीर थी।

"मतलब कि तुम ब्रूटा से अलग होना चाहती हो।"

"मैं ही क्या, ब्रूटा के अधिकतर आदमी यही चाहते हैं ले

ब्रूटा के जाल से नहीं निकला जा सकता।" कहते हुए वैशाली के चेहरे पर गम्भीरता आ गई थी।

"मैं समझता हूं तुम्हारी मजबूरी को।" जगमोहन ने धीमे स्वर में कहा—"तुम्हें मालूम है, जहाज पर कितने यात्री हैं और कितनी लाईफ बोट्स हैं। लाईफ बोट्स यात्रियों के लिये कम तो नहीं पड़ेंगी?"

वैशाली की निगाह जगमोहन के चेहरे पर जा टिकी।

"क्या मतलब?"

"सीधी-सी बात का क्या मतलब बताऊं?"

दोनों ने एक-दूसरे की आंखों में झांका।

"जहाज में कितने यात्री हैं। उनके लिये लाईफ बोट्स, जरूरत पड़ने पर पूरी आयेंगी कि नहीं। इन सब बातों की देखभाल करना, जानकारी रखने की जिम्मेवारी थर्ड मेट की होती है। ये बात उससे पूछ सकते हो।"

"थर्ड मेट का नाम क्या है?"

"मेरे ख्याल से उसका नाम अजीत सिंह है।"

"कहां मिलेगा?"

"कह नहीं सकती। ढूंढ लो।"

"एक बार फिर मेहरबानी—शुक्रिया—धन्यवाद—।" जगमोहन जाने लगा।

"सुनो—!"

जगमोहन ठिठका।

"तुम और तुम्हारे दोनों साथी क्या करने जा रहे हैं।" वैशाली गम्भीर थी।

"जरूरी है बताना?"

"दोस्त को नहीं बताओगे। पर्दा रखोगे।" वैशाली के चेहरे पर गम्भीरता थी।

"ब्रूटा से तुम्हारी जान छुड़ाने की कोशिश कर रहा हूं। समझो छूटने वाली है। आज रात के बाद कभी भी—।"

"जहाज को खत्म कर रहे हो?" वैशाली ने पूछा।

"कह नहीं सकता।" जगमोहन ने कहा—"लाईफ बोट्स में अपने लिए जगह का इन्तजाम करके रखो तो बेहतर होगा।" इसके साथ ही जगमोहन सीढ़ियां उतरता चला गया।

वैशाली ठगी-सी, चेहरे पर अजीब भाव लिए खड़ी रही।

"क्या हुआ?"

वैशाली ने सिर घुमाया तो मलानी को सीढ़ियों पर पाया।

"कौन था वो?"

"जहाज का यात्री था कोई–।" वैशाली ने जानबूझकर लम्बी सांस ली।

"तुम्हें क्या कह गया? परेशान क्यों हो रही हो?"

"परेशानी की तो बात है ही।"

"क्यों?"

"वो बोलता है, मैं बम हूं।"

"बम–?"

"खूबसूरती का बम!"

"वो तो हो ही।" मलानी मुस्करा पड़ा–"उसने गलत नहीं ा। परेशान क्यों होती हो?"

वैशाली ने मलानी के चेहरे पर नजरें टिका दीं।

"मलानी! रात मैंने तुम्हें बताया था कि सुन्दर तुम्हारे खिलाफ ब्रूटा से बोला है।"

"हां।"

"पिछले दो घण्टों से मैं सुन्दर के बारे में कईयों से पूछ चुकी हूं, लेकिन किसी ने सुबह से सुन्दर को नहीं देखा।"

मलानी और वैशाली कई पलों तक एक-दूसरे की आंखों में देखते रहे।

"गलती सुन्दर की ही थी।" मलानी का स्वर सपाट था।

"कैसे?"

"शराब के नशे में वो रात को डेक पर खड़ा था। नशे का झौंका आया और संभल नहीं सका। समन्दर में जा गिरा।" मलानी की धीमी आवाज में मौत के भाव थे।

"सुन्दर की खबर न मिलने पर मैं भी यही सोचने लगी थी।" वैशाली ने शांत स्वर में कहा।

"क्या?"

"यही कि रात तुम उससे मिले होंगे।" वैशाली ने पहले जैसे स्वर में कहा–"लेकिन इस तरह सुन्दर के जहाज से गायब हो जाने पर ब्रूटा साहब पहला शक तुम पर करेंगे।"

मलानी के चेहरे पर कड़वे भाव उभरे।

"इस वक्त मैं ब्रूटा के पास ही जा रहा हूं। जो बात मैं करूंगा

उससे ब्रूटा का शक दूर हो जायेगा।" कहने के साथ ही मलानी उसके करीब से होता सीढ़ियां उतरता चला गया।

वैशाली उसे जाते देखती रही फिर कुछ सोचकर उसके पीछे चल पड़ी।

□□

□□

ब्रूटा ड्राईंगहाल के सोफे में धंसा बैठा था। अभी-अभी उसके पास मलानी पहुंचा था। मलानी के चेहरे पर छाये भावों को देखकर, ब्रूटा की आंखें सिकुड़ीं।

"कहो मलानी, सब ठीक तो है?"

मलानी चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव ले आया।

"शायद ठीक नहीं है। इसलिये बहुत सोच-समझकर आपके पास आया हूं।" मलानी का स्वर गम्भीर था।

ब्रूटा सीधा होकर बैठ गया।

"बैठो–।"

मलानी आगे बढ़ा और सोफाचेयर पर जा बैठा।

"अब बोलो क्या बात है।" ब्रूटा की निगाह, मलानी के चेहरे पर जा टिकी थी।

"रात जब आपके पास से गया तो सुन्दर मिला। तब वो नशे में धुत्त था।" मलानी बोला।

ब्रूटा सिकुड़ी आंखों से मलानी को देखता रहा।

"उस वक्त वो अपने आपे में नहीं था। इसलिये वो बात कह गया।"

"क्या बात?"

"सुन्दर ने मुझे बताया कि ब्रूटा साहब, तुम्हें बेवकूफ बना रहे हैं। तुम्हें अनिता गोस्वामी की जान लेने पर दौड़ा रखा है और खुद ही अनिता गोस्वामी को पनाह दे रखी है।"

ब्रूटा के चेहरे पर हैरत के भाव उभरे।

"सुन्दर तुम्हें ऐसा बोला।"

"उसने ये भी कहा कि आप अनिता गोस्वामी को इस वक्त भी जहाज पर रखे हुए हैं। मजे लूट रहे हैं।" मलानी ने एक-एक शब्द पर जोर देकर कहा।

"सुन्दर ऐसा बोला।" ब्रूटा के चेहरे पर अजीब-से भाव थे।

मलानी ने खामोशी से सिर हिलाया।

"और तुमने सुन्दर की बात मानी?" ब्रूटा की निगाह मलानी पर थी।

"ब्रूटा साहब! सुन्दर मेरा जिम्मेवार साथी है। मेरे हर खास-खतरनाक काम में साथ रहता है और पुराना साथी है। उसकी बात को एक कान से सुनकर, दूसरे कान से नहीं निकाल सकता।" मलानी की आवाज में हल्की-सी सख्ती आ गई थी—"अगर उसने सच नहीं कहा तो उसके झूठ कहने के पीछे, उसका कोई तो लालच होना चाहिये, जो कहीं भी मुझे नजर नहीं आता।"

ब्रूटा ने खुद को संभाला। सिर हिलाया। बोला।

"तुम्हारी बात सही है। तुम्हारी जगह मैं होता तो मैं भी कुछ ऐसा ही सोचता।" ब्रूटा के चेहरे पर गुस्सा स्पष्ट नजर आने लगा था—"सुन्दर से तुम्हारा कोई झगड़ा हुआ था?"

"नहीं। यह आपने क्यों पूछा?"

"यह सब कहने के पीछे अवश्य कोई खास वजह रही होगी। क्योंकि कल उसने मुझे कहा है कि तुमने अनिता गोस्वामी को जहाज पर रखा हुआ है। तुम्हारा उससे याराना है और—।"

"बकवास करता है वो।" मलानी भड़कने वाले ढंग में कह उठा।

"यही तो मैं कहता हूं कि मेरे बारे में भी वो तुमसे झूठ बोलता है। हम दोनों के मन में मैल भरकर वो अपना कोई फायदा निकालना चाहता है। तभी तो—।"

ठीक उसी वक्त वहां वैशाली नें कदम रखा।

ब्रूटा ने उसे देखा फिर सिर हिलाकर उससे बोला।

"वैशाली! कल रात हम छठी मंज़िल के डेक पर गये थे। बताओ इसे, क्यों गये थे?"

वैशाली ने शांत निगाहों से मलानी को देखा।

"सुना नहीं तुमने।" ब्रूटा के चेहरे पर अभी भी गुस्सा था।

"अनिता गोस्वामी को देखने।" वैशाली ने सामान्य स्वर में कहा।

"सुना मलानी!" ब्रूटा ने दांत भींचकर कहा फिर वैशाली से बोला—"किसने कहा था कि अनिता गोस्वामी वहां पर है। और मलानी के साथ उसकी खूब निभ रही है।"

"सुन्दर ने आपको बताया था।" वैशाली बोली।

"सुना। सुना मलानी। सुन्दर तुम्हें भड़का रहा है और मुझे भी। हम दोनों को लड़ाना चाहता है। उसकी यह हिम्मत। मेरे साथ खेल खेले। मलानी, ढूंढ हरामजादे को। कुत्ते को गर्दन से पकड़कर

ला। मैं खुद उसे अपने हाथों से मारूंगा। ब्रूटा से खेल खेलता है।"
ब्रूटा का चेहरा गुस्से से धधक रहा था—"कल से मैं सुन्दर की बात से परेशान था और सोच रहा था कि तुम्हारे साथ क्या करूं। अच्छा हुआ जो तुमने मुझे बता दिया, वरना मैं कोई गलती कर बैठता।"

"अब तो मैं सुन्दर को छोड़ने वाला नहीं।" मलानी दांत भींचकर कह उठा—"मेरा पत्ता साफ करवाकर, आपकी नजरों में चढ़कर, वो मेरी जगह लेना चाहता होगा।"

"ये ही बात होगी। पकड़ के ला कमीने को।"

मलानी फौरन बाहर निकलता चला गया।

"क्या बात हो गई डियर?" वैशाली ने ब्रूटा के पास बैठते हुए पूछा।

"बात तो मालूम होगी, जब मलानी और सुन्दर दोनों मेरे सामने होंगे।" ब्रूटा ने भिंचे स्वर में कहा—"मलानी या सुन्दर में से कोई एक मेरे से खेल खेल रहा है। मालूम हो जायेगा दोनों में से वो कौन हरामजादा है। बुरी मौत मारूंगा।"

वैशाली ने बिना कुछ कहे मुस्कराकर दोनों बांहें ब्रूटा के गले में डाल दीं। ऐसा होते ही ब्रूटा कुछ ठण्डा होता हुआ, नजर आने लगा।

□□

□□

जगमोहन को पैंतालिस मिनट लगे, जहाज के थर्ड मेड अजीत सिंह को ढूंढने में।

वो जहाज के पीछे वाले हिस्से में रेलिंग थामे, तेज धूप में शांत समन्दर को देख रहा था। उसकी उम्र पचपन बरस की थी। गठीले बदन का फुर्तीला आदमी दिखता था।

"हैलो!" जगमोहन उसके पास पहुंचकर बोला—"आप जहाज के थर्ड मेड हैं?"

"हां हूं।" उसने गर्दन घुमाकर जगमोहन को सिर से पांव तक देखा।

"मतलब कि आपका नाम अजीत सिंह है।"

"हां है।" उसने पहले वाले अंदाज में कहा।

"मैं जहाज का यात्री हूं।"

"वो तो नजर आ ही रहा है।"

"आज सुबह अचानक ही मुझे टाईटैनिक जहाज की याद आ

गई।" जगमोहन ने कहा—"सोचता हूं अगर टाईटैनिक की तरह यह जहाज भी डूब गया तो क्या होगा।"

"नहीं डूबेगा यह जहाज।"

"क्यों?"

"टाईटेनिक डूबा था 1912 में। पुरानी बात है। जहाज का डूबना मजाक नहीं है।"

"तुम्हारा मतलब कि अब जहाज नहीं डूबते।"

"नहीं। निश्चिंत होकर जाओ और खा-पीकर मौज करो।" अजीत सिंह लापरवाही से बोला।

"अभी हाल ही में तो जहाज डूबा था।"

"कौन-सा?" जगमोहन पर अजीत सिंह की निगाह जा टिकी।

"सनविस्टा।"

"सनविस्टा—?" अजीत सिंह की निगाह जगमोहन पर जा टिकी—"कौन-सी कम्पनी का जहाज था यह?"

"सनकूइसस शिपिंग कम्पनी का जहाज था। 30 हजार टन वाला लकजरी जहाज था। जिसमें यात्री और जहाज के कर्मचारी, यानि कुल मिलाकर अट्ठाइस-उन्तीस सौ लोग, इसमें सफर कर सकते थे। सनविस्टा जहाज की ग्यारह मंजिलें थीं। जहाज में कुल 515 केबिन थे। एक-एक केबिन में दो-तीन यात्रियों के रुकने का भी इन्तजाम था।" जगमोहन ने बताया।

"तब सनविस्टा में तुम भी सवार थे?"

"नहीं। लेकिन ऐसी बातों की जानकारी तो रखनी पड़ती है। और बताऊं?"

अजीत सिंह ने शांत भाव से उसे देखा फिर कह उठा।

"आप बताते हुए कुछ भूल भी सकते हैं। मैं ही सब कुछ आपको बता देता हूं। सनविस्टा नाम का जहाज 19 मई, 1999 को फ्रेंकफुर्त बन्दरगाह के लिये रवाना हुआ था। और उसमें सिंगापुर-मारिशस, कनाडा, हालैण्ड, न्यूजीलैण्ड, स्विट्जरलैण्ड, जर्मनी, अमरीका, जापान, इण्डोनेशिया, नार्वे, दक्षिण कोरिया, फ्रांस-स्पेन, स्वीडन और भारत के 472 यात्री सिंगापुर जाने वाले थे।"

"सब कुछ रट रखा है। बताओ उस जहाज का कैप्टन कौन था?" जगमोहन बोला।

"स्वेन हार्टजेल—।"

"समन्दरी जहाजों के कीड़े लगते हो।"

"उस वक्त सनविस्टा पर 472 यात्री थे और 632 जहाज के कर्मचारी। यानि कि कुल मिलाकर 1104 लोग थे।" अजीत सिंह बोला—"और जहाज पर 18 लाईफ बोट, 2100 लाईफ जैकेट और 24 लाईफ रेफटस (बेड़े) थे। एक-एक लाईफ बोट में साठ-सत्तर व्यक्ति आसानी से आ सकते थे। इनमें कुछ लाईफ बोट्स इंजन वाली थी और कुछ बिना इंजन वाली। इस जहाज के इंजन में आग लग गई, जिस पर काबू नहीं पाया जा सका। ऐसे में मेरी समझदारी की वजह से और कप्तान स्वेन हार्टजेल की सहायता से सब यात्री बचा लिये गये थे। जहाजकर्मी बच गये थे। जहाज अवश्य डूब गया।"

जगमोहन ने उसे गहरी निगाहों से देखा।

"तुम्हारी समझदारी इसमें कहां से आ गई?"

"क्योंकि सनविस्टा का थर्ड मेड मैं ही था। मैंने ऐसे बुरे मौके पर सुरक्षा का ठीक-ठीक इन्तजाम कर रखा था। मैं तब तक जहाज का लंगर नहीं उठने देता जब तक यात्रियों के हिसाब से मेरा सामान पूरा नहीं हो जाता। अपनी ड्यूटी को मैं गम्भीरता से लेता हूं। बेशक सालों-साल के बाद कोई एक ही जहाज डूबता है। लेकिन मैं कभी लापरवाही नहीं करता।"

"अच्छी आदत है।" जगमोहन ने गहरी सांस ली—"दरअसल मैं तुमसे बात करके तसल्ली करना चाहता था कि अगर इस जहाज के डूबने की नौबत आ जाये तो क्या यात्रियों को बचाने का पूरे साजो-सामान का इन्तजाम तुमने कर रखा है?"

"फिक्र मत करो। यात्रियों को बचाने का पूरा इन्तजाम है। लेकिन जहाज नहीं डूबेगा।"

"यह तो अच्छी बात है कि न डूबे। वैसे जहाज पर कितने यात्री हैं?"

"चार सौ तेईस यात्री और तीन सौ करीब कर्मचारी हैं।" अजीत सिंह बोला।

"मतलब कि करीब साढ़े-आठ सौ लोग हुए।"

"ऐसा ही समझो।"

"सुनो। अगर जहाज के डूबने की नौबत आ जाये तो तब मुझे पहचान लेना। मैं जरा जल्दी घबरा जाता हूं। तब सबसे पहले मुझे ही लाईफ बोट में उतारना।"

अजीत सिंह ने उसे घूरा।

"चलता हूं। बुरा मत मानना। वैसे मुझे पूरा विश्वास है कि जहाज नहीं डूबेगा।"

□□

□□

"जहाज पर अगर कोई मुसीबत आती है तो यात्रियों को बचाने का पूरा इन्तजाम है।" जगमोहन ने देवराज चौहान को बताया—"जहाज के थर्ड मेट से मेरी बात हुई है। यात्रियों के बचाव के इन्तजाम का सामान तैयार रखना उसकी जिम्मेदारी है।"

"कितने यात्री हैं जहाज पर?" देवराज चौहान ने पूछा।

"चार सौ तेईस यात्री हैं। करीब तीन सौ जहाज के कर्मचारी हैं।" जगमोहन बोला।

देवराज चौहान के चेहरे पर गम्भीरता नजर आने लगी।

"तुम्हारे दिमाग में क्या है? क्या जहाज डूबेगा?" जगमोहन कुछ बेचैन हुआ।

"हां।" देवराज चौहान ने सिर हिलाया—"लेकिन उससे पहले जहाज के यात्री और कर्मचारी उतर चुके होंगे। जब जहाज डूबेगा तो वो बिल्कुल खाली होगा।"

"खुलकर बताओ।"

"आज रात को हमने बूटा वाले जहाज के प्राईवेट हिस्से में प्रवेश करना है।" देवराज चौहान ने कहा—"उसके बाद हर बात तुम्हें समझ आती चली जायेगी। साईलैंसर वाली रिवॉल्वर के साथ-साथ फालतू गोलियां भी ले चलना। भीतर हमारे सामने कैसी भी स्थिति आ सकती है।"

देवराज चौहान सोहनलाल के पास पहुंचा।

"तुम कहां तक पहुंचे?" देवराज चौहान ने पूछा।

"मेरा काम तैयार है।" सोहनलाल ने कहा—"इधर वाली तार को कनेक्शन दे चुका हूं। दीवार के भीतर पाईप में से तार निकालकर उसे छील चुका हूं। तार का दूसरा हिस्सा उसमें लगाने में सिर्फ दो मिनट लगेंगे। जब कहोगे यह काम कर दूंगा। उसके बाद वी०सी०आर० में जो कैसेट लगाऊंगा। भीतर कंट्रोल रूम में बैठे आदमियों को टी०वी० में मेरी कैसेट के दृश्य ही नजर आयेंगे और वही दृश्य मेरे टी०वी० में भी देखने को मिलेंगे।"

"ध्यान रखना। ये हर कैसेट आधे घण्टे की है, परन्तु तुमने पच्चीस मिनट में कैसेट को बदल देना है। इसलिये कि तुमसे किसी तरह की कोई लापरवाही न हो। अगर तुम कैसेट बदलना भूल गये या देरी कर दी बदलने में तो, उन लोगों को अपनी टी०वी० स्क्रीन पर कुछ भी नजर नहीं आयेगा और वो शक में पड़ सकते हैं कि कहीं—कुछ गड़बड़ है।" देवराज चौहान ने कहा।

"कहीं गड़बड़ नहीं होगी। मैं चौकस रहूंगा।" सोहनलाल ने विश्वासभरे स्वर में कहा—"लेकिन जब मैं कैसेट बदलूंगा तो उसमें पन्द्रह सेकण्ड तक का वक्त लग सकता है। ऐसे में कंट्रोल रूम में बैठे व्यक्ति को पन्द्रह सेकण्ड्स तक अपनी स्क्रीनों पर कुछ नजर नहीं आयेगा। जब-जब कैसेट बदलती जायेगी, ऐसा हर बार होगा। ऐसे में भी तो वे शक कर सकते हैं कि कहीं गड़बड़ है।"

"तुम ठीक कहते हो। लेकिन हमारे पास इस बात को ठीक करने का कोई रास्ता नहीं है। मजबूरी में यह रिस्क तो हमें लेना ही होगा।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा—"डेढ़-दो घण्टे की बात होगी। तब तक मेरे ख्याल में भीतर के हालात बदल चुके होंगे तुम्हारी यह ड्यूटी खत्म हो जायेगी।"

"रात कब, यह सब शुरू करना होगा?"

"ग्यारह बजे के आसपास का वक्त ठीक होगा।"

"पचास करोड़ डॉलर हाथ में आने के बाद क्या किया जायेगा?" सोहनलाल ने पूछा।

"महादेव की मौत की एवज में ब्रूटा को खत्म किया जायेगा।" देवराज चौहान की आवाज में कठोरता आ गई थी—"महादेव का हत्यारा सही-सलामत नहीं रह सकता।"

"लेकिन यह भी तो हो सकता है कि भीतर ब्रूटा ने सुरक्षा का कोई और तगड़ा इन्तजाम कर रखा हो और बाजी उल्टी पड़ जाये। तुम फंस जाओ।" सोहनलाल ने कहा।

"ऐसा भी हो सकता है। बहरहाल जो भी होगा, सामने आ जायेगा। तुम अपनी तैयारी पूरी रखो।"

□□

□□

मलानी एक घण्टे बाद, ब्रूटा के पास पहुंचा।

"सुन्दर कहां है?" ब्रूटा उसे देखते ही बोला—"साथ क्यों नहीं लाये उसे?"

"वो कहीं भी नहीं मिल रहा।" मलानी उखड़े लहजे में कह उठा।

"नहीं मिल रहा?" ब्रूटा की आंखें सिकुड़ीं।

"नहीं। लगता है, वो जान गया है कि उसका ड्रामा खुल गया है। इसलिये कहीं छिप गया है।" मलानी बोला।

ब्रूटा ने कुछ ज्यादा ही सिर हिलाया।

"कोई बात नहीं। मैं तलाश करवाता हूं सुन्दर की। वो बचेगा नहीं। तुम जाओ।"

मलानी चला गया।

ब्रूटा की आंखों में जहरीले भाव उभरे।

"मैं जानता था कि ऐसा कुछ होगा। मलानी तू ज्यादा सयानापन दिखा रहा है।" बड़बड़ाते हुए ब्रूटा उठा और इन्टरकॉम का रिसीवर उठाकर बटन दबाया। बात हुई—"इकबाल को भेजो।" कहने के साथ ही ब्रूटा ने रिसीवर रखा और पुनः बड़बड़ाया—"मलानी! सुन्दर की इतनी हिम्मत नहीं कि मुझसे झूठ बोले। मेरे को पूरा भरोसा है कि उस छोकरी की वजह से तू मेरे को चक्कर में डाल रहा है।"

तभी वैशाली बायरूम से निकली।

"कौन था? मलानी आया था?"

"हां।" ब्रूटा ने सामान्य स्वर में कहा—"सुन्दर उसे मिल नहीं रहा। तुम जरा पूछताछ करो। जहाज पर कहीं हो।"

वैशाली ने नहीं बताया कि अब सुन्दर कभी नहीं मिलने वाला। मलानी ने उसे मारकर रात को ही समन्दर में फैंक दिया है।

"मैं ढूंढती हूं उसे।" कहने के साथ ही वैशाली वहां से चली गई।

करीब बीस मिनट बाद चालीस वर्षीय इकबाल ने भीतर प्रवेश किया।

"आओ इकबाल—।"

"आपने मुझे याद किया ब्रूटा साहब?" इकबाल सतर्क स्वर में बोला।

"हां।" कहने के साथ ही ब्रूटा आगे बढ़ा और टेबल की ड्राअर खोलकर उसमें रखी अनिता गोस्वामी की तस्वीर निकाली—"जहाज के सारे वेटर तुम्हारे अण्डर हैं इकबाल!"

"जी!"

"यह तस्वीर लो।" ब्रूटा ने उसकी तरफ तस्वीर बढ़ाई।

इकबाल ने अनिता गोस्वामी की तस्वीर ली। देखी।

"जहाज पर कितने वेटर हैं?"

"करीब सौ हैं।"

"सबको यह तस्वीर दिखाओ। किसी न किसी वेटर ने इस लड़की को चाय-कॉफी-लंच-डिनर सर्व किया होगा। मालूम करो यह किस केबिन में है। सारा काम गुपचुप तरीके से होना चाहिये। मलानी को भी तुम्हारी भाग-दौड़ का पता न चले। यह लड़की जहाज पर ही, किसी केबिन में है। जब मालूम हो कि यह कहां है तो चुपचाप इसे मेरे पास ले आओ।" ब्रूटा ने दांत भींचकर कहा।

"जी!" इकबाल तस्वीर थामे बाहर निकल गया।

ब्रूटा के चेहरे पर खतरनाक भाव नाच उठे।

"मलानी!" ब्रूटा बड़बड़ा उठा—"मेरे से चालाकी। अब ये लड़की बतायेगी कि असलियत क्या है? यह मेरा जहाज है और इस जहाज पर छिपे चूहे को भी मैं निकालकर सामने ले आऊं। फिर ये लड़की कहां छिपेगी। मैं जानता हूं सुन्दर नहीं मिलेगा। उसे तूने खत्म करके, समन्दर में फैंक दिया है ताकि मेरे सामने खड़े होकर, तेरी तरफ उंगली उठाकर वो ठोक-बजाकर तेरी पोल न खोल सके। बेवकूफ! ब्रूटा को नाच नचाने की कोशिश करता है।"

□□

□□

शाम के पांच बजे इकबाल ने अनिता गोस्वामी के साथ, ब्रूटा के सामने कदम रखा। अनिता गोस्वामी का चेहरा फक्क पड़ा हुआ था। एक रंग जा रहा था तो दूसरा आ रहा था। उसकी आंखों में बेचैनी की लहरें जोरों से उछाल भर रही थीं।

अनिता गोस्वामी को सामने पाकर ब्रूटा मुस्कराया।

"जा इकबाल! तूने बढ़िया काम किया। कहां मिली यह?"

"छठी मंजिल के अठारह नम्बर केबिन में।" इकबाल ने बताया।

"ठीक है। तू जा।"

इकबाल चला यगा।

ब्रूटा की तीखी निगाह, अनिता गोस्वामी पर ही टिकी थी।

"अच्छी-भली तू नीलगिरी शिपिंग में सालों से काम कर रही थी। इधर-उधर हाथ मारकर बेकार का ही झंझट मोल ले लिया। बैठ—बैठ, घबराती क्यों है।"

वो घबराई-सी खड़ी रही।

"बैठ—।" इस बार ब्रूटा का स्वर तेज हो गया तो वो जल्दी से सोफा चेयर पर बैठ गई।

ब्रूटा मुस्कराया।

उसने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"मुझे ये समझ नहीं आता कि तू मलानी के चक्कर में कैसे पड़ गई। अच्छी-भली खूबसूरत है तू। कोई दूसरा नहीं मिला। मलानी ही मिला क्या?" ब्रूटा मुस्कराया।

घबराहट में डूबे अनिता गोस्वामी ने सूखे होंठों पर जीभ फेरी।

"जवाब दे।"

ब्रूटा का खौफ ही इतना था कि उसे होंठों से जवाब निकालना पड़ा।

"वो—वो मुझे अच्छा लगता है।"

"नाम बोला कर। कौन वो—?" ब्रूटा का स्वर तीखा हो गया।

"मलानी।"

दो पल के लिए ऐसा लगा जैसे ब्रूटा का चेहरा जहरीले सागर में डूब गया हो।

"साला—कुत्ता मलानी। मेरे को बेवकूफ बनाता है सुन्दर की कहानी सुनाकर। मैं तो पहले से ही कह रहा था कि सब किया-धरा मलानी का ही है।" ब्रूटा जहरीले स्वर में कह उठा, फिर बोला—"तेरे को मलानी जहाज पर लाया। जहाज के इस प्राईवेट हिस्से में लाया, तब तेरे को पता चला कि यहां पर क्या होता है। क्यों ठीक बोला मैं—?"

"हां।"

"कुत्ता है। बहुत कुत्ता है मलानी जो एक छोकरी के चक्कर में पड़कर खुद को मिट्टी में मिला लिया। फंसा ना। झूठ की कश्ती पर चढ़कर, कभी किनारे लगा है कोई। नहीं लगा। क्योंकि ऐसी कश्ती का आगा-पीछा तो होता नहीं। बुरा फंसा। खैर बता, वो जो दो-तीन आदमी हैं, जहाज़ पर। वो तेरे आदमी हैं। तू साथ लेकर आई है उन्हें?"

"नहीं।"

"जानती है उन्हें?"

"मैं मलानी के अलावा किसी को नहीं जानती।" अनिता गोस्वामी बोली।

"क्या चाहती है तू? तू ज़हाज पर क्यों है? जबकि तू जानती

है कि मेरे को तेरी जरूरत है। मलानी की शह पर, जहाज पर है कि वक्त आने पर वो तेरे को बचा लेगा। बोल—बता।"

"मलानी से मैं रिश्ता तोड़ चुकी हूं।" अनिता गोस्वामी हिम्मत करके बोली।

"दिल भर गया है क्या उससे?" ब्रूटा हंसा।

"नहीं। दिल नहीं भरा। ये सब इसलिये हुआ कि वो आपसे वास्ता रखता है और आप हथियारों के सौदागर हैं। हिन्दुस्तान में हथियार फैलाकर फसाद करवाते हैं और इसमें मलानी आपका साथ देता है।" अनिता गोस्वामी की आवाज में कठोरता आ गई।

"अच्छा!" ब्रूटा ने आंखें फैलाईं—"और—?"

"इतना ही बहुत है कि तुम सब लोग गद्दार हो। देश को खा रहे हो।" अनिता गोस्वामी उबल पड़ी।

ब्रूटा हंसा।

"मुझे तो पता चला है कि मलानी और तुम अभी भी घुट-घुट कर बात करते हो। दूसरी तरफ तुम कहती हो कि तुम उससे बात नहीं करतीं। नफरत करती हो।"

"मेरे और मलानी के बीच जो रिश्ता है, वो मेरी जाती बात है। तुम—।"

"गलत—।" ब्रूटा ने हाथ हिलाया—"मेरे आदमी के साथ वास्ता रखती, तुम्हारी कोई भी बात जाती नहीं हो सकती।" कहने के साथ ही ब्रूटा ने एक तरफ लगी बैल बजाई।

सेकण्डों में उसके दोनों गनमैन वहां पहुंचे।

"इस लड़की को किसी केबिन में बंद कर दो।" ब्रूटा ने दांत भींचकर कहा।

□□

□□

रात को नौ बजे मलानी आया।

ब्रूटा उसे देखकर शांत भाव में मुस्कराया।

"आओ मलानी। सुन्दर नहीं मिला क्या?"

"नहीं।" मलानी ने कहा—"समझ में नहीं आता कि वो जहाज से कहां गायब हो गया।"

"छोड़ो उसे।" ब्रूटा उठ खड़ा हुआ—"आओ, मैं तुम्हें कुछ दिखाता हूं।"

ब्रूटा, मलानी को लेकर कंट्रोल रूम में पहुंचा। कुर्सियों पर

बैठे, स्क्रीनों पर नजर रख रहे दोनों व्यक्ति फौरन उठ खड़े हुए। सलाम मारा।

ब्रूटा आगे बढ़ा और छोटे-से बोर्ड के बटनों को दबाने लगा।

मलानी समझ नहीं पा रहा था कि ब्रूटा क्या दिखाना चाहता है।

तभी एक स्क्रीन के दृश्य बदले और फिर स्क्रीन पर केबिन में मौजूद अनिता गोस्वामी नजर आने लगी, जो कि बेचैनी से केबिन में टहल रही थी।

मलानी चिहुंक उठा। फटी-फटी आंखों से अनिता गोस्वामी को देखने लगा।

ब्रूटा मुस्कराकर पलटा। मलानी के हैरतभरे चेहरे पर निगाह मारी।

"देखा मलानी! तुम इसे नहीं ढूंढ पाये। मैंने ढूंढ लिया।"

मलानी ने फौरन खुद को संभाला।

"इसका मतलब सुन्दर ठीक कहता था कि आपने अनिता गोस्वामी को जहाज पर रखा–।"

"सुन्दर और भी बहुत कुछ कहता था। आओ हाल में बातें करते हैं।" ब्रूटा ने कहने के बाद कंट्रोल रूम में मौजूद दोनों आदमियों को देखा–"लापरवाह मत होना। जहाज पर कुछ दुश्मन मौजूद हैं। वो इस तरफ आने की कोशिश न करें। ऐसा हो तो फौरन खतरे का अलार्म बजा देना।"

"यस सर–!"

ब्रूटा, मलानी को लेकर हॉल में पहुंचा।

मलानी का दिमाग तेजी से दौड़ रहा था। इतना तो वह समझ चुका था कि गड़बड़ हो चुकी है। हॉल में पहुंचते ही ब्रूटा ने बैल दबाई तो उसके दोनों गनमैन फौरन वहां हाजिर हो गये।

मलानी को अब भारी तौर पर गड़बड़ महसूस होने लगी।

ब्रूटा सोफे पर बैठा और सिग्रेट सुलगाकर, मुस्कराते हुए मलानी को देखा। दोनों गनमैन बेहद सतर्क अन्दाज में वहां खड़े थे कि ब्रूटा के लिए, जब उनकी जरूरत पड़े तो वे तुरन्त हरकत में आ जायें।

मलानी की निगाह ब्रूटा पर थी।

"मलानी!" ब्रूटा ने कश लिया–"तेरे को हैरानी नहीं हुई, उस लड़की को मेरे पास देखकर?"

"बहुत ज्यादा हुई। सुन्दर ने यही कहा–।"

"सुन्दर की बात मत करो। मैं अनिता गोस्वामी की बात कर रहा हूं।" ब्रूटा के स्वर में कठोरता आ गई।

"क्या बात?"

ब्रूटा ने गनमैनों को देखा और व्यंग्यभरे स्वर में कह उठा।

"मलानी साहब की तलाशी लो।"

मलानी कुछ समझ पाता, एक गनमैन उसके पास पहुंच चुका था। दूसरे के हाथ में रिवॉल्वर नजर आने लगी थी, जिसका रुख मलानी की तरफ था।

मलानी की जेब से रिवॉल्वर लेकर गनमैन पीछे हो गया।

मलानी का चेहरा कठोर हो गया।

"ब्रूटा साहब! आपकी इस हरकत का मतलब नहीं समझा।"

"वो, अनिता गोस्वामी ने सब कुछ बता दिया है।" ब्रूटा ने कश लिया।

"क्या सब कुछ?"

"जो तुम मुझसे छिपा रहे थे। जिसके बारे में सुन्दर ने मुझे बताया था। तुमने मुझे बताया नहीं कि अनिता गोस्वामी के साथ तुम्हारा खासा याराना है।" ब्रूटा उसे खा जाने वाली निगाहों से घूर रहा था—"इस वक्त मैं तुम्हें वो बातें बता रहा हूं जो छोकरी ने बताई हैं। तुम छोकरी को जहाज पर, मेरे प्राईवेट हिस्से में क्यों लाये?"

मलानी समझ गया कि, अनिता गोस्वामी ने सब कुछ बता दिया है।

"तुम्हारी गलती की वजह से वो मेरा धंधा जान गई। इस गलती को फौरन सुधारा भी जा सकता था अगर तुम उसी वक्त, उसे खत्म कर देते। लेकिन तुमने उसे खत्म नहीं किया। न ही मुझे इस बारे में बताया। जब वो मेरी पोल खोलने में लग गई तो भी तुमने उसे खत्म नहीं किया। उसे अपने पीछे छिपा लिया और दूसरों को कहते रहे, उसे तलाश करो और खत्म कर दो।" ब्रूटा का चेहरा गुस्से से सुर्ख हो गया।

मलानी को खेल खत्म होता नजर आने लगा।

"सुन्दर भांप गया कि तुम क्या कर रहे हो। हिम्मत करके उसने सब कुछ साफ-साफ मुझे बता दिया और इस बात की खबर जाने कैसे तुम्हें लग गई और तुमने फौरन सुन्दर को साफ कर दिया। कहां है वो?"

होंठ भींचे मलानी खामोश रहा।

"कैसे मारा उसे? समन्दर में फैंक दिया होगा, खत्म करके उसे।"
मलानी फिर भी कुछ नहीं बोला।
"तुम मेरे खास आदमी हो। मैंने आंखें बंद करके तुम पर विश्वास किया।" ब्रूटा ने गहरी सांस लेकर सिर को दांये-बांये हिलाया—"सही कहते हैं लोग, विश्वासी आदमी ही विश्वासघात करते हैं। जो इन्सान दस फीट दूर रहता हो, वो विश्वासघात कैसे करेगा। तकलीफ तो ये हो रही है कि एक लड़की की खातिर तुमने मुझसे बिगाड़ी।"
"आपने कभी प्यार किया है ब्रूटा साहब?" भिंचे होंठों से मलानी बोला।
"हां। किया है। मेरी बीवी दो बच्चों की मां—।"
"आपने बच्चे पैदा किए हैं। प्यार नहीं किया।"
"तुम्हारा मतलब कि बच्चे बिना प्यार किए ही हो जाते हैं।"
"हां। बच्चे पैदा करने को प्यार नहीं कहते। वो—।"
"तुम्हारा मतलब कि तुम्हारी तरह गद्दारी करके, लड़की बचाकर, बच्चे पैदा किए जायें तो उसे प्यार कहते हैं।" ब्रूटा सिर हिलाकर कड़वे-व्यंग्यभरे स्वर में कह उठा।
मलानी ने सख्ती के साथ दांत भींच लिए।
"सुनो मलानी।" ब्रूटा की आंखों में एकाएक पागलपन झलक उठा—"मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम्हारी मौत कैसी होगी। पहले तुम्हें तड़पा-तड़पा कर मारा जायेगा। तुम्हारी मौत का तमाशा मेरी आंखों के सामने होगा। मुझे कोई जल्दी नहीं होगी तुम्हें मारने की। लेकिन तब तुम्हें मरने की जल्दी होगी। और जब मरोगे तो तुम्हारी लाश के साथ भारी सामान बांधकर तुम्हें समन्दर में फैंका जायेगा, ताकि तुम्हारा मांस मछलियां खा लें, तो कंकाल भी ऊपर ना आ सके। समन्दर के तल में तुम्हारी हड्डियां बहुत चैन से रहेंगी और तेरी वो महबूबा, वो अनिता गोस्वामी, वो मेरी सेवा किया करेगी। मैं—।"
"ब्रूटा—!" मलानी दांत भींचकर ब्रूटा पर झपटा।
लेकिन गनमैनों ने उसे दो कदम से आगे नहीं बढ़ने दिया।
ब्रूटा हंसा। वहशी, दरिन्दगी से भरी हंसी।
"ले जाओ इसे। सख्त पहरे में रखना। डिनर के बाद इसके साथ खेल खेलूंगा। खाली पेट खेल खेलने में मजा नहीं आता।"

□□

□□

रात के ग्यारह बज रहे थे।

जहाज अपनी रफ्तार के साथ समन्दर में दौड़ा जा रहा था। शाम से पैदा हुआ शोरगुल अब कम होने लगा था। ग्राउंड फ्लोर पर कुछ लोगों की पार्टी चल रही थी। कुछ लोग अभी भी ग्रुप में, डैक पर टेबल-कुर्सियां बिछाये, समन्दरी यात्रा का मजा ले रहे थे।

दूसरी मंजिल पर स्थित बूटा की प्राईवेट जगह।

वह जो डबल ऑटोमैटिक-लॉक वाला प्रवेश द्वार था। जिसके खुले होने पर ही भीतर प्रवेश किया जा सकता था। इसके अलावा अगर कोई और आने-जाने का दरवाजा था तो वो जगजाहिर नहीं था। उस दरवाजे को बूटा ही जानता होगा और यकीनन वह बेहद गुप्त रास्ता होगा। बहरहाल उस दरवाजे के बाहर, सफेद वर्दी में गनमैन खड़ा था। कंधे पर उसने गन लटका रखी थी। पास ही में स्टूल पड़ा था कि अगर थक जाये तो उस पर बैठ जा सके। उसकी ड्यूटी दस बजे ही शुरू हुई थी और सुबह पांच बजे उसकी जगह लेने दूसरे गनमैन ने आ जाना था।

उसकी निगाह सामने खाली नजर आ रही गैलरी में जा टिकी, जहां से जगमोहन और सोहनलाल ने भीतर प्रवेश किया था। दोनों एक-दूसरे के कंधे पर हाथ डाले गुडमुड हुए लड़खड़ाते हुए ऐसे बढ़े चले आ रहे थे कि जैसे अभी गिरे कि अभी गिरे। जैसे दोनों ने तगड़ी पी रखी हो।

यह सब देखते ही गनमैन फौरन सतर्क हो गया। उसने गन उतारकर हाथ में ले ली और उन दोनों पर टिक चुकी थी। वे जैसे नशे में बड़बड़ाते हुए पास आते जा रहे थे।

"इधर कहां आ रहे हो।" गनमैन का स्वर सख्त था।

उन दोनों ने ऐसा दिखावा किया जैसे कुछ सुना ही न हो।

वे पास पहुंच गये।

"रुको। इधर कहां जा रहे हो?" गनमैन ने अपनी गन आगे की।

"ये क्या कर रहा है। डण्डा पीछे हटा।" सोहनलाल ने दिखाया जैसे वो तगड़े नशे में हो।

"पीछे हट। हमें अपने केबिन में जाना है।" जगमोहन नशे से भरे स्वर में कह उठा।

गनमैन समझ गया कि दोनों तगड़ी पिए हुए हैं और अपने केबिन का रास्ता भूलकर, इस तरफ आ गये हैं।

"इस तरफ केबिन नहीं है।" गनमैन बोला- "वापस जाओ।"

"क्यों नहीं है केबिन। हमारा केबिन इधर ही है।" सोहनलाल कहकर जोरो से लड़खड़ाया।

"मैंने बोला इधर नहीं है। वापस जाओ।" कहने के साथ गनमैन ने गन उसकी छाती पर टिका दी।

"अबे फिर डण्डा आगे करता है। मैं–।"

"ये डण्डा नहीं है।" जगमोहन ऐसे बोला जैसे कुछ होश में हो–"बन्दूक है।"

"बन्दूक।" कहकर सोहनलाल ने जानबूझकर आंखें फा[illegible]। गन को देखा फिर घबराया-सा कह उठा–"ये क्या कर रहा है। हमें गोली मत मार। जो भी रुपया-पैसा है वो बेशक ले ले। दे–दे इसे सब कुछ दे दे। नहीं तो ये हमारी जान ले लेगा।" ये शब्द सोहनलाल ने जगमोहन से कहे और कलाई पर बंधी घड़ी निकालकर जबर्दस्ती गनमैन को थमाई–"ठहर, अभी पर्स भी देता हूं।" कहकर सोहनलाल ने अपनी पैंट की जेब में हाथ डाला।

गनमैन यही समझा, नशेड़ियों से पाला पड़ गया है। वह इनसे निपटने की सोच ही रहा था कि तभी जगमोहन ने फुर्ती के साथ उसकी गन को दोनों हाथों से पकड़ा और झपट्टा मारने वाले ढंग से खींचकर, उसे अपने कब्जे में कर ली।

तब तक सोहनलाल जेब से रिवॉल्वर निकालकर, गनमैन के पेट से लगा चुका था। यह सब होता पाकर गनमैन ठगा-सा, हक्का-बक्का रह गया। अगले ही पल जगमोहन का दायां हाथ खास अंदाज में, उसकी कनपटी पर पड़ा। वो कुछ भी नहीं समझ पाया। पीछे को हुआ कि, जगमोहन का हाथ पु[illegible] उसकी कनपटी पर पड़ा। उसके होंठों से कराह निकली और [illegible] नीचे गिरने को हुआ कि जगमोहन ने उसे एक हाथ से संभाला [illegible]र फौरन कंधे पर लाद लिया। दूसरे हाथ में गन थी।

सोहनलाल ने रिवॉल्वर जेब में रख ली।

"मैं चलता हूं।"

जगमोहन तेजी से वापस पलटा और गैलरी पार करके, बायीं तरफ मुड़कर, केबिनों वाली गैलरी में आ गया। इत्तफाक से इस वक्त वहां कोई नहीं था। वहां से वो सीधा सोहनलाल के केबिन नम्बर पन्द्रह में पहुंचा, जहां देवराज चौहान मौजूद था।

"इसे नीचे लिटाकर, हाथ-पांव बांध दो और सोहनलाल के आते ही, मेरे पास पहुंच जाना।" कहने के साथ ही देवराज चौहान

केबिन से निकला और रास्ता पार करके सोहनलाल के पास जा पहुंचा जो उसी बंद दरवाजे के पास खड़ा था।

देवराज चौहान को देखते ही सोहनलाल ने कमीज के भीतर, फंसा रखी बैल्ट में से औजार निकाले और दरवाजे का डबल ऑटोमैटिक लॉक खोलने लगा।

देवराज चौहान गैलरी में नजर रखने लगा। चेहरे पर कठोरता थी।

"कितनी देर लगेगी? हमारे पास वक्त कम है। कोई भी आ सकता है।" देवराज चौहान बोला।

"उस दिन पांच मिनट लगे थे। अब दो मिनट से ऊपर नहीं लगेंगे।" अपने काम में लगा सोहनलाल कह उठा—"इस डोर लॉक के भीतरी सिस्टम से वाकिफ हो चुका हूं।"

देवराज चौहान बतौर पहरेदार खड़ा रहा।

सोहनलाल ने सिर्फ डेढ़ मिनट लगाया, डोर लॉक खोलने में। फिर औजार समेट कर वापस बैल्ट में फंसाता हुआ बोला।

"मुझे पहले ही मालूम था कि काम दो मिनट में हो जायेगा।"

"केबिन में पहुंचते ही सबसे पहले वो वीडियो कैसेट चला देना, जिसमें भीतर के दृश्य हैं। ऐसे में कंट्रोल रूम वाले उसी कैसेट के दृश्यों को देखेंगे, असल में जो भीतर हो रहा होगा, वो नहीं देख पायेंगे।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"कैसेट वी०सी०आर० में लगी पड़ी है।" सोहनलाल बोला—"तार के कनैक्शन दे चुका हूं। जब जगमोहन तुम्हारे पास पहुंचे तो समझना, कैसेट चल चुकी है।"

"उस गनमैन का ध्यान रखना। वो शोर-शराबा न करे। जब देखो कि उसे होश आने वाला है, फिर बेहोश कर दो। अगर उसे होश आने दिया तो तगड़ा झंझट खड़ा हो जायेगा।"

"मैं संभाल लूंगा उसे।" सोहनलाल ने विश्वासभरे स्वर में कहा और तेजी से वहां से चला गया।

देवराज चौहान सावधानी से वहां खड़ा निगाहें दौड़ाता रहा।

एक मिनट से भी कम समय में जगमोहन वहां पहुंचा।

"इस बार तो सोहनलाल ने बहुत जल्दी ही डोर लॉक खोल दिया।" जगमोहन बोला।

"साईलैंसर लगा रिवॉल्वर है?" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में पूछा।

"है।" जगमोहन का हाथ कपड़ों में छिपी रिवॉल्वर पर पहुंच गया।

"फालतू राऊण्ड—?"

"वो भी ले लिए—।"

दोनों की निगाहें मिलीं।

देवराज चौहान ने रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ली।

"हम भीतर चल रहे हैं। वहां कुछ भी हो सकता है।" देवराज चौहान की आवाज में खतरनाक भाव थे—"अगर कभी कुछ करने का वक्त आये तो मेरे इशारे का इन्तजार मत करना। जो ठीक समझो, वो कर देना।"

जगमोहन ने होंठ भींचे सिर हिलाया और रिवॉल्वर निकालकर हाथ में ले ली।

"रेडी—?"

"यस—।"

देवराज चौहान ने दरवाजे के हैंडिल पर हाथ रखा और दांत भींचे उसे दबाकर, दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश कर गया। पीछे-पीछे साथ ही जगमोहन ने भीतर प्रवेश किया। देवराज चौहान ने दरवाजा बंद किया और भीतर से सिटकनी लगा दी।

सामने दस फीट लम्बी गैलरी थी और फिर बायीं तरफ मोड़।

"क्या ख्याल है?" जगमोहन होंठ भींचे कह उठा—"उन लोगों ने कंट्रोल रूम में मौजूद स्क्रीनों पर हमें देख लिया होगा या हमारी चाल कामयाब रही कि उनकी स्क्रीनों पर, हमारी चलाई कैसेट के दृश्य नजर आ रहे होंगे।"

देवराज चौहान ने कुछ नहीं कहा और आगे बढ़ने लगा। चेहरे पर कठोरता उभरी पड़ी थी। सतर्कता का दामन थामे जगमोहन ने भी कदम आगे बढ़ा दिया।

□□

□□

कंट्रोल रूम में उस वक्त दो व्यक्ति बैठे थे। जिनका काम आंखें खुली और कान बंद रखना था। उनके सामने बोर्ड पर तीन टी०वी० सैट मौजूद थे। टी०वी० सैटों के जरिये वो जहाज पर स्थित ब्रूटा के प्राईवेट हिस्से पर पूरी तरह नजर रखते थे। अगर कहीं कोई शक या फिर गड़बड़ वाली बात होती तो वे इन्टरकॉम पर तुरन्त बगल में स्थित गार्ड रूम में खबर देते, हालात बताते और फिर आगे का

काम उन गार्ड्स का होता कि क्या करना है या फिर खतरे का अलार्म बजा देते।

टी०वी० स्क्रीनों पर वे, ब्रूटा के बैडरूम का नजारा नहीं देख सकते थे। क्योंकि निगरानी कर रहे वीडियो कैमरों का कनेक्शन बैडरूम में नहीं था।

एक-आध बार से ज्यादा आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि कोई उस प्राईवेट हिस्से में आ पहुंचा हो। एक बार एक यात्री यूं ही इस तरफ आ पहुंचा था। तब इत्तफाक से दरवाजा खुला रह गया था। उसे पकड़कर, पूछताछ के बाद, बाहर कर दिया गया।

एक बार ब्रूटा का पुराना दुश्मन, दरवाजे के बाहर मौजूद गनमैन का सिर तोड़कर, उसकी जेब से चाबी निकालकर भीतर प्रवेश कर आया था। वो जुदा बात थी कि भीतर के गनमैनों ने उसे गोलियों से भून दिया था। परन्तु उसके बाद से सुरक्षा सिस्टम में यह बात आ गई कि दरवाजे की चाबी, बाहर खड़े गनमैन के पास नहीं होगी। दरवाजा भीतर से बंद रहा करेगा। बाहर खड़ा गनमैन सिर्फ आने वाले की सूचना वॉकी-टॉकी या इन्टरकॉम पर भीतर देगा।

उसके बाद यह फैसला भीतर वालों पर होगा कि आने वाले के लिए, दरवाजा भीतर से खोलना है या नहीं? जो भी हो उसके बाद कभी ऐसा नहीं हुआ कि किसी ने भीतर आने की कोशिश की हो। वैसे भी भीतर वाले यह बात पक्की किए रहते हैं कि कोई भीतर नहीं आ सकता। अगर किसी ने ऐसी कोशिश की तो फौरन उन्हें खबर मिल जायेगी। तब वे सब संभाल लेंगे।

दो-दो की, आठ-आठ घण्टों की, कंट्रोल रूम में ड्यूटी रहती थी। ये जो दोनों गार्ड्स इस वक्त मौजूद थे। वे छः बजे अपनी ड्यूटी पर आ जमे थे। स्क्रीनों और कैमरे की सहायता से दोनों ने ब्रूटा और मलानी की स्पष्ट बातचीत और फिर मलानी को कैद किए जाते देखा।

इस वक्त उन दोनों ने कोई बात नहीं की, इस बारे में। क्योंकि तब ऊपर से कोई आ सकता था। करीब घंटा पहले उन दोनों को 'डिनर' सर्व किया गया। अब ग्यारह बज रहे थे। स्क्रीन पर वे दोनों ब्रूटा और वैशाली को 'डिनर' करते देख रहे थे। दोनों ड्राईंगहॉल में एक तरफ मौजूद डायनिंग टेबल पर थे। ब्रूटा वैशाली को 'डिनर' के दौरान बता रहा था कि मलानी को किस चालाकी से उसने पकड़ा।

एक स्क्रीन पर वो छोटी-सी गैलरी नजर आ रही थी, जहां प्रवेश द्वार था।

तीसरी स्क्रीन पर अन्य हिस्सों के दृश्य नजर आ रहे थे।

"तेरा क्या ख्याल है, मलानी के बारे में?" एक ने दूसरे से पूछा।

"मेरा क्या ख्याल होना है।" दूसरा बोला।

"मलानी को गिरफ्तार करके, कैद करके, ब्रूटा साहब ने ठीक किया। अभी मलानी की जान ली जायेगी।"

"क्या कह सकता हूं।"

"मेरे ख्याल में ब्रूटा साहब का यह कदम गलत है, मलानी को लेकर।" पहले वाला सोचभरे स्वर में कह उठा—"मलानी ने हमेशा ब्रूटा साहब के लिये काम किया है। अगर वो एक लड़की के प्यार के चक्कर में पड़ गया है तो, ब्रूटा साहब को, उसके खिलाफ इतना सख्त कदम नहीं उठाना चाहिये।" वो बोला।

"लेकिन उस लड़की को लेकर, मलानी ने ब्रूटा साहब से झूठ बोला है कि—।"

"ब्रूटा साहब को समझना चाहिये कि प्यार में, थोड़ा-बहुत झूठ बोला जाता है। इस बात को इतनी गम्भीरता से नहीं लेना चाहिये। अगर वो मलानी को कुछ न कहते तो, भविष्य में मलानी, ब्रूटा के लिये और भी जान की बाजियां लगाता। मेरे ख्याल में ब्रूटा साहब ने फैसला करने में जल्दबाजी कर दी है।"

"तो इससे ब्रूटा साहब को क्या फर्क पड़ता है।" दूसरा लापरवाही से कह उठा—"एक मलानी गया तो ब्रूटा साहब दस मलानी पैदा कर लेंगे। इस धंधे में नोट हों तो, बंदों की कमी नहीं होती।"

"मलानी विश्वासी है।"

"जो आयेगा, वो भी विश्वासी बन जायेगा।"

"बात ये हो रही थी कि मलानी के साथ ठीक हुआ या गलत?"

"हममें ये बात होनी ही नहीं चाहिये। हमें अपनी ड्यूटी के आगे सोचना ही नहीं चाहिये।"

"ठीक बोलता है तू—।" उसने गहरी सांस ली—"सिग्रेट देना।"

दोनों ने सिग्रेट सुलगाकर स्क्रीन पर निगाह मारी।

"मैं मलानी को देखता हूं, वो किस हालत में है।" कहने के साथ ही उसने डैशबोर्ड पर मौजूद बटनों को दबाया तो, ड्राईंगहॉल का दृश्य स्क्रीन से गायब हो गया और दूसरी तरफ बने केबिनों के भीतर का दृश्य नजर आने लगा। जो कि खाली था।

इस वक्त ग्यारह बजकर दो मिनट हो चुके थे।

उसने कई जगहों के बटन दबाकर, मलानी को तलाश करने

"लगा ले चक्कर। वहम का कोई ईलाज नहीं।" वो लापरवाही से कह उठा।

खड़ा हुआ व्यक्ति ज्योंहि दरवाजे की तरफ पलटा, ठिठककर रह गया। चेहरे पर हैरानी के भाव उभर आये। मुंह खुला का खुला रह गया। आंखों में अविश्वास नाचा।

दरवाजे पर देवराज चौहान और जगमोहन साईलैंसर लगी, रिवॉल्वरें थामे खड़े थे।

"कौन–कौन हो तुम–?" उसके होंठों से अजीब-सा स्वर निकला।

कुर्सी पर बैठा व्यक्ति, अपने साथी के मुंह से यह शब्द सुनते ही फौरन घूमा।

"डोंट मूव।" देवराज चौहान ने खतरनाक स्वर में कहा–"कोई भी हरकत नहीं करेगा। कोई भी बटन दबाने की कोशिश नहीं की जायेगी। हमारे हाथों में साईलैंसर लगी रिवॉल्वरें हैं।"

देवराज चौहान के शब्दों पर दोनों बुत की तरह बन गये।

"अपने-अपने दोनों हाथ सिरों के ऊपर रख लो।"

दोनों ने फौरन अपने हाथों को सिरों पर रख लिया। वे अभी तक हैरान थे।

"दरवाजा बंद करो।" देवराज चौहान ने जगमोहन से कहा।

जगमोहन ने कंट्रोल रूम का दरवाजा भीतर से बंद कर लिया।

"कौन हो तुम लोग?" एक ने अपनी हैरानी पर क़ाबू पाते हुए कहा–"भीतर कैसे आये?"

"उसी दरवाजे से, जहां से सब भीतर आते हैं।" देवराज चौहान ने शब्दों को चबाकर कहा।

"ये नहीं हो सकता।" दूसरा पक्के स्वर में कह उठा।

"क्यों?"

"हम यहां से आने-जाने वालों को देख रहे हैं। काफी देर से कोई भीतर नहीं आया, बाहर नहीं गया।"

देवराज चौहान ने स्क्रीन पर निगाह मारी और फिर उन्हें देखा।

"तुम लोग स्क्रीन पर जो कैसेट देख रहे हो, वो तब की है, जब जहाज मुम्बई बन्दरगाह पर लंगर डाले खड़ा था। खाली था। इसी वजह से तुम लोगों को कोई भी नजर नहीं आ रहा।"

"असम्भव। ये कैसे हो सकता है?" उसके होंठों से निकला।

"इस कैमरे की तारों का जो जाल लैंसों के साथ फैला रखा है,

उन तारों में एक तार का कनेक्शन देकर, अपने वी०सी०आर० पर, पुरानी वाली कैसेट चलाकर ...।"

"हमारी तार में कनेक्शन कैसे दिया जा सकता है?" उसके चेहरे पर अजीब-से भाव छाये हुए थे।

"मैं यहां तुम्हारी बातों का जवाब देने नहीं आया।" देवराज चौहान ने कठोर स्वर में कहा—"मरना चाहते हो?"

"नहीं।" एक ने जल्दी से कहा।

"तो मेरी बातों का सही-सही जवाब देना।" देवराज चौहान ने दांत भींचकर कहा।

दोनों खामोश रहे।

"ब्रूटा ने मलानी और अनिता गोस्वामी को कहां कैद कर रखा है?"

दोनों ने एक-दूसरे को देखा।

"मलानी को कैद—?" एक ने हैरानगी दिखानी चाही।

"अगर मरना है तो चालाकी वाली बात करना।" देवराज चौहान ने दरिन्दगीभरे स्वर में कहा—"मैं तुमसे जो भी बात पूछ रहा हूं उसकी मुझे पक्के तौर पर खबर है। यह बात याद रखना।"

"गोली मारो इन्हें।" जगमोहन तीखे स्वर में बोला—"किसी और से मालूम कर लेंगे।"

"हमें मत मारना। बताते हैं।"

"बताओ।" जगमोहन ने पूर्ववतः स्वर में कहा।

"रुको।" देवराज चौहान बोला—"तुम दोनों घूमो। हमारी तरफ पीठ करो।"

दोनों तुरन्त घूम गये।

देवराज चौहान ने एक की कनपटी पर रिवॉल्वर के दस्ते से वार किया तो वो बेहोश होकर नीचे गिर पड़ा। देवराज चौहान ने दूसरे की जेब की तलाशी लेकर, रिवॉल्वर निकाली और दूर फैंक दी।

"घूमो।"

वो घूमा। अब उसकी आंखों में डर था।

"तुम हमारे साथ चलकर बताओगे कि मलानी और अनिता गोस्वामी कहां हैं।" देवराज चौहान एक-एक शब्द चबाकर सख्त स्वर में बोला—"रास्ते में तुमने कहीं भी गड़बड़ की तो, हम तुम्हें फौरन शूट कर देंगे।"

वो सूखे होंठों पर जीभ फेरकर रह गया।

"यहां पर कितने आदमी हैं?" देवराज चौहान ने पूछा।

"पन्द्रह-बीस होंगे।" उसकी आवाज में अब घबराहट थी। कहते हुए उसने नीचे पड़े, अपने साथी पर नजर मारी जो बेहोश था–"यह जिन्दा है या–?"

"जिन्दा है। तुम अपनी सोचो।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहते हुए उसे घूरा–"पन्द्रह-बीस में कितने गनमैन हैं और कितने बाकी का काम करने वाले?"

"बारह-पन्द्रह गन वाले हैं।" वो जल्दी से बोला।

"ब्रूटा के साथ और कौन है यहां?"

"मैडम। मैडम वैशाली–।"

"चलो। हमें मलानी के पास ले चलो।" देवराज चौहान बोला।

जगमोहन ने सिटकनी हटाई और दरवाजा खोल दिया।

"रास्ते में–रास्ते में ब्रूटा साहब के गनमैन–।"

"उन्हें हम देख लेंगे।"

वो घबराये ढंग में दरवाजे की तरफ बढ़ा।

दायें-बायें, देवराज चौहान और जगमोहन हो गये।

"ब्रूटा हॉल में नहीं है।" देवराज चौहान बोला–"इस वक्त कहां होगा?"

"कह नहीं सकता।"

"सोच तो सकते हो?" देवराज चौहान दांत भींचकर कह उठा।

"अपने बैड–बैडरूम में या कि मलानी के पास–।"

"मलानी के पास क्यों?"

"शाम को मलानी को कैद करते वक्त, वो रात को उसकी जान लेने को कह रहा था।"

इस वक्त वो तीनों एक तंग रास्ते से गुजर रहे थे कि सामने से एक गनमैन आ गया। यह सब देखते ही उसने कंधे से उतारकर गन हाथ में लेनी चाही।

तभी देवराज चौहान की रिवॉल्वर से गोली निकली और उसकी गर्दन को पार कर गई। वह पास की दीवार से टकराकर नीचे लुढ़कता चला गया।

यह देखकर, उस व्यक्ति का चेहरा फक्क पड़ गया।

"अगर तुमने कोई शरारत की तो, तब भी इसी तरह गोली चलने की आवाज नहीं आयेगी।"

जवाब में वो सूखे होंठों पर जीभ फेरकर रह गया।

"कितनी दूर जाना है?" जगमोहन ने पूछा।

"थोड़ा-सा आगे। उस तरफ केबिन है। वहीं दोनों कैद हैं। बाहर पहरा भी है।" उसने सूखे स्वर में कहा—"मुझे ज्यादा आगे मत ले जाना। वो गोली चलायेंगे तो मुझे भी लग सकती है।"

वो चलते रहे। सावधान रहे। कोई कुछ नहीं बोला।

वो रास्ता समाप्त होते ही आगे तीन फीट चौड़ी गैलरी थी। जिसके दोनों तरफ केबिन थे। सब केबिनों के दरवाजे बंद थे। पांच केबिन बायीं तरफ थे और पांच दायीं तरफ।

"ये ही है वो केबिन जिनमें मलानी और अनिता गोस्वामी बंद हैं।" वो धीमे से डरे स्वर में बोला।

"तुमने तो बोला था कि केबिन के बाहर पहरा है।" देवराज चौहान ने कहा।

"मैं कुछ नहीं जानता। जो है, तुम्हारे सामने है।" उसने जल्दी से कहा—"अब मुझे जाने दो।"

अगले ही पल देवराज चौहान का हाथ उठा और रिवॉल्वर की नाल उसकी कनपटी पर पड़ी। उसके होंठों से मध्यम-सी कराह निकली। घुटने मुड़ते चले गये और वह नीचे गिरकर बेहोश हो गया।

चोट मारने की वजह से रिवॉल्वर पर लगा साईलेंसर हिल गया था। उसे ठीक करके देवराज चौहान बोला।

"तुम उस तरफ के केबिनों पर निगाह मारो, मैं इधर के देखता हूं। सावधानी से।"

दोनों ने सब केबिनों के दरवाजे खोलकर देखे।

परन्तु वहां न तो मलानी था और न ही अनिता गोस्वामी।

"यहां तो कोई भी नहीं है। यह झूठ बोलकर हमें यहां लाया है।" जगमोहन कह उठा।

"यह झूठ बोलने की स्थिति में नहीं था।" देवराज चौहान ने सोचभरे स्वर में कहा—"कंट्रोल रूम का सिस्टम बिगड़ने तक, वे लोग यहीं होंगे। जब सिस्टम बिगड़ा तो ये न जान सका कि उन्हें यहां से निकाल लिया गया है। मलानी हमारे साथ मिल जाये तो, हमारी कई दिक्कतें दूर हो सकती हैं।"

"क्या जरूरी है कि मलानी हमारा साथ दे?"

"वह देगा। क्योंकि उसकी जान खतरे में है। उसे हमारी जरूरत है। आओ आगे चलते हैं। जैसे भी हो, अब हमें खुद ही उन्हें ढूंढना होगा।" कहने के साथ देवराज चौहान आगे बढ़ गया।

जगमोहन ने एक निगाह पीछे मारी फिर आगे बढ़ने लगा। केबिनों के समाप्त होने पर मोड़ था। मोड़ मुड़ते ही वे ठिठके। पास ही कमरा था। वहां से बातों की आवाजें आ रही थीं। दोनों दबे पांव दरवाजे के पास पहुंचे।

भीतर से दबे स्वर में दो व्यक्तियों की आवाजें आ रही थीं और बातों का मुद्दा मलानी ही था। और भी मौजूद हो सकते हैं, जो खामोशी से बैठे हों। बातें न कर रहे हों।

देवराज चौहान और जगमोहन की आंखें मिलीं। इशारा हुआ। देवराज चौहान ने दरवाजे के हैंडिल पर दबाव डाला और फुर्ती के साथ भीतर प्रवेश कर गया।

"खबरदार! जो जैसे है। वैसे ही रहे।"

भीतर दो ही आदमी थे।

ये सब होता पाकर, वो जड़ हो गये थे।

जगमोहन ने दरवाजा बंद करके सिटकनी चढ़ा दी थी।

देवराज चौहान एक ही निगाह में पहचान गया कि ये दोनों गनमैन नहीं हैं।

"क—कौन हो तुम लोग?" एक ने भय से भरे स्वर में पूछा।

"बोलो।" देवराज चौहान का स्वर कठोर था—"तुम लोग कौन हो?"

"ह—हम। हम खाना बनाने वाले हैं। और—।"

"मलानी की क्या बातें हो रही थीं?" देवराज चौहान ने पहले जैसे स्वर में पूछा।

दोनों चुप।

"जवाब दो। मैंने बाहर से सब बातें सुनी हैं।"

"मलानी साहब की जान ली जा रही है।" एक ने धीमे स्वर में कहा—"ब्रूटा साहब उसे मार रहे हैं।"

"इस वक्त कहां है मलानी?"

दोनों ने एक-दूसरे को देखा।

"मेरे सवालों का जवाब दो फौरन। वरना—।" देवराज चौहान के दांत भींच गये।

"वो सब गेम्स रूम में हैं।"

"गेम्स रूम किस तरफ है?"

"इस दरवाजे के बाहर जो रास्ता सीधा जाता है, वो गेम्स रूम के दरवाजे पर जाकर ही खत्म होता है।" दूसरे ने जल्दी से कहा—"कुछ देर पहले ही मलानी और एक लड़की को वहां ले जाया गया है।"

देवराज चौहान के इशारे पर जगमोहन ने दोनों को बेहोश किया और फिर बाहर निकलकर आगे बढ़े।

"यह मलानी का आखिरी वक्त है।" जगमोहन बोला।

"हां। बूटा उसे खत्म करने में लगा होगा।"

दोनों तेजी से आगे बढ़ते रहे।

□□

□□

वह बहुत बड़ा हॉल था। जिसे कई हिस्सों में बांटा गया था। कहीं टेनिस टेबल थी तो, बैटमिन्टन खेलने के लिये नेट लगा था. किसी तरफ क्रिकेट खेलने का इन्तजाम था तो कहीं कैरम बोर्ड या शतरंज की टेबलें लगी हुई थीं। और भी जाने क्या-क्या इन्तजाम था खेलने का। ये बूटा का गेम्स हॉल था।

जब कोई काम न होता तो वो खेलने आ जाता। अक्सर मलानी के साथ ही खेलता था। क्योंकि मलानी को वह खेलने में बराबर का साथी मानता था।

लेकिन इस वक्त मलानी की स्थिति बुरी थी।

उसे कुर्सी पर बिठाकर, उसकी बांहें पीछे करके, कलाईयां सख्ती से बांध रखी थीं। मलानी का चेहरा सख्त हुआ पड़ा हुआ था और वहां गुस्सा नाच रहा था। वह जानता था कि अब उसकी जान ली जायेगी, परन्तु आंखों में खौफ की जगह सुलगन नाच रही थी।

बूटा उससे दस कदम दूर उसे देखता कश लगाता, कड़वी मुस्कान के साथ उसे देख रहा था।

वैशाली अलग हटकर कुर्सी पर बैठी थी। चेहरे पर गम्भीरता थी।

अनिता गोस्वामी को भी एक कुर्सी पर बांध रखा था। परन्तु वो डरी हुई, सहमी हुई थी।

वहां करीब आठ हथियारबन्द आदमी मौजूद थे।

"मलानी!" बूटा ने कश लिया—"इस जगह पर हमने बहुत खेल खेले। सालों से खेलते आ रहे हैं। सोचा क्यों न, मौत का खेल भी यहीं खेला जाये।"

मलानी दांत पीसकर रह गया।

बूटा ने गर्दन घुमाकर, अनिता गोस्वामी को देखा।

"क्यों कैसा लग रहा है तेरे को। देखा, तेरी गलती की वजह से तेरा आशिक मरने जा रहा है। मान गये। प्यार हो तो ऐसा।

लेकिन मलानी के मरने के बाद तेरा क्या होगा।" कहकर ब्रूटा हंसा—"फिक्र मत कर। तू अब मेरी सेवा किया करेगी। मुझे भी प्यार करना आता है। मैं मलानी से बढ़िया करूंगा। कह ही नहीं रहा। देखना साबित करके भी दिखाऊंगा।"

"बकवास मत कर ब्रूटा।" मलानी गुर्रा उठा।

ब्रूटा ने हंसकर, मलानी को देखा।

"तेरी तो ब्रूटा साहब, ब्रूटा साहब करता था। अब ब्रूटा बोलता है। बोल ले। बोल ले। तू मरने जा रहा है। ऐसे में मैं तेरी बात का बुरा मानूंगा तो, मेरी बेवकूफी होगी। अब तेरे को नई बात बताता हूं। मैं सीधे-सीधे तेरे को नहीं मारूंगा। ऐसे में मजा नहीं आयेगा। हौले-हौले, खेल-खेल में, जरा-जरा करके तेरी जान लूंगा। ताकि तेरे को मरने का एहसास होता रहे और मुझे मारे जाने का। वैसे, ऐसी मौत को, कुत्ते की मौत मरना कहते हैं और जो किस्मत वालों को ही नसीब होती है।"

"ब्रूटा तेरे को शर्म आनी चाहिये, ये बात करते हुए।" मलानी नफरतभरे स्वर में कह उठा—"मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया कि तेरे को मेरी जान लेनी पड़े। अगर कुछ हुआ है तो अन्जाने में हुआ होगा। जिसे कि भूला भी जा सकता है। तुम मेरे साथ जो करने जा रहे हो। वो किसी भी सूरत में ठीक नहीं।"

"तेरी बात मान लेता हूं ठीक नहीं। लेकिन अब तेरा क्या करूं। गांठ तो पड़ ही गई है जो कि खुलने वाली नहीं।" ब्रूटा हंसकर बोला—"तेरे को छोड़ा तो कल को तू मेरा गला काट देगा। नहीं भाई—मैं सांप नहीं पालता।"

मलानी खा जाने वाली निगाहों से उसे देखता रहा।

ब्रूटा के चेहरे पर मौत से भरी मुस्कान नाच रही थी। वो उठा और चंद कदमों पर स्थित टेबल की तरफ बढ़ गया। वैशाली ने बेचैनी से पहलू बदला।

वहां सन्नाटा छाया हुआ था। सांसों की आवाज के अलावा ब्रूटा के कदमों की आहट गूंज रही थी। वो टेबल के पास पहुंचकर रुका तो अनिता गोस्वामी कह उठी।

"मलानी!" स्वर में भय था—"ये सब रुक नहीं सकता।"

मलानी के कुछ कहने से पहले ही, ब्रूटा जहरीले स्वर में कह उठा।

"उससे क्या पूछती है? समझ, वो तो मर गया। मेरे से बात कर। अब मैं ही तेरा सब कुछ–।"

"बूटा।" मलानी गुस्से में बंधनों में कसमसा उठा।

"तकलीफ होती है सुक्कर।" बूटा कहरभरे ढंग में मुस्काराया–"चिल्ला। और जोर से चिल्ला।"

"बूटा।" अनिता गोस्वामी थके-टूटे स्वर में कह उठी–"भूल जाओ सब कुछ। यह बातें यहीं खत्म कर दो। तुम मुझे अपनी बनाना चाहते हो। मैं तैयार हूं। जो कहोगे। वही करूंगी। मलानी को छोड़ दो।"

"क्यों छोड़ दूं।" बूटा ने टेबल पर रखी पिस्तौल उठाई–"तू तो इसके मरने के बाद भी मेरी है। किस्मत वाला है मलानी। लोगों को मरने के बाद थोड़ी-सी जमीन भी नहीं मिलती और मैं इसके शरीर को सारा का सारा समन्दर दूंगा। जहां मन करेगा, वहीं इसकी हड्डियों का कंकाल घूमेगा। क्योंकि, इसका मांस तो मच्छियां खा लेंगी। ये तो मरने के बाद भी, दूसरों का पेट भरेगा।" उस पिस्तौल को लिये बूटा वापस कुर्सी पर आ बैठा। मलानी को देखा।

मलानी मौतभरी निगाहों से उसे देख रहा था।

"आंखें फाड़ के मत देख। मैं डरने वाला नहीं।" बूटा मीठे अंदाज में मुस्कराया–"इस पिस्तौल को तो पहचानता है ना। इसमें सौ के करीब, तीखे पिन भरे रहते हैं। निशाना लगाने के काम आते हैं। और तू इस पिस्तौल से निशाना लगाने में, मुझसे हमेशा जीतता रहा है। कोई बात नहीं। अब मैं निशाना लगाऊंगा। पक्का रहा। जीत मेरी ही होगी। क्योंकि निशाना लगाने वाला भी मैं। फैसला देने वाला भी मैं।"

"कुत्ता है तू–।"

"अब मुझे तेरी परवाह नहीं कि तू क्या बोलता है।" बूटा ने कड़वे स्वर में कहा और पिस्तौल वाला हाथ सीधा करके, ट्रेगर दबा दिया।

कोई आवाज नहीं हुई।

अगले ही पल मलानी का शरीर जोरों से कांपा। पिस्तौल की नाल से निकलने वाली पिन उसके कंधे में जा धंसी थी। पीड़ा के कारण उसने सख्ती से दांत भींच लिए।

"ये तो एक है। सौ की सौ पिन तेरे शरीर में उतारूंगा। फिक्र मत कर। इससे तू मरेगा नहीं। ये तो मजे ले रहा हूं और तुझे भी दे रहा हूं।" कहने के साथ बूटा ने पुनः ट्रेगर दबाया।

पिन दूसरे कंधे में जा धंसी।

"कितना मजा आता है मलानी, जब–।"

"तेरे जैसा कमीना इन्सान मैंने कभी नहीं देखा। पन्द्रह सालों से तेरे लिए जान की बाजियां लगाता रहा हूं।" मलानी गुर्रा उठा—"अब तू मुझे मारना ही चाहता है तो, मेरे सिर पर रिवॉल्वर रख और ट्रेगर दबा दे। मैं—।"

"नहीं, मलानी नहीं।" ब्रूटा ने मुंह बनाकर सिर हिलाया—"ये गेम्स रूम है। यहां खेल-खेला जाता है। गेंद को हाथ से उठाकर, होल में डालना है तो फिर गेम्स रूम का क्या फायदा। खेल में हेरा-फेरी तो होनी ही नहीं चाहिये। मजा नहीं न आता खेल का। तू तो खेल के कायदे-कानून से बहुत अच्छी तरह वाकिफ है। तू तो मुझे समझाता था। अब क्या मैं समझाऊं तेरे को।"

मलानी दांत पीसकर रह गया।

ब्रूटा ने पिस्तौल वाला हाथ सीधा किया। ट्रेगर दबाया। एक और 'पिन' नाल से निकलकर कंधे में जा धंसी। मलानी के जिस्म में पीड़ा की तीव्र लहर उठी।

ब्रूटा हंस पड़ा।

"तुम इन्सान नहीं, जानवर हो।" अनिता गोस्वामी चीख उठी।

"इन्सान समझो या जानवर। जो हूं, जैसा हूं, अब तेरा ही हूं।" कहने के साथ ही ब्रूटा ठठाकर हंस पड़ा।

वैशाली चाहकर भी कुछ नहीं कर पा रही थी।

"मलानी ये खेल, मौत का खेल पूरी रात चलेगा। आज की रात मुझे नींद आने वाली नहीं। क्योंकि मैं अपने सबसे बढ़िया आदमी की जान, अपने हाथों से ले रहा हूं तो धोखेबाजी नहीं कर सकता। जितनी देर तक हो सकेगा, तेरी सांसों को सलामत रखने की कोशिश करूंगा।"

"तेरे से बड़ा हरामजादा मैंने कभी नहीं देखा।" मलानी पागलों की तरह दहाड़ उठा।

"फिर तो तेरे को खुशी होनी चाहिये कि मरने से पहले तू दुनियां में सब कुछ देखकर जा रहा है। कोई हसरत तेरे मन में बाकी नहीं रही।" ब्रूटा दरिन्दगीभरे अंदाज में मुस्कराया।

"एक हसरत है बाकी।" दांत भींचकर बोला, मलानी।

"वह भी बोल।"

"तेरे को अपने हाथों से नहीं मार सका कुत्ते, मैं"""।"

"ये हसरत भी पूरी हो सकती है।" ब्रूटा गहरी सांस लेकर कह उठा—"लेकिन इसके लिए मरने के बाद तेरे को दोबारा जन्म लेना

होगा।" कहने के साथ ही ब्रूटा ने पिस्तौल सीधी की और ट्रेगर दबा दिया।

□□

□□

गेम्स हॉल का दरवाजा जरा-सा खुला था। झिरी में से देवराज चौहान और जगमोहन ने भीतर का सारा हाल देखा और फिर वहां से हटकर, एक तरफ ओट में हो गये। कोई भी आ सकता था। ज्यादा देर खुले में रहना ठीक नहीं था। भीतर की आवाजें अब उन तक नहीं आ रही थीं।

"ब्रूटा तो मलानी को मारने की तैयारी में है।" जगमोहन बोला।

"हां।" देवराज चौहान के होंठ भिंचे हुए थे—"हमारा ज्यादा देर रुके रहना ठीक नहीं। ब्रूटा, मलानी के हाथ-पांव भी तोड़ सकता है। ऐसे में हम मलानी का इस्तेमाल नहीं कर पायेंगे। अन्दर चलो और वहां मौजूद गनमैनों को निशाना बनाना शुरू कर दो। वरना वो हमें देखते ही भून देंगे।"

"लेकिन हम दो, एक साथ इतने गनमैनों का मुकाबला कैसे कर सकते हैं।"

"फिक्र मत करो। मैं सब संभाल लूंगा।" देवराज चौहान ने कहते हुए रिवॉल्वर पर से साईलैंसर हटाया और चैम्बर खोलकर, जेब से एक गोली निकाली और खाली हुए खाने में डाल दी। चैम्बर का एक खाना खाली था। वो गोली रास्ते में मिलने वाले गनमैन पर खर्च कर चुका था।

"कैसे संभालोगे?"

"भीतर चलकर मालूम हो जायेगा।" देवराज चौहान ने रिवॉल्वर तैयार की—"आओ।"

दोनों दरवाजे की तरफ बढ़े।

पास पहुंचकर, झिरी में से पहले की तरह भीतर झांका। भीतर के हालातों में कोई फर्क नहीं आया था। ब्रूटा सुईयों वाली रिवॉल्वर का इस्तेमाल मलानी पर कर रहा था।

दोनों ने एक-दूसरे को देखा। इशारा किया फिर दरवाजा खोलते हुए तूफान की भांति भीतर प्रवेश हुए और फुर्ती के साथ गनमैनों को निशाना बनाने लगे।

कुछ पलों के लिए कोई भी कुछ नहीं समझ पाया।

तब तक पांच गनमैन खत्म हो चुके थे।

तभी एक की चलाई गोली जगमोहन को गर्म हवा देते निकल गई।

मामला समझते ही ब्रूटा ने रिवॉल्वर निकालने के लिये जेब में हाथ डाला कि तब तक देवराज चौहान अपनी रिवॉल्वर उसकी कमर से लगा चुका था।

"कोई गोली नहीं चलायेगा।" देवराज चौहान एकाएक ऊंचे स्वर में बोला।

सब रुक गये। ब्रूटा की कमर से लगी रिवॉल्वर वो देख चुके थे। जगमोहन बाल-बाल बचा था। देवराज चौहान वार्निंग न देता तो एक गनमैन उसका निशाना लेने जा रहा था। जबकि वह खुले में था।

"अपने आदमियों को समझा दो कि उनके द्वारा हथियार का इस्तेमाल किया जाना, तुम्हारी मौत की वजह बन सकती है।" देवराज चौहान ने कमर में लगी रिवॉल्वर का दबाव बढ़ाकर खतरनाक स्वर में कहा।

"कोई–।" ब्रूटा दांत भींचकर बोला–"गोली नहीं चलायेगा।"

वहां गहरा सन्नाटा छा गया।

अनिता गोस्वामी, देवराज चौहान को देखकर राहत से भर उठी थी। जबकि जगमोहन को देखकर वैशाली के होंठ सिकुड़ गये। वह हैरान थी कि ये लोग भीतर कैसे आ गये।

"अपने आदमियों से कहो हथियार नीचे रखें और सामने वाली दीवार के पास पहुंचकर, हमारी तरफ पीठ करके खड़े हो जायें और किसी भी कीमत पर पलटने की कोशिश न करें।" देवराज चौहान ने दांत भींचकर कहा।

ब्रूटा ने यही शब्द अपने आदमियों को दोहराये।

उन्होंने वैसा ही किया।

"कौन हो तुम लोग? भीतर कैसे आ गये?"

"मैं महादेव का दोस्त हूं और उसके हत्यारे को ढूंढते हुए यहां तक आया हूं।" देवराज चौहान ने क्रूरताभरे स्वर में कहा–"महादेव के हत्यारे तुम हो ब्रूटा।"

"उसे मैंने नहीं मारा।"

"तुम्हारे इशारे पर उसकी जान ली गई है।"

"मेरे इशारे पर तो बहुत कुछ हो जाता है।" ब्रूटा सख्त स्वर में बोला–"तुम लोग भीतर कैसे आये?"

"उसी दरवाजे से, जहां तुम्हारा आदमी खड़ा पहरा दे रहा है।" देवराज चौहान की आवाज कड़वी थी।

"उसने रोका नहीं?"

"रोका था। बाद में रोकने के काबिल नहीं रहा।"

"जब तुम भीतर प्रवेश हुए, तो तुम लोगों को कंट्रोल रूम वालों ने देखा होगा। उन्होंने खतरे की बैल—!"

"उन्होंने हमें देखा ही नहीं। वो वही देखते रहे, जो हम उन्हें दिखा रहे थे।"

"क्या मतलब?"

"मतलब को छोड़ो। अब तुम्हें कुछ भी जानने-सुनने की जरूरत नहीं।" देवराज चौहान खतरनाक स्वर में कह उठा—"क्योंकि महादेव की हत्या कराने के जुर्म में, तुम्हें मौत मिलने जा रही है।"

"बेवकूफी वाली बात मत करो। मुझे मारकर तुम्हें महादेव तो मिलने वाला नहीं।" ब्रूटा ने दांत भींचकर कहा—"लेकिन मुझे जिन्दा छोड़कर तुम्हें बहुत कुछ मिल जायेगा।"

"अच्छा—!" देवराज चौहान ने व्यंग्य से कहा—"पचास करोड़ डॉलर देने का इरादा है क्या?"

ब्रूटा चौंका।

"तुम्हें कैसे मालूम, पचास करोड़ के बारे में?"

"जो यहां तक पहुंच सकता है। वो दस बातें और भी जान सकता है।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने ब्रूटा की जेब से रिवॉल्वर निकाली और फैंक दी—"उन पचास करोड़ को तो तुम गवां ही चुके हो।"

"कौन हो तुम—?"

"महादेव का दोस्त—!"

"कोई आम इन्सान मेरे तक नहीं पहुंच सकता। वीडियो कैमरे से बचकर यहां तक नहीं आ सकता। मेरे गिरेबान को नहीं पकड़ सकता। मेरे से इस तरह बातें नहीं कर सकता।" ब्रूटा ने विश्वासभरे स्वर में कहा।

"मैं आम इन्सान ही हूं—!" देवराज चौहान ने ठोस स्वर में कहा।

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"देवराज चौहान—!"

पीठ किए ब्रूटा फौरन घूम गया।

देवराज चौहान के हाथ में दबी रिवॉल्वर का रुख अब ब्रूटा के पेट की तरफ हो गया था।

"कौन देवराज चौहान?" ब्रूटा के माथे पर बल नजर आने लगे।

"देवराज चौहान–।" देवराज चौहान के होंठ भिंचे हुए थे।

"तुम कहीं वो डकैती मास्टर देवराज चौहान तो नहीं जो…।"

"मैं वही हूं।"

ब्रूटा के चेहरे से कई रंग आकर गुजर गये।

वहां मौजूद दूसरे लोग भी चौंके।

ब्रूटा की निगाह तुरन्त जगमोहन पर गई।

"यह–यह जगमोहन है।"

"हां।"

ब्रूटा ने फौरन खुद को संभाला और मुस्करा पड़ा।

"इसका मतलब जब जहाज लंगर डाले खड़ा था तो तुम ही भीतर आये थे।" ब्रूटा बोला।

"हां।"

"तुम ही होंगे। मैं जानता हूं। बहुत सुन रखा है कि तुम्हारे लिए कि तुम हर सुरक्षा चक्र को भेदकर भीतर घुस सकते हो। कमाल के आदमी हो तुम। लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुमसे मुलाकात होगी। गुणी आदमी से मिलकर मुझे खुशी होती है और तुम्हें सामने पाकर वास्तव में खुशी हो रही है।"

देवराज चौहान होंठ भींचे, ब्रूटा को देखे जा रहा था।

ब्रूटा के चेहरे पर मुस्कान थी।

"अब जान लेने वाली बात छोड़ो। मुझे नहीं मालूम था कि महादेव तुम्हारा साथी था। दोस्त था। अगर ऐसी कोई हवा भी मुझे होती तो मैं, किसी भी हाल में महादेव की जान नहीं लेता। चिन्ता मत करो। मैं तुम्हें करोड़ों रुपया दूंगा। तुम्हारी और मेरी यह मुलाकात हम दोनों को याद रहेगी। दोस्ती क्या होती है, यह तुम अब देखोगे।"

"कह चुके।" देवराज चौहान का स्वर ठोस था।

"अभी कहां कहा। बैठेंगे। ढेरों बातें–।"

"जगमोहन–!" देवराज चौहान बोला, लेकिन उसकी निगाह ब्रूटा पर थी–"मलानी के बंधन खोलो।"

जगमोहन फौरन मलानी की तरफ बढ़ा।

"यह क्या कर रहे हो देवराज चौहान! तुम–।"

"खामोश रहो।" देवराज चौहान के दांत भिंच गये।

ब्रूटा का चेहरा गुस्से से सुर्ख होने लगा।
"ये तुम ठीक नहीं कर रहे।" ब्रूटा ने कहना चाहा—"तुम—।"
"जुबान बंद रखो।" देवराज चौहान ने सख्त स्वर में कहा।
पास पहुंचकर जगमोहन ने मलानी के बंधन खोले। मलानी के चेहरे पर जिन्दगी की रौनक आ गई थी। कंधों में धंसी सुईयां, शरीर को पीड़ा पहुंचा रही थीं। मलानी जल्दी से खड़ा हुआ और धंसी सुईयों को खींच-खींचकर बाहर निकालने लगा।
जगमोहन ने इस काम में उसकी मदद की।
"मेरी जान बचाने का शुक्रिया।" मलानी ने कहा।
जगमोहन के कुछ कहने से पहले ही खतरनाक स्वर वहां गूंजा।
"कोई अपनी जगह से न हिले।"
जगमोहन मलानी के चेहरे के पास वैसे ही खड़ा रहा। आवाज पीछे दरवाजे की तरफ से आई थी।
"कौन है यह?" जगमोहन ने पीछे देखे बिना मलानी से पूछा।
"ब्रूटा के गनमैन हैं। जबर्दस्त निशानेबाज।" मलानी धीमे स्वर में होंठ भींचकर बोला।
इस बार दूसरी आवाज गूंजी।
"तुम दोनों अपने-अपने हाथ ऊपर कर लो।"
जगमोहन ने हाथ में दबी साईलैंसर लगी रिवॉल्वर चुपचाप मलानी को थमाई और बांहें ऊपर करते हुए घूम गया। मलानी ने फौरन रिवॉल्वर पर हाथ रखकर, दोनों हाथ आगे इस तरह रख लिए, जैसे हाथ बांधकर खड़ा हो। दोनों हाथों के बीच दबी रिवॉल्वर को देख पाना आसान नहीं था।
इसके साथ ही दीवार की तरफ मुंह करके खड़े गनमैन फौरन अपनी जगह से हिले और अपने-अपने हथियार उठाकर पोजिशन ले ली।
सेकण्डों में हालातों ने पलटा खा लिया था।

ब्रूटा मुस्कराया। फिर हंसा। जहरीली हंसी।
"अब देवराज चौहान, इसमें मेरी तो कोई गलती नहीं। मैंने तो दोस्ती का हाथ बढ़ाया था। तूने ही मना कर दिया। शायद यह सोचकर मना कर दिया कि, अब तुम्हारी ही चलेगी। लेकिन समन्दर में मौसम को बदलते देर नहीं लगती। यह तो तुम्हारे सामने ही है। लाओ, अपनी रिवॉल्वर मुझे दे दो।"

देवराज चौहान ने दांत भींचकर रिवॉल्वर की नाल ब्रूटा के पेट से लगा दी।
"कोई फायदा नहीं। तुम्हारा यार जगमोहन मारा जायेगा।"
देवराज चौहान ने हर तरफ का जायजा लिया।
जो गनमैन दीवार की तरफ मुंह करके खड़े थे। अब वो भी दोबारा हथियार पकड़ चुके थे। दरवाजे की तरफ निगाह घूमी, जहां ब्रूटा के खास गनमैन, गनों के साथ सतर्क खड़े थे। वास्तव में ऐसा कोई रास्ता नहीं था, जिसके दम पर बचा जा सके। उसकी पहली हरकत, सबसे पहले जगमोहन की जान लेगी। क्योंकि वो खुले में खड़ा था।
देवराज चौहान ने रिवॉल्वर ब्रूटा को थमा दी।
रिवॉल्वर थामते ही, ब्रूटा ठहाका लगाकर हंस पड़ा।
"आ गया मजा। क्यों मलानी, तूने क्या सोचा था, बच जायेगा।" ब्रूटा रिवॉल्वर थामे मलानी की तरफ बढ़ा—"आज तो गेम्स हॉल में बड़े-बड़े खिलाड़ी मौजूद हैं। आनन्द आयेगा खेल का। सारी रात जमकर खेल होगा। तगड़ा खेल होगा। जबर्दस्त खेल होगा।" पास पहुंचकर रिवॉल्वर की नाल मलानी के पेट से लगा दी और कहरभरे स्वर में बोला—"मारूं?"
मलानी कठोर निगाहों से ब्रूटा को देखता रहा।
"साला। घूरता है मुझे।" ब्रूटा ठहाका लगाकर पलटा—फिर देवराज चौहान को देखा—"तेरे को मारना मेरे प्रोग्राम में नहीं था। लेकिन क्या करूं। मजबूर कर दिया है तूने। अब तो तू, मरेगा ही मरेगा। इन तीनों को बांध दो कुर्सियों पर। हौले-हौले, प्यार से मारूंगा।"
देवराज चौहान दांत भींचे ब्रूटा को देखे जा रहा था। वह जान पर खेलकर कुछ कर जाना चाहता था। परन्तु उससे जगमोहन की जान खतरे में पड़ सकती थी।
तभी दरवाजे के पास खड़ा गनमैन गन सीधी करते हुए मलानी की तरफ बढ़ा।
"खबरदार! हिलना नहीं।"
मलानी खड़ा-खड़ा सतर्क-सा हो गया।
गनमैन ने पास पहुंचते ही मलानी की छाती पर गन रख दी। "तेरे हाथों में रिवॉल्वर दबी है। अपने हाथों को अलग कर रिवॉल्वर नीचे गिरा दे।" गनमैन गुर्राया।
मलानी के पास और कोई रास्ता नहीं था। उसने गन नीचे गिरा दी। गनमैन ने ठोकर मारकर रिवॉल्वर को पीछे किया और

उसने पास खड़े गन का दस्ता पकड़कर मलानी को कुर्सी पर बिठाया फिर
पास खड़े गनमैनों को देखकर बोला।

"बांधो इसे।"

दो गनमैन तुरन्त आगे बढ़े और मलानी को बांधने लगे।

मलानी को जो बचने की आशा नजर आई थी, वो सब खत्म हो गई थी।

और फिर देवराज चौहान और जगमोहन को भी कुर्सियों पर बांधा जाने लगा।

बूटा ने मुंह बनाकर मलानी को देखा।

"बच गया है।" बूटा ने कहा—"तू तो गोली खा रहा था मुझे। बच गया है।"

□□

□□

दो घण्टे से ऊपर का वक्त हो चुका था, सोहनलाल को वी०सी०आर० की कैसेट बदलते। इस वक्त उसने चालवीं कैसेट वी०सी०आर० पर लगा रखी थी। अब तक देवराज चौहान और जगमोहन को आ जाना चाहिये था। परन्तु वह नहीं लौटे थे। उन दोनों में से किसी ने आकर कोई खबर भी नहीं दी थी।

सोहनलाल ने घड़ी देखी। रात के ढाई बजने जा रहे थे।

सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट सुलगाई और सोचभरे ढंग से टी०वी० स्क्रीन पर आने वाले दृश्यों को देखने लगा। उसे लगा वह अब यूं ही कैसेट बदल रहा है। यह सब तो इसलिए किया गया था कि देवराज चौहान और जगमोहन भीतर प्रवेश कर सकें और किसी को खबर न हो।

और बीते दो-ढाई घण्टों में भीतर वालों को आसानी से इस बात का एहसास हो गया होगा कि वो भीतर आ चुके हैं और कईयों से उनकी मुलाकात भी हो चुकी होगी।

ऐसे में ये कैसेट चलाकर, उन्हें धोखा देने वाली बात खत्म हो चुकी थी। हो सकता है वे लोग, यह जानने की कोशिश कर रहे हों कि कहां खराबी आ गई है, जिसकी वजह से उनका कैमरा काम नहीं कर रहा और इस बात की पूरी संभावना है कि देवराज चौहान और जगमोहन कहीं फंस गये हों या फिर पचास करोड़ के डॉलरों को समेटकर बाहर लाने में दिक्कत हो रही हो।

आखिरकार फैसला करके सोहनलाल उठ खड़ा हुआ। यही

सोचा था उसने कि वह भीतर जायेगा। बूटा के प्राईवेट हिस्से में। अब तक तो भीतर जो होना था, वह तो हो चुका होगा।

सोहनलाल ने औजारों वाली बैल्ट कमर से बांधी।

औजारों वाला छोटा-सा बैग गले में लटकाया। उसके बाद वह दरवाजे की तरफ बढ़ने लगा कि ठिठक गया। बैड के नीचे से कराहने की आवाज आई थी। सोहनलाल ने नीचे झुककर देखा। वो गनमैन होश में आ रहा था। सोहनलाल ने जूते की ठोकर उसकी कनपटी पर मारी तो वह पूरी तरह बेहोश हो गया।

सोहनलाल केबिन से बाहर निकला। दरवाजा बंद करके सिटकनी चढ़ाई और ऊपर से ताला लगाकर आगे बढ़ गया। गैलरी खाली थी। वो घूमकर दूसरी गैलरी में आया, जिसके आखिर में बूटा के प्राईवेट हिस्से में प्रवेश करने के लिये दरवाजा था।

इस वक्त वहां कोई गनमैन नहीं था।

पास पहुंचकर सोहनलाल ने दरवाजा खोलना चाहा वो बंद था। उसने दो-तीन बार धकेल कर महसूस किया कि दरवाजा लॉक्ड नहीं है। भीतर से सिटकनी लगा रखी है।

सोहनलाल के लिये परेशानी खड़ी हो गई कि भीतर कैसे प्रवेश करे।

दरवाजे के अलावा भीतर प्रवेश करने का कोई और रास्ता था भी तो वो किसी रास्ते से वाकिफ नहीं था। कोई और रास्ता न पाकर सोहनलाल ने दरवाजा थपथपाया।

दो मिनट तक बार-बार थपथपाता रहा।

लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। भीतर से नहीं खोला गया।

अब क्या करे?

कैसे भीतर प्रवेश करे?

सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट सुलगाई और कश लिया।

बहुत सोच-विचार के साथ वो इस नतीजे पर पहुंचा कि कहीं से तोड़-फोड़कर ही रास्ता बनाना होगा। या फर्श को तोड़ना होगा। या दीवार को। तभी भीतर प्रवेश कर सकेगा। उसके बाद जो होगा देखा जायेगा। इस वक्त उसके दीमाग में एक ही बात थी कि उसे भीतर जाना है।

फर्श को तोढ़ना लगभग नामुमकिन बात थी।

जहाज का फर्श था।

लेकिन किसी दीवार को तोड़ना, काट पाना आसान था। जैसे

कि उसने दीवार में छेद करके कैमरे की तार को ढूंढ निकाला था। लेकिन कहां की दीवार तोड़े? ऐसा करते हुए कोई भी देख सकता था। तोड़-फोड़ का शोर सुनकर कोई भी आ सकता था। शक में पड़ सकता था।

परन्तु इस खतरे को उठाये बिना काम भी नहीं चल सकता था।

सोहनलाल को जहाज के नक्शे के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी कि, कहां से वो भीतर जाने को रास्ता बनाये। आखिरकार उसने यही फैसला किया कि अपने केबिन के पीछे वाली दीवार में से ही रास्ता बनाकर, भीतर प्रवेश किया जाये।

सोहनलाल वापस अपने केबिन में पहुंचा।

औजारों वाला बैग और कमर में बांध रखी बैल्ट खोलकर एक तरफ रखी फिर अपने हिसाब से वो दीवार को देखने लगा। सारी जगह चैक की फिर बैग में से ऐसे औजार निकाले, जिनसे कम आवाज हो और लकड़ी की दीवार को जल्दी-से-जल्दी काटा जा सके।

एक घण्टे की मेहनत के पश्चात् सोहनलाल ने तीन फीट चौड़ा-तीन फीट लम्बा और छः इंच गहरा खाना, दीवार में बनाया। हर तरफ लकड़ियों के छोटे-छोटे पीस बिखरे पड़े थे। इस काम में आवाज न के बराबर ही उभरी थी। रात के वक्त वो आवाज भी तेज ही थी। लेकिन किसी तरह का कोई खतरा सामने न आया। कोई केबिन का दरवाजा थपथपाने नहीं आया।

यानि कि सब ठीक रहा था।

इस सारे काम के दौरान सोहनलाल सिर से पांव तक पसीने से भर उठा था। वो जो बैड के नीचे बेहोश पड़ा था। जब वो होश में आने को हुआ तो सोहनलाल ने उसे पुनः बेहोश कर दिया था।

गोली वाली दो सिग्रेट पीने के पश्चात् तीसरी सुलगाकर होंठों में फंसाई और पुनः दीवार में रास्ता बनाने के काम में लग गया।

इस बार पौन घण्टा ही लगा।

दीवार कुल बारह इंच मोटी थी। बाकी की छः इंच काटने में,

लिस मिनट ही लगे और तीन फीट चौड़ा-तीन फीट लम्बा चौको
ता नजर आने लगा। और स्पष्ट नजर आ रही थी वो गैलरी, जो
वाजा पार करने के पश्चात् थी।

सोहनलाल की आंखें चमक उठीं।

उसने जेब से रिवॉल्वर निकाली। फिट चुके साईलैंसर को फिट
ल्या। फिर उस जगह के भीतर सिर डालकर गैलरी में देखा। वहां
ज रोशनी फैली हुई थी और वो खाली थी। सोहनलाल ने सिर
ापस किया और कमर में औजारों वाली बैल्ट बांधी। गले में औजारों
ाला छोटा बैग लटकाया फिर रिवॉल्वर संभाले तैयार हुई जगह की
रफ घूमा कि ठिठक जाना पड़ा।

जो बेहोश पड़ा था। उसके होंठों से चूं-चूं की आवाज निकली
थी।

सोहनलाल ने उसकी कनपटी पर जूते की हल्की-सी ठोकर
मारी तो वह फिर बेहोश हो गया। उसके बाद रिवॉल्वर थामे, बने
रास्ते में से अपने जिस्म को निकाला तो दूसरे ही पल वो गैलरी में
था। दूसरे ही पल वो आगे बढ़ गया। पहले तो यह देखना था कि
देवराज चौहान और जगमोहन कहां हैं?

गैलरी पार करके वो ड्राईंगरूम में पहुंचा।

जो कि बिल्कुल खाली था।

वह देवराज चौहान के साथ इस हिस्से में आ चुका था। इसलिये
यहां के रास्तों से वह अच्छी तरह वाकिफ था। हॉल पार करके वो
बैडरूम के दरवाजे के पास पहुंचा। उसे चैक किया। बंद नहीं था।

सोहनलाल ने दरवाजा खोला और भीतर प्रवेश करके देखा।
वो बिल्कुल खाली था। बैड पर बिछी चादर की हालत बता रही
थी कि लेटना तो दूर बैड पर कोई बैठा भी नहीं है। सोहनलाल ने
सोचभरे ढंग में सिग्रेट सुलगाई। दो कश लिए, यही सोचते हुए बाहर
निकला कि देवराज चौहान और जगमोहन कहीं आस-पास ही होंगे।

लेकिन दरवाजे से बाहर निकलते ही ठिठका।

कंधे पर गन लटकाये एक आदमी भीतरी तरफ से आ रहा
था। उस पर निगाह पड़ते ही वो हैरानी से भर उठा। दूसरे ही पल
गन कंधे से उतरकर हाथ में आ गई।

"कौन हो तुम?" उसने सख्त-सतर्क स्वर में कहा।

सोहनलाल पल भर के लिये तो सकपकाया फिर तेज स्वर में
कह उठा।

"जानता नहीं तू मेरे को।"

"क्यों?" गनमैन का स्वर कठोर हो गया–"तेरे को जानना जरूरी है क्या?"

"तमीज से बात कर। मैं ब्रूटा का जीजा हूं।"

"जीजा?"

"जीजा जी बोल। ब्रूटा की बहन मेरे साथ ब्याही है। तू शादी में गन लेकर नहीं खड़ा था क्या?"

सोहनलाल ने यह बात इतने विश्वास के साथ कही कि वो उलझन में नजर आया।

"जवाब क्यों नहीं देता?"

"मैं शादी में नहीं था। कहीं और ड्यूटी होगी मेरी–।" उसके होंठों से निकला।

"उल्लू का पट्ठा। सलाम मार मेरे को–।"

उसने फौरन गन नीचे करके सलाम मारा।

"ब्रूटा कहां है? उसकी बहन की तबीयत ठीक नहीं है।" सोहनलाल हकभरे स्वर में कह उठा।

"साहब की बहन, जहाज पर–।"

"हां गधे! हम भी जहाज पर है। जल्दी कर मुझे ब्रूटा के पास ले चल।"

वह कुछ समझा या नहीं समझा। लेकिन सिर हिलाने लगा।

"मुंह से नहीं फूटेगा, कहां है ब्रूटा?"

"वो तो गेम्स हॉल में है।" कहने के साथ उसने सोहनलाल के हाथ में पकड़ी रिवॉल्वर को देखा–"यह रिवॉल्वर आपने हाथ में क्यों पकड़ रखी है? यहां तो कोई खतरा–?"

"बेवकूफ शादी में आया होता तो, यह सवाल न करता। जब फेरे हो रहे थे, मैंने तब भी रिवॉल्वर पकड़ रखी थी। सब जानते हैं कि एक हाथ से खाना खाता हूं तो दूसरे हाथ में रिवॉल्वर होती है। फालतू के सवाल मत कर। ब्रूटा के पास चल–।"

"आईये–?"

□□

□□

करीब पांच मिनट चलने और वहां की कई जगहों से गुजरने के बाद, सोहनलाल को लिए गनमैन एक दरवाजे के सामने ठिठका और उसने सोहनलाल को देखा।

"क्या है?" सोहनलाल ने उसे घूरा।
गनमैन के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।
"आप तो यहां पर कई बार आ चुके हैं।" गनमैन उलझे स्वर में कह उठा।
"ब्रूटा का जीजा हूं। हजारों बार आया हूं। आगे बोल–।"
"तो आपको मालूम होगा कि यह दरवाजा कहां का है?"
सोहनलाल ने दरवाजे पर निगाह मारी। समझ नहीं पाया कि क्या कहे।
"तू सवाल-जवाब बहुत करता है। ब्रूटा ने तेरे को सिर पर चढ़ा रखा है क्या?" सोहनलाल सख्त स्वर में बोला।
गनमैन के होंठ सिकुड़े।
"मैंने तो आपसे सिर्फ यही पूछा है कि यह दरवाजा कहां का है।"
"क्यों पूछा?" सोहनलाल ने पहले वाले लहजे में कहा।
"आप पर विश्वास करके आपको मैं यहां तक ले आया। जबकि आज से पहले मैंने आपको कभी नहीं देखा। आपने कहा, आप ब्रूटा साहब के जीजा हैं। मैंने मान लिया। अब अपनी तसल्ली के लिए, आपसे यह बात पूछी है कि कहीं मैं किसी गलत आदमी को तो यहां नहीं ले आया?" गनमैन ने शांत स्वर में कहा।
"गलत आदमी–हैं–ब्रूटा के जीजा को यानि कि तू मुझे गलत आदमी समझता है।" सोहनलाल जैसे हत्थे से उखड़ पड़ा और समझ भी रहा था कि मामला बिगड़ने जा रहा है–"वहां चल, तेरे को बताता हूं।"
"वहां?" गनमैन उलझन में पड़ा।
"चल तो सही–।"
सोहनलाल, गनमैन को उस दरवाजे से पन्द्रह कदम दूर ले गया।
"अब सुन जो मैं बोलता हूं।"
"जी–।"
"ब्रूटा का मैं कुछ नहीं लगता। उस साले का तो मैंने, पहले कभी थोबड़ा भी नहीं देखा।"
"क्या?" गनमैन चौंका। अगले ही पल फुर्ती से उसने गन सीधी करनी चाही।
तब तक सोहनलाल के हाथ में दबी, साईलैंसर लगी रिवॉल्वर

से बे-आवाज गोली निकलकर उसके पेट में प्रवेश कर चुकी थी। गन उसके हाथ से निकल गई। दोनों हाथों से पेट थामे वो नीचे गिर गया। सोहनलाल उसे होंठ भींचे देखने लगा। लग रहा था कि जैसे अभी उसकी जान नहीं निकलेगी। सोहनलाल ने रिवॉल्वर की नाल उसके सिर से लगाई और दांत भींचकर ट्रेगर दबा दिया।

गनमैन के सिर की धज्जियां उड़ गईं।

सोहनलाल ने अपनी रिवॉल्वर कपड़ों में छिपाई। नीचे झुककर, उसकी गन उठाई और पलटकर, उस बंद दरवाजे की तरफ बढ़ता चला गया।

और वो दरवाजा गेम्स हॉल का ही था।

□□

□□

बूटा पागल हुआ पड़ा था।

उसका चेहरा गुस्से और पागलपन के भावों से भरा पड़ा था। आंखों में लाली भरी स्पष्ट चमक रही थी। सुबह के चार बजने जा रहे थे और वो देवराज चौहान, जगमोहन और मलानी को 'पिन' वाली रिवॉल्वर से यातना देने पर उतारू था।

उन तीनों के जिस्मों में जाने कितनी 'पिन' धंसीं पड़ी थीं। उनके जिस्म दर्द का सागर बन रहे थे। दर्द की ऐसी लहरें बार-बार उठ रही थीं कि जिस्म सूखे पत्ते की भांति कांप उठता था।

दहशत में भरी अनिता गोस्वामी यह सब देख रही थी। कुर्सी पर बंधी होने के कारण, वह उठने की स्थिति में नहीं थी और रहम के लिये चिल्ला-चिल्ला कर थक-हार गई थी।

वैशाली दिल पर पत्थर रखे सब देख रही थी। वह कुछ नहीं कर सकती थी। उसके बस में कुछ नहीं था। क्योंकि बूटा के दो खास-खतरनाक गनमैन वहां मौजूद थे। बाकी गनमैनों को बूटा ने अपने केबिनों में भेज दिया था और मजे से मौत का खेल, खेलने में व्यस्त था।

यानि कि वहां बूटा और सिर्फ उसके दोनों गनमैन थे। बाकी देवराज चौहान, जगमोहन, वैशाली और अनिता गोस्वामी थीं। दोनों गनमैन गनों के साथ सतर्क, बिल्कुल सतर्क खड़े थे।

सोहनलाल ने जब जरा-सा दरवाजा खोलकर भीतर झांका तो तब बूटा ठहाका लगा रहा था। भीतर का सारा नजारा देखने-समझने के बाद सोहनलाल सिर से पांव तक गुस्से की आग में जल उठा।

"बहुत हो गया।" ब्रूटा ठहाका रोकते हुए बोला–"ये होता है मौत का खेल। धीरे-धीरे मारो और बंदा मरे भी नहीं। तुम तीनों के जिस्म में दो सौ सुईयां धंसी पड़ी हैं। बहुत मजा आ रहा होगा। लेकिन अब मुझे मजा आना बंद हो गया है। इस खेल से मैं बोर हो गया हूं।" कहने के साथ ही उसने हाथ में पकड़ी सुईयां फेंकने वाली रिवॉल्वर फेंककर वैशाली को देखा–"कितना वक्त हो गया?"

"सुबह के चार बजने वाले हैं।" वैशाली मुस्कराई।

"थकान होने लगी है, ये खेल-खेलकर–।" ब्रूटा ने गहरी सांस ली जैसे बहुत बड़ा काम करके हटा हो।

"चिन्ता मत करो डार्लिंग! मेरे होते हुए थकान का क्या काम।" वैशाली हंसी–"इस काम से निपटो। उसके बाद तो तुम्हारी थकान ऐसी उतारूंगी कि लंच से पहले बैड से नहीं उठोगे।"

ब्रूटा मुस्कराया फिर उसने कुर्सी पर बंधे तीनों को देखा।

"एक ही खेल को बार-बार नहीं खेलना चाहिये।" ब्रूटा टहलते हुए कहने लगा–"अब मुझे ही देखो, बोरियत होने लगी है मुझे, इन सब बातों से। देवराज चौहान और जगमोहन, अब तुम दोनों अपने दोस्त महादेव के पास पहुंचने जा रहे हो। बेकार में तुम दोनों ने जान गंवाने की जिद्द कर ली। बाजी पलटने से पहले मेरी बात मान लेते तो इस वक्त हम दोस्तों की तरह बैठे····।"

"तुम्हारे कान खराब हैं।" जगमोहन कह उठा–"तुम्हें सुनाई नहीं दिया था। हमने तुम्हारी दोस्ती कबूल कर ली थी। बल्कि मैंने तो तुम्हें, अपनी गोद में बैठने को भी कह दिया था।"

"अच्छा!" ब्रूटा के होंठों से व्यंग्यभरा स्वर निकला।

"अब मेरी बात तेरे को ही सुनाई नहीं दी तो क्या करूं।" जगमोहन जल्दी से कह उठा–"मैंने तो सोचा था कि हम लोग जैसलमेर घूमने चलेंगे। देखा है तुमने जैसलमेर? क्या बढ़िया जगह है! सिंगापुर भूल जाओगे। वहां पर इतना बढ़िया कुतुब मीनार बना है कि दिल्ली का कुतुब मीनार भूल जाओगे।"

ब्रूटा के चेहरे पर कड़वे भाव उभरे।

"कुतुब मीनार। जैसलमेर में?" ब्रूटा ने तीखे स्वर में कहा।

"हां। इसका मतलब तुमने नहीं देखा। तुम वहां रविवार को नहीं पहुंचे होंगे।"

"खूब! बातों में मजा आ रहा है। रविवार को जैसलमेर में क्या होता है?"

"सोम से लेकर शनि तक कुतुब मीनार जमीन में धंसा रहता है। रविवार को दिन का उजाला शुरू होते ही वो बाहर निकलना शुरू हो जाता है, और सूर्य निकलने तक पूरा का पूरा बाहर आ जाता है और सूर्य डूबते ही वो वापस धंसना शुरू हो जाता है फिर अंधेरा होने तक वो पूरा जमीन में धंस जाता है। उसके बाद फिर अगले रविवार को निकलता है।"

"हां।" ब्रूटा ने सिर हिलाया–"याद आया। मैंने भी देखा है। उस कुतुब मीनार को।"

"देखा है।" जगमोहन सकपकाया–"कब?"

"जब तुमने देखा–तब मैं भी वहीं था।" ब्रूटा ने जहरीले स्वर में कहा–"तब हम मिले भी थे।"

"मुझे भी याद आ गया। तब तुमने हाथ में कटोरा पकड़ा हुआ था।" जगमोहन की आवाज तीखी हो गई।

ब्रूटा के दांत भिंच गये।

"मौत को सामने देखकर, तुम्हारा दिमाग खराब हो गया लगता है।" ब्रूटा गुर्राया।

"मुझे भी ऐसा ही लग रहा है। तुमने जहाज पर अपने लिए पागलखाना बना रखा है तो मुझे फौरन वहां ले चलो।"

एकाएक ब्रूटा हंस पड़ा।

"मरते हुए इन्सान को पागलखाने की जरूरत नहीं होती मिस्टर जगमोहन।" ब्रूटा ने विषैले स्वर में कहने के बाद देवराज चौहान को देखा–"मरने से पहले कैसा लग रहा है देवर ज चौहान?"

"बहुत बुरा।" देवराज चौहान का स्वर शां था।

"मरना तो सबको ही बुरा लगता है। मौत से ौन नहीं डरता।" ब्रूटा हंस पड़ा।

"मैं मौत से नहीं डर रहा ब्रूटा! मैं जानता था, कभी भी मौत के चक्रव्यूह में फंस सकता हूं। इसलिये जान जायेगी, इस बात का मुझे गम नहीं। सिर्फ एक ही अफसोस है कि इस तरह कुर्सी से बांधकर मुझे मारा जा रहा है।"

"अपना-अपना स्टाईल है।" ब्रूटा हंस पड़ा–"जंगल में घूमते शेर का शिकार, लोग छिपकर करते हैं। लेकिन मैं अपने ही ढंग से शिकार करता हूं। पहले शेर को गर्दन से पकड़ता हूं। उसके हाथ-पांव बांधता हूं। उसके बाद उसे तड़पा-तड़पा कर मारता हूं। जैसे कि तुम मरने जा रहे हो।"

"इसे शिकार नहीं कहते, हमारी दुनियां में–।" देवराज चौहान ने होंठ भींचकर कहा।

"तो फिर किसे शिकार कहते हैं?" बूटा की आवाज में कड़वापन आ गया।

"शिकार खुले में ही होता है, ताकि सामने वाले को भी अपनी जान बचाने का मौका मिले। लोग इसीलिये जंगल में शिकार खेलने जाते हैं कि मुकाबला बराबरी का रहे। इस तरह कुर्सी पर बांधकर तुम दूसरे के बाल नोंचो और कहो कि तुमने शिकार कर लिया है तो, तुम जैसे बहादुर के लिये ये शर्म की बात है।"

"मैं सिर्फ जीतने में विश्वास रखता हूं। शिकार कैसे भी किया जाये, सामने वाले को मरना चाहिये और अब तुम लोग मरने जा रहे हो।" बूटा मौतभरे स्वर में कह उठा।

"कुत्ते हो तुम–।" मलानी गुर्रा उठा।

"करते रहो बकवास।" बूटा दरिन्दगी से बोला और वहां सतर्क मुद्रा में खड़े गनमैनों से कहा–"तुम दोनों की गन में जितनी भी गोलियां हैं, वो सब इन तीनों के जिस्मों में उतार दो।"

"नहीं।" अनिता गोस्वामी चीख उठी–"ऐसा मत करो।"

वैशाली ने आंखें बंद कर लीं। चेहरे पर अफसोस के भाव आ गये।

गनमैनों ने फौरन गनें सीधी कीं।

अगले ही पल वो हॉल फायरिंग के शोर से गूंज उठा। गोलियां रुकने का नाम नहीं ले रही थीं। करीब आधा मिनट फायरिंग होती रही।

हैरानी से बूटा की आंखें फैलती चली गईं। उसके देखते ही देखते उसके दोनों गनमैन गोलियों से छलनी-छलनी होकर इधर-उधर गिर पड़े थे। शरीर से बहता खून कालीन को गीला करने लगा। बूटा की निगाह तुरन्त दरवाजे की तरफ घूमती चली गई।

वहां गन थामे सोहनलाल खड़ा था।

"बूटा साहब को मेरा नमस्कार। आपके हजूर में गोलियां बरसाता हूं।" सोहनलाल मुस्कराया।

"कौन हो तुम?" बूटा पागलपन वाले अंदाज में गुर्रा उठा।

"बंदा इस काबिल नहीं कि अपनी तारीफ खुद कर सके। वैसे

इस बदनाम आदमी को सोहनलाल कहते हैं। ताले-तिजोरी खोलना मेरा काम है। गोलियां चलाना मुझे पसन्द नहीं।"

"तो अब क्यों चलाई?" ब्रूटा गुस्से से मुट्ठियां भींच रहा था।

"आपने मजबूर किया। सबसे पहले आपको जगमोहन को खत्म करना चाहिये था। क्योंकि उसकी डायरी में एक पन्ना मेरे नाम का है। जिसमें वो खामखाह का उधार मेरे नाम पर चढ़ा देता है। और इतनी देर से आपने उसे ही खत्म नहीं किया तो मुझे गुस्सा आ गया। चला दीं गोलियां।" कहने के साथ ही सोहनलाल कुर्सियों पर बंधे उनकी तरफ बढ़ा—"हिलना मत ब्रूटा अभी गन में बहुत गोलियां बाकी हैं।" पास पहुंचकर वो देवराज चौहान को खोलने लगा कि थके स्वर में मलानी कह उठा।

"पहले मुझे खोलो। फायरिंग की आवाज सुनकर दूसरे गनमैन आते होंगे। उन्हें संभालना जरूरी है।"

"सोहनलाल! ये ठीक कहता है पहले मलानी को खोलो।" देवराज चौहान ने कहा।

सोहनलाल, मलानी के पास पहुंचकर उसके बंधन खोलने लगा। परन्तु वह ब्रूटा के प्रति पूरी तरह सतर्क था जो कि अपनी जगह पर खड़ा घायल शेर की तरह गुर्रा रहा था।

तभी ब्रूटा की निगाह वैशाली की कुर्सी के पास पड़ी रिवॉल्वर पर पड़ी। वैशाली से इसकी आंखें मिलीं तो ब्रूटा ने आंखों ही आंखों में उसे इशारा किया कि रिवॉल्वर को उसकी तरफ ठोकर मार दे।

वैशाली ने रिवॉल्वर को देखा फिर दूसरी तरफ मुंह घुमा लिया।

ब्रूटा दांत पीसकर रह गया।

मलानी को खोलने के बाद, सोहनलाल, देवराज चौहान को खोलने लगा।

बदन में धंसी पड़ी सुईयों की वजह से मलानी का शरीर अकड़ रहा था। पीड़ा के कारण सिर चकरा रहा था। परन्तु अगले ही पल, सब कुछ भूलकर, वो सोहनलाल के हाथ में थमी गन पर झपटा। कम से कम सोहनलाल को मलानी से ऐसी किसी हरकत की आशा नहीं थी।

गन मलानी के हाथ में पहुंच गई।

अगले ही पल गन से जाने कितनी गोलियां निकलीं और ब्रूटा के शरीर के हिस्सों में धंसती चली गईं जो, वैशाली की कुर्सी के पास पड़ी रिवॉल्वर को झपटकर, उठाने जा रहा था।

वैशाली चीखकर, कुर्सी से उठ खड़ी हुई।

ब्रूटा खून में डूबा, नीचे लयपथ पड़ा था। उसे तड़पने का भी मौका नहीं मिला था। अपनी शिकारगाह में वो खुद शिकार हो गया था।

सबकी निगाहें ब्रूटा की लाश पर टिक चुकी थीं।

"मैंने तो समझा था तुम, हमें मारने जा रहे हो।" सोहनलाल ने मुस्कराकर मलानी को देखा।

मलानी के दांत भिंचे हुए थे। चेहरे पर खतरनाक भाव थे।

"बहुत आसान मौत मर गया हरामजादा।" मलानी दांत भींचकर कह उठा।

वैशाली, अनिता गोस्वामी जी को खोलने लगी थी।

देवराज चौहान और जगमोहन के बंधन भी खुल गये। परन्तु शरीर में धंसी सुईयों ने उनके जिस्म को अकड़ाकर, लगभग नाकारा कर रखा था।

तभी उनके कानों में कई दौड़ते कदमों की आवाजें पड़ीं फिर देखते ही देखते खुले दरवाजे से छः गनमैनों ने भीतर प्रवेश किया जो फायरिंग की आवाज सुनकर आये थे। भीतर का नजारा देखते ही उनके चेहरों पर अविश्वास के भाव आये। उन्हें विश्वास नहीं आ रहा था कि ब्रूटा मर गया है।

मलानी अपनी पीड़ा को भूलकर, गन थामे आगे बढ़ा। गनमैनों के पास पहुंचा। उसकी गन का रुख गनमैनों की तरफ ही था और चेहरे पर दृढ़ता के भाव थे।

"देख क्या रहे हो।" मलानी सख्त स्वर में बोला—"ब्रूटा मर चुका है। मरे आदमी का साथ, मर कर ही दिया जा सकता है, लेकिन मेरा साथ तुम लोग जिन्दा रहकर भी दे सकते हो। बोलो क्या इरादे हैं।"

ब्रूटा की मौत के साथ ही सारे हालात बदल गये थे।

"हम आपके साथ हैं मलानी साहब—।"

मलानी के चेहरे पर राहत के भाव उभरे। उसने गन नीचे कर ली।

"मेरे बदन से सुईयां निकालो।" मलानी बोला।

दो गनमैन मलानी के जिस्म में धंसी सुईयां निकालने लग गये। वैशाली और अनिता गोस्वामी, देवराज चौहान और जगमोहन के जिस्मों में धंसी सुईयां निकालने लगीं।

दस मिनट में ही उनके जिस्मों में धंसी सुईयां निकल चुकी

थीं, जिससे जिस्म से उठती पीड़ा को भरपूर राहत मिली थी। परन्तु दर्द की तीव्र कसक उन्हें बराबर महसूस हो रही थी।

मलानी, देवराज चौहान के पास पहुंचा।

"मेरी जान बचाकर, तुमने बहुत बड़ा अहसान किया है।" कहते हुए मलानी ने गहरी सांस ली।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई।

तभी जगमोहन कह उठा।

"ठीक है। अहसान तो कर दिया होगा। पहले तू ये बता वो पचास हजार डॉलर कहां हैं, जो–?"

"ब्रूटा के बैडरूम में।" मलानी ने कहा।

"ठीक-ठाक है। कुछ कम तो नहीं है?"

"नहीं। पूरे पचास करोड़ डॉलर हैं।" मलानी ने सिर हिलाया।

"इतनी बड़ी रकम ब्रूटा को क्यों दी गई, किसने दी?" जगमोहन उलझन में कह उठा।

"आई०एस०आई०, पाकिस्तान की तरफ से मिली है। जिसकी एवज में ब्रूटा ने कई जाने-माने मंत्रियों की हत्या करनी थी, ताकि हिन्दुस्तान की बुनियादें हिल जायें। समझो, ब्रूटा ने पाकिस्तान के साथ ठेका लिया था कुछ कामों का। यह उन्हीं की पेमन्ट है।" मलानी ने गम्भीर स्वर में कहा।

"वो क्या है कि पाकिस्तान की भेजी रकम को हाथ लगाने का दिल तो नहीं करता, चूंकि वो अमेरिकन करेंसी में है इसलिये, ले लेने में हर्ज भी नहीं है। ब्रूटा के बैडरूम में चल–।"

मलानी ने गनमैनों को देखा।

"तुम लोग यहां की हर जगह कवर कर लो। बाहर से कोई भी भीतर न आ सके। अपना कोई आदमी आना चाहे तो कह देना, ब्रूटा साहब ने इस वक्त आने को मना किया है। वैसे इस वक्त कोई इधर आयेगा नहीं। यहां क्या हुआ है, किसी को हवा देने की भी जरूरत नहीं है।"

छः के छः गनमैन फौरन बाहर निकल गये।

देवराज चौहान, जगमोहन, सोहनलाल, मलानी, वैशाली और अनिता गोस्वामी, ब्रूटा के बैडरूम में पहुंचे।

□□

□□

दीवार के साथ करीने से लगा रखे थे, डॉलरों वाले पांच

थैले। आर-पार दिखाई देने वाले प्लास्टिक के हर थैले में दस करोड़ डॉलर थे।

"वाह!" जगमोहन फौरन उन प्लास्टिक के बोरों की तरफ लपका-"पचास करोड़ डॉलर! इतनी बड़ी रकम को देखकर ही मजा आ गया! मैं तो-।"

"ज्यादा मजा मत ले।" सोहनलाल व्यंग्य से कह उठा-"जहाज पर शायद डॉक्टर भी न मिल पाये।"

तभी वैशाली, जगमोहन के पास पहुंची।

"हैलो।" उसने जगमोहन की पीठ ठकठकाई।

जगमोहन पलटा।

"पहचाना मुझे।" वैशाली मुस्कराई-"मैं तुम्हारी दोस्त हूं।"

"कोई खास बात है क्या?" जगमोहन ने उसे गहरी निगाहों से देखा।

"हां। मेरे ख्याल में तुमने अभी शादी नहीं की।"

"नहीं-।"

"मैं तैयार हूं शादी के लिये-।" उसने मीठे स्वर में कहा-"मेरे जैसी बीवी पाकर-।"

"एक मिनट। वो बीवी पाने की कोशिश में है।" जगमोहन ने सोहनलाल की तरफ इशारा किया-"वहां जाकर कोशिश करो। सिफारिश मैं कर दूंगा। बात बनने के पूरे चांसिस हैं।"

"मैं गाय नहीं हूं कि टूटे-फूटे खूंटे पर बांध दिया।" वो मुंह बनाकर बोली।

"मतलब कि मैं बढ़िया खूंटा हूं।"

"एकदम फिट। और फिर तुम्हारे पास इतनी बड़ी दौलत है। तुमसे बढ़िया खूंटा और कौन-सा होगा।"

"मौसी जी!" जगमोहन व्यंग्य से कह उठा-"थैंक यू-धन्यवाद। मेहरबानी।"

"क्या मतलब?"

"मैं आपके बेटे के बराबर हूं। छोटा-सा, नन्हा-सा हूं। मेरे से शादी करके आप मुझे बिगाड़ रही हैं। टूटे-फूटे खूंटे से शादी की बात करनी है तो कर लो। माल उसके पास भी बहुत है। ये जुदा बात है कि उसे नहाने का वक्त नहीं मिलता। नया कपड़ा पहनेगा तो उतारेगा तब जब वो फटने पर आ जायेगा। मतलब कि धुले कपड़े पहनने की उसे आदत नहीं है। नये जूते लेगा और फटने पर

ही पांवों से निकालेगा। शाही आदतें हैं इसकी। नोटों को मालूम नहीं कहां छिपाकर रखता है। वो अलग बात है कि उसके सामने आने पर लगेगा कि अभी पैसे मांग उठेगा।"

वैशाली ने मुंह बनाया।

"तुम मुझसे मजाक कर रहे हो।"

तभी सोहनलाल पास पहुंचा और दांत फाड़कर बोला।

"ये, मेरी तारीफ कर रहा है। सोहनलाल कहते हैं मुझे। मेरे लायक कोई सेवा हो तो बोलो। खूंटा टूटा-फूटा ही सही, लेकिन बड़ी से बड़ी भैंस को बांध रखने का दम रखता हूं। तुम तो मेरी नजरों में कट्टा ही हो। यकीन मानो बहुत शरीफ बंदा हूं मैं। लोग मेरी शान में तारीफों के पुल खड़े कर दे हैं, जैसे कि दो-तीन पुल अभी-अभी जगमोहन ने खड़े किए हैं।"

"शटअप-।" वैशाली खीझकर कह उठी।

"हो जाता हूं।" सोहनलाल ने तुरन्त दायें-बायें सिर हिलाया।

देवराज चौहान ने मलानी को देखा।

"ब्रूटा की मौत के बाद जहाज पर अब तुम्हारी क्या पोजिशन है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"ब्रूटा जैसी ही है।" मलानी ने पक्के स्वर में कहा-"जहाज पर मेरी पूरी चलेगी।"

"तो इस जहाज को फौरन रुकवाओ।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा-"यह जहाज समन्दर में डूबने जा रहा है। यात्रियों और जहाज के कर्मचारियों को सेफ्टी बोटों पर यहां से निकाल दो।"

"जहाज को तबाह करने की जरूरत है?" मलानी गम्भीर हो गया।

"बहुत जरूरत है। जिस रास्ते से जहाज में माल लाया और भेजा जाता है। उसके बारे में ब्रूटा के कई खास आदमी जानते हैं। कोई भी इसी रास्ते का फायदा उठाकर, फिर से ब्रूटा वाला काम शुरू कर सकता है।"

"ठीक कहते हो। मैं अभी थर्ड मेड, अजीत सिंह को कहता हूं कि वो यात्रियों को सुरक्षित पानी में उतार दें। इंजन रूम में भी सबको समझाकर आता हूं।" मलानी बोला।

"ठहरो।" वैशाली फौरन कह उठी-"मैं साथ चलती हूं। अजीत सिंह को मेरे बारे में स्पेशल बोल देना कि सबसे पहले वो मुझे बोट में बिठाये।"

"शादी नहीं करनी क्या?" जगमोहन व्यंग्य से कह उठा।

"वो बाद की बात है। किसी और को ढूंढ लूंगी।" वैशाली, मलानी की तरफ बढ़ती हुई बोली।

"मैं तैयार हूं। मेरे जैसा नेक बंदा तुम्हें पूरी दुनिया में नहीं मिलेगा।" सोहनलाल फौरन बोला।

"टूटे-फूटे खूंटे से, बंधने से अच्छा है कि बिन ब्याही ही रह जाऊं।" वैशाली ने उखड़े स्वर में कहा।

"तू तो बिन ब्याही रह सकती है, लेकिन मेरा क्या होगा।" सोहनलाल ने गहरी सांस ली।

"जाओ मलानी।" देवराज चौहान बोला—"जल्दी वापस लौटना।"

मलानी और वैशाली बाहर निकल गये।

अनिता गोस्वामी, देवराज चौहान के पास पहुंची।

"तुम बहुत अच्छे इन्सान हो। अपनी जुबान के पक्के हो।" अनिता गोस्वामी के स्वर में आभार के भाव थे।

जवाब में देवराज चौहान हौले से मुस्कराया।

"ब्रूटा को खत्म करके तुमने देश का ही नहीं, जनता का भी बहुत भला किया है। नहीं तो उसके द्वारा हिन्दुस्तान में फैल रहे हथियार, जाने क्या-क्या तबाही लाते। तुम महादेव के सच्चे दोस्त हो। अपनी जान पर खेलकर, तुमने महादेव की मौत का बदला लिया।" अनिता गोस्वामी का स्वर भर्रा उठा—"मलानी को भी बचा लिया। मुझे भी बचाया। नहीं तो ब्रूटा मुझे अपना खिलौना बना लेता। मैं—।"

"छोड़ो इन बातों को।" कहकर देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई।

तभी सोहनलाल बोला।

"कमाल है! मौके पर आकर मैंने सारा मामला संभाला और मेरा कहीं नाम तक नहीं।"

अनिता गोस्वामी ने गीली आंखों से सोहनलाल को देखा।

"तुम सब एक ही तो हो। अलग-अलग तो नहीं—।"

जवाब में सोहनलाल मुस्कराते हुए सिर हिलाने लगा।

और जगमोहन, वो तो डॉलरों वाले प्लास्टिक के बोरों के पास मंडरा रहा था।

□□

□□

जहाज रुक चुका था।

खतरे का सायरन बज चुका था। अफरा-तफरी का माहौल पैदा

हो चुका था। नींद में डूबे लोग, पहले तो कुछ भी नहीं समझ पाये, जब समझे तो सबसे पहले जहाज से निकलने की कोशिश में लग गये। अपना कीमत सामान भी साथ ले जाने की कोशिश करने लगे। कोई अण्डरवियर में ही केबिन से बाहर आ गया था तो कोई साथ में बनियान पहने था। कोई नाईट सूट में। मौत की घबराहट में कुछ औरतें तो पैंटी-ब्रा में ही बाहर निकल आई थीं। ऐसे मौके पर किसी को, किसी का होश कहां। अपनी जान बचाने की पड़ी थी सबको। हर कोई यही समझ रहा था कि जहाज अभी डूब जायेगा।

जहाज के कर्मचारी यात्रियों को संभालने की भरपूर कोशिश कर रहे थे।

थर्ड मेड अजीत सिंह को तैयारी करने में, आधा घंटा लगा। सब कर्मचारी उसके आदेशों का पालन करते हुए, फुर्ती से काम कर रहे थे। यात्रियों को लाईफ बोटों में उतारने का काम शुरू हो चुका था। अजीब-सा शोर, कोलाहल वहां गूंज रहा था। किसी को किसी की बात समझ नहीं आ रही थी। इस पर भी हर कोई अपनी कहने-सुनाने में लगा हुआ था।

वैशाली तो सबसे पहले वाली लाईफ बोट में बैठ गई थी।

जहाज के कई कर्मचारी, जो कि मलानी के खास थे, वे जानते थे कि जहाज में कोई खराबी नहीं है। अभी वो नहीं डूबेगा, इसलिए वो निश्चिंत होकर यात्रियों को, जहाज से सुरक्षित निकाल रहे थे।

इस वक्त सुबह के पांच बजने जा रहे थे।

□□

□□

मलानी पैंतालिस मिनट बाद, बूटा वाले बैडरूम में पहुंचा।

बाहर का मध्यम-सा शोर, वहां तक भी आ रहा था।

"यात्रियों को लाईफ बोटों पर उतारना शुरू कर दिया गया है।" मलानी बोला।

"कितनी देर में जहाज खाली हो जायेगा?" देवराज चौहान ने पूछा।

"कम से कम डेढ़ घण्टा लगेगा।" मलानी ने कहा।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाकर कश लिया।

जगमोहन डॉलरों वाले एक थैले पर बैठा था।

मलानी ने अनिता गोस्वामी को देखा।

"अनिता! बूटा खत्म हो गया है। यह जहाज भी डूबने जा रहा

है। मैंने अभी से सारे बुरे काम छोड़ दिए हैं। अब तो तुम्हें मेरे साथ शादी करने में एतराज नहीं होना चाहिए।"

अनिता गोस्वामी मुस्कराई।

"अगर तुम अपनी बात पर खरे हो तो, तुम्हारे साथ शादी करने में मुझे कोई एतराज नहीं।"

मलानी के चेहरे पर खुशी से भरी मुस्कान उभरी।

"यहां से जहाज के पेंदे से निकलने-आने के लिए रास्ता है?" सोहनलाल ने पूछा।

"हां।" मलानी गम्भीर हो उठा।

"किधर है रास्ता?" जगमोहन ने उसे देखा।

"इस बैड के नीचे।"

सबकी निगाह आठ फीट वाले गोलाई के बेड पर जा टिकी। जो कि फर्श तक चारों तरफ से बंद था। बिल्कुल किसी बक्से की भांति।

"सब कुछ बताओ। पहले यह कि जहाज के पेंदे में रास्ता किस तरह से बनाया गया है?" देवराज चौहान ने कहा और वहां पड़ी कुर्सी पर बैठते हुए सिग्रेट का कश लिया।

सबकी नजरें मलानी की तरफ थीं।

मलानी दो पल की चुप्पी के बाद कह उठा।

"जहाज के पेंदे में, ठीक इसी बैड की 'सीध' में, इतनी गोलाई का रास्ता पेंदे में से निकलता है।"

"लेकिन जब वो रास्ता खोला जाता होगा तो, जहाज में पानी नहीं भरेगा?" सोहनलाल ने पूछा।

"नहीं।" मलानी ने सिर हिलाया—"दरअसल इस रास्ते को खोलने का सारा सिस्टम यहीं से कंट्रोल होता है। पेंदे का आठ फीट की गोलाई का हिस्सा कुछ इस तरह से बनाया गया है कि वो एयर टाईट है। पानी तो क्या, हवा भी भीतर नहीं आ सकती। जहाज के नीचे जाकर, पेंदा चैक करने से यह भी पता नहीं लगाया जा सकता कि, वो हिस्सा अपनी जगह से हट सकता है।" मलानी गम्भीर स्वर में कहता जा रहा था—"मैं सब कुछ कर के दिखाता हूं। इस तरह शायद मैं सब कुछ ठीक से न बता पाऊं।"

बाहर से आता मध्यम-सा शोर कानों में पड़ रहा था।

मलानी आगे बढ़ा और दीवार पर लगी चार फीट चौड़ी और छः फीट लम्बी पेन्टिंग के पास पहुंचा और उसे धीरे-धीरे घुमाते

हुए, पूरी तरह उल्टी कर दिया। ऐसा होते ही कमरे के बीचो-
मौजूद बैड ने ऊपर उठना शुरू कर दिया।

देखते ही देखते वो छत के पास जाकर रुक गया।

बैड को लोहे की छः गोल-गोल पाईपों ने संभाल रखा था। जाहिर था कि पाईपों का खांचा था, जो पाइपों को खुद में ले लेता था और सिस्टम चालू होते ही वो बैड को ऊपर कर देता था। इसके साथ दो चक्री नजर आने लगीं, ऐसी चक्री, जैसी कुओं पर लगी होती है और उस पर रस्सा डालकर पानी का भरा बर्तन ऊपर खींचा जाता है।

उन सबने आगे बढ़कर देखा।

वहां से दो फीट चौड़ी लोहे की दो सीढ़ियां नीचे जा रही थीं। नीचे अंधेरा घुप्प था।

मलानी ने टेबल की ड्राअर से छोटा-सा रिमोट कंट्रोल निकाला, जिस पर कई बटन नजर आ रहे थे। एक बटन दबाते ही नीचे के अंधेरे वाले हिस्से में पर्याप्त रोशनी फैल गई। वहां की हर चीज स्पष्ट नजर आने लगी। चक्री पर लोहे की मजबूत तार पड़ी थी जो कि नीचे, अंत तक जा रही थीं और ऊपर चक्री से होकर उसका दूसरा हिस्सा, जाने किधर था।

वो दोनों सीढ़ियां नीचे, बेहद नीचे तक जा रही थीं।

एक बारगी वो देखने पर अंधेरे कुएं जैसा लग रहा था, बेशक वहां रोशनी कर दी गई थी।

"यह रास्ता, कुआं, जहाज के पेंदे तक जाता है?" जगमोहन ने पूछा।

"हां। लेकिन आखिरी पेंदे तक नहीं।"

"क्या मतलब?" जगमोहन की आंखें सिकुड़ीं।

"मेरे हाथ में जो रिमोट कंट्रोल है, जहाज के इस गुप्त रास्ते को यही कंट्रोल करता है। ये देखो।" कहने के साथ ही मलानी ने रिमोट का रुख नीचे को किया और एक बटन दबा दिया।

अगले ही पल सबने देखा और स्पष्ट देखा। गहरे कुएं में फैली रोशनी में देखा कि जो तला नजर आ रहा था, वो अपनी जगह से हिला, करीब आधा फीट नीचे गया और फिर बायीं तरफ सरकते हुए नजरों से ओझल हो गया और उससे करीब बारह फीट नीचे एक और तला नजर आने लगा।

मलानी ने सबके चेहरों पर निगाह मारी।

"यह तो तला आप देख रहे हैं, यह जहाज का असली तला

है। जो तला पहले नजर आ रहा था वो असली नहीं था। यह दोनों तले एयर टाईट हैं। पानी तो क्या इनमें से हवा भी नहीं गुजर सकती। नीचे वाला तला बिल्कुल सूखा और खाली है। जिस तरह ऊपर वाला तला अपनी जगह से हटा है। उसी तरह नीचे वाला तला भी अपनी जगह से हट जाता है।"

"अगर तुमने नीचे वाले तले को हटाया तो जहाज में पानी भर जायेगा। यह डूब जायेगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"ठीक कहते हो। लेकिन ऐसा न हो इसका पूरा इन्तजाम है। माल कैसे रिसीव करते हैं और यहां से कैसे डिलीवर करते हैं यह मैं अब बताता हूं।" कहने के साथ ही मलानी ने रिमोट कंट्रोल का बटन दबाया तो जो तला अपनी जगह से हटा था वो पुनः अपनी जगह पर वापस आने लगा।

यानि कि ऊपर वाला तला पुनः पहले की तरह अपनी जगह पर आ गया।

मलानी ने रिमोट कंट्रोल में लगा अन्य बटन दबाया और सीधा खड़ा हो गया। इस बार बटन दबाने पर उन्हें उस गहरे कुएं में, कहीं भी, कोई भी हरकत होती नजर नहीं आई।

सोहनलाल ने मलानी को देखा।

"अब कौन-सा तमाशा दिखा रहे हो।"

मलानी, सोहनलाल को देखकर मुस्कराया।

"देखते रहो।"

दो मिनट भी न बीते होंगे कि मलानी ने पुनः बटन दबाया। तब भी कुछ नहीं हुआ। करीब आधा मिनट ठहरकर मलानी ने पुनः बटन दबाया तो नजर आने वाला तला, पुनः पहले की ही तरह अपनी जगह से खिसक कर निगाहों से ओझल हो गया।

अगले ही पल सबके चेहरों पर हैरानी उभरी।

नीचे अब तले पर पानी भरा हुआ था।

"तुमने रिमोट कंट्रोल से दो बार बटन दबाया।" देवराज चौहान ने मलानी को देखा—"पहले बटन से जहाज के नीचे वाला तला हटा और समन्दर से पानी भीतर आ गया। परन्तु ऊपर वाले एयरटाईट तले की वजह से पानी ऊपर नहीं आ सका। दूसरी बार जब बटन दबाया तो नीचे वाला तला पुनः अपनी जगह पर आ गया। यानि कि पानी दो तलों के भीतर कैद होकर रह गया। अब ऊपर वाला तला हटाया तो समन्दर का जो पानी जहाज में आ गया था, वो नजर आने लगा।"

"बिलकुल ठीक कहा तुमने।" मलानी ने सिर हिलाया।

"लेकिन बाहर वाला किसी तरह का सामान, हथियारों के बड़े-बड़े बैग-थैले भीतर कैसे देता है। क्योंकि जब नीचे वाला तला हटेगा तो उसमें सामान नहीं रखा जा सकता। जो सामान भी रखा जायेग, वो वापस समन्दर में चला जायेगा।" देवराज चौहान बोला।

"ठीक कहते हो। परन्तु इसका भी इन्तजाम है। अब ये देखो कि जो पानी नीचे भर आया है, वो निकलता कैसे है।" कहने के साथ ही मलानी ने रिमोट कंट्रोल का बटन दबाया।

सब देखते रहे।

दस मिनट लगे और वहां पानी की एक बूंद भी न बची।

"जो पानी नजर आ रहा था, वो वापस समन्दर में चला गया है। वहां मोटर का कनैक्शन है, उस मोटर का कंट्रोल इसी रिमोट कंट्रोल से होता है। मोटर पाईपों के जरिये, उस पानी को नीचे वाले डेक के रेन वॉटर पाईप में फैंकती है और पानी वापस समन्दर में पहुंच जाता है।"

"हर तरफ से तगड़ा इन्तजाम कर रखा है।" जगमोहन ने गहरी सांस ली।

मलानी ने देवराज चौहान से कहा।

"आओ। मैं तुम्हें बताता हूं कि बाहर के लोग, सामान को जहाज में डिलीवर कैसे करते हैं।" कहने के साथ ही मलानी ने रिमोट कंट्रोल जेब में डाला और नीचे जाते लोहे की सीढ़ी पकड़कर नीचे उतरने लगा।

देवराज चौहान दूसरी सीढ़ी पकड़कर नीचे उतरने लगा।

बाकी सब ऊपर ही रहे।

पांच मिनट लगे और वो दोनों ऊपर वाले तले तक पहुंच गये।

"यहां से नीचे सीढ़ी इसलिये नहीं जाती कि ऊपर वाले तले को बंद होने के लिये पूरी जगह चाहिये। बीच में सीढ़ी आ जायेगी तो ऊपर वाला तला बंद नहीं होगा और पानी ऊपर चढ़ आयेगा।" सीढ़ी के आखरी हिस्से पर खड़ा मलानी कह उठा—"ये देखा माल कैसे आता है। देखो नीचे वाले तले के ऊपर दीवारों पर बड़ी-बड़ी हुक लगी हुई हैं, जो कि बेहद मजबूत हैं और बड़े से बड़े बोझ को भी बर्दाश्त कर सकती हैं। करीब पन्द्रह हुक हैं। जब नीचे वाला तला हटाया जाता है और ऊपर वाला बंद होता है तो, वो हिस्सा समन्दर के पानी से भर जाता है। नीचे जो लोग, गोताखोरी के लिबास में माल छोड़ने आये होते हैं, वो पानी के साथ-साथ जहाज के भीतर आते हैं, जहां

पानी भरा होता है। उनके पास पानी में देखने के लिए रोशनी का पूरा इन्तजाम होता है। वो सामान को, जिसके साथ छोटा-सा फंदा होता है, हुकों में फंसा कर चले जाते हैं।"

"समझा।" देवराज चौहान ने सिर हिलाया—"उसके बाद जब तुम लोग नीचे वाला तला बंद करके, समन्दर का पानी निकालते हो तो, वो सामान थैलों-बैगों में हुकों से लटका होता है।" देवराज चौहान बोला।

"हां। ऊपर जो तुमने चक्री और उस पर लगी, नीचे आती लोहे की मोटी तार देखी है, उस तक के सिरे पर हुक लगे हैं, यहां नीचे रस्से के सहारे जाया जाता है। चक्री के तार के हुक को आये सामान में फंसाकर रिमोट कंट्रोल का बटन दबाया जाये तो चक्री भारी से भारी सामान को भी मिनट भर में ऊपर खींच लेती है। और जब माल की डिलीवरी देनी होती है तो भी यही तरीका इस्तेमाल किया जाता है।"

देवराज चौहान ने समझने वाले ढंग में सिर हिलाया।

"जो भी हो, बनाने वाले ने, बहुत दिमाग लगाकर ये सिस्टम बनाया है।" देवराज चौहान बोला।

"सिंगापुर का ही इंजीनियर था एक। इस सिस्टम में सारा दिमाग उसी का लगा है। लेकिन जब सारा काम हो गया तो एक दिन बूटा ने उसे खत्म करवा दिया कि कहीं वो जहाज के रहस्य को न खोल दे।" मलानी ने धीमे स्वर में कहा—"बूटा शैतान दिमाग का, बहुत खतरनाक इन्सान था।"

□□

□□

पौने दो घण्टों में, जहाज के सब यात्री और कर्मचारी लाईफ बोटों में बैठकर, जहाज को छोड़ चुके थे। अब जहाज में उनके अलावा कोई नहीं था।

देवराज चौहान ने मलानी से कहा।

"डॉलरों के बोरों को छोटी लाईफ बोट्स से बांधो, इस तरह कि खुल न सकें। एक लाईफ बोट पर एक बांधना है। भारी बहुत है।"

मलानी ने सहमति में सिर हिलाया।

"यहां से निकलने का क्या इन्तजाम है?" देवराज चौहान ने पूछा।

"बूटा ने अपने लिये ताकतवर इंजन वाली मोटरबोट रखी हुई

है। जो कि हमेशा तैयार रहती है।" मलानी बोला—"हम उस पर आसानी से निकल सकते हैं।"

"उस पर तो डॉलरों के ये पांचों थैले भी आ सकते हैं।" देवराज चौहान ने उसे देखा।

"हां। इस पर बहुत जगह है। उसमें करीब तीस आदमी आ सकते हैं।" मलानी ने फौरन कहा।

"ठीक है। डॉलरों वाले पांचों थैलों को नीचे ले चलो। इन्हें मोटरबोट में रखकर ले चलेंगे।"

□□

□□

उन पांचों थैलों को नीचे तक ले जाने में घण्टा भर लग गया। वास्तव में वो भारी थे। उसके बाद मलानी ने मोटर बोट तैयार की। पानी में उतारी गई। पांचों बोरों को बोट में रखा गया। वे सब भी बोट में पहुंचे। बोट बड़ी थी। उसमें अभी भी बीस-पच्चीस लोग आ सकते थे।

देवराज चौहान ने मलानी से कहा।

"रिमोट कंट्रोल दो।"

"क्यों?" मलानी के होंठों से निकला।

"जहाज के वो वाले दोनों तले खोलने हैं। जहाज में पानी भर जायेगा। ताकि वो डूब सके।"

मलानी नें रिमोट कंट्रोल निकालकर उसे दिया तो देवराज चौहान जहाज पर चला गया। दस मिनट बाद लौटा और बोट पर आ गया। सोहनलाल स्टेयरिंग पर था।

देवराज चौहान के इशारे पर सोहनलाल ने मोटरबोट का इंजन स्टार्ट किया और आगे बढ़ा दी।

"दोनों तले हटा दिए?" जगमोहन ने पूछा।

"हां।" कहते हुए देवराज चौहान ने रिमोट कंट्रोल समन्दर में फेंक दिया—"एक-सवा घण्टे में जहाज डूब जायेगा।"

मोटरबोट तेजी से समन्दर में भागने लगी।

□□

□□

दोपहर का एक बज रहा था। सूर्य सिर चढ़ा हुआ था। पानी में पड़ने वाली उसकी चमक से अक्सर आंखें चुंधिया जाती थीं।

पांच घण्टों के बाद पानी के अलावा उन्हें जमीन दिखाई दी

थी। वो कोई छोटा-सा टापू था। जिस पर घने पेड़ खड़े दूर से ही नजर आ रहे थे।

"हम रास्ता भटक चुके हैं। दिशा का ज्ञान नहीं रहा।" मलानी धूप से आंखें बचाता हुआ कह उठा—"मोटरबोट में लगा कम्पास ठीक काम नहीं कर रहा। क्योंकि हम कम्पास के इशारे पर ही आगे बढ़ रहे थे और रास्ते में ये टापू दूर से भी दिखाई नहीं देता।"

"अब क्या करें?" जगमोहन ने देवराज चौहान को देखा।

"कुछ देर टापू पर चलना ही बेहतर होगा। हमारे पास खाने को कुछ नहीं है। खाली पेट समन्दर में भटकना बेवकूफी ही होगी।" मलानी ने कहा।

"जगमोहन, देवराज चौहान को देखता रहा।

देवराज चौहान के चेहरे पर सोच के भाव थे।

"मुझे बहुत देर से भूख लग रही है।" अनिता गोस्वामी धीमे स्वर में कह उठी।

"टापू पर खाने का अवश्य कुछ होगा।" मलानी तुरन्त बोला।

"टापू पर चलें?" जगमोहन ने देवराज चौहान से पूछा।

देवराज चौहान ने सोचभरे ढंग में, सहमति से सिर हिला दिया।

"सोहनलाल!" जगमोहन ने कहा—"बोट टापू पर ले चल।"

अगले छः-सात मिनट में ही बोट टापू के किनारे जा लगी।

□□

□□

वो सब टापू पर उतरे। बोट को रस्से के सहारे, किनारे पर पत्थरों को इकट्ठा करके, उसके साथ बांध दिया गया।

टापू बहुत सुन्दर था। हर तरफ हरियाली ही हरियाली थी। बड़े-बड़े ऊंचे, घने पेड़ बहुत अच्छे लग रहे थे। हवा ठण्डी महसूस हो रही थी।

"मलानी!" अनिता गोस्वामी बोली—"मुझे भूख लग रही है।"

"चिन्ता मत करो।" मलानी ने अपनेपन से कहा—"किसी न किसी पेड़ पर फल अवश्य होगा। मैं अभी लेकर आता हूं।" कहने के साथ ही मलानी आगे बढ़ता चला गया।

देवराज चौहान ने सिग्रेट सुलगाई।

"आओ। टापू पर नजर मार लें, ये कैसा है। यहां क्या-क्या है?" देवराज चौहान बोला।

"मैं भी यही सोच रहा था।" सोहनलाल फौरन बोला।

"मैं नहीं जाऊंगा।" जगमोहन ने कहा।

देवराज चौहान और सोहनलाल की निगाह उसकी तरफ घूमी।

"क्यों?" देवराज चौहान ने पूछा

"बोट पर, पचास करोड़ डॉलर पड़े हैं। कोई ले गया तो?"

जगमोहन ने मुंह बनाया।

देवराज चौहान मुस्कराया।

"यहां, वीरान जगह से कौन ले जायेगा?"

"वक्त का कोई भरोसा नहीं, कब क्या हो जाये–।" जगमोहन के स्वर में जिद्द के भाव आ गये।

"मतलब कि तुम नहीं चलोगे।"

"नहीं। तुम लोग टापू का चक्कर लगा आओ। मैं बोट के पास ही रहूंगा। मलानी इसके लिये कुछ खाने को लेने गया है तो, वो यहीं आयेगा। इसलिये इसे भी यहीं रहने दो।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी। आओ सोहनलाल–।"

देवराज चौहान और सोहनलाल आगे बढ़ गये।

"यहां से हिन्दुस्तान कितनी दूर है?" अनिता गोस्वामी ने जगमोहन से पूछा।

जगमोहन ने उसे देखा फिर मुस्कराकर बोला।

"इस वक्त तो मैं सिर्फ इतना बता सकता हूं पचास करोड़ डॉलर, मुझसे कितनी दूर हैं।" कहने के साथ ही उसने बोट पर मौजूद डॉलरों वाले थैलों पर निगाह मारी।

"तुम्हें दौलत के अलावा और कुछ नहीं सूझता?"

"सूझता है। लेकिन तब, जब दौलत सामने न हो।" जगमोहन उसे देखकर हंसा।

"बेवकूफ–।" अनिता गोस्वामी बड़बड़ा उठी।

□□

□□

देवराज चौहान, सोहनलाल उन पेड़ों के बीच थोड़ा–सा ही आगे गये होंगे कि तभी एक आदमी पेड़ से कूदा। उसके हाथ में भाला था। सिर के बाल इस तरह उलझे हुए थे कि, वहां बालों का ढेर पड़ा लग रहा था। कमर पर पत्ते बांधे रखे थे। गालों की दाढ़ी लटककर पेट को छू रही थी।

"ये क्या–?" सोहनलाल के होंठों से निकला। उसका हाथ जेब की तरफ बढ़ा।

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ चुकी थीं।

"रिवॉल्वर मत निकालना?" देवराज चौहान फौरन बोला।

सोहनलाल का, जेब की तरफ बढ़ता हाथ रुक गया।

उस व्यक्ति ने अपना भाला, उन दोनों की तरफ कर दिया। साथ ही अजीब-सी भाषा में चीखा। उसके आवाज के साथ ही आसपास के घने पेड़ों के बीच में उस जैसे ही आदमी-औरतें नीचे कूदने लगे। किसी के हाथ में भाला था, किसी ने कटार जैसी कोई चीज थाम रखी थी तो कोई तीर-कमान थामे था। कुछ ने कमर पर कपड़ा लपेट रखा था तो कुछ ने बड़े-बड़े पत्तों को लपेटा हुआ था। औरतों ने कमर से ऊपर कुछ भी नहीं ले रखा था।

देवराज चौहान और जगमोहन सतर्क हो चुके थे।

"ये जंगली लोग हैं। इनके सामने कोई हरकत मत कर बैठना।" देवराज चौहान सतर्क स्वर में बोला।

वो कुल चौदह थे।

उन्होंने उन दोनों को घेर लिया और अपनी भाषा में कुछ कहा। जो उनकी समझ में नहीं आया। ये देखकर एक ने इशारे से उन्हें आगे बढ़ने को कहा।

देवराज चौहान और सोहनलाल उनके घेरे में आगे बढ़ने लगे।

इसके साथ ही वो जंगली लोग खुशी से उछल-कूद रहे थे। नाच रहे थे। करीब दस मिनट चलने के बाद वे जंगली उन्हें लेकर ऐसी जगह पहुंचे जहां खुली जगह में तीस-चालीस झोपड़ियां बनी हुई थीं। वहां और भी जंगली नजर आ रहे थे। बच्चे खेल रहे थे। उन्हें देखते ही सब उत्सकुता से भरे उनके पास आकर उन्हें घेरकर खड़े होने लगे।

"अब क्या होगा?" सोहनलाल अजीब-से स्वर में बोला।

"देखते रहो। अगर इन्होंने हमारी जान लेनी होती, तो पहले ही ले लेते।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

सोहनलाल कुछ नहीं बोला।

जंगली लोगों का शोर बढ़ता ही जा रहा था।

तभी दूसरी तरफ से मलानी आता नजर आया। उसे भी चार आदमियों ने घेर रखा था।

"मलानी को भी इन लोगों ने पकड़ लिया है।" देवराज चौहान बोला।

उसके बाद उन तीनों को खुले में एक तरफ बिठा दिया गया। लगभग दस मिनट के बाद चार जंगली व्यक्तियों में घिरा एक जंगली

वहां पहुंचा। उसने कमर के गिर्द पर्याप्त कपड़ा लपेट रखा था। सिर पर बालों के ढेर में, किसी पेड़ की पत्तियां लगा रखी थीं। उसकी दाढ़ी, उसके सीने को भी छिपा रही थी। वो शान से बढ़ता उनके पास पहुंचा।

"ये इन जंगलियों का सरदार लगता है।" सोहनलाल बोला।

देवराज चौहान उसे ही देख रहा था।

वो अपनी भाषा में देवराज चौहान, सोहनलाल और मलानी से कुछ बोला। परन्तु उसकी बात समझ न आने पर वे खामोश ही रहे।

सरदार ने अपने पास खड़े जंगली को कुछ कहा तो वो जंगली वहां से चला गया। कुछ देर बाद लौटा तो साथ एक व्यक्ति था। उस व्यक्ति की उम्र पचास के करीब थी। सिर के बाल कटे हुए थे। गालों के बाल बता रहे थे कि दो-तीन दिन पहले ही उसने शेव की है। वह पूरे कपड़ों में तो नहीं था, परन्तु पैंट पहन रखी थी। स्पष्ट था कि वो सभ्य लोगों में से था।

सरदार ने उससे कुछ कहा।

तो उस व्यक्ति ने नीचे को देखा फिर बोला।

"तुम लोगों के पास जो खाने का सामान है। पहनने के कपड़े हैं। वो सब इनके हवाले कर दो, उसके बाद तुम लोग जा सकते हो।" पल भर ठहर कर वो पुनः बोला—"मैंने इंजन की आवाज सुन ली थी। और समझ गया था कि कुछ लोग इनके हत्थे चढ़ने वाले हैं।"

"तुम कौन हो?" देवराज चौहान बोला—"तुम तो इनमें से नहीं हो।"

"मैं पांच साल से इनके साथ रह रहा हूं और तुम्हारी ही तरह हिन्दुस्तानी हूं। मेरा नाम रामसिंह है।"

"यहां रहने की वजह?" देवराज चौहान की निगाह पर उस थी।

तभी शोर गूंजा।

सबने निगाह घुमाकर देखा। चार जंगली औरतें और दो जंगली आदमी जगमोहन और अनिता गोस्वामी को घेरे वहां ले आये थे। अनिता गोस्वामी बेहद घबराई दिख रही थी।

जंगली सरदार ने उन लोगों से कुछ कहा तो उन दोनों को भी उनके साथ बिठा दिया गया।

"ये हम कहां फंस गये?" जगमोहन व्याकुल स्वर में कह उठा।

उसकी बात का जवाब किसी ने नहीं दिया।

देवराज चौहान पुनः उस रामसिंह से बोला।

"पांच सालों से इन जंगलियों के बीच क्यों रह रहे हो?"

"किस्मत अपनी-अपनी।" वो गहरी सांस लेकर मुस्कराया—

"हिन्दुस्तान में, मेरी गांव की जमीन पर कुछ लोग कब्जा कर रहे थे। वे ताकतवर थे। उनका रसूख था। मैं उनका मुकाबला नहीं कर पा रहा था। और फिर एक दिन गुस्से में आकर मैंने अठारह लोगों को गोलियां से भून दिया। जमीन पर कब्जा करने वालों को तो मार दिया मैंने। लेकिन अब मेरे लिए फांसी के अलावा और कोई सजा नहीं बची थी। और मैं फांसी वाली मौत नहीं चाहता था। दो महीने कानून से बचकर भागता रहा। और फिर किसी तरह बन्दरगाह के जहाज पर खड़े जहाज पर छिप गया। वो जहाज यूरोप की यात्रा पर रवाना हो रहा था। वो अपनी यात्रा पर चल पड़ा। मैं जहाज में ही छिपा रहा। खाया-पिया कुछ नहीं था। दूसरे दिन तंग होकर खाने की तलाश में मैं छिपी जगह से निकला तो पकड़ा गया। कैद कर लिया गया, ताकि अगले बन्दरगाह पर जहाज रुके तो मुझे वहां की पुलिस के हवाले कर दिया जाये। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। जहाज में खराबी आ गई। तो उस जहाज को इस करीबी टापू पर रुकना पड़ा। यहां रुकते ही इन लोगों ने जहाज पर अपना कब्जा कर लिया और खाने-पीने का सामान और कपड़े लूटने लगे। मेरी तरफ से उन लोगों का ध्यान हट गया। मैं किसी तरह जहाज से निकलकर टापू पर आ छिपा। दो दिन के बाद जहाज आगे बढ़ गया। मैं टापू पर ही रहा। धीरे-धीरे इन लोगों से घुल-मिल गया। फांसी की मौत से बेहतर ये जिन्दगी। वक्त के साथ-साथ इनकी भाषा भी मुझे समझ आती चली गई। और अब यहां से जाने का मेरा कोई इरादा नहीं है।"

देवराज चौहान ने समझने वाले ढंग में सिर हिलाया।

"तुम लोग अपने खाने और पहनने का सामान इन्हें दो और यहां से चले जाओ।" रामसिंह बोला।

"हमारे पास खाने का सामान नहीं है। खाने की तलाश में ही हम यहां आये थे।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा—"कपड़ों के नाम पर हमारे पास सूटकेस भी नहीं है। हमारा जहाज डूब रहा था। ऐसे में मोटरबोट पर चढ़कर हमने अपनी जान बचाई।"

रामसिंह ने जंगली भाषा में सरदार को यह बात बताई तो सरदार गुस्से से चिल्लाकर कुछ कहने लगा। रामसिंह ने देवराज चौहान को देखा।

"सरदार कहता है कि तुम झूठ बोलते हो।"

"मैं सच कह रहा हूं। हमारे पास कोई सामान नहीं है।" देवराज चौहान बोला।

रामसिंह ने पुनः जंगली सरदार से बात की। सरदार ने गुस्से से जवाब दिया।

"ये कहता है हम बोट की तलाशी लेंगे। तुम लोग झूठ बोल रहे हो।" रामसिंह बोला।

"हमें कोई एतराज नहीं।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

रामसिंह ने यह बात जंगली सरदार से कह दी।

सरदार ने गुस्से से ऊंचे स्वर में चिल्लाकर, जंगली लोगों से कुछ कहा तो वे सारे खुशी से चिल्लाते-नाचते भाग गये। देखते ही देखते वे सारी जगह खाली हो गई। सिर्फ जंगली सरदार के साथ उसके अंगरक्षक टाईप के चारों जंगली आदमी वहीं खड़े रहे।

"वो सब मोटरबोट की तलाशी लेने गये हैं।" रामसिंह बोला—"अभी लौट आयेंगे।"

जगमोहन ने हड़बड़ाकर कहा।

"बोट में तो पचास करोड़ डॉलर पड़े हैं।"

"ये लोग रुपये-पैसे की कीमत नहीं जानते। इन्हें खाने का सामान और पहनने को कपड़े चाहियें। और किसी चीज से इन लोगों को मतलब नहीं।" रामसिंह ने कहा—"ध्यान रखना, कुछ न मिलने पर सरदार गुस्से में आ जायेगा। और यह गुस्से में कुछ भी कर सकता है। मेरा इशारा पाते-ही यहां से निकल जाने की करना। ज्यादा देर यहां रुके तो यह तुम लोगों की जान भी ले सकता है। तुम लोगों के निकलने तक, मैं इसे समझा-समझाकर रोके रखूंगा।"

□□

□□

वो सारे जंगली आधे घण्टे के बाद लौटे। मोटरबोट पर कुछ न होने की खबर उन्होंने अपने सरदार को दी तो सरदार वास्तव में गुस्से से भर उठा।

रामसिंह ने सरदार को समझाने की कोशिश की तो कभी सरदार ठण्डा हो जाता तो कभी फिर गर्म हो उठता। रामसिंह के जोर देने पर, सरदार ने उन लोगों को जाने की इजाजत दी।

"तुम लोग जल्दी से, यहां से निकल जाओ।" रामसिंह बोला—"अभी यह तुम लोगों को यहां से चले जाने को कह रहा है। कुछ पता नहीं मिनट बाद यह तुम लोगों की मौत का फरमान जारी कर दे।"

देवराज चौहान ने मुस्कराकर रामसिंह को देखा।

उसके बाद वे सब तेजी से उस तरफ बढ़ गये जहां मोटरबोट

खड़ी थी। किसी ने उन्हें रोकने या साथ आने की कोशिश नहीं की।

पीछे से उनके कानों में सरदार और रामसिंह की ऊंची-ऊंची आवाजें आती रहीं।

"जल्दी से निकल चलो।" सोहनलाल ने कहा—"उन दोनों में बहस हो रही है। कोई बड़ी बात नहीं, सरदार गुस्से में अपने आदमी, हमारी जान लेने के लिये दौड़ा दे।"

सबकी रफ्तार पहले से ही तेज थी।

समन्दर के किनारे पर पहुंचते ही सब हड़बड़ा उठे। उनकी आंखें जैसे फटकर फैलती चली गईं। दो पल के लिये लगा, जैसे उनके जिस्म वहीं के वहीं खत्म हो गये थे। धड़कन रुक गई हो।

सबसे पहले देवराज चौहान के होंठों पर मुस्कान रेंगी। फिर वो खुलकर मुस्कराया और सिग्रेट सुलगाकर सब पर निगाह मारी। वो सब जैसे धीरे-धीरे बेहोशी के दौर से बाहर निकलने लगे थे। लेकिन शायद सांसों का चलना अभी भी शुरू नहीं हुआ था।

वहां नजारा ही ऐसा था।

हर तरफ डॉलर ही डॉलर नजर आ रहे थे। टापू की जमीन पर डॉलर, समन्दर के पानी के ऊपर दूर-दूर तक डॉलर बिछे हुए थे। पानी का बहाव डॉलरों को दूर ले जाये जा रहा था। समन्दर का पानी नजर नहीं आ रहा था। हर तरफ डॉलर ही डॉलर बिखरे नजर आ रहे थे। दो पल के लिए तो यही लगा कि जैसे वहां डॉलरों की बरसात हुई हो। और समन्दर डॉलरों का समन्दर बन गया हो। वह नजारा मीठा भी लग रहा था और कड़वा भी।

खाने का सामान और कपड़ों की तलाश में जंगली लोगों ने डॉलरों वाले [illegible] खोल डाले थे और डॉलरों को बाहर फैंक-फैंककर, अपने काम [illegible] की तलाश की होगी, यह उसी हरकत का परिणाम था। [illegible] डॉलर पानी में बह गये थें। कुछ टापू पर बिखरे हुए [illegible] के पास कहने को कोई शब्द नहीं था।

हक्के-बक्के थे सब।

लेकिन देवराज चौहान बराबर मुस्करा रहा था।

डॉलरों वाले किस्से से वे लोग पूरी तरह संभल भी नहीं पाये थे कि उनके कानों में पीछे से उठता शोर पड़ा। जंगली लोगों का

शोर। वो अजीब-अजीब, ऊंची आवाजों में चिल्ला रहे थे। शोर हर पल करीब आता जा रहा था।

"निकलो यहां से।" देवराज चौहान चिल्लाया—"वो जंगली, हमें मारने आ रहे हैं।"

सबको होश आया।

सोहनलाल जल्दी से आगे बढ़ा और स्टेयरिंग सीट पर बैठकर मोटरबोट स्टार्ट करने लगा। मलानी और अनिता गोस्वामी भी जल्दी से बोट पर पहुंच गये।

जगमोहन बुत-सा बना पचास करोड़ डॉलर के समन्दर को देख रहा था।

"जगमोहन!" देवराज चौहान ने उसे धकेला—"बोट में चलो।"

"वो डॉलर—।" जगमोहन ने अजीब-से स्वर में कहना चाहा।

"वो जंगली हमारी जान लेने आ रहे हैं। जल्दी से बोट में बैठो।" देवराज चौहान ने उसे पुनः धकेला।

"लेकिन ये डॉलर—।"

जंगली लोगों का शोर सिर पर आ पहुंचा था। अब वो नजर भी आने लगे थे। उनके हाथों में तरह-तरह के हथियार थे और चेहरों पर गुस्सा नजर आ रहा था। दूर से ही वो अपने हाथों में थमे हथियारों को इस तरह हिला रहे थे जैसे उनका बस चले तो दूर से ही उन्हें मार दें।

देवराज चौहान ने होंठ भींचकर जगमोहन को उठाया और पांच कदम आगे बढ़कर बोट में डाला। मलानी ने उसे संभाला और देवराज चौहान भी बोट में आ चुका था। अगले ही पल सोहनलाल ने जल्दी से मोटरबोट आगे बढ़ा दी।

देखते ही देखते मोटरबोट किनारे से दूर, डॉलरों के समन्दर को पार करती चली गई।

वो ढेरसारे जंगली किनारे पर पहुंच गये थे। मोटरबोट दूर होती पाकर वो गुस्से से चिल्लाने लगे। कुछ ने गुस्से का इजहार अपने हथियारों को उनकी तरफ पानी में फेंक कर किया। लेकिन बोट उनकी जद से दूर पहुंच चुकी थी और दूर होती जा रही थी।

जगमोहन जल्दी से संभला और टापू की तरफ नजर मारी। डॉलरों का समन्दर अभी भी स्पष्ट नजर आ रहा था। वहां पानी की जगह दूर-दूर तक, उस पर जमी डॉलरों की तह नजर आ रही थी। उसके चेहरे पर ऐसे भाव थे जैसे, उसकी प्यारी दुनियां उजड़ गई हो।

"बच गये।" सोहनलाल ने टापू की तरफ देखा, जहां ढेरसारे जंगली नजर आ रहे थे। कि उसकी निगाह जगमोहन के लुटे-पिटे चेहरे पर पड़ी–"तेरे को क्या हो गया जगमोहन?"

"डॉलर। पचास करोड़ डॉलर–।" जगमोहन ने अफसोसभरे स्वर में कहा।

"जान बच गई। ये ही बहुत है।" सोहनलाल ने गहरी सांस ली–"डॉलर फिर कभी मिल जायेंगे।"

"वो पचास करोड़ डॉलर थे–।"

"कोई बात नहीं। अपनी जान उन डॉलरों से ज्यादा कीमती है।" सोहनलाल मुस्कराकर बोला।

जगमोहन की निगाह, उधर ही, टापू के किनारे पर ही रही।

देवराज चौहान मोटरबोट की सीट पर लेटा शांत भाव से सिग्रेट के कश ले रहा था।

"तुम्हें दुःख नहीं हो रहा।" जगमोहन, एकाएक देवराज चौहान से कह उठा।

"किस बात का?" जगमोहन को देखकर, देवराज चौहान मुस्कराया।

"पचास करोड़ डॉलरों के बरबाद होने का–।"

"वो हमारे नहीं थे। इसलिये दुःख नहीं हो रहा।"

"तो किसके थे?"

"दौलत किसी की भी नहीं होती।" मुस्कराकर देवराज चौहान बोला और आंखें बंद कर लीं।

जगमोहन, देवराज चौहान को देखता रहा। समझ नहीं पा रहा था कि क्या जवाब दे। देवराज चौहान ने ठीक ही तो कहा था कि दौलत किसी की सगी नहीं होती। आज वहां तो कल यहां। बिना पांवों की दौलत, के दौड़ने की रफ्तार का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। वो जाने कब-कहां किधर, किसके पास पहुंच जाये, और कब वहां से चल दे। जैसे कि अभी पचास करोड़ के डॉलर के साथ हुआ था। कुछ देर पहले उसके पास थे और अब तो उसके पास नहीं थे।

समाप्त